फ़्योदोर कोरोव्किन

प्राचीन विश्व इतिहास का परिचय

फ़्योदोर कोरोव्किन

प्राचीन विश्व इतिहास का परिचय

प्रगति प्रकाशन · मास्को
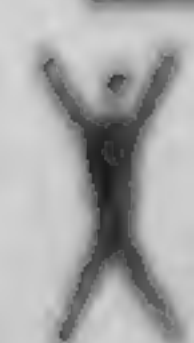
पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड
५ ई, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-११००५५

राजस्थान पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लि.

अनुवादक: बुद्धिप्रसाद भट्ट
डिजाइनर: व० द० कोल्तोंव

ФЁДОР ПЕТРОВИЧ КОРОВКИН
ИСТОРИЯ ДРЕВНЕГО МИРА
на языке хинди

F. KOROVKIN
The History of the Ancient World
in Hindi

पहला संस्करण: १९८२
दूसरा संस्करण: १९८६

© Издательство "Просвещение", 1981
© हिंदी अनुवाद • प्रगति प्रकाशन • १९८२
सोवियत संघ में मुद्रित

К $\frac{0504010000-135}{014(01)-87}$ 370 – 86

विषय-सूची

विषय परिचय ७
यह पुस्तक कैसे पढ़ें? १०

आदिम लोगों का जीवन

पहला अध्याय। आदिम संग्राहक और शिकारी १४

§ १. सबसे प्राचीन लोग कैसे थे और किस प्रकार रहते थे १४
§ २. शिकारियों के गोत्र समुदाय १७
§ ३. कला और धार्मिक विश्वासों का जन्म २२

दूसरा अध्याय। आदिम पशुपालक और कृषक २५

§ ४. पशुपालन और कृषि का आरंभ २५
§ ५. लोगों के बीच असमानता की उत्पत्ति २६
इतिहास में काल-गणना ३६

प्राचीन पूर्व

तीसरा अध्याय। प्राचीन मिस्र ४०

§ ६. प्राचीन मिस्र की प्रकृति और उसके लोगों के धंधे ४०
§ ७. मिस्र में वर्गों की उत्पत्ति ४४
§ ८. प्राचीन मिस्र में राज्य की उत्पत्ति ४७
§ ९. प्राचीन मिस्र में शासन-व्यवस्था और वर्ग संघर्ष ५१
§ १०. मिस्री साम्राज्य का उत्कर्ष और पतन ५४
§ ११. प्राचीन मिस्र में धर्म ५८
§ १२. प्राचीन मिस्र में विज्ञान और लेखन कला की उत्पत्ति ६३
§ १३. प्राचीन मिस्री साहित्य और कलाएं ६७

चौथा अध्याय। **प्राचीन पश्चिमी एशिया** ७२

§१४. मेसोपोटामिया में वर्गों की उत्पत्ति ७२
§१५. सबसे प्राचीन मेसोपोटामियाई राज्य और बेबीलोनी साम्राज्य ७६
§१६. पहली सहस्राब्दी ईसापूर्व का पश्चिमी एशिया ८०
§१७. पश्चिमी एशिया के प्राचीन निवासियों की संस्कृति ८४

पांचवां अध्याय। **प्राचीन भारत** ९१

§१८. पहली सहस्राब्दी ईसापूर्व के आरंभ तक का भारत ९१
§१९. पहली सहस्राब्दी ईसापूर्व में भारत में दासप्रथात्मक राज्यों का आविर्भाव और विकास ९४
§२०. प्राचीन भारत की संस्कृति ९७
§२१. प्राचीन श्रीलंका १०१

छठा अध्याय। **प्राचीन चीन** १०५

§२२. चीनी राज्य का निर्माण १०५
§२३. चीन में जन विद्रोह १०६
§२४. प्राचीन चीन की संस्कृति ११३

प्राचीन यूनान

सातवां अध्याय। **यूनान का आरंभिक इतिहास** १२०

§२५. प्राचीन यूनान की भौगोलिक व प्राकृतिक विशेषताएं और लोग . . . १२०
§२६. प्राचीन यूनान की पौराणिक कथाएं १२३
§२७. होमर के महाकाव्य 'इलियड' और 'ओडिसी' १२७
§२८. ग्यारहवीं-नौवीं शताब्दी ईसापूर्व में यूनानियों के धंधे और यूनान में वर्गों की उत्पत्ति १३२
§२९. प्राचीन यूनानियों का धर्म १३७

आठवां अध्याय। **आठवीं-छठी शताब्दी ईसापूर्व में यूनान में दासप्रथात्मक व्यवस्था की स्थापना और नगर-राज्यों का निर्माण** . . १४२

§३०-३१. एथेंस के दासप्रथात्मक राज्य का उदय। १४२
आठवीं-सातवीं शताब्दी ईसापूर्व का अभिजाततांत्रिक एथेंस १४२
सामान्य जन की विजय और एथेंस राज्य का सुदृढ़ीकरण १४५
§३२. आठवीं-छठी शताब्दी ईसापूर्व में स्पार्टा का दासप्रथात्मक राज्य . . . १४६
§३३. यूनान में और भूमध्य तथा काला सागरों के तट पर नगर-राज्यों का निर्माण . . १५४

नौवां अध्याय। **पांचवीं शताब्दी ईसापूर्व में यूनान में दासप्रथा का विकास और एथेंस का उत्कर्ष** १५९

§३४. यूनानी-फारसी युद्ध १५९
§३५. पांचवीं शताब्दी ईसापूर्व के यूनान में दासप्रथा १६५
§३६. पांचवीं शताब्दी ईसापूर्व के मध्य में एथेंस का शक्ति-प्रसार और समृद्धि . . १६८
§३७. एथेंस का दासप्रथात्मक जनतंत्र १७१

दसवां अध्याय। **पांचवीं-चौथी शताब्दी ईसापूर्व में यूनानी संस्कृति का उत्कर्ष** १७५

§३८. लेखन-कला, शिक्षा और ओलिंपिक खेल १७५
§३९. प्राचीन यूनानी रंगमंच १७६
§४०. पांचवीं शताब्दी ईसापूर्व की यूनानी वास्तुकला, मूर्तिकला और चित्रकला . . १८४
§४१. प्राचीन यूनान में ज्ञान-विज्ञान १९०

ग्यारहवां अध्याय। **पूर्वी भूमध्यसागर से लगे प्रदेशों में यूनानी-मक़दूनी राज्यों की स्थापना** १९४

§४२. चौथी शताब्दी ईसापूर्व में यूनान का पतन और उसपर मक़दूनिया का आधिपत्य १९४
§४३. सिकंदर के साम्राज्य का निर्माण और पतन १९८
§४४. चौथी शताब्दी के अंत – दूसरी शताब्दी ईसापूर्व में पूर्वी भूमध्यसागर से लगे प्रदेशों की अर्थव्यवस्था और संस्कृति २०१

प्राचीन रोम

बारहवां अध्याय। **रोमन गणतंत्र का निर्माण और उसकी इटली-विजय** २१८

§४५. रोम का आरंभिक इतिहास २१०
§४६. तीसरी शताब्दी ईसापूर्व के मध्य का रोमन अभिजातीय गणतंत्र २१५

तेरहवां अध्याय। **रोमन गणतंत्र का भूमध्यसागर क्षेत्र का सबसे शक्तिशाली राज्य में बन जाना** २२०

§४७. पश्चिमी भूमध्यसागर क्षेत्र में प्रभुत्व के लिए रोम और कार्थेज का संघर्ष . . २२०
§४८. दूसरी शताब्दी ईसापूर्व की रोमन विजयें २२४
§४९. दूसरी-पहली शताब्दी ईसापूर्व की रोमन दासप्रथा २२६
§५०. इटली के किसानों की दुर्दशा और उनका भूमि के लिए संघर्ष २३२
§५१. स्पार्टकस के नेतृत्व में दासों का विद्रोह २३६

चौदहवां अध्याय। **रोमन गणतंत्र का पतन और रोमन साम्राज्य का उत्कर्ष** २४०

§५२. रोम में सीज़र द्वारा सत्ता पर अधिकार २४०

§५३. आक्टेवियन आगस्टस और उसके उत्तराधिकारियों के काल का रोमन साम्राज्य . . २४३

पंद्रहवां अध्याय। **गणतंत्र-काल के अंत और साम्राज्य-काल के आरंभ में रोम की संस्कृति और जन-जीवन** २४६

§५४. प्राचीन रोम की कला २४६

§५५. साम्राज्यकालीन रोम नगर २५३

सोलहवां अध्याय। **रोमन साम्राज्य का पतन और विनाश** २५६

§५६. दूसरी शताब्दी के अंत और तीसरी शताब्दी में दासप्रथात्मक अर्थव्यवस्था के पतन का आरंभ २५६

§५७. तीसरी शताब्दी में साम्राज्य का दुर्बल होना और सम्राट डायोक्लीशियन के शासन काल में उसका पुनः सुदृढ़ बनना २६१

§५८. ईसाई धर्म की उत्पत्ति २६४

§५९. चौथी शताब्दी में रोमन साम्राज्य की हालत का और बिगड़ना २६६

§६०. पश्चिमी रोमन साम्राज्य का पतन २६९

उपसंहार २७७

विषय परिचय

इतिहास शब्द संस्कृत से आया है और उसका अर्थ है: निश्चय ही ऐसा था या हुआ था। इतिहास एक विज्ञान है। वह इसका अध्ययन करता है कि भूतकाल में लोग किस प्रकार रहते थे, उनकी मेहनत और कामों ने धरती को कैसे बदला, खुद उनके जीवन में क्या परिवर्तन आये और क्यों आये और आज हम उसे जैसा पाते हैं, वैसा वह क्यों बना।

हर देश का इतिहास **विश्व इतिहास** का, सारी धरती के लोगों के इतिहास का अंग होता है।

काल या समय के हिसाब से इतिहास को मोटे तौर पर तीन भागों में बांटा जाता है: प्राचीन काल, मध्य काल और आधुनिक काल। इस पुस्तक में हम आपको बतायेंगे कि **प्राचीन काल** में लोग कैसे रहते थे और उन्होंने क्या-क्या किया।

किंतु हमें कैसे मालूम हुआ कि तब, यानी हज़ारों साल पहले लोग कैसे रहते थे?

बात यह है कि लोग अपने पीछे अपने कुछ निशान छोड़ जाते हैं। इन्हें हम अवशेष या पुरावशेष भी कहते हैं। इन्हीं से वैज्ञानिक यह पता चलाते हैं कि वे लोग कौन थे और कैसे रहते थे।

"बोलते चिह्न"। प्राचीन काल में ही लोगों ने अपने कामकाज के ब्योरों, घटनाओं, आदि को लिखकर दर्ज करना सीख लिया था। वे पेड़ की छाल, पत्तों, पत्थर, चमड़े, आदि पर लिखा करते थे। ऐसे सबसे प्राचीन लेख कोई ५००० वर्ष पुराने हैं। (पृष्ठ ३६-३७ पर दी गयी काल-मापनी पर यह काल-बिंदु खोजें।)

मगर हमें पुराने लेखों को पढ़ना भी आना चाहिए। उनमें से बहुत से ऐसे चिह्नों अथवा लिपियों और भाषाओं में लिखे गये हैं, जिनका लोगों ने अरसे से प्रयोग करना बंद कर दिया है। विद्वानों ने उन्हें पढ़ने का बीड़ा उठाया और प्राचीन विश्व की बहुत सी जातियों के लेखों को पढ़ने में वे सफल भी हो गये। जो चिह्न पहले समझ में नहीं आते थे, वे सहसा "बोलने" लग गये। उनसे हमें प्राचीन काल के शक्तिशाली राज्यों, जन विद्रोहों, वैज्ञानिक, दार्शनिक और राजनीतिक विचारों और बहुत सी दूसरी बातों के बारे में मालूम हुआ।

इतिहास की लिखित स्रोत-सामग्रियां। १. प्राचीन मिस्र का एक शिलालेख। बायें इस शिलालेख के दो शब्दों को बड़े आकार में लिखा गया है। तीर दिखाते हैं कि ये शब्द शिलालेख में किस स्थल पर हैं। इस शिलालेख ने प्राचीन मिस्री लेखों को पढ़ना संभव बनाने के लिए कुंजी का काम किया था। २. मिट्टी की पाटी पर खुदा हुआ लेख। ३. प्राचीन रोमन "पुस्तकें" और लकड़ी की पिटारी, जिनमें उन्हें सुरक्षित रखा जाता था। (आगे चलकर हम आपको इन ऐतिहासिक स्रोत-सामग्रियों के बारे में विस्तार से बतायेंगे।)

ऐतिहासिक जानकारी देनेवाले लेखों को **लिखित स्रोत-सामग्री या ऐतिहासिक दस्तावेज** कहा जाता है। इनमें से कई के बारे में हम आपको आगे चलकर बतायेंगे।

वस्तुएं और चित्र भी बताते हैं। प्राचीन लोग लेखों के अलावा दूसरे "निशान" भी छोड़ गये हैं, जैसे अपने काम के औजार, इस्तेमाल की दूसरी चीजें, अपनी क़ब्रें, घरों के खंडहर, आदि। एक कहावत है: जैसा घर, वैसा जीवन। वैज्ञानिक लोग कहते हैं: हम प्राचीन मानव की हड्डियां देखकर बता सकते हैं कि वह शक्ल-सूरत से कैसा था। हम प्राचीन मानव की वस्तुएं देखकर बता सकते हैं कि वह क्या करता था, क्या जानता था और कैसे रहता था। प्राचीन चित्र भी बहुत कुछ बता सकते हैं। उनमें लोगों के जीवन, उनके कामकाज, लड़ाइयों, उत्सव-त्यौहारों, उनकी इस्तेमाल की चीजों, आदि का चित्रण हुआ है।

वस्तुओं और चित्रों को **भौतिक स्रोत-सामग्री** कहा जाता है। वे उस बहुत ही प्राचीन काल की भी हो सकती हैं, जब लोगों को लिखना नहीं आता था। इस अति प्राचीन काल को वैज्ञानिक **प्रागैतिहासिक काल** कहते हैं और इसके बारे में जानने का मुख्य साधन भौतिक स्रोत-सामग्री ही है।

प्राचीन "निशानों" के खोजी। आपने देखा होगा कि चीजें अगर कुछ दिन भी अछूती पड़ी रहें, तो उनपर धूल की परत जम जाती है। प्राचीन काल के लोगों द्वारा छोड़ी हुई चीजों पर इन हजारों वर्षों में धूल, मिट्टी या रेत की इतनी मोटी परत जम गयी है कि उसपर घास और पेड़-पौधे भी उग आये हैं। इसलिए उनकी खोज आसान नहीं है। जहां ये चीजें हो सकती हैं, वैज्ञानिक वहां खुदाई करते हैं।

भौतिक स्रोत-सामग्रियों के आधार पर पुराने जमाने के लोगों के जीवन का अध्ययन

करने के विज्ञान को **पुरातत्त्व** कहते हैं और जो वैज्ञानिक इस प्रकार की खुदाई और उसमें प्राप्त चीजों का अध्ययन करते हैं, वे **पुरातत्त्ववेत्ता** कहलाते हैं। पुरातत्त्ववेत्ताओं द्वारा खोजी हुई चीजें संग्रहालयों में रखी जाती हैं।

"प्रागैतिहासिक काल" की यात्रा। आज भी कई ऐसे टापू और स्थान हैं, जहां के निवासी बहुत ही पिछड़े हुए हैं। हाल ही तक इन्हें न सिर्फ़ यही नहीं मालूम था कि लिखना क्या होता है, बल्कि वे धातु का इस्तेमाल भी नहीं जानते थे। इन लोगों को **जंगली** कहा जाता है। इनके जीवन और प्रागैतिहासिक काल (लेखन कला के आविर्भाव से पहले के काल) के लोगों के जीवन में बहुत समानताएं पायी जाती हैं। इन जांगल जातियों की बस्तियों में पहुंचकर वैज्ञानिकों को लगता है कि वे मानो प्रागैतिहासिक काल में पहुंच गये हैं। ये वैज्ञानिक – मानवविज्ञानी – इन लोगों के जीवन, रीति-रिवाजों

इतिहास की भौतिक स्रोत-सामग्रियां। १. आर्मीनिया, सोवियत संघ, में मिली लकड़ी की गाड़ी। २. आदिम मानव द्वारा गुफा की दीवार पर निर्मित बाइसन (एक प्रकार का अरना) का चित्र। ३. पत्थर की कुल्हाड़ी। ४. एक प्राचीन यूनानी चित्र। ५. रोम का एक वास्तु-स्मारक। (आगे चलकर आपको मालूम होगा कि इन स्रोत-सामग्रियों से हमें क्या ऐतिहासिक जानकारी मिली है।)

आस्ट्रेलियाई आदिवासी। (छायाचित्र।) ये पिछड़ी हुई जातियों में से थे। उनमें से अधिकांश को आस्ट्रेलिया में यूरोप से आकर बसनेवाले उपनिवेशकों ने मार डाला था।

और विश्वासों का अध्ययन करते हैं और दुनिया को उनके बारे में बताते हैं। प्रसिद्ध रूसी यात्री मिक्लूखो-मकलाई भी ऐसे ही एक वैज्ञानिक थे।

पिछड़ी हुई जातियों के अध्ययन से हमें प्राचीन काल के लोगों के जीवन के बारे में जानने में मदद मिलती है।

? १. प्राचीन विश्व का इतिहास क्या बताता है? उसके बारे में जानने के क्या साधन हैं? २. पुरातत्त्व किसे कहते हैं? ३. आपने पुरातत्त्ववेत्ताओं के काम के बारे में पहले भी कभी सुना या पढ़ा है? इतिहास और कहानी में क्या अंतर है?

यह पुस्तक कैसे पढ़ें?

इस पुस्तक को पढ़ते हुए साथ ही छायाचित्रों और चित्रों को भी ध्यान से देखें।

पृष्ठ ३-६ पर दी गयी विषय-सूची से आप देखेंगे कि पुस्तक को चार भागों में, भागों को अध्यायों में और अध्यायों को § चिह्न लगे परिच्छेदों में बांटा गया है। हर परिच्छेद किसी खास विषय से संबंध रखता है और उसके बारे में सारी आवश्यक जानकारी देता है। हर परिच्छेद में आप कई अनुच्छेद पायेंगे।

कई परिच्छेदों के साथ ऐतिहासिक स्रोत-सामग्रियां दी गयी हैं। लिखित स्रोत-सामग्रियों को आप उद्धरण चिह्नों के भीतर या परिच्छेद के अंत में मोटे अक्षरों में छपा हुआ पायेंगे। भौतिक स्रोत-सामग्रियों के सादे या रंगीन छायाचित्र दिये गये हैं।

पुस्तक में आधुनिक चित्रकारों द्वारा ऐतिहासिक स्रोत-सामग्री के आधार पर बनाये हुए चित्र भी हैं, जिनमें प्राचीन लोगों का जीवन अंकित किया गया है। प्राचीन और आधुनिक चित्रों में अंतर करना ज़रूरी है। उनके शीर्षकों में बता दिया गया है कि वे प्राचीन हैं या आधुनिक। प्राचीन कलाकृतियों के रंगीन छायाचित्रों के लिए "रंगीन छायाचित्र" शब्द और आधुनिक चित्रों के लिए "रंगीन चित्र" शब्द प्रयुक्त किये गये हैं।

पुस्तक पढ़ते हुए अपने सामने नक़्शा भी रख लें। परिच्छेद के शीर्षक में उससे संबंधित नक़्शे की क्रमसंख्या दी गयी है।

नया परिच्छेद शुरू होने से पहले यदि प्रश्न दिये गये हैं, तो उनका उत्तर दें। कठिनाई होने पर पहले के परिच्छेदों को फिर से पढ़ें। इससे आपको आगे की सामग्री हृदयंगम करने में आसानी होगी।

हर परिच्छेद को पूरा और ध्यान से पढ़ें और जो बातें **मोटे** अक्षरों में दी गयी हैं, उन्हें अच्छी तरह याद कर लें।

सभी नामों का सही-सही उच्चारण करें और याद रखें। पुस्तक में जो भौगोलिक नाम आते हैं, उन्हें नक़्शे में खोजें। परिच्छेद की सामग्री से संबंधित छायाचित्रों, चित्रों, आरेखों और तालिकाओं को ध्यान से देखें। यदि कहीं किसी लिखित स्रोत-सामग्री को पढ़ने को कहा गया है, तो उसे पढ़ें और उससे संबंधित प्रश्नों का उसमें उत्तर खोजें।

हर परिच्छेद को पढ़ लेने के बाद उसके अंत में दिये गये प्रश्नों के उत्तर तैयार करें। कठिन प्रश्नों पर तारे का निशान है।

जो परिच्छेद पढ़ लिया है, उसे पुस्तक की मदद के बिना, पहले एक-एक हिस्सा करके, फिर सारा ही एक साथ बोलकर दोहरायें। रटने की ज़रूरत नहीं है। पढ़ी हुई सामग्री को अपने शब्दों में दोहराना, बताना आना चाहिए।

दोहराते समय तिथियों व नामों को, चित्रों, दस्तावेज़ों, आदि से प्राप्त जानकारी और निष्कर्षों को भी शामिल करना न भूलें।

इस तरह की पुस्तक में प्राचीन विश्व के इतिहास की सभी घटनाओं के बारे में तो बता पाना संभव नहीं है। अतः इस विषय पर यदि दूसरी पुस्तकें मिल सकें, तो उन्हें भी अवश्य पढ़ें।

आदिम लोगों का जीवन

◆

आदिम संग्राहक और शिकारी

§१. सबसे प्राचीन लोग कैसे थे और किस प्रकार रहते थे

१. सबसे प्राचीन लोग। सबसे प्राचीन लोग, जिन्हें हम **पुरामानव** या **आदिमानव** भी कहते हैं, पृथ्वी पर २० लाख वर्ष से भी पहले प्रकट हुए थे। देखने में वे बड़े बंदरों जैसे लगते थे। उनका माथा संकरा और ढलवां था और मस्तिष्क बंदर से बड़ा, मगर आज के मनुष्य से कहीं छोटा। वे आगे को काफ़ी झुककर चलते थे और हाथ घुटनों से नीचे तक लटके रहते थे। अंगुलियां बेडौल होने के कारण वे बहुत मामूली काम ही कर पाते थे, जैसे पकड़ना, खोदना या चोट करना।

वे मुंह से कुछ अस्पष्ट आवाजें ही निकाल पाते थे और उन्हीं के जरिये अपना क्रोध, भय, आदि दिखाते थे, सहायता के लिए बुलाते थे और दूसरों को खतरे की चेतावनी दिया करते थे।

२. काम करने के औज़ार। मनुष्य के पास अधिकांश हिंस्र जानवरों जैसे जबर्दस्त पंजे और मजबूत नाखून व दांत नहीं थे। किंतु प्रागैतिहासिक आदमी तेज़ किनारीवाले पत्थर का इस्तेमाल करना जान गया था। पत्थर की धार तेज़ बनाने के लिए वह उसपर किसी दूसरे पत्थर से चोट करके उससे छोटी-छोटी चिप्पियां तोड़ देता था और इस तरह एक ऐसा औज़ार बना लेता था, जिससे हड्डी तोड़ी जा सकती थी, मूसल बनाया जा सकता था और ज़मीन खोदने या कुरेदने के लिए नुकीला डंडा तैयार किया जा सकता था। इस औज़ार को **हस्त-कुठार** या **हथकुल्हाड़ा** कहते हैं। वह किन्हीं भी दांतों व नाखूनों से मजबूत था और भारी मूसल की चोट भालू के पंजे की चोट से भी ज़ोरदार होती थी।

पत्थर का हस्त-कुठार, ज़मीन खोदने-कुरेदने का डंडा और **मूसल** आदमी के पहले औज़ार थे। उनकी मदद से लोग अपना भोजन जुटाया करते थे। कोई भी जानवर ऐसे सबसे मामूली औज़ार भी नहीं बना सकता।

आदिमानव और जानवरों में पहला और सबसे मुख्य भेद यही था कि आदिमानव अपने लिए काम के औज़ार खुद बना सकता था।

३. सबसे प्राचीन लोगों के धंधे। लोग जंगली फल, बेरियां, पक्षियों के अंडे, आदि बिनते थे, खाने-योग्य जड़ें और कीड़े-मकोड़ों की डल्लियां खोदते थे और खोहों में छिपे छोटे जानवर

१ २ ३ ४
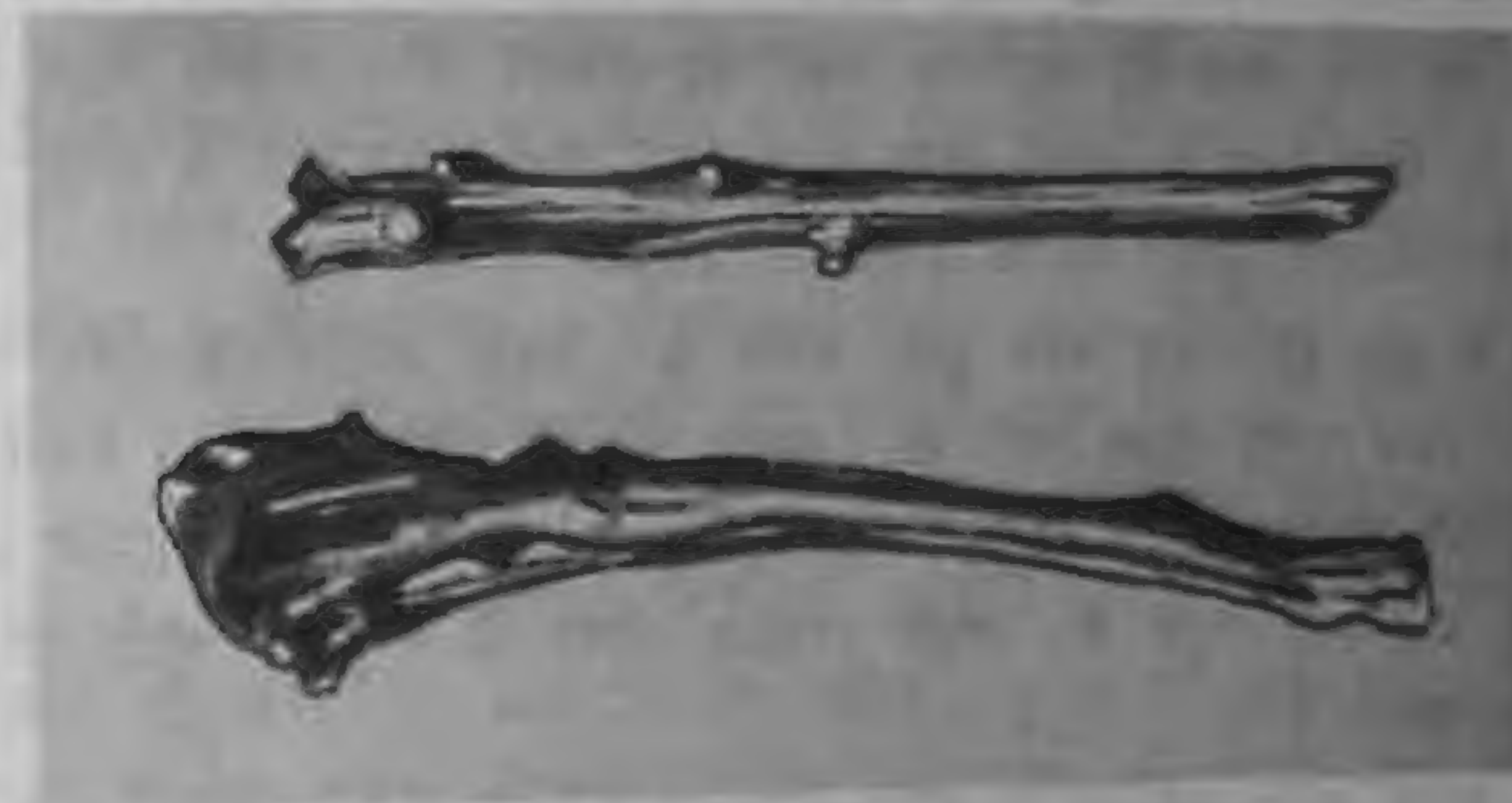
आदिम मानव के काम करने के औज़ार। १,२,३. पत्थर के बने हस्त-कुठार। ४. ज़मीन खोदने का डंडा और मूसल। आदिम लोग ऐसे औज़ारों से क्या-क्या काम कर सकते थे?

पकड़ते थे। ऐसे धंधे को **खाद्य-संग्रहण** कहते हैं। इसके अलावा वे झुंड बनाकर और मूसलों, डंडों और कुठारों से लैस होकर बीमार या अकेले जानवरों – बकरों, हिरणों, सूअरों, आदि – का शिकार भी करते थे। (देखें: रंगीन चित्र १।)

इस तरह खाद्य-संग्रहण और शिकार आदमी के पहले धंधे थे।

४. आग का उपयोग। जंगली जानवरों की भांति सबसे प्राचीन लोग भी आग से डरते थे। बिजली गिरने से जंगल में लगी आग से डरकर वे भाग जाते थे। उनके लिए इससे भी डरावना ज्वालामुखियों के विस्फोट से बहनेवाला लावा था।

किंतु लोगों ने देखा कि भयभीत कर देनेवाली आग विश्वसनीय मित्र भी हो सकती है: वह हिंस्र जानवरों से रक्षा कर सकती है और ठंडे मौसम में गरमी दे सकती है। इसलिए वे जलते हुए जंगल या ज्वालामुखी से आग लेकर अलाव जलाने लगे। वे दिन-रात इस आग की रखवाली करते थे और उसे बुझने नहीं देते थे। यदि उन्हें नयी जगह पर जाना होता था, तो जलती हुई टहनी भी साथ ले जाते थे। रात में अलाव के गिर्द बैठे या सोये लोगों

पर खूंखार जानवर हमला करने की हिम्मत नहीं कर पाते थे। आदमी के हाथ में आग देखकर वे पीछे हट जाते थे। इसके साथ ही लोगों ने पाया कि आग में भुना हुआ मांस और कंद-मूल कहीं अधिक स्वादिष्ट होते हैं।

आग का उपयोग जानकर लोग जानवरों से और भी भिन्न बन गये।

५. मानव यूथ। सबसे प्राचीन लोगों के जीवन में क़दम-क़दम पर कठिनाइयां और खतरे थे। किसी बड़े जानवर से सामना होने पर आदमी का बच पाना प्रायः असंभव होता था। फिर लोग हमेशा ही पर्याप्त भोजन भी नहीं जुटा पाते थे। उनमें से आधे से ज्यादा २० वर्ष की आयु का होने से पहले ही मर जाते थे – कुछ जंगली जानवरों का शिकार बन जाते थे, तो कुछ भूख और बीमारियों का।

सबसे प्राचीन लोग अकेले नहीं रह सकते थे, क्योंकि वैसी हालत में न भोजन जमा किया जा सकता था, न आग ही सुरक्षित रखी जा सकती थी। अकेले रहने से वे या तो भूखों मर जाते, या फिर हिंस्र जानवरों द्वारा मार डाले जाते। इसलिए वे समूह बनाकर रहते थे और मिलजुलकर भोजन जुटाते थे व आग का उपयोग करते थे।

एक समूह में कुछ ही दर्जन लोग हुआ करते थे। उससे अधिक के लिए एक ही जगह पर पर्याप्त आहार मिल पाना संभव नहीं था। समूह स्थायी नहीं होते थे। जिस तरह जंगली जानवर एक झुंड को छोड़कर दूसरे झुंड में जा मिलते हैं, वैसे ही आदिमानव भी एक समूह से दूसरे समूह में आते-जाते रहते थे। सबसे प्राचीन लोगों के समूहों, झुंडों या टोलियों को **मानव यूथ** कहा जाता है।

मानव यूथ केवल गरम इलाक़ों में ही रह सकते थे, जहां वनस्पतियां, फल और कंद-मूल भी बहुत थे और वस्त्रों तथा आवास के बिना भी रहा जा सकता था। सबसे प्राचीन लोगों के अवशेष – उनकी हड्डियां, दांत और काम के औज़ार – अफ़्रीका, एशिया और यूरोप में पाये गये हैं।

उन्नीसवीं सदी के अंत में दक्षिण-पूर्वी एशिया में, जावा द्वीप पर लाखों वर्ष पहले के लोगों की हड्डियों और दांतों के टुकड़े मिले थे। उनका अध्ययन करके वैज्ञानिकों ने पता चलाया कि ये लोग किस प्रकार के थे। इन्हें **पिथेकेंथ्रोपस**, यानी **कपि-मानव** (**एप-मैन**) नाम दिया गया। बहुत समय तक माना जाता रहा कि पिथेकेंथ्रोपस ही सबसे प्राचीन मानव था। किंतु बीसवीं सदी के मध्य में पूर्वी अफ़्रीका में इससे भी कहीं प्राचीन मनुष्य की हड्डियां और औज़ार मिले। वैज्ञानिकों ने उसे **उपकरण-निर्माता मानव** (**होमो फ़ेबर**) नाम दिया। पता चला कि वह १० लाख वर्ष से भी पहले रहता था। अधिकांश वैज्ञानिकों का कहना है कि पृथ्वी पर उपकरण-निर्माता मानव कोई साढ़े १७ लाख वर्ष पहले रहा करते थे। पूर्वी अफ़्रीका में खुदाइयां आज भी जारी हैं।

? १. सबसे प्राचीन लोगों के जीवन के बारे में आप क्या जानते हैं? २. उनमें और वर्तमान लोगों में क्या अंतर है? ३. आदिमानव और जानवरों में मुख्य अंतर क्या है? ४. सबसे प्राचीन लोगों के समूह को क्या कहते हैं और क्यों कहते हैं?

§ २. शिकारियों के गोत्र समुदाय

१. पृथ्वी पर हिमयुग का आगमन। पृथ्वी पर लोगों को रहते लाखों वर्ष बीत गये थे। किंतु आज से कोई १ लाख वर्ष पहले शीत एकाएक बहुत बढ़ गया। उससे सबसे अधिक प्रभावित यूरोप हुआ। शीतकाल लंबा और बहुत ठंडा हो गया। अल्पकालीन ग्रीष्म में उत्तरी यूरोप में हिम पिघल भी नहीं पाता था। यहां सारी धरती को एक विशाल **हिमावरण** ने ढक लिया था, जिसकी मोटाई कहीं-कहीं २००० मीटर तक थी। हिमावरण के दक्षिण में टुंड्रा फैल गये, जिनमें वनस्पतियां बहुत कम थीं। गरमी के आदी जीव-जंतु या तो शीत से मर गये या दक्षिण की ओर भाग गये। मनुष्य हिमयुग की इन अत्यंत कठिन परिस्थितियों में भी जीवित बचा रहा।

२. काम के औज़ारों का विकास। अपने लाखों वर्षों के अस्तित्व के दौरान लोगों ने पत्थरों को पतले, चपटे टुकड़ों में तोड़ना और उनसे तरह-तरह के औज़ार – **भाले की नोकें, चाकू, खुरचनियां (स्क्रैपर) और छेदक (बोरर)** – बनाना सीख लिया था।

गूदा निकालने के लिए हड्डी तोड़ते हुए उन्होंने देखा कि हड्डी के टुकड़ों की किनारियां पैनी होती हैं। अतः वे हड्डियों और सींगों से **सुए, सुइयां और कांटेदार बर्छियां (हार्पून)** बनाने लगे। लेकिन पत्थर के औज़ार फिर भी आदमी के मुख्य औज़ार बने रहे। उनसे ही वह लकड़ी, हड्डी या सींग को काट, तोड़, छील, खुरच या घिस सकता था।

लकड़ी को घिसते समय लोगों ने पाया कि सूखी लकड़ी का एक टुकड़ा दूसरे टुकड़े पर ज़ोर से और देर तक रगड़ने से चिंगारी छूटती है। इस तरह आदमी ने स्वयं आग पैदा करना सीखा। अब अलाव जलाने के लिए संयोगवश कहीं मिली आग पर निर्भरता ख़त्म हो गयी।

३. शिकार। मानव यूथ भालों और कांटेदार बर्छियों से लैस होकर जंगली बैलों, हिरणों और घोड़ों के झुंडों का शिकार किया करते थे। शिकारी जंगली जीवों के झुंडों का पीछा करते थे और भालों तथा जलती हुई टहनियों से उन्हें डराकर उधर भागने को मजबूर करते थे, जहां कोई बड़ी चट्टान या कगार होती थी या दूसरे शिकारी घात लगाये बैठे होते थे। (देखें रंगीन चित्र २।)

लोग लंबे रोयेंवाले **महागजों (मैमथों)** का भी शिकार किया करते थे। महागज अपने भारी-भरकम पैर से आदमी को कुचल सकता था या अपनी ज़बर्दस्त सूंड से प्रहार करके उसे मार सकता था। लेकिन लोग महागज के शिकार के लिए पहले एक जगह पर बड़ा सा गढ़ा खोद लेते थे, वे उसे लकड़ियों तथा टहनियों से ढक देते थे और फिर आग दिखाकर डराते हुए उसे उधर खदेड़ते थे। गढ़े में गिरकर महागज बाहर नहीं निकल सकता था और तब शिकारी उसे मार डालते थे।

शिकार लोगों का मुख्य धंधा बन गया। उससे उन्हें भोजन ही नहीं, वस्त्र भी मिलता था। वे मारे हुए जानवरों की खाल पहना करते थे।

१

२

सबसे प्राचीन मानवों से "प्राज्ञ मानव" तक। १. कोई १० लाख वर्ष पहले के मानव का सिर, कोई १ लाख वर्ष पहले के मानव का सिर; कोई ३० हज़ार वर्ष पहले के मानव का सिर। (पुरातत्त्ववेत्ताओं को मिली खोपड़ियों के आधार पर पुनर्कल्पित।) **प्राचीन लोगों का चेहरा और कपाल कैसे बदलते गये?** २. बड़े वानर का पंजा, कोई ३० हज़ार वर्ष पहले के मानव का हाथ। (प्राचीन हड्डियों के आधार पर पुनर्कल्पित।) हाथ और पंजे में बुनियादी फ़र्क क्या है?

३० हज़ार वर्ष पहले आदमी आज के आदमियों जैसा बन गया। वैज्ञानिकों ने उसे **प्राज्ञ मानव** (होमो सेपियन्स) नाम दिया है।

महान विद्वान और क्रांतिकारी फ़्रेडरिक एंगेल्स ने कहा है कि मानव का सृजन श्रम ने ही किया है।

५. गोत्र समुदायों का उदय। मिलजुलकर काम करने और ख़तरों का मिलजुलकर सामना करने से लोगों के बीच आपस में घनिष्ठ संबंध क़ायम हो गये थे। कोई ३० हज़ार वर्ष पहले **गोत्र समुदायों** या **गोत्रों** अथवा **कुलों** का आविर्भाव हुआ।

एक गोत्र में कुछ दर्जन या कुछ सौ आदमी होते थे। एक ही पुरखे की संतान होने के कारण वे **संबंधी** या **सगोत्र** माने जाते थे। सभी सगोत्र लोग एक ही गुफा में या अपने लिए पास-पास कई बड़ी झोंपड़ियां बनाकर रहते थे। पुरुष शिकार करते थे, मछलियां पकड़ते थे और स्त्रियां फल तथा कंद-मूल इकट्ठा करती थीं, बच्चों की देखभाल करती थीं, खालें साफ़ करती थीं और उनसे वस्त्र बनाती थीं। गोत्र में स्त्रियों का बड़ा आदर किया जाता था। बच्चे ३-४ वर्ष की आयु से ही बड़ों की मदद करने लग जाते थे। पुरुषों और स्त्रियों द्वारा एकत्र सारा आहार कुल के सभी लोगों के बीच बराबर-बराबर बांटा जाता था। खालें, हड्डियां और सींग भी सबकी साझी संपत्ति थे। शिकार के काम, औज़ारों के निर्माण और मारे गये जानवरों के बंटवारे का निदेशन **गोत्र-प्रमुख**, यानी गोत्र के जो सबसे अनुभवी लोग थे, वे करते थे। (देखें: रंगीन चित्र ३।)

इस प्रकार **गोत्र समुदाय या गोत्र (कुल)** एक ही वंश के उन लोगों के समूह को कहते हैं, जो मिलजुलकर रहते व काम करते थे और जिनकी सारी संपत्ति साझी होती थी।

गोत्र यूथ से कहीं अधिक मज़बूत और संगठित था। सबसे प्राचीन मानव यूथ के स्थान पर गोत्र समुदाय का आना लोगों के विकास के एक नये, अधिक ऊंचे स्तर में पहुंच जाने का द्योतक था।

किंतु मानव यूथ और गोत्र समुदाय के बीच कुछ समानताएं भी थीं, जैसे यह कि उनमें लोग मिलजुलकर काम करते थे, संपत्ति साझी होती थी, सभी आपस में समान थे और जीवन-निर्वाह के साधन मुश्किल से जुटा पाते थे।

इस व्यवस्था को, जिसमें प्रागैतिहासिक लोग मिलजुलकर काम करते थे और सारी संपत्ति साझी थी, **आदिम सामुदायिक व्यवस्था** कहते हैं। इस व्यवस्था में रहनेवाले लोगों को **आदिम लोग** कहा जाता है।

? १. "मानव का सृजन श्रम ने ही किया है" – इन शब्दों का क्या अर्थ है? २. प्रागैतिहासिक लोग हिमयुग में भी कैसे जीवित रह सके? वे तीन कारण बतायें, जिन्हें आप मुख्य मानते हैं। अगले प्रश्नों से स्पष्ट हो जायेगा कि आपका उत्तर सही है या नहीं: क) काम के औज़ार कैसे बदले? ख) लोगों के जीवन में आग का क्या महत्त्व था? ग) [illegible] करनेवाले को यूथ से निकाल दिया जाता था [illegible] आदमी की कैसी दुर्गति हो सकती थी? ३. गोत्र समुदाय किसे कहते हैं? पाठ में उसकी परिभाषा खोजें और बतायें कि "समुदाय" शब्द उसके किन लक्षणों को प्रकट करता है और "गोत्र" शब्द किन [illegible]? ४. आदिम सामुदायिक व्यवस्था के मुख्य लक्षण क्या [illegible] गोत्र और मानव यूथ में क्या अंतर है? ५. आदिम लोग किन्हें कहते हैं?

§ ३. कला और धार्मिक विश्वासों का जन्म

१. प्रागैतिहासिक कला। कोई सौ वर्ष पहले एक स्पेनी पुरातत्त्ववेत्ता एक ऐसी गुफा की जांच कर रहा था, जिसमें प्रागैतिहासिक काल में लोग रहा करते थे। अचानक उसे गुफा की छत पर रंगों से बनाये हुए जानवरों के चित्र दिखायी दिये। पहले तो उसने सोचा कि ये कोई बहुत पुराने नहीं हैं। किसी को विश्वास नहीं था कि इतने पुराने जमाने के लोग भी चित्रकारी कर सकते थे। किंतु बाद में ऐसे चित्र कई अन्य गुफाओं में भी पाये गये। पुरातत्त्ववेत्ताओं को हड्डी और सींग से बनायी हुई मनुष्यों और जानवरों की लघु मूर्तियां भी मिलीं। अब किसी को संदेह न रह गया कि ये चित्र और लघु मूर्तियां सुदूर अतीत की कलाकृतियां हैं।

कला का जन्म कोई ३० हजार वर्ष पहले हुआ था। "प्राज्ञ मानव" अपने इर्दगिर्द जो कुछ देखता था, उसे वह चित्रित करना चाहता था। अधिकांशतः वह जीवन-निर्वाह के साधन प्रदान करनेवाले शिकार के ही चित्र बनाता था। प्राचीन कलाकार ने लंबी, लचीली सूंड़वाले महागज, पीछे को तने हुए सींगोंवाले बारहसिंगे और घायल व लहूलुहान भालू के चित्रण में अद्भुत कौशल का परिचय दिया है। एक बुरी तरह घायल बाइसन (अरने) और उसके द्वारा मारे हुए आदमी का चित्र भी सुरक्षित रहा है। कुछ गुफाओं में जानवरों का वेश धारण किये और उनकी नक़ल करते लोगों के चित्र मिले हैं। आदमी के सिर पर सींग और पीछे पूंछ है और वह बारहसिंगे की हरकतों की नक़ल करते हुए मानो नाच रहा है। जानवरों और उनका पीछा करते शिकारियों की नक़ल से ही प्रागैतिहासिक नृत्यों का जन्म हुआ था।

प्रागैतिहासिक काल की कलाकृतियां सिद्ध करती हैं कि "प्राज्ञ मानव" सूक्ष्मदर्शी था, जानवरों को भली भांति जानता था और उसका हाथ पत्थर और हड्डी पर रेखाएं बड़ी दक्षतापूर्वक खींचा करता था। (देखें रंगीन चित्र ४।)

२. प्रकृति के समक्ष असहाय और भयभीत मनुष्य। प्रागैतिहासिक लोग आंधी-तूफ़ानों, बाढ़ों, बीमारियों, आदि के सामने पूर्णतः असहाय थे। वे वर्षा, तूफ़ानों, ज्वालामुखी विस्फोटों और अन्य प्राकृतिक परिघटनाओं के कारण नहीं जानते थे।

"प्राज्ञ मानव" भी प्रकृति से वैसे ही डरता था, जैसे कि उससे कहीं अधिक पहले के लोग। एक पिछड़ी जाति के लोगों ने उनके जीवन का अध्ययन करनेवाले वैज्ञानिक को बताया था: "हम खराब मौसम से डरते हैं, क्योंकि तब हमें अपने लिए खाना जुटाना बहुत मुश्किल हो जाता है। हम ठंडी झोंपड़ियों में भूखों मरने से डरते हैं। हम बीमारियों से डरते हैं, हम मुर्दों से और शिकार में मारे गये जानवरों की आत्माओं से डरते हैं। हम उस सबसे डरते हैं, जिसे हम नहीं जानते।"

सबसे प्राचीन लोगों के मुक़ाबले "प्राज्ञ मानव" यह जानने की कोशिश करता था कि प्रकृति का नियमन कौन शक्तियां करती हैं। किंतु **नैसर्गिक परिघटनाओं** के कारण न जानने की वजह से लोग उन्हें किन्हीं अज्ञात **अलौकिक शक्तियों** का कार्य बताते थे। मनुष्य अलौकिक शक्तियों को अपनी सहायता के लिए बुलाने की कोशिश करता था।

१. घायल भालू। (गुफा चित्र।) २. बारहसिंगे का वेश धारण करके उसकी नक़ल करता हुआ आदमी। (गुफा चित्र।) ३. आस्ट्रेलियाई आदिवासी शिकार पर जाने से पहले।

३. धार्मिक विश्वासों का जन्म। शिकार पर निकलने से पहले लोग जानवर का चित्र बनाकर उसे "मारते" थे। इससे वे जानवर पर जादू या टोना करना और शिकार में सफलता सुनिश्चित करना चाहते थे।

आदमी जब स्वप्न में अपने दूर के या मरे हुए आदमियों को देखता था, तो इसका कारण वह यह बताता था कि उन लोगों की "आत्मा" उसके शरीर में बस गयी है। स्वप्न में वह मानो शरीर से बाहर आ जाती है, पृथ्वी पर विचरती है और दूसरे लोगों की "आत्माओं" से मिलती है। मृत्यु मानो इसलिए होती है कि "आत्मा" शरीर छोड़ देती है।

प्राचीन लोग सोचते थे कि "**आत्मा**" प्राणियों और वनस्पतियों में भी होती है। उन्हें लगता था कि सारी प्रकृति अलौकिक शक्तियों और भूत-प्रेतों का वास है। भूत-प्रेत अच्छे और बुरे दोनों प्रकार के होते हैं। वे शिकार में या तो मदद करते हैं या विघ्न डालते हैं। बीमारियां भी वे ही पैदा करते हैं। इसलिए बीमारी को "डराने" और शरीर से भगाने के लिए लोग उसके पास ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाते थे, डंडे चलाते थे और धूआं करते थे।

भूत-प्रेतों और अन्य अलौकिक शक्तियों में, जो मानो लोगों के जीवन और प्रकृति का नियंत्रण करते हैं, विश्वास को **धार्मिक विश्वास** कहा जाता है।

४. वैज्ञानिकों को प्राचीन लोगों में धार्मिक विश्वासों के पैदा होने के बारे में कैसे मालूम हुआ? सबसे प्राचीन लोग अपने मुर्दों को जानवरों तथा पक्षियों के खाने के लिए फेंक देते थे। आगे चलकर लोग उन्हें दफ़नाने लगे और क़ब्रों में भोजन, काम के औज़ार और आभूषण भी रखने लगे।

पुरातत्त्ववेत्ताओं द्वारा खोजी हुई क़ब्रें दिखाती हैं कि लोग "आत्मा" के अस्तित्व में विश्वास करने लग गये थे। लोग सोचते थे कि आत्मा मृत आदमी के शरीर में पुनः लौट आयेगी और तब उसे उन चीज़ों की ज़रूरत होगी, जिनकी ज़रूरत ज़िंदा आदमियों को होती है। आज भी बहुत से लोग क़ब्रों और समाधियों पर भांति-भांति के चढ़ावे और खाद्य पदार्थ चढ़ाते हैं। यह उन्हीं प्राचीन विश्वासों का अवशेष है।

प्राचीन लोगों के विश्वासों का पता उनकी कलाकृतियों से भी चलता है, जैसे भालों से छिदे हुए भालू की आकृति, बैल का सिर, जिसका दिल कांटेदार बर्छी से भिदा हुआ था, इत्यादि। जंगली जातियों के जीवन के अध्ययन से ऐसे चित्रों के अभिप्राय का पता चलता है। ऐसे चित्र वे [illegible] भी बनाती थीं। मिसाल के लिए, आस्ट्रेलियाई आदिवासी शिकार पर जाने से पहले कंगारु का चित्र बनाते थे और भालों से उसपर वार करते थे। (देखें पृष्ठ २३ पर चित्र ३।)

धार्मिक विश्वास लोगों को प्राकृतिक परिघटनाओं के वास्तविक कारण खोजने से रोकते थे।

? १. कोई ३० हज़ार वर्ष पहले लोगों के जीवन में क्या परिवर्तन आये? उत्तर के लिए §२ और ३ की सामग्री इस्तेमाल करें। २. वैज्ञानिकों को आदिम लोगों के विकास के बारे में कैसे मालूम हुआ? ३. क्या धार्मिक विश्वास हमेशा से रहे हैं? आदिम लोगों के धार्मिक विश्वासों का उदय क्यों हुआ? ४. आदिम लोग किन अलौकिक शक्तियों में विश्वास करते थे? इन विश्वासों से क्या हानि हुई?

दूसरा अध्याय

आदिम पशुपालक और कृषक

§४. पशुपालन और कृषि का आरंभ

याद करें कि गांव समुदाय में कामों का बंटवारा कैसे हुआ था। (§२ उपशीर्षक ३)।

१. पृथ्वी पर गरमी का लौटना और लोगों का फैलाव। कोई १८ हज़ार वर्ष पहले पृथ्वी पर फिर गरमी बढ़ने लगी। हिमावरण धीरे-धीरे पिघलता और उत्तर की ओर हटता गया। हिम से मुक्त भूमि पर फिर पेड़-पौधे और झाड़ियां उग आयीं। शीत के आदी जीव-जन्तु उत्तर की ओर चले गये और महागजों का पूर्ण विलोप हो गया।

जानवरों के पीछे-पीछे लोगों का कुछ हिस्सा भी उत्तर की ओर बढ़ा। नदियां और झीलें उनके रास्ते में बाधा नहीं बनीं। लोगों ने अपनी पहली नाव का निर्माण किया। यह दो-तीन मोटे-मोटे लट्ठों को बांधकर बनाया गया **बेड़ा** था। फिर वे पेड़ों के मोटे तनों से नावें (डोंगियां) भी बनाने लगे।

शनैः शनैः लोग यूरोप और एशिया के सारे उत्तरी भाग में फैल गये।

२. जानवरों को पालतू बनाना। शिकारियों की फेंकी हुई जूठन खाने के लालच से उनके डेरों के पास जंगली कुत्ते चक्कर लगाया करते थे। वे भौंककर लोगों को हिंस्र जानवरों के डेरे के निकट आने की सूचना भी दिया करते थे। शिकारियों ने इन कुत्तों को पालतू बना लिया। इस तरह **कुत्ता पहला पालतू जानवर बना** और वह न केवल अच्छा पहरेदार था, बल्कि शिकार के दौरान जानवरों का पीछा करके और घायल जानवर को पकड़ करके लोगों की मदद भी करता था।

लोगों ने मुड़ने और सीधी हो जानेवाली टहनी की ताक़त का इस्तेमाल करना भी सीख लिया। टहनी को मोड़कर और उस पर **डोरी** तानकर आदमी ने **धनुष** बनाया। उससे छोड़े हुए बाण से वह सैकड़ों क़दम दूर जानवर को भी मार सकता था।

धनुष-बाण और कुत्ते की मदद से शिकार करना पहले से भी ज़्यादा आसान हो गया। जब मांस खूब होता था, तब शिकारी सूअर, बकरी या दूसरे जानवरों के बच्चों को मारते नहीं थे, बल्कि पकड़कर लट्ठों से बने बाड़ों में बंद कर देते थे। लोगों ने सूअरों, बकरे-बकरियों, भेड़ों और गायों को भी पालतू बना लिया और उन्हें पालने लगे। इस तरह **शिकार से पशुपालन का उदय हुआ।**

१-३. सबसे प्राचीन कृषि उपकरण: कुल्हाड़ी, कुदाली और हंसिया। ४. अनाज पीसने की सिल और बट्टा। ५. पेड़ का तना खोखला करके बनायी गयी प्राचीन डोंगी और इस काम में प्रयुक्त पत्थर के औज़ार।

३. कुदाली से कृषि। स्त्रियों ने, जो खानेयोग्य जंगली अनाज बटोरा करती थीं, एक महान आविष्कार किया: उन्होंने पाया कि अनाज के दाने से नया पौधा भी पैदा हो सकता है। वे ज़मीन में अनाज के दाने गाड़ने लगीं। इस प्रकार **खाद्य-संग्रहण से खेती का जन्म हुआ।** यह कोई ९ हज़ार वर्ष पहले की बात है। (काल-मापनी पर इस काल-बिंदु को खोजें।)

खेती के लिए **कुल्हाड़ा, कुदाली** और **हंसिया** आवश्यक थे।

लोगों ने डंडे पर तेज़ धारवाला पत्थर बांधकर कुल्हाड़ा बनाया। सबसे प्राचीन कुदाली टहनीदार डंडा थी। बाद में कुदाली की नोक सींग या हड्डी से बनायी जाने लगी। हंसिया जानवर के जबड़े में तेज़ धारवाले छोटे-छोटे पत्थर लगाकर बनाया जाता था। पत्थर की सिल पर पीसकर अनाज से आटा बनाया जाने लगा। (पृष्ठ २६ और २८ पर दिये गये चित्र देखें।) इस तरह सबसे प्राचीन कृषि-औज़ार कुदाली थी और इस कृषि को **कुदाली से की जानेवाली कृषि या कुदाल कृषि** कहते हैं। बेशक फसल बहुत कम होती थी, फिर भी यह खाद्य-संग्रहण से बेहतर ही थी। इस कृषि से गोत्र की वनस्पति भोजन की जरूरत काफ़ी हद तक पूरी होने लगी।

४. पहले शिल्प। पशुपालन और खेती के साथ-साथ शिल्पों का भी विकास हुआ। हाथ से तरह-तरह के औज़ार व चीज़ें बनाने को शिल्प कहते हैं।

लोगों ने पत्थर से चीज़ें बनाने में बड़ी दक्षता प्राप्त कर ली। कोई ७ हज़ार वर्ष पहले वे पत्थर पर पालिश करना, उसे चिकनाना और उसमें छेद करना भी सीख गये।

आदमी ने देखा कि आग में मिट्टी कड़ी हो जाती है। अब वह मिट्टी से घड़े और दूसरे बर्तन बनाकर उन्हें आग में पकाने लगा। मिट्टी और पत्थरों से चूल्हे भी बनाये जाने लगे।

लोग पेड़ की छाल और टहनियों से टोकरियां बुनने लगे। इससे ऊन और वनस्पतियों के रेशों से जाल बुनना, सूत कातना और कपड़ा तैयार करना सीखने में भी मदद दी।

५. गोत्र और क़बीला। पत्थर और हड्डियों के औज़ारों से आदमी अकेले ही खेती के सर्वाधिक सभी काम नहीं कर सकता था। खेत बनाने से पहले उसपर खड़ा जंगल, झाड़ियां, आदि काटना व साफ़ करना ज़रूरी था। फिर जुताई-बोवाई के बाद फसल को मवेशियों और जंगली जानवरों से बचाना भी ज़रूरी था। ये सब काम पूरे गोत्र के ही बस की बात थे। फलस्वरूप खेत, उनपर होनेवाली फसल और मवेशी सारे ही गोत्र की साझी संपत्ति थे। गोत्र के सं

सबसे प्राचीन शिल्प: काम के औज़ार और तैयार वस्तुएं। १. पत्थर में छेद करने की युक्ति। २. छेदयुक्त पत्थर की कुल्हाड़ी। कृषि और पशुपालन के लिए पत्थर की कुल्हाड़ी का क्या महत्त्व था? ३. प्राचीन करघा। (उत्खनन से प्राप्त अवशेषों और वर्णनों के आधार पर पुनर्कल्पित।) ४. मिट्टी का घड़ा।
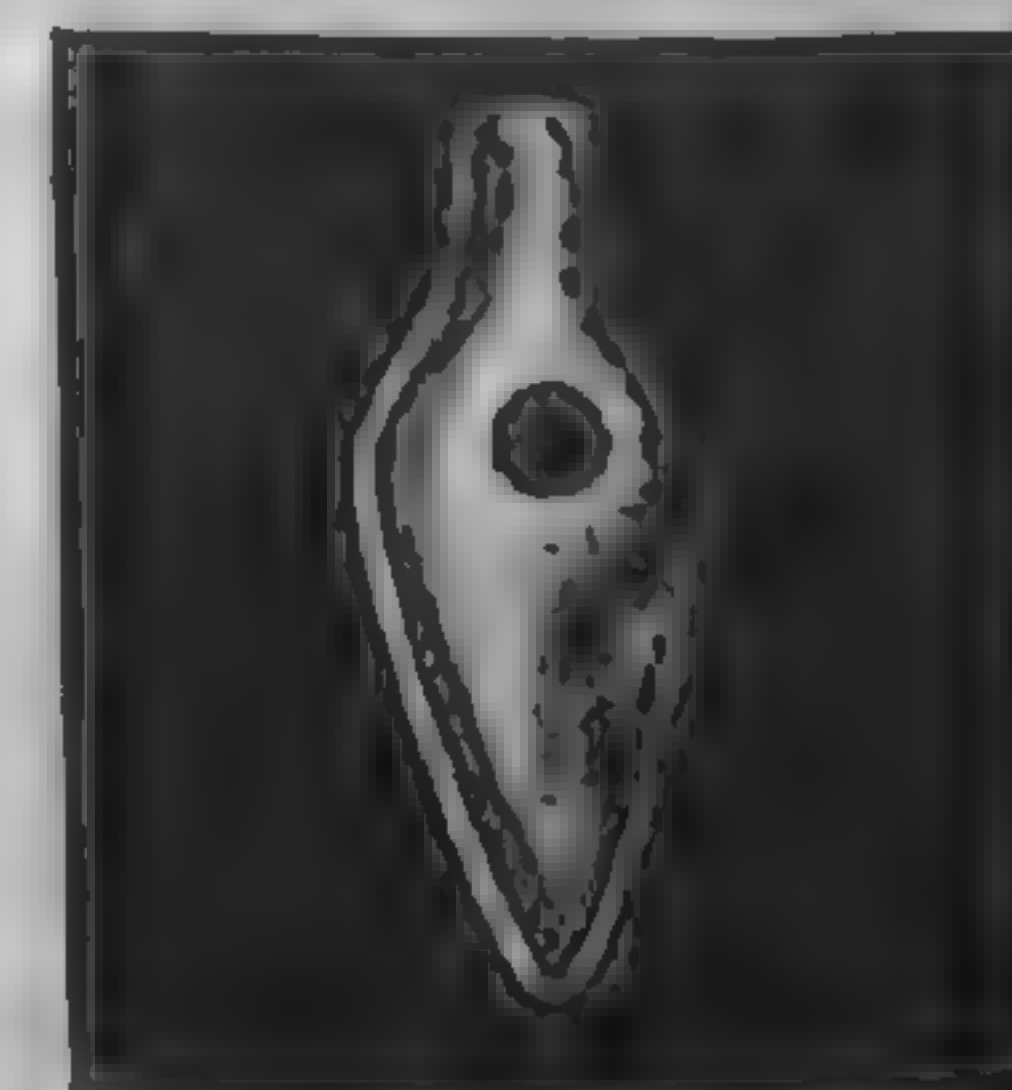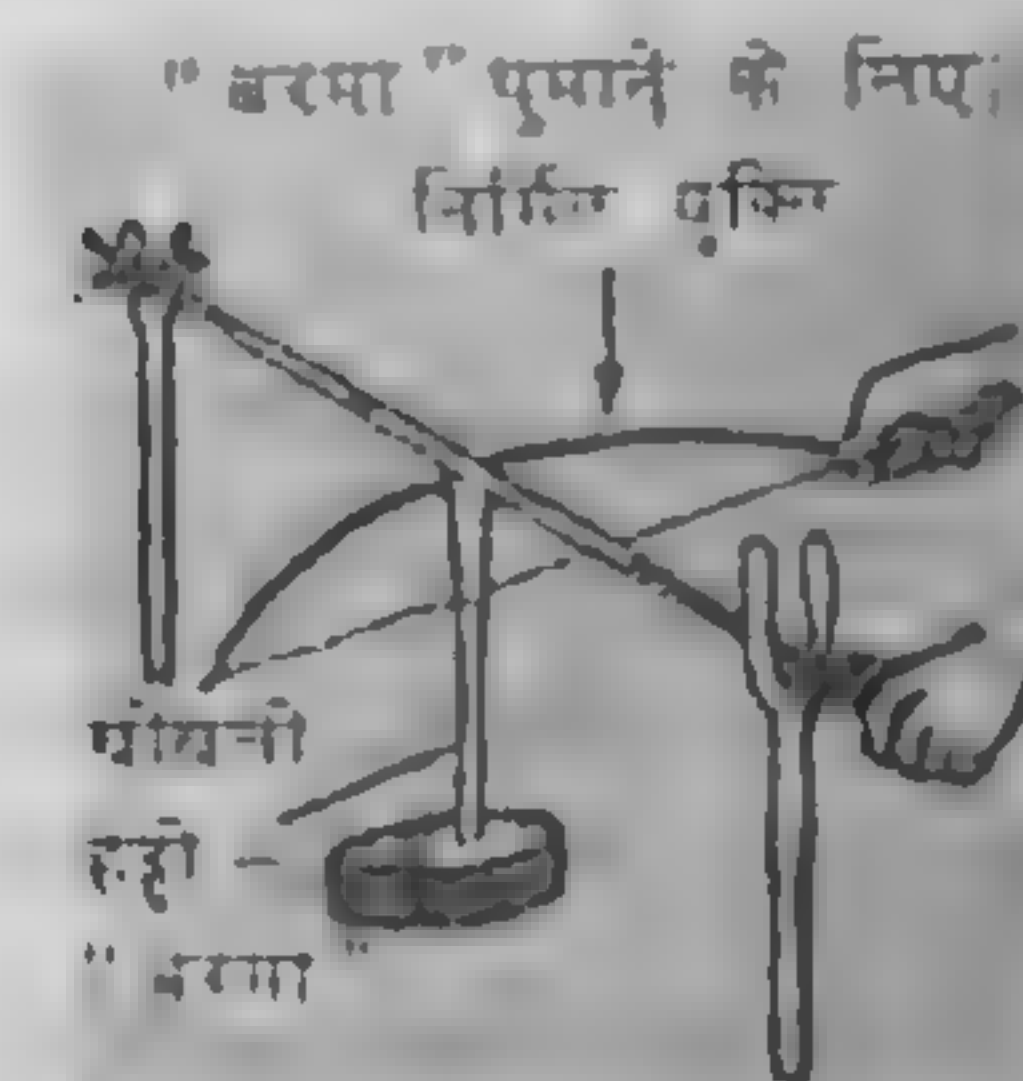
प्राचीन पशुपालकों और कृषकों की बस्ती में। (आधुनिक चित्रकार का बनाया चित्र।) **चित्र में कौन-कौन से औज़ार दिखाये गये हैं और लोग क्या-क्या काम कर रहे हैं?**

सदस्य पत्थर, मिट्टी, ऊन और रेशों से विभिन्न चीज़ें बनाने में कुशल थे, वे सारे गोत्र के लिए ये चीज़ें तैयार करते थे।

एक इलाक़े में रहनेवाले कई गोत्रों से एक **गण या क़बीला** बनता था। सारा क़बीला एक ही भाषा बोलता था और एक जैसे रीति-रिवाज़ों का पालन करता था।

क़बीले के सभी कार्यों का संचालन **मुखियाओं की परिषद** करती थी। वही तय करती थी कि कहां कौन गोत्र शिकार करेगा और कहां कौन गोत्र अपने मवेशी चरा सकता है या खेती कर सकता है। मुखियाओं की परिषद गोत्रों के सदस्यों के झगड़ों का फ़ैसला भी करती थी। मुखियाओं को सबका विश्वास प्राप्त था और सारा क़बीला कठोरतापूर्वक उनके आदेशों का पालन करता था। यदि कोई मामला बहुत ही महत्त्वपूर्ण होता था, तो परिषद उसे निबटाने के लिए सारे क़बीले की सभा बुलाती थी।

कभी-कभी खेतों या चरागाहों की ज़मीन को लेकर क़बीलों के बीच लड़ाई छिड़ जाती थी। लड़ाई के समय क़बीले के पुरुष अपने बीच से किसी को **सरदार**, यानी **सेनानी** चुन लेते थे।

कृषि और पशुपालन के आविर्भाव ने आदिम लोगों के जीवन में बहुत ही महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। इससे पहले मनुष्य प्रकृति से वही लेता था, जो वह उसे देती थी: वह फल, कंद-मूल, आदि बटोरता था, जानवरों का शिकार करता था और मछलियां पकड़ता था। पशुपालक और कृषक जानवरों का पालन और फलों, अनाज, वग़ैरह का उत्पादन स्वयं करने लगे।

? १. कृषि और पशुपालन का जन्म किन प्राचीन प्रदेशों में और कैसे हुआ था? २. आदिम [illegible] के बारे में आप क्या जानते हैं? ३. क्या आदिम सामुदायिक व्यवस्था सबसे प्राचीन पशुपालकों और कृषकों के समय में भी बनी रही थी? अपने उत्तर के पक्ष में तर्क दीजिये। ४. काल-मापनी की सहायता से बताइये कि लोगों ने धनुष-बाण का आविष्कार लगभग कब किया था।

§ ५. लोगों के बीच असमानता की उत्पत्ति

१. धातु का आविष्कार। कतिपय क़बीले ऐसी जगहों पर रहते थे, जहां ज़मीन में **तांबे** के प्रचुर भंडार थे। पत्थरों के साथ तांबे के टुकड़े आग में गिरकर पिघल जाते थे और ठंडा होने पर उनकी आकृति बदल जाती थी। तांबे के इस गुण की ओर लोगों का ध्यान गया। वे उससे भी औज़ार बनाने लगे। मिट्टी या मुलायम पत्थर में आवश्यक आकृति का गड्ढा बनाकर वे उसमें पिघला हुआ तांबा डाल देते थे और तांबा ठंडा होकर गड्ढे की आकृति ग्रहण कर लेता था। तांबे से कुल्हाड़े, छुरे, हंसिया और दूसरी वस्तुएं बनायी जाती थीं। इसी प्रकार लोगों ने सोने और चांदी से आभूषण बनाना भी सीख लिया।

जिस ज़माने में काम के मुख्य औज़ार पत्थर (पाषाण) से बनाये जाते थे, उसे पाषाण युग कहा जाता है। तांबे के औज़ारों का आविर्भाव होने पर पाषाण युग समाप्त हो गया और **धातु युग** आरंभ हुआ। यह कोई ६ हज़ार वर्ष पहले की बात है। (काल-मापनी पर यह काल-बिंदु खोजें।)

तांबा मुलायम धातु है और उससे बनी चीज़ें जल्दी घिस जाती हैं। अधिकांश कृषक पहले की तरह लकड़ी और हड्डी की कुदालियों और हंसियों से ही काम किया करते थे। लेकिन तेज़ धारवाले पत्थर के मुक़ाबले तांबे के औज़ारों से लकड़ी और हड्डी को काटना, तोड़ना, छीलना, आदि आसान था। अतः लकड़ी और हड्डी के बने काम के औज़ार पहले से कहीं बेहतर बन गये।

२. हल का आविष्कार। कृषकों ने कुदाली का आकार बड़ा किया और उसमें हत्था भी लगा दिया। अब उसे कई आदमी मिलकर खींचते थे और एक आदमी पीछे से हत्था पकड़कर उसे दबाता था, ताकि कुदाली की नोक ज़मीन में खूब गहरे घुसे। इस तरह खेतों की जुताई के लिए **हल** का आविष्कार हुआ। फिर हल में बैल जोते जाने लगे। हल के आविष्कार से जुताई जल्दी और बेहतर होने लगी। स्त्रियों के लिए हल और बैलों पर क़ाबू रखना कठिन था, इसलिए यह काम मुख्यतया पुरुष ही करने लगे।

३. गोत्र समुदाय से ग्राम समुदाय की उत्पत्ति। भूमि पहले की तरह ही सारे समुदाय की सामूहिक संपत्ति थी। उसके सभी सदस्य सामूहिक चरागाह में अपने मवेशी चराते थे और सामूहिक वन में शिकार करते थे।

हल के आविष्कार के बाद से हर परिवार के लिए खेत की जुताई और फ़सल की कटाई खुद ही करना संभव हो गया था। अब खेती का काम सारे समुदाय द्वारा मिलजुलकर किया जाना आवश्यक नहीं रह गया था। अतः मुखियाओं ने सामुदायिक भूमि को

१. तांबे की कुल्हाड़ी और उसे ढालने का सांचा। २. तांबे के हथियार: भाले का फल और छुरा। ३. सोने का आभूषण। ४. लकड़ी का हल। (पुनर्कल्पित।)

टुकड़ों—जोतों—में बांट दिया, जिन्हें समुदाय में शामिल परिवारों को दे दिया गया।

हर परिवार अपनी जोत पर खेती खुद करता था। उसके पास अपने औज़ार और अपने कुछ मवेशी होते थे। उसकी जोत पर होनेवाली फ़सल पर भी उसी का अधिकार होता था। समुदाय का बड़ा, सामूहिक कारोबार अब अलग-अलग परिवारों के छोटे-छोटे कारोबारों में बिखरने लग गया।

इसके साथ ही समुदाय की बनावट में भी परिवर्तन आया। उसमें अब ज़मीन साफ़ करने में हिस्सा लेनेवाले पड़ोस में रहनेवालों को भी शामिल किया जाने लगा। इस प्रकार **गोत्र समुदाय अब शनैः शनैः पड़ोसियों के समुदाय, यानी ग्राम समुदाय में बदल गया।** इस समुदाय के सदस्यों को **सामुदायिक किसान** कहा जाता है। भूमि पर उनका सामूहिक स्वामित्व होता था, मगर हर कोई अपना कारोबार अलग चलाता था।

४. समुदाय के सदस्यों में से संभ्रांत लोगों का उभरना। गोत्र के सामूहिक कारोबार के अलग-अलग परिवारों के कारोबारों में विभाजन से समुदाय के सदस्यों की समानता ख़त्म होने लगी। मुखिया और सेनानी अपने लिए सबसे उपजाऊ ज़मीन पर बड़ी-बड़ी जोतें ले लेते थे। इसके
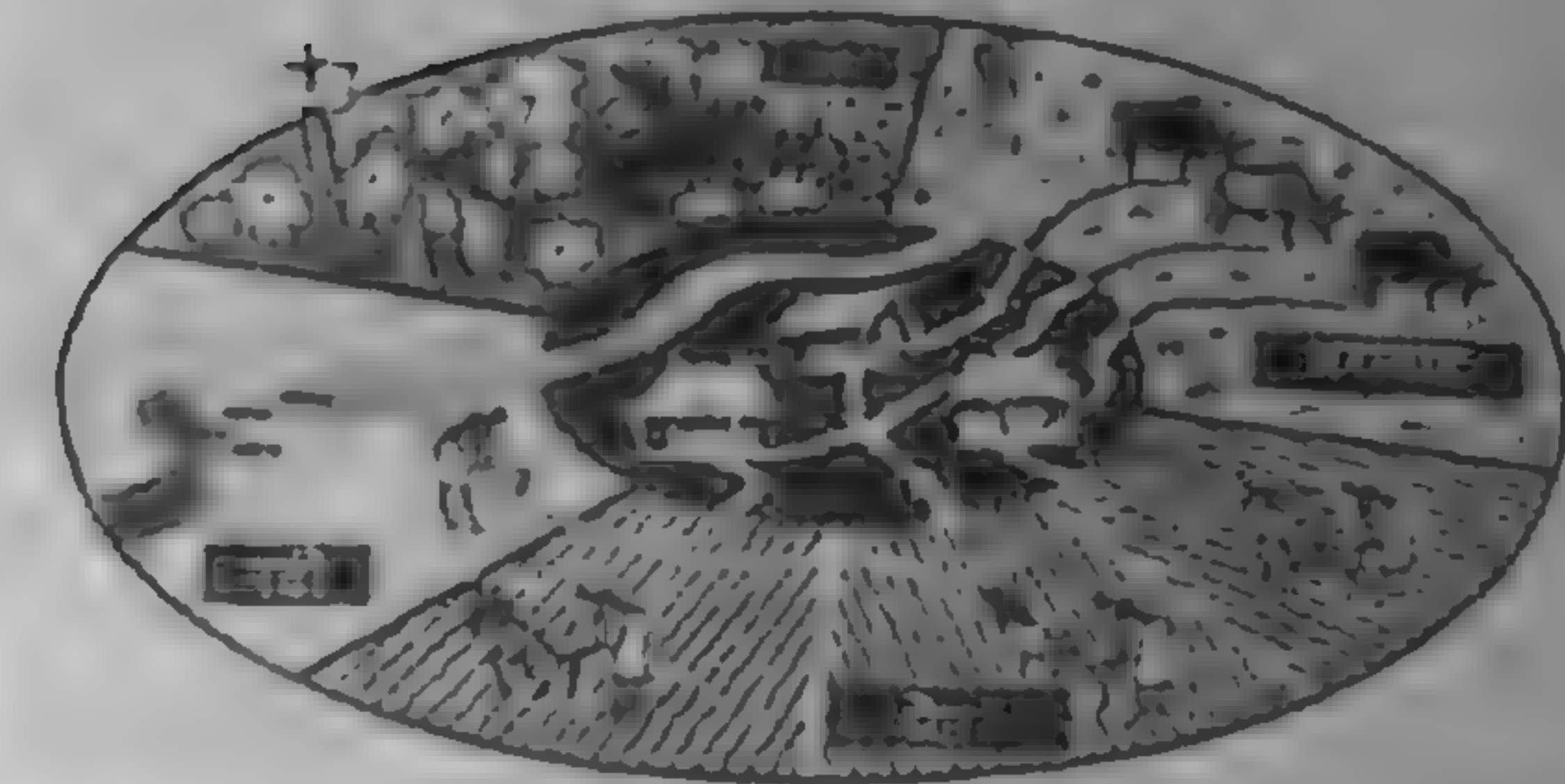
गोत्र समुदाय से पड़ोसी समुदाय में संक्रमण का आरंभ। इन रेखाचित्रों में प्रत्येक समुदाय के जीवन की मुख्य-मुख्य विशेषताएं ही बतायी गयी हैं। **दोनों की तुलना करें और यह पता लगायें कि दूसरे रेखाचित्र में नयी बातें क्या हैं और क्या पहले जैसा ही बना रहा है। कम से कम चार नयी बातें ढूंढें।**

अलावा वे लड़ाई में हाथ लगे माल—मवेशी, तांबा, सोना, आदि—के ज़्यादातर हिस्से पर भी क़ब्ज़ा जमा लेते थे। इस तरह मुखिया और सेनानी लोग संपन्न होते गये और दूसरे समुदाय-सदस्य निर्धन।

सेनानी का पद अल्पकालिक होने के बजाय स्थायी बन गया। उसके बेटे भी सेनानी बनने लग गये। यही बात मुखियाओं के बेटों के साथ भी हुई। आदमी की हैसियत अब उसकी योग्यता, अनुभव और सेवाओं पर नहीं, बल्कि इसपर निर्भर होने लगी कि वह किस परिवार में पैदा हुआ है। मुखियाओं और सेनानियों के परिवार **संभ्रांत** कहे जाते थे। **संभ्रांत** लोग सारे क़बीले पर अपना प्रभाव, अपना शासन क़ायम कर लेते थे।

लोगों में असमानता का उदय उनकी क़ब्रों से भी देखा जा सकता है। प्राचीन क़ब्रों की खुदाई करते हुए पुरातत्त्ववेत्ताओं को उनमें से कुछ में अगर मिट्टी के बरतनों के ठीकरे और कभी-कभी काम के औज़ार ही मिलते हैं, तो दूसरी क़ब्रों में तरह-तरह के हथियार और क़ीमती आभूषण और गहने।

गोत्र के सामूहिक कारोबार के ख़ात्मे और लोगों के बीच असमानता की उत्पत्ति के परिणामस्वरूप आदिम सामुदायिक व्यवस्था का अंत हो गया।

१. अमरीकी इंडियनों की एक देवमूर्ति। २. आदमी और पशुओं की बलि। (प्रशांत महासागर के एक टापू पर बलि की प्रथा देखने के बाद एक यूरोपीय द्वारा निर्मित चित्र।) जिस आदमी की बलि दी जानी है, वह बंधा हुआ ज़मीन पर पड़ा है। दो आदमी ज़ोर-ज़ोर से ढोल बजा रहे हैं, ताकि बलि दिये जानेवाले की चीखें न सुनायी पड़ें। पृष्ठभूमि में उन लोगों की खोपड़ियां रखी हैं, जिन्हें पहले बलि चढ़ाया गया था। ऊंचे तख्ते पर बलि चढ़ाये हुए पशु रखे हैं।

५. सामुदायिक कृषकों के धार्मिक विश्वास। लोगों के रहन-सहन के ढंग में परिवर्तन आने से उनके धार्मिक विश्वासों में भी परिवर्तन आया।

कृषकों को उन प्राकृतिक परिघटनाओं की "प्रेतात्माएं" ही मुख्य प्रतीत होती थीं, जिनपर उसका जीवन आधारित था, जैसे सूर्य, जो फ़सल के पकने में सहायक था, बादल, जिनसे खेतों को पानी (वर्षा) मिलता था, अन्न, जो ज़मीन में उगता था, आदि।

लोग इन "प्रेतात्माओं" को सर्वशक्तिमान **देवता** मानते थे, जिनकी इच्छा से ही वसंत आता है, वर्षा होती है और फ़सल पकती है।

देवताओं की कल्पना लोग पशुओं या मनुष्यों के रूप में करते थे और लकड़ी या पत्थर से उनकी **मूर्तियां** भी बनाते थे। देवताओं का कृपाभाजन बनने के लिए वे उन मूर्तियों के सामने दंडवत करते थे और पशुओं तथा आदमियों की **बलि** देते थे। बलि के बाद रक्त मूर्ति के होंठों पर मला जाता था।

? १. गोत्र समुदाय और ग्राम समुदाय में क्या समानताएं और क्या अंतर थे? २. ग्राम समुदाय में आदिम सामुदायिक व्यवस्था के कौन से लक्षण बचे रहे और कौन से लक्षण लुप्त हो गये? ३. समुदाय के अन्य सदस्यों और उनकी हैसियत में क्या अंतर था? ४. कृषकों और शिकारियों के धार्मिक विश्वासों में क्या भेद था? ये भेद क्यों प्रकट हुए?

अपने ज्ञान की जांच करें:

पृथ्वी पर रहनेवाले सबसे प्राचीन लोग आज के मानव से बहुत भिन्न थे।	पृथ्वी पर सबसे प्राचीन लोग कब प्रकट हुए थे? उनमें और वानरों में क्या अंतर था? उनमें और आज के लोगों में क्या अंतर था?
श्रम करने की बदौलत लोग खुद भी विकास करते गये।	लोगों का विकास किन बातों में प्रकट हुआ? "प्राज्ञ मानव" का आविर्भाव कब हुआ? पुस्तक में दिये गये कौन से चित्र "प्राज्ञ मानव" के आविर्भाव के द्योतक हैं?
अपने काम के औज़ारों को बेहतर बनाते गये	आदिम लोगों के काम के औज़ारों के क्रमिक विकास के बारे में बताइये। आगे दी गयी तालिका में देखें कि आपके उत्तर में कोई बात छूट तो नहीं गयी है।
और प्रकृति के बारे में नयी-नयी बातें मालूम करते गये।	प्राकृतिक परिघटनाओं के बारे में अर्जित नये ज्ञान में सबसे महत्त्वपूर्ण बातें क्या थीं? आदिम लोगों ने इस ज्ञान से क्या लाभ उठाया?
लोगों ने नये धंधे सीखे और उनका विकास किया।	आदिम लोगों के धंधे उस क्रम में गिनाइये, जिस क्रम में वे पैदा हुए थे। किस धंधे में किस प्रकार के औज़ार इस्तेमाल किये जाते थे?
किंतु प्रकृति में ऐसी बहुत सी बातें थीं, जिन्हें आदिम लोग नहीं समझ पाते थे और इसलिए उनसे डरते थे।	प्रकृति के सामने आदिम लोगों के असहाय होने और डरने का क्या परिणाम निकला? पुस्तक में दिये गये कौन से चित्र आदिम लोगों के धार्मिक विश्वासों पर प्रकाश डालते हैं?
१० लाख वर्ष से भी अधिक समय तक लोग आदिम सामुदायिक व्यवस्था में रहे।	आदिम सामुदायिक व्यवस्था के मुख्य लक्षण क्या हैं? आदिम लोगों के लिए समूह में रहना और काम करना ज़रूरी क्यों था? आदिम लोगों के विभिन्न समूहों के नाम और मुख्य विशेषताएं [illegible] क्या हैं?
लोगों में असमानता का जन्म कुछ हज़ार वर्ष पहले ही हुआ है।	लोगों में असमानता का जन्म क्यों हुआ? यह असमानता किस बात में प्रकट हुई?
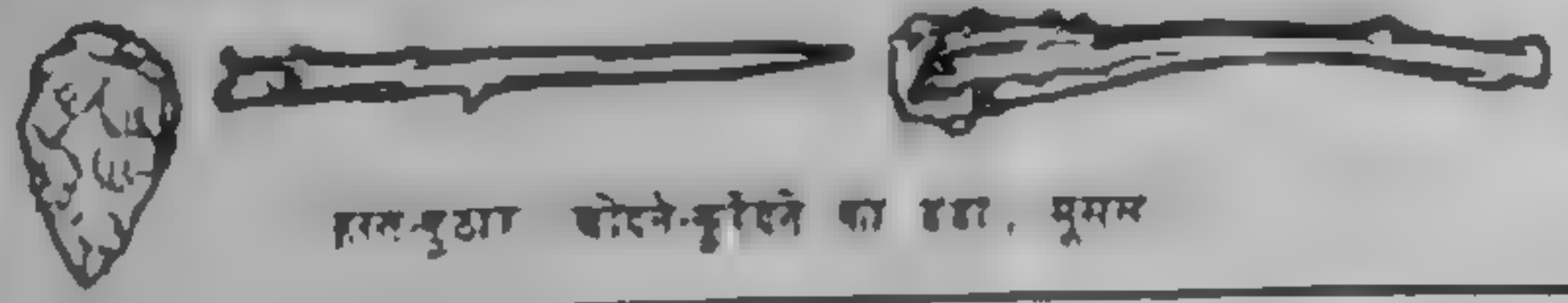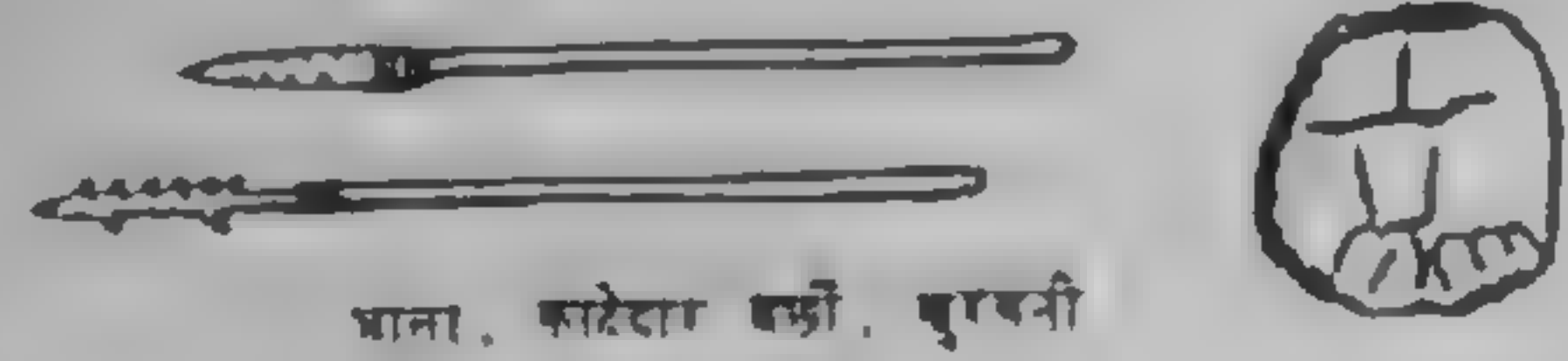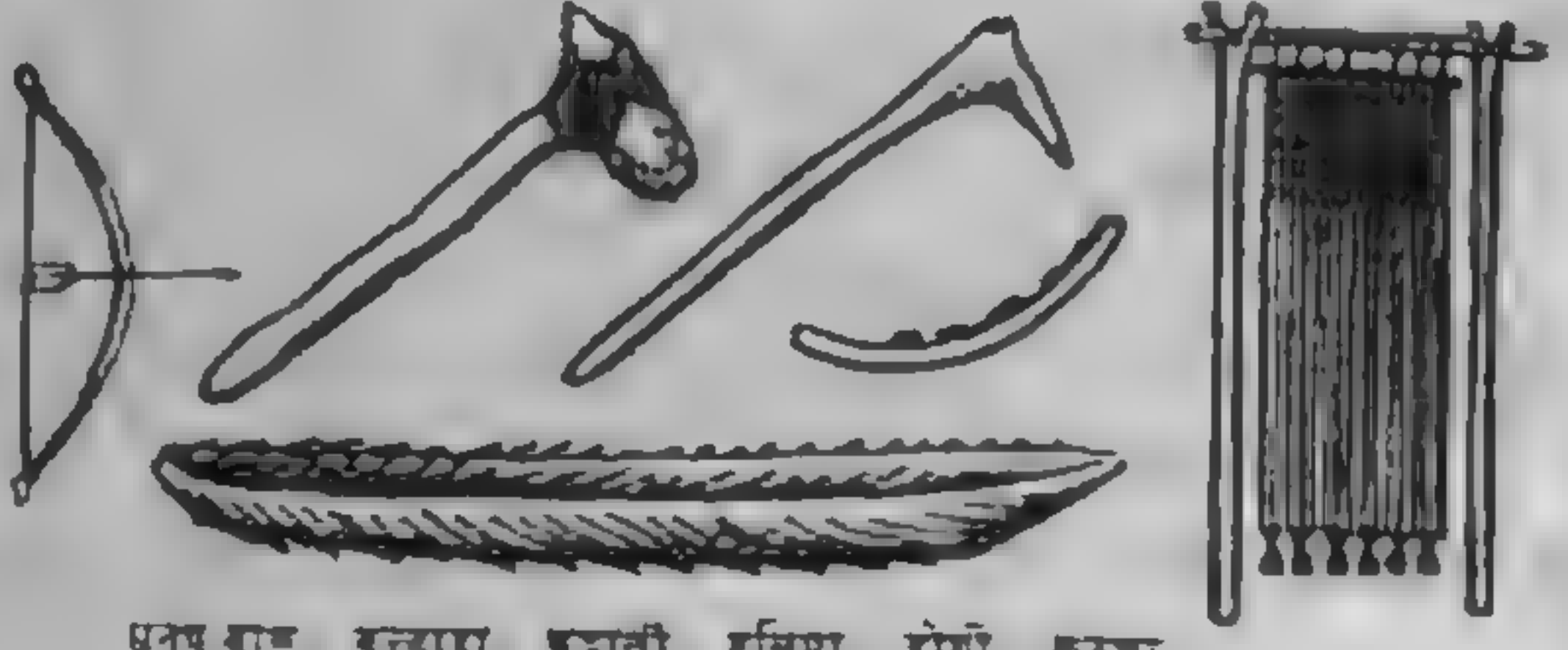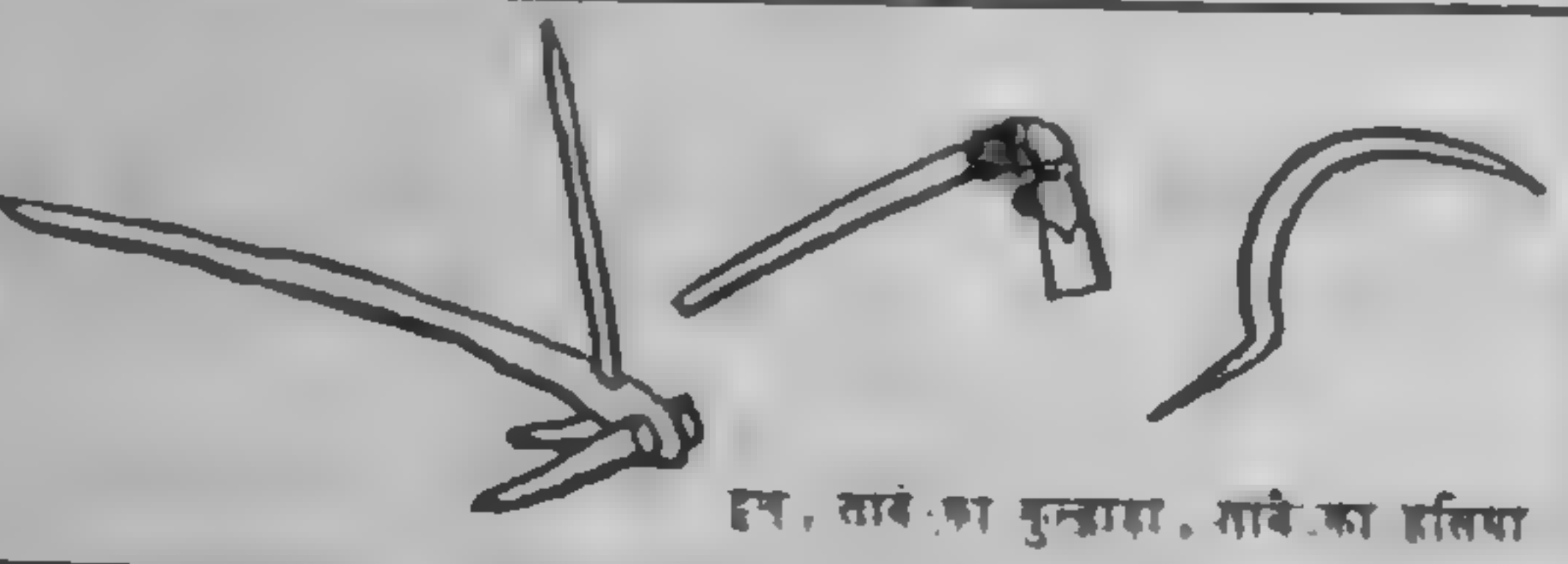
१. प्राचीन काल में लोग काल-गणना कैसे करते थे। खेती करनेवाले जानते थे कि एक निश्चित समय के बाद मौसम, जो फ़सल काटने का मौसम था, फिर आ जाता है। लोग उन दिनों एक फ़सल से दूसरी फ़सल तक गुज़रे समय के आधार पर ही काल की गणना किया करते थे। इस प्रकार काल को वर्षों में गिना जाने लगा।

जिस वर्ष में कोई विशेषतः याद रखनेयोग्य घटना घटती थी, लोग उस वर्ष को पहला वर्ष कहते थे, यानी उस वर्ष से एक नया संवत्, सन या वर्ष-गणना आरंभ हो जाती थी। मिसाल के लिए, किसी देश में यह घटना उस देश में आयी ज़बर्दस्त बाढ़ हो सकती थी, तो किसी देश में राजधानी की स्थापना (जैसे प्राचीन रोम में रोम नगर की स्थापना)। इसके बाद आनेवाले वर्ष उस संवत् का दूसरा, तीसरा व अन्य वर्ष होते थे। विभिन्न देशों में विभिन्न संवत् प्रचलित थे। यह बहुत ही असुविधाजनक था।

२. ईसवी संवत्। कोई २ हज़ार वर्ष पहले कहा जाने लगा कि ईसा मसीह नामक एक आदमी के रूप में भगवान ने पृथ्वी पर अवतार लिया है। हालांकि यह कहानी गढ़ी हुई थी, फिर भी बहुत से लोगों ने इसे सच मान लिया। (यह कहानी और ईसा से संबंधित अन्य कहानियां कैसे पैदा हुईं और लोगों ने उन्हें सच क्यों मान लिया, इसके बारे में आप आगे चलकर § ५८ में पढ़ेंगे।)
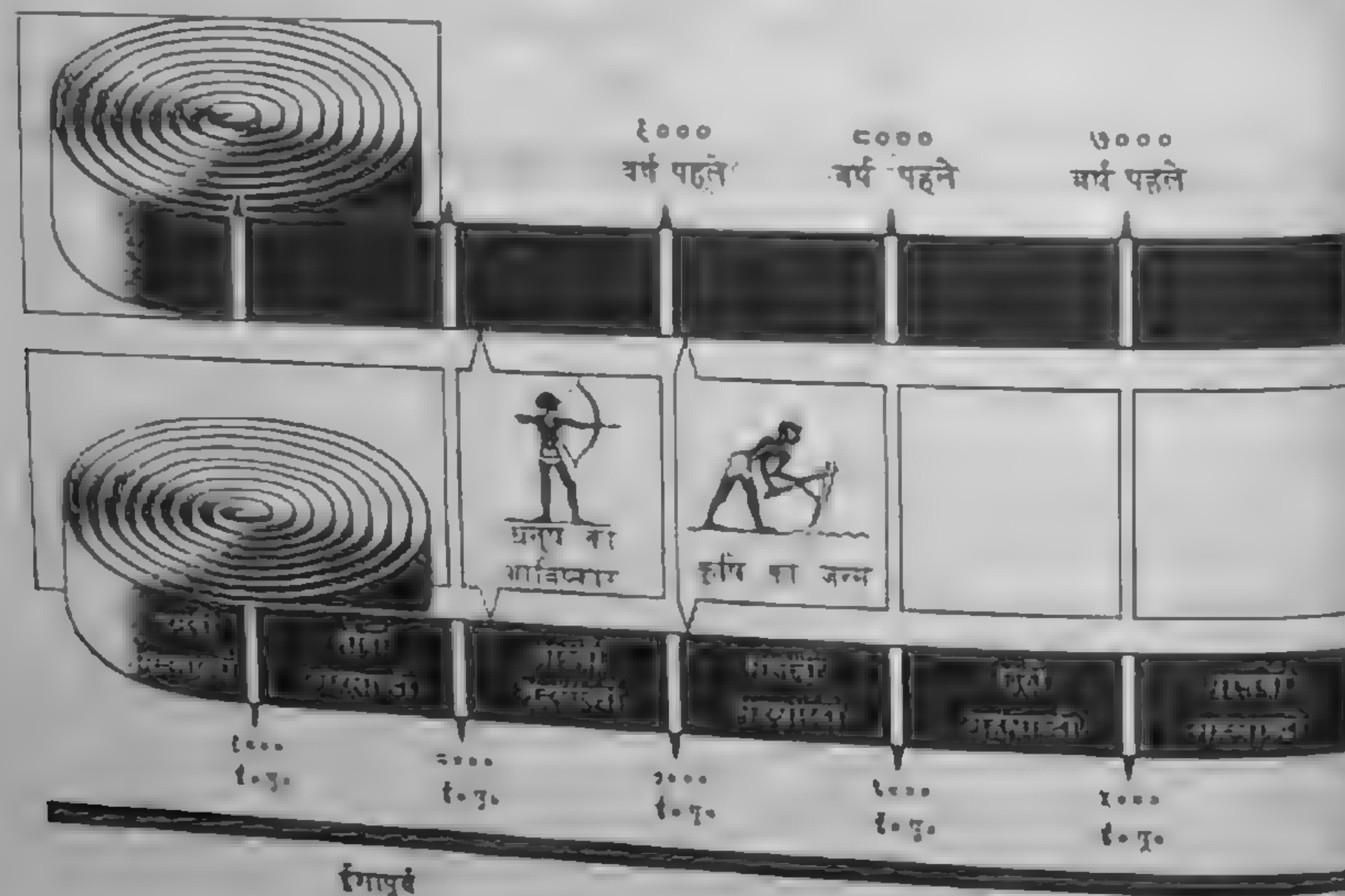
कोई ५००-६०० वर्ष बाद ये कहानियां बहुत से दूसरे देशों में भी फैल गयीं। तभी यह भी गढ़ा गया कि रोम की स्थापना के बाद किस वर्ष में ईसा का जन्म हुआ था। इसके बाद से वर्ष-गणना इसी वर्ष से की जाने लगी। इस तरह ईसवी संवत् प्रचलन में आया। आजकल अधिकांश देशों में यही संवत् प्रचलित है। जब हमें ईसवी संवत् के किसी वर्ष का उल्लेख करना होता है, तो उसके बाद "**ईसवी**" या उसका संक्षिप्त रूप "**ई०**" लिखते हैं।

१०० वर्षों की एक **शताब्दी**, **शती** या **सदी** होती है और १० शताब्दियों (१००० वर्षों) की एक **सहस्राब्दी**। ईसवी संवत् के आरंभ से कोई २ सहस्राब्दियां बीत चुकी हैं।

३. ईसवी संवत् से पहले की वर्ष-गणना। ईसवी संवत् से पहले भी अनगिनत घटनाएं हुई थीं। उनके लिए हम कहते हैं कि वे अमुक वर्ष, शताब्दी या सहस्राब्दी **ईसापूर्व** (संक्षेप में ई० पू०) में घटी थीं। ईसापूर्व या ई० पू० का मतलब है ईसवी संवत् शुरू होने से पहले।

निचली काल-मापनी को गौर से देखिये। ऊपर सबसे दायीं दो सहस्राब्दियां ईसवी संवत् की सहस्राब्दियां हैं। उनके बायीं ओर ईसापूर्व की सहस्राब्दियां हैं। अगर इस मापनी पर आप कृषि के आविर्भाव का काल खोजें, तो पायेंगे कि वह लगभग ७००० ईसापूर्व है। तब से आज तक कितना समय गुज़र चुका है?

ईसापूर्व के कोई ७००० वर्ष + ईसवी संवत् के २००० वर्ष। कुल योग कोई ९००० वर्ष।

तांबे के हथियार कोई ४००० ई० पू० प्रकट हुए थे; यानी यह कोई ४०००+२०००= कोई ६००० वर्ष पहले की बात है।

काल-मापनी

९००० वर्ष पहले
८००० वर्ष पहले
७००० वर्ष पहले
५००० वर्ष पहले
४००० वर्ष पहले
३००० वर्ष पहले
२००० वर्ष पहले
१००० वर्ष पहले

धनुष का आविष्कार
कृषि का जन्म
कांस्य औज़ारों का उपयोग आरंभ
लेखन-कला का जन्म
मिस्री राज्य का उत्कर्ष

पहली सहस्राब्दी
दूसरी सहस्राब्दी
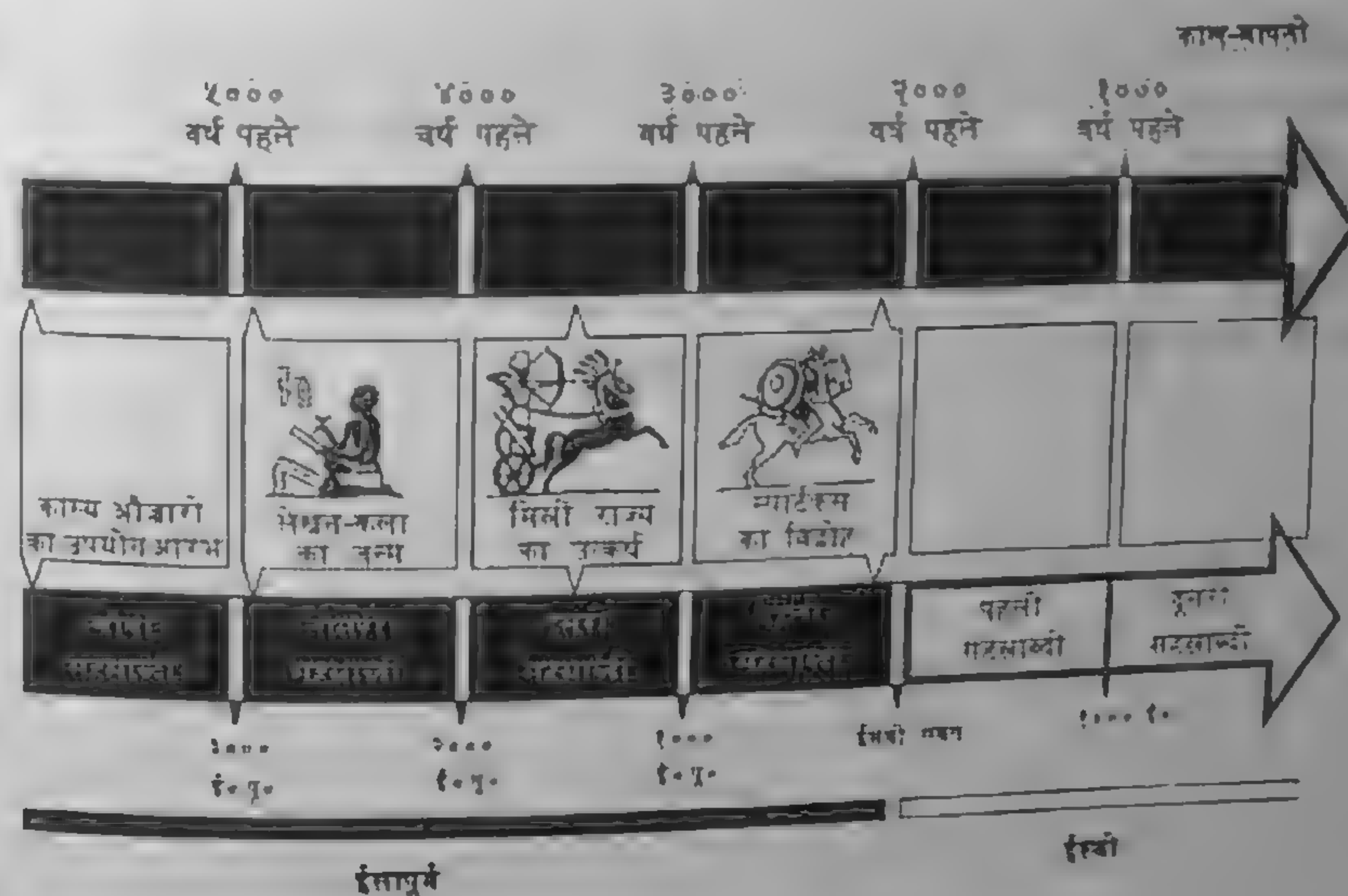
ईसापूर्व
ईसवी

नियम निकालें: हम जानते हैं कि कोई घटना कितने ईसापूर्व में हुई थी। तो कैसे मालूम करें कि वह आज से कितने वर्ष पहले हुई थी? (देखें कि नियम ऊपरी काल-मापनी की रेखाओं पर सही उतरता है कि नहीं।)

लिपि का आविष्कार आज से कोई ५००० वर्ष पहले हुआ था। तो यह कितने ईसापूर्व की बात है? यदि ५००० वर्षों में से २००० ईसवी संवत् के हैं, तो लिपि का आविष्कार ५०००–२०००=३००० ईसापूर्व में हुआ था।

नियम निकालें: हम जानते हैं कि कोई घटना आज से कितने वर्ष पहले हुई थी। तो कैसे मालूम करें कि वह कितने ईसापूर्व में हुई थी?

अभ्यास:

धनुष-बाण का आविष्कार कोई ८००० ईसापूर्व में हुआ था। यह लगभग कितने समय पहले की बात है? (काल-मापनी प्रयोग करें।)

लिपि का आविष्कार कोई ५००० वर्ष पहले हुआ था और तांबे का उपयोग कोई ४००० ईसापूर्व में शुरू हुआ। दोनों में अधिक प्राचीन कौन है और कितना प्राचीन है?

'आदिम लोगों का जीवन' भाग से संबंधित
कुछ और प्रश्न:

- मान लो कि कोई कबीला खाल, बाड़ा, मढ़ा, छत, भाला, डाब, झोंपड़ी, बुनाई और धातु की गलाई को बताने के लिए शब्दों का इस्तेमाल करने लग गया है। इस कबीले का जीवन किस प्रकार का रहा होगा?
- १०-२० हजार वर्ष पहले के लड़के या लड़की के जीवन के बारे में आप क्या जानते हैं?
- यदि दो पीढ़ियों के बीच औसतन २० वर्ष का अंतर है, तो १० लाख वर्षों में आदिम लोगों की कितनी पीढ़ियां पैदा हुई होंगी?
- आदिम लोगों के धार्मिक विश्वासों के बारे में हमें कैसे मालूम हुआ?

प्राचीन पूर्व

तीसरा अध्याय

प्राचीन मिस्र

प्रागैतिहासिक काल में विश्व में सभी लोग आदिम सामुदायिक व्यवस्था में रहते थे और खाद्य-संग्रहण और शिकार करते थे। शनैः शनैः उन्होंने खेतीबाड़ी और पशुपालन भी शुरू कर दिया। जहां भूमि उपजाऊ थी और जलवायु गर्म थी, वहां कृषि तेजी से विकास करने लगी। दूसरे देशों में जहां प्रकृति और जलवायु इतने अनुकूल न थे, कृषि का आरंभ कई हजार वर्ष बाद ही हो पाया। कुछ जातियों ने तो कृषि करना अभी हाल ही में जाकर सीखा है।

जिन देशों में कृषि और पशुपालन का सबसे पहले विकास हुआ था, उनमें से एक **प्राचीन मिस्र** भी है, जो **अफ़्रीका महाद्वीप के उत्तर-पूर्वी भाग में** स्थित है।

§ ६. प्राचीन मिस्र की प्रकृति और उसके लोगों के धंधे

(मानचित्र १ और २)

१. **प्राचीन मिस्र की भौगोलिक विशेषताएं।** उत्तर-पूर्वी अफ़्रीका में वर्षा बहुत कम होती है और साल में ज़्यादातर महीने कड़ी गर्मी पड़ती है। यहां हज़ारों किलोमीटर के इलाक़े में रेगिस्तान फैला पड़ा है।

किंतु यहां दक्षिण से उत्तर की ओर विश्व की एक सबसे बड़ी नदी – **नील** नदी – भी बहती है। वह मध्य अफ़्रीका की बड़ी झीलों से निकलती है। (मानचित्र १ में ये झीलें और नील नदी ढूंढ़ो।) उसके रास्ते में अनेक चट्टानी अवरोध (महाप्रपात) आते हैं। मगर वह उन्हें लांघकर एक गहरी **घाटी** में शांत और निर्बाध गति से बहती हुई कोई ७०० किलोमीटर का फ़ासला तय करती है। उसके आगे का इलाका बिल्कुल मैदानी है और **भूमध्यसागर** से लगा हुआ है। नील नदी जब यहां भूमध्यसागर में गिरती है, तो कई शाखाओं में बंट जाती है और इस तरह बहुत बड़ा **डेल्टा** बनाती है। (मानचित्र २ में नील नदी के मार्ग में पड़नेवाले चट्टानी अवरोध, उसकी घाटी और डेल्टा ढूंढ़ो।) नील नदी की घाटी और डेल्टा में चट्टानी अवरोधों – महाप्रपातों – से लेकर सागर तक का इलाका ही **प्राचीन मिस्र** था।

शादूफ़। (एक प्राचीन मिस्री चित्र।) प्राचीन मिस्र में खेती के लिए शादूफ़ का क्या महत्त्व था?
नील नदी की घाटी। (फ़ोटोचित्र।)

२. **नील की बाढ़ें।** गर्मियों के आरंभ में मध्य अफ़्रीका में मूसलाधार वर्षा होती है। जिन झीलों से नील नदी निकलती है, वे किनारों से बाहर छलक पड़ती हैं। जो पहाड़ नील की उपनदियों के उद्गमस्थल हैं, उनमें हिम पिघलने लगता है। तूफ़ानी वेग से बहती और अपने साथ कंकड़, मिट्टी, पत्थर, आदि सब कुछ बहा ले जाती हुई प्रचंड जलधाराएं नदी की ओर बढ़ने लगती हैं। नील में पानी एकाएक बहुत बढ़ जाता है और किनारों को तोड़ता हुआ दूर-दूर तक फैल जाता है।

इन बाढ़ों के दौरान नील झीलों से अपने साथ विशाल मात्रा में काई, शैवाल, आदि भी बहा ले जाती है, जिससे उसका पानी हरा बन जाता है। बाद में पहाड़ी मिट्टी मिलने से वह रक्त जैसा लाल हो जाता है। सड़ी हुई वनस्पतियां और मिट्टी के कण गाद के रूप में सारे बाढ़ग्रस्त इलाक़े में बिछ जाते हैं। नवंबर में पानी का स्तर घटने लगता है और नदी फिर अपने असली पाट में सिमट आती है। बाढ़ के फलस्वरूप भूमि पर्याप्त नमी ग्रहण कर लेती है, और काली और बहुत ही उपजाऊ गाद की परत से ढक जाती है।

नील की बाढ़ सारी घाटी को समान रूप से नहीं सींचती थी। ऊंची जगहों पर, जहां बाढ़ का पानी नहीं पहुंच पाता था, भूमि अनुपजाऊ और रेतीली बनी रहती थी। जहां भूमि नीची थी, वह पानी के ठहराव के कारण दलदल बन जाती थी, जिसमें सरकंडे और झाड़ियां उग आती थीं। झाड़ियों और दलदलों में हिंस्र जानवरों, विशेषतः शेरों, [illegible] और बीमारियां फैलानेवाले मच्छरों तथा अन्य कीड़े-मकोड़ों की भरमार थी।

३. **रेत और दलदलों से लोगों का संघर्ष।** नील की घाटी में लोगों को रेगिस्तान, दलदलों और झाड़ियों से निरंतर संघर्ष करके ही अपने लिए कृषियोग्य भूमि हासिल करनी पड़ती थी।
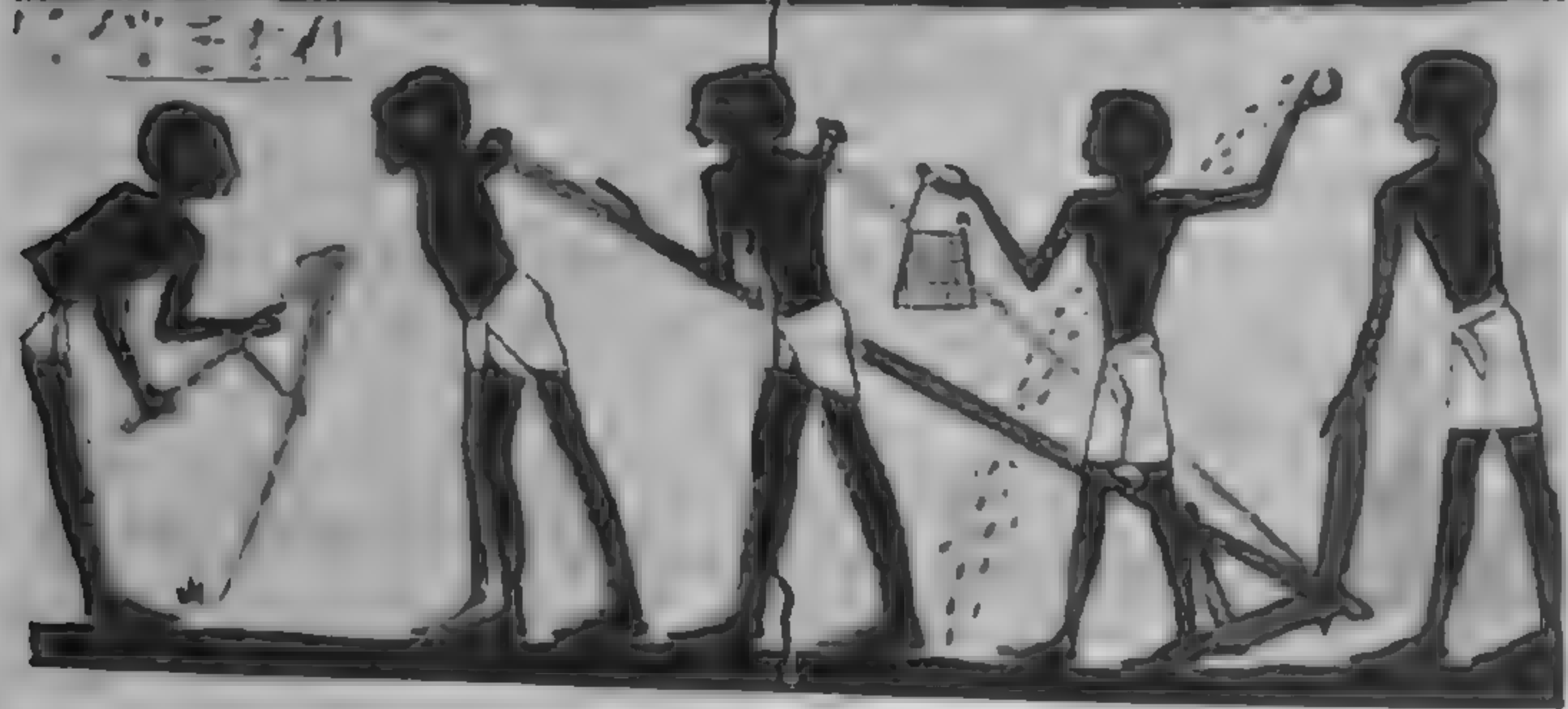
दलदलों को सुखाने के लिए प्राचीन मिस्रवासी नालियां खोदते थे, ताकि फ़ालतू पानी वापस नदी में चला जाये। फिर उनपर खड़ी झाड़ियों और सरकंडों को काट डाला जाता था। कई जगहों पर प्राचीन मिस्री लोग सरकंडे मिली मिट्टी के बांध खड़े करके घाटी को अलग-अलग टुकड़ों में बांट देते थे। इन बांधों में द्वार बने होते थे, जिनसे बाढ़ के समय खेतों में सिर्फ़ उतना पानी पहुंचाया जाता था, जितना कि आवश्यक था। जिन खेतों तक बाढ़ नहीं पहुंच पाती थी, उनमें नहर का पानी शदूफ़, यानी ढेंकली की मदद से उठाकर पहुंचाया जाता था (देखें पृष्ठ ४१ पर दिया चित्र)।

रेगिस्तान से आनेवाली हवाएं नहरों को रेत से पाट देती थीं, मगर लोग
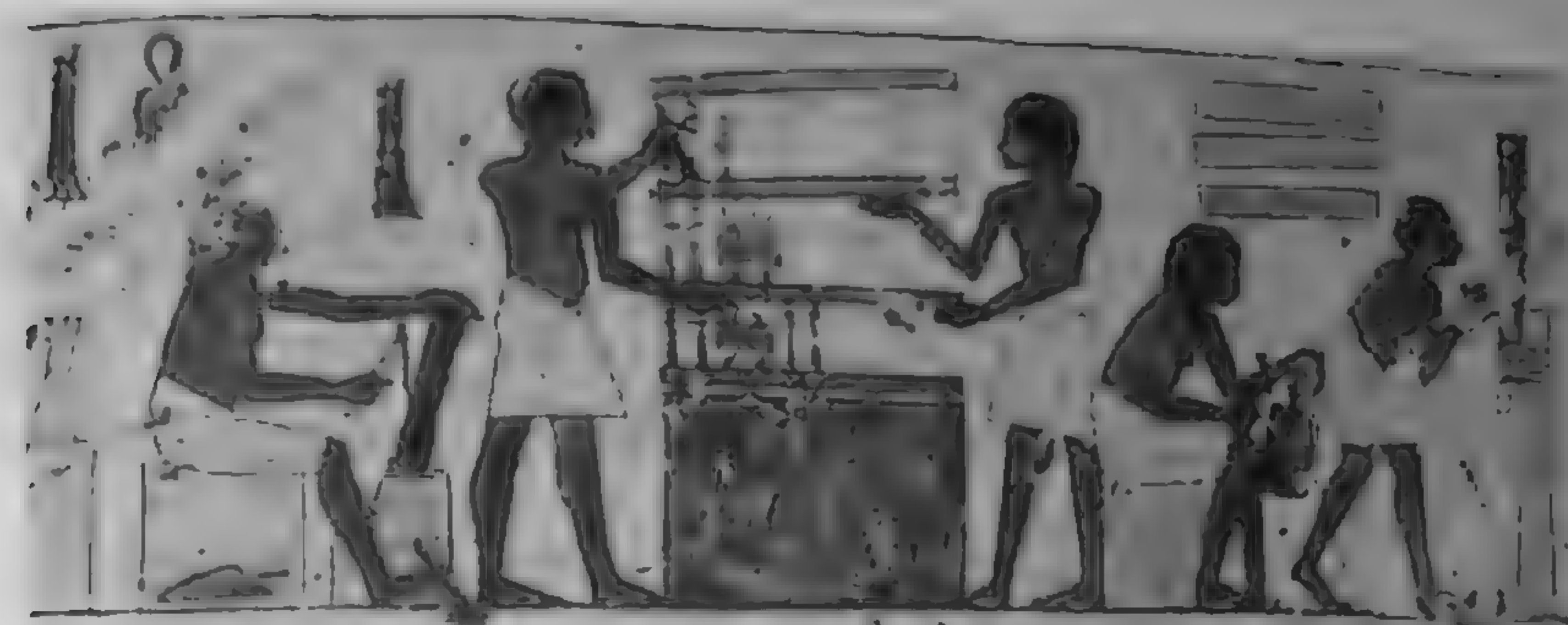
प्राचीन मिस्री शिल्पी। (एक समाधि की दीवार पर बने चित्र।) चित्रों को देखकर बतायें कि कौन शिल्पी क्या कर रहा है और वह किन सामग्रियों और औज़ारों का प्रयोग कर रहा है। क्या ऐसे औज़ार आज भी इस्तेमाल किये जाते हैं?

प्राचीन मिस्र में खेती के काम। (एक समाधि की दीवार पर बने से लिये हुए चित्र।) पाठ की मदद से बतायें कि इन चित्रों में लोग क्या कर रहे हैं। कामों के क्रम पर भी गौर करें।

हर साल उन्हें साफ़ कर देते थे। बाढ़ बांधों को तोड़ डालती थी, मगर लोग उन्हें फिर खड़ा कर देते थे। आदमी की मेहनत के सामने रेगिस्तान और दलदल पीछे हटते गये।

४. कृषि – मिस्रियों का मुख्य धंधा। बाढ़ के बाद मुलायम और नम ज़मीन की कुदाली या लकड़ी के हलके हल से जुताई आसान हो जाती थी। फिर उसपर बीज छींटकर भेड़-बकरियां और सूअर छोड़ दिये जाते थे, जिससे बीज मिट्टी में अच्छी तरह दब जाते थे। प्राचीन मिस्री लोग फ़सल को मांड़ने के लिए भी मवेशियों का इस्तेमाल किया करते थे – अनाज के पूले ज़मीन पर बिछाकर उनपर मवेशियों को चलाया जाता था।

कृषि मिस्रवासियों का मुख्य धंधा बन गयी। नील की घाटी और डेल्टा में गेहूं, जौ और फ्लैक्स (अलसी) की खेती की जाती थी और साग-सब्जियां व फल भी पैदा किये जाते थे।

५. प्राचीन मिस्र में शिल्प और विनिमय-व्यापार। पहले कृषक खुद ही मिट्टी और सरकंडों से झोंपड़ियों का निर्माण करते थे, कपड़ा बुनते थे, कुदालियां और लकड़ी के हल बनाते थे, मिट्टी के बर्तन तैयार करते थे। किंतु आगे चलकर जिन लोगों ने इन कामों में महारत हासिल कर ली, उन्होंने खेती का धंधा छोड़ दिया। वे मिस्त्री, कुम्हार, बुनकर या दूसरे **शिल्पी (कारीगर)** बन गये। उनके बच्चे भी मां-बाप की मदद करते-करते अच्छे शिल्पी बन जाते थे। तांबे के औजार तथा हथियार और सोने के गहने बनाने के लिए बड़ी दक्षता की जरूरत होती थी।

आरंभ में शिल्पी लोग केवल अपने समुदाय के लिए ही चीजें बनाया करते थे और बदले में उससे अनाज और दूसरी खाने-पीने की चीजें पाते थे। किंतु आगे चलकर वे अपने मालों का दूसरे समुदायों के लोगों से भी विनिमय करने लगे।

विनिमय-व्यापार की वृद्धि में नील नदी बड़ी सहायक सिद्ध हुई। उसमें नावें बारहों मास चल सकती थीं और उनसे अनाज, लकड़ी और शिल्पियों की बनायी हुई वस्तुएं दूर-दूर तक पहुंचायी जा सकती थीं। नील के तट पर नगर पैदा हुए। नगरों में मालों का विनिमय होता था और शिल्पी लोग रहते और काम करते थे।

लोगों की अथक मेहनत ने नील की घाटी का कायाकल्प कर दिया। जो मिस्र पहले आदमी के रहने के लिए बहुत कम उपयुक्त था, वह घनी आबादीवाला खेतिहर देश बन गया।

? १. प्राचीन मिस्र की प्राकृतिक परिस्थितियों और जहां आप रहते हैं, वहां की प्राकृतिक परिस्थितियों में क्या अंतर है? २. यदि नील नदी में बाढ़ न आती, तो उसकी घाटी का क्या रूप होता? ३. मिस्र की कौन सी प्राकृतिक परिस्थितियां कृषि के विकास में सहायक थीं और किन प्राकृतिक परिस्थितियों से उसमें रुकावटें पैदा होती थीं? ४. लोगों ने नील की घाटी को अपने निवास और कृषि के योग्य कैसे बनाया?

§७. मिस्र में वर्गों की उत्पत्ति

याद करें कि कृषि, पशुपालन और शिल्पों के विकास के कारण मुखियाओं और सेनानियों की हैसियत में क्या परिवर्तन आये थे और सम्भ्रांत लोग किन्हें कहा जाने लगा था (§५, अनुच्छेद ४)।

१. दूसरों का शोषण करने की संभावना क्यों पैदा हुई? आदिम शिकारी अपने लिए भोजन बड़ी मुश्किल से जुटा पाते थे। बच्चों और बूढ़ों को भी भोजन खुद ढूंढना पड़ता था। दूसरों से अपने लिए काम करवाने से कोई लाभ न था, क्योंकि उनकी मेहनत की कमाई खुद उनका पेट भरने में ही खर्च हो जाती।
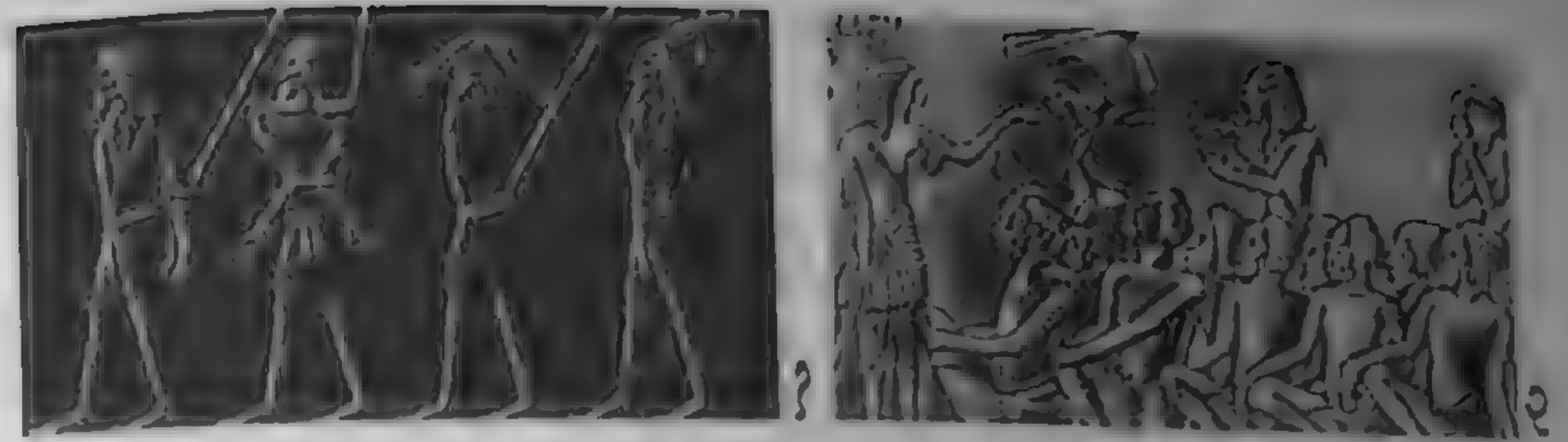
१. "जिंदा मुर्दे"। (प्राचीन मिस्री उत्कीर्ण चित्र।) इन लोगों के भाग्य में अब क्या बदा था? २. नूबिया में पकड़े गये युद्धबंदी। (प्राचीन मिस्री उत्कीर्ण चित्र।) **प्राचीन मिस्री चित्रकार ने यह कैसे दिखाया है कि पहले और दूसरे चित्रों में दिखाये गये लोग अलग-अलग देशों के हैं? क्या इन चित्रों के आधार पर कहा जा सकता है कि दास लोग अपनी स्थिति को आसानी से स्वीकार नहीं करते थे?**

किंतु मिस्र का किसान अपनी मेहनत से शिकारी के मुकाबले कहीं ज्यादा खाद्य-पदार्थ पैदा करने लगा। नील की उपजाऊ घाटी में उपज अच्छी होती थी। हल द्वारा जुताई शुरू हो जाने के बाद तो वह और भी बढ़ गयी। आदमी अपनी जरूरत से ज्यादा अनाज पैदा कर सकता था और मवेशी रख सकता था। बटोरी हुई फसल न केवल खेत में काम करनेवालों के लिए ही पूरी पड़ जाती थी, बल्कि उसमें से कुछ बाकी भी बच जाता था। फलस्वरूप दूसरे आदमी से अपने लिए काम करवाना इस दृष्टि से लाभकर हो गया कि उसे इस बाकी बचे हिस्से से वंचित किया जा सकता था। इस तरह हथियाये अनाज और मवेशियों का विनिमय करके तांबा, सोना, चांदी और शिल्पियों की बनायी हुई वस्तुएं प्राप्त की जा सकती थीं।

इस प्रकार **मिस्र में कृषि के विकास ने लोगों का शोषण करने की संभावना को जन्म दिया। लोगों का शोषण करने** का मतलब है उनकी मेहनत के फल को छीन लेना। दूसरे लोगों ने मेहनत करके जो पैदा किया है, उसे हथिया लेने या हड़प लेने को **शोषण** कहते हैं।

२. दासों का आविर्भाव और उनका शोषण। आरंभ में मिस्र के लोग कबीलों के बीच होनेवाले युद्धों में पकड़े हुए आदमियों को मार डालते थे। इसलिए मिस्र में युद्धबंदियों को "मुर्दे" कहते थे। किंतु जब आदमी की मेहनत उसकी आवश्यकता से अधिक फल देने लगी, तो युद्धबंदियों को मारना बंद हो गया। सम्भ्रांत लोग उनपर कब्जा करके उन्हें अपना दास बना लेते थे। दासों को अब "जिंदा मुर्दे" कहा जाने लगा।

दास सुबह से रात तक डोलचियों से पानी उठाकर खेत सींचते थे, नहरें खोदते थे, बांध बनाते थे, इमारतों के लिए पत्थर तोड़ते थे। उनके पास अपना कुछ नहीं होता था। वे स्वयं भी उनके मालिक की संपत्ति होते थे और जो कुछ अपनी मेहनत से पैदा करते थे, उसपर भी उनके मालिक का ही अधिकार होता था। उन्हें सिर्फ इतना खाना दिया जाता था, जितना कि उनके

ज़िंदा रहने और काम करने के लिए आवश्यक था। मालिक उन्हें शारीरिक दंड दे सकता था, बेच सकता था और यहां तक कि उनकी जान भी ले सकता था।

मिस्र में दासों की संख्या सामुदायिक किसानों से कम थी। लेकिन भूमि की सिंचाई और खुदाई के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण काम दास ही करते थे। इन कामों का प्रबंध और पानी का बंटवारा दासों के मालिक संभ्रांत लोगों द्वारा किया जाता था।

३. संभ्रांत लोगों द्वारा किसानों का शोषण। मिस्र में अधिकांश भूमि पर खेती **सामुदायिक किसानों** द्वारा की जाती थी। उनमें से हर कोई अपने खेतों में और अपने औज़ारों से काम करता था। इसके अलावा वे दासों के साथ मिलकर सरकंडों और झाड़ियों की कटाई और नहरों तथा बांधों का निर्माण भी करते थे।

भूमि की सिंचाई और खुदाई के कामों के प्रबंधकर्ता होने के कारण संभ्रांत लोगों ने अपनी हैसियत और किसानों पर अपने प्रभाव में और वृद्धि कर ली। वे नयी आबाद की हुई भूमि के सबसे अच्छे टुकड़े अपने लिए रख लेते थे और इसके अलावा किसानों को अपनी फ़सल और मवेशियों का एक हिस्सा भी उन्हें देना पड़ता था। किसानों के पास जितना हिस्सा बचा रहता था, वह उनके और उनके परिवारों के भरण-पोषण के लिए मुश्किल से ही पूरा पड़ पाता था।

प्राचीन मिस्री समाज के वर्ग

वर्ग	संपत्ति	शोषण करते थे या शोषण के शिकार थे
दासस्वामी	भूमि, दास, मवेशियों के रेवड़, काम के औज़ार, सोना	दासों और किसानों की मेहनत के फलों को हथिया लेते थे
किसान	छोटी-छोटी जोतें, अपने काम के औज़ार, थोड़े से मवेशी	अपनी मेहनत की कमाई का एक हिस्सा संभ्रांत लोगों को देते थे
दास	कोई संपत्ति नहीं थी : स्वयं ही दासस्वामियों की संपत्ति थे	मेहनत की सारी कमाई पर मालिकों — दासस्वामियों — का अधिकार होता था

४. मिस्र में वर्गों की उत्पत्ति। चौथी-तीसरी सहस्राब्दी ईसापूर्व में मिस्र की आबादी **शोषक** (जो शोषण करते थे) और **शोषित** (जिनका शोषण किया जाता था) **वर्गों** में बंटने लगी।

सबसे कठिन हालत दासों के वर्ग की थी।

दूसरा शोषित वर्ग किसानों का था।

शोषक वर्ग में **दासों के मालिक (दासस्वामी)** संभ्रांत लोग आते थे। वे लोग खुद कोई काम नहीं करते थे और दासों और किसानों की मेहनत की कमाई खाते थे। उनका पहरावा और रहन-सहन का ढंग भी और लोगों से भिन्न था। उनके वस्त्र महीन कपड़े के बने होते थे। उनकी कमर पर सोने की मूठवाली तांबे की छुरी लटकी होती थी। वे हाथों में सोने के कंगन और गले में हार पहने होते थे। वे छायादार उद्यानों से घिरे आलीशान घरों में रहते थे। क़बीलों के सेनानी (सरदार) दासस्वामियों में सबसे संपन्न थे।

मिस्र में दासप्रथात्मक व्यवस्था जड़ें जमाने लगी। इस व्यवस्था में कुछ लोग, यानी दासस्वामी लोग दूसरे लोगों, यानी दासों के मालिक होते हैं, उनका शोषण करते हैं और उनकी मेहनत और जीवन का अपनी इच्छानुसार इस्तेमाल कर सकते हैं।

? १. शोषण किसे कहते हैं? कुछ लोगों द्वारा दूसरे लोगों का शोषण किया जाना क्यों संभव हुआ? २. प्राचीन मिस्र में आरंभ में युद्धबंदियों को क्यों मार डालते थे और फिर चौथी-तीसरी सहस्राब्दी ईसापूर्व में उन्हें जीवित क्यों रखा जाने लगा? ३. किसानों और दासों में क्या अंतर था? उनमें समानता क्या थी? दोनों में से किसकी स्थिति बदतर थी और क्यों? ४. पाठ, तालिका और चित्रों से प्राप्त जानकारी का उपयोग करके प्राचीन मिस्र में दासों, किसानों और दासस्वामियों की स्थिति के बारे में निबंध लिखें। ५. आदिम सामुदायिक व्यवस्था और दासप्रथात्मक व्यवस्था में क्या अंतर है?

§ ८. प्राचीन मिस्र में राज्य की उत्पत्ति

याद करें कि गोत्र समुदायों के विघटन के काल में क़बीलों की शासन-व्यवस्था में क्या परिवर्तन आने लगे (§ ५, अनुच्छेद ४)।

१. मिस्र के पहले राज्य। शोषक और शोषित वर्गों की उत्पत्ति हुई, तो उनके बीच संघर्ष भी शुरू हो गया। किसान संभ्रांतों द्वारा भूमि पर अधिकार जमाये जाने का विरोध करते थे और अपनी मेहनत की कमाई में उन्हें कोई हिस्सा नहीं देना चाहते थे। दास अपनी खोयी हुई आज़ादी पाने के लिए लालायित रहते थे और मालिकों के लिए काम नहीं करना चाहते थे। केवल शक्ति के बल पर ही किसानों और दासों के प्रतिरोध को तोड़कर उन्हें आज्ञापालन के लिए विवश किया जा सकता था।

दासस्वामी लोग क़बीले के सेनानी की मदद लेने लगे। वह इतना संपत्तिवान बन बैठा था कि बहुत से प्रहरी और पूरी की पूरी सेना भी रख सकता था। प्रहरी और सैनिक भागे

कोई ३००० ईसापूर्व के उस प्राचीन मिस्री प्रस्तर उत्कीर्ण चित्र में क्या बताया गया है? मध्य में—विजयी सैनिक। उसने सिर पर दक्षिणी मिस्र राज्य के शासक जैसा ऊंचा, नुकीला मुकुट पहना हुआ है। इससे पता चलता है कि वह राजा है। चील की आकृतिवाला देवता होरस वह रस्सी पकड़े हुए है, जिसपर एक खोपड़ी बंधी हुई है। मिस्र में युद्धबंदियों को मवेशियों की तरह गिना जाता था। चील जिस झाड़ी पर बैठा है, उसका हर तना १ हजार युद्धबंदियों का द्योतक है। नीचे—भागते हुए शत्रु सैनिक। बायें—राजा की जूतियां लाता हुआ अनुचर। ऊपर—गोमुखी देवी। **चित्रकार ने राजा की सर्वशक्तिमत्ता का चित्रण कैसे किया है? (राजा और अन्य लोगों के आकार पर ध्यान दें।)**

हुए दासों को पकड़ते और दासस्वामियों के खेतों, रेवड़ों और घरों की रक्षा करते। आज्ञापालन न करनेवाले किसानों को मारा-पीटा जाता, जेल में बंद कर दिया जाता या मृत्युदंड दे दिया जाता।

प्रहरियों और सैनिकों की संख्या बढ़ने के साथ सेनानी की सत्ता में भी वृद्धि हुई। वह क़बीले का सर्वसत्तासंपन्न शासक बन बैठा और ख़ुद ही सभी मामले तय करने लगा। सेनानी अब राजा बन गया।

चौथी सहस्राब्दी ईसापूर्व में मिस्र में पहले राज्यों का उदय हुआ। राजा की सत्ता क़ायम हुई, जिसके पास सेना, प्रहरी (पुलिस), जल्लाद और जेलें थीं।

राज्य वह शक्ति था, जिसकी सहायता से दासस्वामी शोषितों पर, अर्थात किसानों और दासों पर अपना प्रभुत्व बनाये रखते थे।

२. फ़िराऊनों के शासन में मिस्र का एकीकरण। आरंभ में मिस्र में कोई ४० राज्य थे। उनके राजा प्रायः आपस में लड़ते रहते थे। विजेता राजा हारे हुए राजा के इलाके को अपने राज्य में मिला लेता था। एक राजा ने सारे उत्तरी मिस्र—नील के डेल्टा—को जीत लिया और दूसरे ने सारे दक्षिणी मिस्र—नील की घाटी—को।

लगभग ३००० **ईसापूर्व** में दक्षिणी राज्य के शासक ने उत्तरी मिस्र पर भी अधिकार कर लिया। इसके लिए जो लड़ाइयां हुईं, उनमें से एक का चित्रण इस पृष्ठ के ऊपर दिये गये

एक प्रस्तर फलक में किया गया है (पृष्ठ ६० पर तालिका भी देखें।) इस प्रकार एक संयुक्त मिस्री राज्य की स्थापना हुई, जो दक्षिण में नील के महाप्रपातों से लेकर उत्तर में भूमध्यसागर तक फैला हुआ था। **मेंफ़िस** नगर उसकी राजधानी बना।

मिस्र के राजा को **फ़िराऊन** कहते हैं। फ़िराऊन के हाथ में असीम शक्ति थी। सारे मिस्र की जनता, भूमि और जल पर उसका एकछत्र अधिकार था। उसकी मृत्यु के बाद उसका पुत्र या कोई और संबंधी ही गद्दी पर बैठता था।

३. मिस्री सेनाओं के विजय अभियान। फ़िराऊन **जोसेर** के राज्यकाल (२८०० ईसापूर्व के आसपास) में मिस्री राज्य की शक्ति का बहुत विस्तार हुआ।

मिस्री सेनाओं ने नील के महाप्रपातों के दक्षिण में स्थित **नूबिया** और नील के डेल्टा के पूर्व में **सिनाई प्रायद्वीप** पर चढ़ाइयां कीं। एक पराये देश में मिस्र के सैनिक अभियानों का उस काल के एक मिस्री सेनानायक ने इन शब्दों में वर्णन किया है:

पड़ोसी देश में लूट मचायी,
खेत-बाग सब दिये उजाड़,
नगर-बस्तियां कर डालीं भस्म,
हज़ारों उतारे मौत के घाट,
साथ ले युद्धबंदी असंख्य
सेनाएं सकुशल लौट आयी है,
राजा से मैंने वाहवाही पायी है।

(अभियान के दौरान मचायी गयी विनाशलीला और लूटपाट पर ध्यान दें।)

४. पिरामिडों का निर्माण। जोसेर और उसके बाद राज्य करनेवाले फ़िराऊनों ने अनेक **पिरामिड** बनवाये। पत्थरों से निर्मित इन विशाल **समाधियों** में फ़िराऊनों को दफ़नाया जाता था।

सबसे बड़े पिरामिड का निर्माण कोई २६०० ईसापूर्व में हुआ था। इसे खुफ़ू का पिरामिड, अर्थात् फ़िराऊन **खुफ़ू** की समाधि कहा जाता है। उसकी ऊंचाई कोई १५० मीटर है। उसका चक्कर लगाने के लिए कोई एक किलोमीटर चलना पड़ता है। उसमें लगभग २३ लाख शिलाखंड इस्तेमाल किये गये हैं, जिनमें से सबसे छोटे का भार ढाई टन है। एक संकरे द्वार से पिरामिड के भीतर एक छोटे से कक्ष में पहुंचा जाता था, जहां फ़िराऊन का शव रखा होता था।

प्राचीन यूनानी इतिहासकार **हेरोडोटस** ने बताया है कि पिरामिडों का निर्माण कैसे किया जाता था। फ़िराऊन के प्रहरी सारे मिस्र से किसानों और दासों को पिरामिड बनाने के लिए हांक लाते थे। एक साथ कोई १ लाख लोग काम पर लगे होते थे। कुछ पहाड़ों में शिलाखंड तोड़ने में लगाये जाते थे, तो कुछ उन्हें ढोने में और कुछ उन्हें तराशने और चिनने में। सरकारी निरीक्षक डंडे और कोड़े मार-मारकर उनसे काम करवाते थे। (देखें रंगीन चित्र ७।)

पिरामिड और पत्थर-खान से उस तक जानेवाली सड़क का निर्माण कोई ३० वर्ष तक चलता रहता था। किसानों की अनुपस्थिति में उनके खेतों पर झाड़-झंखाड़ उग आते थे,

१. फ़िराऊनों के पिरामिड। (विमान से लिये हुए छायाचित्र।) सबसे पीछे कुफ़ू का पिरामिड है। पिरामिडों को विश्व के सात चमत्कारों में माना जाता है। २. स्फ़िंक्स।

नहरें रेत से भर जाती थीं। हालांकि कामगर हर तीसरे महीने बदल दिये जाते थे, फिर भी बहुत ही कड़ी मेहनत और मार के कारण उनमें से हज़ारों जान से हाथ धो बैठते थे।

पिरामिडों से कुछ दूरी पर पूरी की पूरी चट्टान को तराशकर बनायी हुई विराट नारसिंही मूर्ति खड़ी की जाती थी। उसे स्फ़िंक्स कहा जाता है। स्फ़िंक्स फ़िराऊन का प्रतीक था। कुफ़ू के पिरामिड के निकट स्थित स्फ़िंक्स की ऊंचाई २० मीटर से अधिक है। लोग इस दानवाकार मूर्ति से इतना ख़ौफ़ खाते थे कि उसका नाम ही "आतंक का पिता" पड़ गया।

फ़िराऊनों की असीम और निरंकुश सत्ता के मूक साक्षी बने पिरामिड रेगिस्तान के बीच आज भी खड़े हैं।

? १. क्या आदिम सामुदायिक व्यवस्था में राज्य था? प्राचीन मिस्र में राज्य की उत्पत्ति क्यों और कैसे हुई? २. देश और राज्य के बीच क्या अन्तर है? राज्य के मुख्य लक्षण क्या हैं? ३. फ़िराऊन युद्ध क्यों करते थे? ४. मिस्री राज्य की स्थापना कितने हज़ार वर्ष पहले हुई थी? कुफ़ू के पिरामिड का निर्माण हुए कितनी शताब्दियां गुज़र चुकी हैं? पृष्ठ ६० पर उसके निर्माण की तिथि खोजें। ५. § ८ में दी गयी घटनाओं की तिथियों की तुलना करके बतायें कि उनमें कौन पहले हुई थी और कौन बाद में और कितने बाद में?

§ ९. प्राचीन मिस्र में शासन-व्यवस्था और वर्ग संघर्ष

१. विद्रोही को प्राणदंड और सामंत को पुरस्कार। प्रशासन की सुविधा के लिए मिस्र को कई प्रांतों में बांटा गया था। फ़िराऊन संभ्रांत वर्ग के लोगों को **प्रांतों के शासक** नियुक्त करता था। हर प्रांतीय शासक के नीचे तरह-तरह के **अधिकारी-कर्मचारी** और प्रहरी तथा सैनिक होते थे।

सरकारी अधिकारी दासस्वामियों की हत्या, उनकी संपत्ति छीनने और फ़िराऊन के आदेशों का उल्लंघन करने के दोषी लोगों को दंड देते थे। फ़िराऊन का स्पष्ट हुक्म था "जो विद्रोह करे, उसे मार डालो, नष्ट कर दो, उसके रिश्तेदारों को ख़त्म कर दो, उनका नामो-निशान भी न बचने पाये। सबसे ख़तरनाक शत्रु ग़रीब लोग हैं।" सरकारी अधिकारी अपनी क्रूरता और कठोरता की बड़े गर्व से डींग हांका करता था: "मुझे देखकर लोग थरथर कांपते थे। क़ैदी को मेरे सामने झुकना ही पड़ा। मैंने विद्रोह करनेवाले से गलतियां कबूल करवा ही ली," यानी यंत्रणाएं दे देकर उससे अपना अपराध स्वीकार करवा लिया।

संभ्रांत लोगों और अधिकारियों को फ़िराऊन उनकी सेवाओं के बदले में ज़मीन-जागीर, सोना, मवेशी और दास दिया करते थे। अपने बेटे को शिक्षा देते हुए एक फ़िराऊन ने लिखा

१. फ़िराऊन की मूर्ति। २. डंडों से पिटाई। (प्राचीन मिस्री चित्र।) ३. किसानों से कर की उगाही। (प्राचीन मिस्री चित्र।) पाठ में इस चित्र से संबंधित सामग्री ढूंढें।

प्राचीन मिस्री राज्य का ढांचा। राज्य ही वह मुख्य शक्ति था, जिसपर दासस्वामियों का सारा प्रभुत्व टिका हुआ था।

शोषित लोग, जिनका दमन करना मिस्री राज्य अपना कर्त्तव्य मानता था।
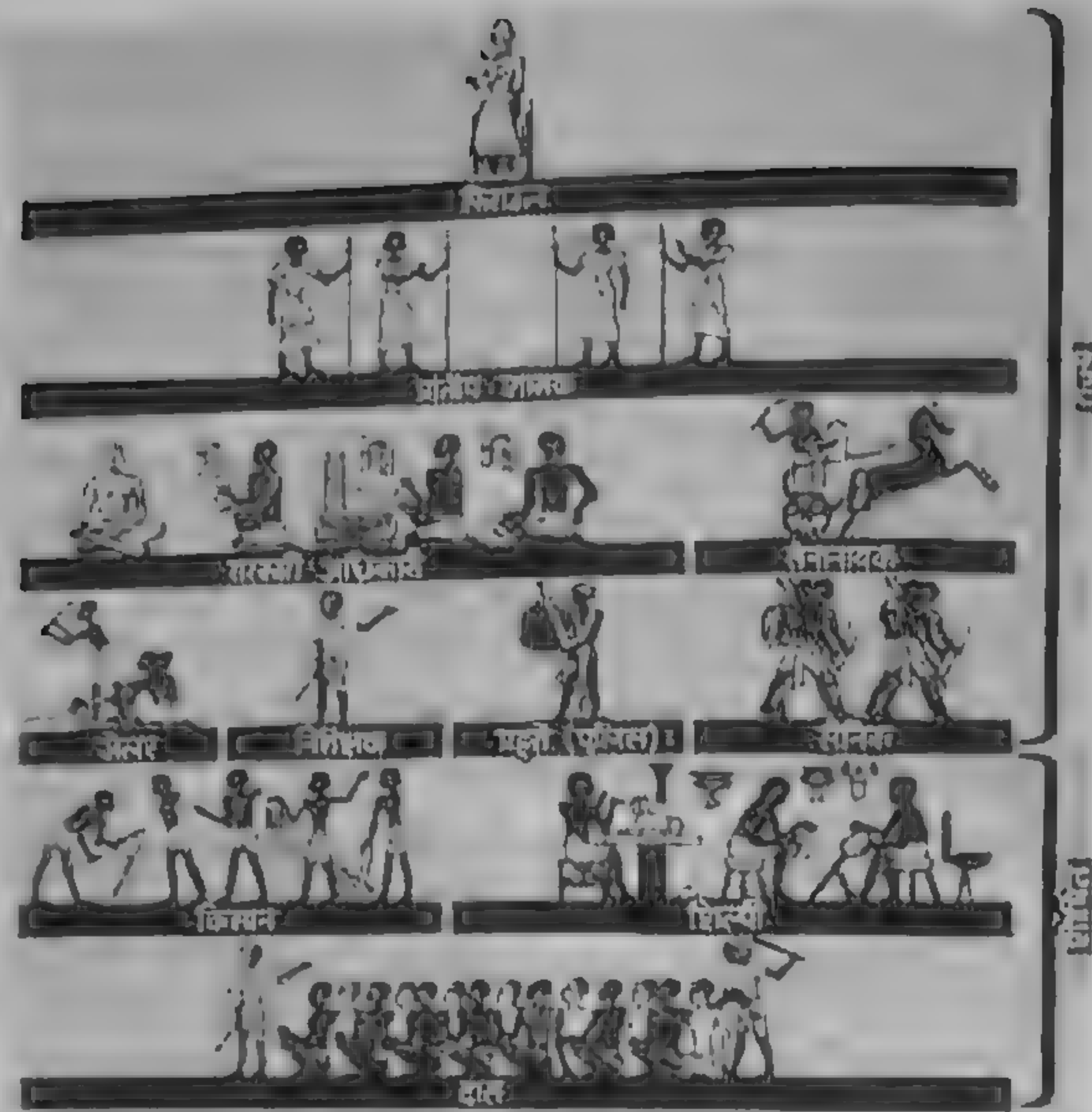
था : "अपने सामन्तों का मान करो, अपने सैनिकों को खुश रखो, उन्हें ज़मीन-जागीर, मवेशी, आदि इनाम में देते रहो।"

२. करों की उगाही और किसानों से बेगार। सरकारी अधिकारी इसका पूरा-पूरा हिसाब रखते थे कि किस किसान के पास कितनी ज़मीन, कितने मवेशी और कितने फलदार पेड़ हैं। किसान को अपनी उपज का एक हिस्सा सरकार को कर के रूप में देना होता था। सारे मिस्र में विशाल शाही गोदाम बनाये गये थे, जो किसानों से छीने हुए अनाज से भरे रहते थे। इकट्ठा किया हुआ अनाज और दूसरा माल सामंतों को इनाम में देने और अधिकारियों, प्रहरियों और सैनिकों का वेतन चुकाने के लिए इस्तेमाल किये जाते थे।

यदि कभी फ़सल अच्छी न होती और किसान कर न दे पाते, तो उनकी मानो शामत ही आ जाती। एक प्राचीन मिस्री अभिलेख में हमें ये शब्द पढ़ने को मिलते हैं: "किसान की शामत! कर उगाहनेवाला आया है। वह फ़सल का हिसाब लगाता है। उसके साथ प्रहरी भी हैं। उनके हाथों में डंडे और खजूर की छड़ियां हैं। वे कहते हैं, 'अनाज लाओ!' पर अनाज कहां है! वे उसे पीटने लगते हैं। वह बंधा पड़ा है, उसकी पत्नी और बच्चे भी बंधे पड़े हैं।" "किसान की हालत शेर के मुंह में पड़े आदमी जैसी हो जाती है" (देखें रंगीन चित्र ६)।

कर देने के अलावा किसानों को **बेगार** भी करनी पड़ती थी, जैसे बांधों की मरम्मत करना, नहरें खोदना, फ़िराऊन और संभ्रांत लोगों के महलों और समाधियों के लिए पत्थर तोड़ना, आदि।

३. शिल्पियों की स्थिति। बहुत से शिल्पी फ़िराऊन और धनी दासस्वामियों की दस्तकारशालाओं में काम करते थे। निरीक्षक उनपर हर समय निगरानी रखते थे।

एक प्राचीन मिस्रवासी शिल्पियों के जीवन का वर्णन करते हुए लिखता है, "बुनकर दिन भर करघे के सामने दुबका बैठा फर्नेस की धूल फांकता रहता है। बाहर जाने और उजाला देखने के लिए उसे अपनी रोटी निरीक्षक को दे देनी पड़ती है। काम पूरा न करने पर उसे बुरी तरह मार-पीटा जाता है। बढ़ई किसान से भी ज़्यादा थक जाता है। उसे अपनी सामर्थ्य से ज़्यादा काम करना पड़ता है। वह रात में भी काम करता है। शानदार महलों का निर्माण करनेवाले मिस्तरी को भरपेट भोजन भी नहीं मिल पाता। वह चीथड़े पहने होता है। वह फटेहाल है और उसके बच्चे भी फटेहाल हैं।" वही मिस्रवासी आगे लिखता है, "मैंने डंडे-कोड़े बरसाये जाते देखे हैं, अनगिनत बार देखे हैं।"

४. ग़रीबों और दासों का विद्रोह। लेकिन क्या किसान, शिल्पी और दास फ़िराऊनों और दासस्वामियों के अत्याचारों को हमेशा चुपचाप सहन कर लेते थे? इस प्रश्न का उत्तर हमें एक प्राचीन मिस्री दस्तावेज़ में मिलता है, जिसमें एक विद्रोह का वर्णन किया गया है। यह विद्रोह लगभग १७५० ईसापूर्व में हुआ था। (दस्तावेज़ को ध्यान से पढ़ें और उससे संबंधित प्रश्नों के उत्तर दें।)

दस्तावेज़ में नहीं बताया गया है कि विद्रोह का अंत कैसे हुआ, किंतु इतना अवश्य मालूम है कि दासस्वामियों ने मिस्री राज्य की सारी शक्ति जुटाकर फ़िराऊनों की सत्ता को पुनर्स्थापित कर दिया था।

'देश पर आयी विपत्तियों का वृत्तांत' से:

'वृत्तांत' से इन प्रश्नों के उत्तर ढूंढ़ें: मिस्र में किसने किसके विरुद्ध विद्रोह किया? विद्रोही क्या करने में सफल रहे? 'वृत्तांत' के लेखक की सहानुभूति किसके साथ है? अपने उत्तरों की पुष्टि में 'वृत्तांत' से उद्धरण दें।

लोगों ने ईश्वर द्वारा स्थापित फ़िराऊन की सत्ता के विरुद्ध विद्रोह कर दिया है।

राजधानी देखते-देखते ख़ाक में मिल गयी है। ग़रीबों ने राजदरबार को दखल लिया है।

बड़े अधिकारी जान बचाकर भाग रहे हैं। अन्य अधिकारी मार डाले गये हैं। कर इकट्ठा करने से संबंधित कागज़ात नष्ट कर दिये गये हैं।

ग़रीब लोग बड़े-बड़े महलों में घुस रहे हैं। ठाठ-बाटवाले लोग चौपालों में घूम रहे हैं।

महीन, बढ़िया कपड़े पहने लोगों को डंडों से मारा जा रहा है। मालदार कंगाल बन गये हैं।

जिसके पास एक जोड़ी बैल तक न थी, वह अब पूरे के पूरे रेवड़ों का मालिक हो गया है। जो अनाज माँगा करता था, अब खुद अनाज दे रहा है। दास खुद दासस्वामी बन बैठे हैं।
मेरे मन को इससे बड़ी पीड़ा पहुंची है। ओह, इस ज़माने की विपत्तियों से मैं कितना दुखी हूं!

? १. मिस्री साम्राज्य में अधिकारियों को कौन से काम सौंपे गये थे? २. फ़िराऊन ग़रीब लोगों को अपना सबसे [illegible] क्यों मानता था? ३. प्राचीन मिस्र में किसानों और शिल्पियों की हालत कैसी थी? ४. पुस्तक में १७५० ईसापूर्व के विद्रोह के बारे में क्या बताया गया है? ५. विद्रोह किस शताब्दी में हुआ था? यदि आपको उत्तर देने में कठिनाई हो रही है, तो आइये, मिलकर हिसाब लगायें। विद्रोह से ईसवी सन् के आरंभ तक १७ शताब्दियां और १८ वीं शताब्दी का आधा भाग गुजरे थे। इसका मतलब है कि विद्रोह ईसापूर्व १८ वीं शताब्दी के मध्य में हुआ था। विद्रोह आज से कितनी शताब्दी पहले हुआ था? पहले क्या हुआ था—विद्रोह या खूफ़ू के पिरामिड का निर्माण? दोनों घटनाओं में कितने वर्षों का अंतर है? ६. फ़िराऊन को समाचार मिला कि एक दूरवर्ती प्रांत में किसानों और दासों ने विद्रोह कर दिया है। इसके बाद क्या हुआ?

§१०. मिस्री साम्राज्य का उत्कर्ष और पतन

(मानचित्र २ और पृष्ठ ५६ पर दिया मानचित्र)

याद करें कि दासप्रथात्मक व्यवस्था के अंतर्गत मिस्री समाज किन वर्गों में बंटा हुआ था (§७, अनुच्छेद ४)।

१. दूसरी सहस्राब्दी ईसापूर्व में मिस्री अर्थव्यवस्था का विकास। दूसरी सहस्राब्दी ईसापूर्व के मध्य तक मिस्रवासियों ने अपने देश की अर्थव्यवस्था का बहुत विकास कर लिया था। बांधों की उन्नति और तालाबों के निर्माण से भूमि की सिंचाई और जुताई बड़े पैमाने पर की जाने लगी थी। सरकारी अधिकारी हर साल दसियों हजार किसानों और दासों से ये काम करवाते थे। नदी से दूर और ऊंची जगहों पर स्थित खेतों की सिंचाई के लिए भी नहरें बना दी गयी थीं। नील नदी की घाटी में कृषियोग्य भूमि का क्षेत्रफल काफ़ी बढ़ गया था।

मिस्र में एशिया से लाये गये घोड़े और ऊंट भी पाले जाने लगे थे। शिल्पियों ने तांबा और टीन का मिश्रण करके **कांसा** नामक धातु बनाना सीख लिया था। कांसा तांबे से कहीं ज्यादा कठोर और मजबूत होता है।

मिस्री साम्राज्य की राजधानी अब **थीब्स** नगर था। यह एक बड़ा और सुंदर नगर था।

२. मिस्र की सैनिक शक्ति की वृद्धि। अर्थव्यवस्था के विकास और आबादी की वृद्धि का एक परिणाम यह भी निकला कि फ़िराऊनों ने अपनी सेना काफ़ी बढ़ा ली और उसे नये-नये हथियारों से सज्जित किया।

सेना का मुख्य अंग विशाल पैदल सेना थी, जो किसानों से बनी थी। पैदल सैनिक भालों, कुल्हाड़ों, तलवारों और बड़े-बड़े धनुषों से लैस होते थे (देखें पृष्ठ ५३)। दूसरी सहस्राब्दी ईसापूर्व में **रथारोही सैनिकों** के दस्ते बनाये गये। ये दस्ते घोड़ेजुते दोपहिया **रथों** पर सवार होकर युद्ध करते थे। हर रथ पर दो सैनिक होते थे—एक सारथी और एक योद्धा। युद्ध

में रथारोही दस्ते शत्रु पर तेजी से धावा बोलते थे और जीत जाने पर उसके भागते सैनिकों का पीछा करते थे।

३. फ़िराऊनों के विजय अभियान। कोई १५०० ईसापूर्व में फ़िराऊन **थुत्मोस तृतीय** ने अपनी सेनाओं के साथ एशिया पर चढ़ाई की। दीर्घकालीन युद्धों के बाद थुत्मोस तृतीय और उसके उत्तराधिकारी भूमध्यसागर के पूर्वी तट पर स्थित **फ़िलिस्तीन** और सीरिया पर अधिकार करने में सफल हो गये। मिस्री साम्राज्य की सीमा उत्तर में फ़रात नदी तक पहुंच गयी। दक्षिण में फ़िराऊनों ने नूबिया को भी जीत लिया, जो अपनी सोने की खानों के लिए प्रसिद्ध था।

फ़िराऊन विजित प्रदेशों को निर्ममतापूर्वक लूटते थे। सोना, हाथीदांत और अन्य लूट को लेकर मिस्र पहुंचनेवाले ऊंटों के कारवांओं का सिलसिला ख़त्म ही होने को नहीं आता था। सैनिक मवेशियों और घोड़ों के रेवड़ हांक लाते थे। एशियाई देशों से कीमती लकड़िया जहाज़ों पर लादकर मिस्र पहुंचायी जाती थीं। रेगिस्तानी राहों पर घिसटते चलते बेचारे युद्धबंदियों का तांता लगा रहता था।

४. दूसरी सहस्राब्दी ईसापूर्व में मिस्र की दासप्रथात्मक व्यवस्था। युद्धों में हाथ लगे अधिकांश मालमत्ते पर फ़िराऊन और दासस्वामी क़ब्ज़ा कर लेते थे। कहा जाता था कि फ़िराऊन के पास उतना सोना है, जितनी कि रेगिस्तान में रेत।

मिस्र में दासों की तादाद बहुत बढ़ गयी थी। केवल एक एशियाई अभियान के दौरान एक लाख से ज्यादा युद्धबंदी बनाये गये थे।

दूसरी ओर ग़रीब मिस्रवासियों को भी दास बनाया जाने लगा था। बहुत बार किसान और शिल्पी लोग अमीरों से अनाज या तांबे की छड़ें, जो मिस्र में मुद्रा का काम करती थीं, क़र्ज़ लेने को मजबूर होते थे। अगर क़र्ज़दार समय पर अपना क़र्ज़ अदा न कर पाता, तो अमीर सरकारी अधिकारी की मदद लेता और वह क़र्ज़ की अदायगी के लिए क़र्ज़दार या उसके बच्चों को बेचने का आदेश दे देता। इस तरह वे दास बन जाते थे।

दासों से पत्थर और धातु खानों में, महलों व नहरों के निर्माण में और दासस्वामियों के खेतों पर काम करवाया जाता था।

दूसरी सहस्राब्दी ईसापूर्व में मिस्र में दासप्रथात्मक व्यवस्था ने पूरी तरह जड़ें जमा ली थीं।

५. मिस्री साम्राज्य का पतन। पराये इलाक़ों पर क़ब्ज़ा करने के लिए फ़िराऊनों द्वारा चलाये गये युद्धों ने, जिनसे मिस्री दासस्वामी मालामाल बन बैठे थे, मिस्री साम्राज्य को भीतर से खोखला करना शुरू कर दिया था।

सेना में बलात भरती किये गये किसान या तो लड़ाइयों में मारे जाते थे, या फिर दलदली नूबिया में बुखार और रेगिस्तान में गरमी से मर जाते थे। उनके खेतों को जोतने-बोने वाला कोई नहीं था। खेती तबाह होती जा रही थी। अगर घायल या बीमार घर लौटता भी, तो पाता कि उसकी संपत्ति लूट ली गयी है और पत्नी और बच्चों को बेचकर दास बना दिया गया है।
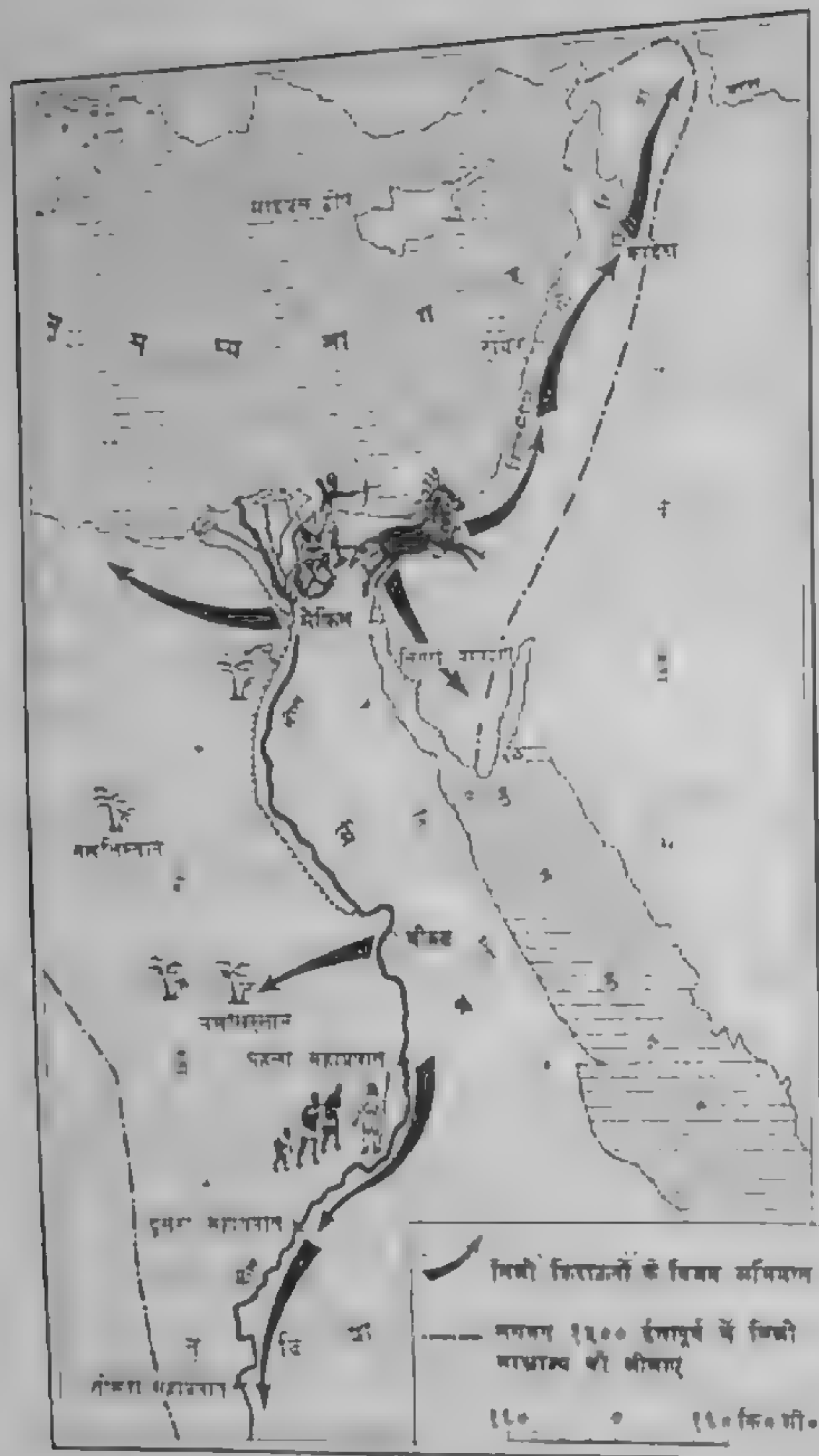
१. मिस्री फ़िराऊनों के विजय अभियान। **मानचित्र पर प्राचीन मिस्र की सीमाएं, विजय अभियानों की दिशाएं और मिस्री साम्राज्य के अधिकतम विस्तार की सीमाएं ढूंढें।** २. मिस्री सेनाओं द्वारा सीरिया में एक क़िले पर चढ़ाई। (एक प्राचीन मिस्री मंदिर की दीवार पर बना चित्र।) रथ पर फ़िराऊन सवार है। क़िले के प्राचीरों से उसके रक्षक शत्रु के बाणों से घायल होकर गिर रहे है। नीचे – मिस्री सैनिक बंदियों को पकड़ रहे हैं, जिनमें स्त्रियां और बच्चे भी है। ३. मिस्री पैदल सेना। (एक प्राचीन मिस्री मंदिर की दीवार पर खुदा हुआ चित्र।) **मिस्री पैदल सैनिकों के पास क्या हथियार थे?** ४. नूबिया में एक मिस्री क़िला। (पुनर्कल्पित।) ५. फ़िराऊन की प्रशस्ति गाते हुए लोग। **उनके चेहरों की तुलना करें। विभिन्न जातियों के लोगों को फ़िराऊन का प्रशस्तिगायन करता हुआ दिखाकर चित्रकार क्या बताना चाहता था?**

ग़रीबों और दासों में फ़िराऊनों तथा दासस्वामियों के प्रति, जो उनकी तकलीफ़ों से फ़ायदा उठाने से न चूकते थे, नफ़रत बढ़ती गयी। मिस्र के विभिन्न भागों में ग़रीबों और दासों के विद्रोह हुए। दूसरी ओर, विजित देशों की जनता का आधिपत्यकारियों के विरुद्ध संघर्ष भी लगातार जारी था। ज्यों ही मिस्री सेना विजित देश छोड़कर जाती कि वहां विद्रोह फूट पड़ता।

विद्रोहों को कुचलने के लिए फ़िराऊनों ने पड़ोसी देशों में **भाड़े के सैनिक** भरती करना शुरू किया। ये भाड़े के सैनिक किसानों और दासों को निर्ममतापूर्वक कुचलते थे। किंतु दूसरे राज्यों के साथ युद्ध के समय उनपर विश्वास नहीं किया जा सकता था: शत्रु उन्हें ललचाकर अपनी ओर मिला सकता था।

किसानों की तबाही और ग़रीबों, दासों तथा विजित जातियों के विद्रोहों ने मिस्री साम्राज्य को कमज़ोर बना दिया। एशिया और नूबिया में जिन इलाक़ों पर फ़िराऊनों ने क़ब्ज़ा कर लिया था, वे उनके हाथ से निकल गये। पहली सहस्राब्दी ईसापूर्व के मध्य तक मिस्री साम्राज्य की ऐसी हालत हो गयी कि वह पड़ोसियों के हमलों का भी बड़ी मुश्किल से सामना कर पा रहा था।

? १. मिस्री साम्राज्य के विजय अभियानों से किन्हें लाभ होता था और क्या लाभ होता था? युद्धों से हानि किसे और क्यों होती थी? २. दूसरी सहस्राब्दी [illegible] में मिस्र में दासस्वामिक व्यवस्था के पूरे राज्य [illegible] क्या दासस्वामिक व्यवस्था राज्य के बिना इतनी बड़ी [illegible] मिस्री सेना के विजय अभियानों के बारे में एक छोटा सा निबंध लिखें। [illegible] ४. मिस्री साम्राज्य के दुर्बल बनने का क्या कारण था? ५. मिस्री साम्राज्य की स्थापना और सम्राट् थुत्मोस [illegible] थुत्मोस तृतीय के सैनिक अभियानों से आज तक लगभग कितने हजार वर्ष गुजर चुके हैं?

§११. प्राचीन मिस्र में धर्म

याद करें कि धार्मिक विश्वासों की उत्पत्ति क्यों और कैसे हुई थी (§३, अनुच्छेद २) और कृषि के आविर्भाव से धार्मिक विश्वास कैसे बदले (§४, अनुच्छेद २)।

१. प्राकृतिक शक्तियों की पूजा। प्राचीन मिस्रियों का विश्वास था कि प्रकृति का संचालन देवता करते हैं, जिनमें सबसे मुख्य सूर्यदेवता रा है। मिस्री उसे देवाधिदेव मानते थे, अर्थात जैसे फिराऊन लोगों का शासक था, वैसे ही रा सभी देवताओं का शासक था। दिन के बाद रात और रात के बाद दिन आने का कारण न जानने से मिस्री कहते थे कि रा हर रोज अपनी स्वर्ण-नौका पर आकाश की यात्रा करता है और संध्या होने पर रेगिस्तान में चला जाता है।

नील नदी के ऊपरी भागों तक न पहुंच पाने के कारण मिस्री नहीं जानते थे कि वह कहां से निकलती है। वे सोचते थे कि नील का देवता घड़े से पानी उडेलता है और जब पानी ज्यादा उंडेला जाता है, तो नदी में बाढ़ आ जाती है। मिस्रवासी नील की अभ्यर्थना करते थे कि वह उनके खेतों से गुजरे और जब उसका पानी उनके खेतों में फैल जाता था, तो कहते थे कि उसने उनकी प्रार्थना सुन ली है और उनके प्राण बचा दिये हैं। (इस परिच्छेद के अंत में दी गयी 'नील महिमा' पढ़ें।)

प्रत्येक प्राकृतिक परिघटना अपने अलग देवता या देवी से संबद्ध मानी जाती थी। देवी-देवताओं को आम तौर पर किसी प्राणी जैसे दिखलाता चित्रित किया जाता था। मिस्रियों की मान्यता के अनुसार जलदेवता का सिर मगर जैसा और सूर्यदेवता का सिर श्येन (बाज) जैसा था। युद्ध की देवी की मुखाकृति सिंहनी जैसी थी और उससे प्राचीन मिस्र के लोग बहुत डरते थे। उनका विश्वास था कि प्लेग जैसी भयंकर महामारी वही फैलाती है। (देखें पृष्ठ ६७ पर बाया चित्र।)

२. पुनरुज्जीवित देवता का आख्यान। हर साल मिस्र में ५० दिन तक लगातार रेगिस्तान से गर्म रेत की आंधी चलती रहती है। लोगों और जानवरों के लिए सांस लेना और देखपाना मुश्किल हो जाता है। पेड़-पौधे मुरझा जाते हैं। सारी प्रकृति मरणासन्न सी हो जाती है। मगर तब सागर से ताजगी लानेवाली हवाएं चलने लगती हैं और इसके बाद नील का पानी भी बढ़ना शुरू हो जाता है। सारी प्रकृति पुनः जीवित हो उठती है।

१

२

३
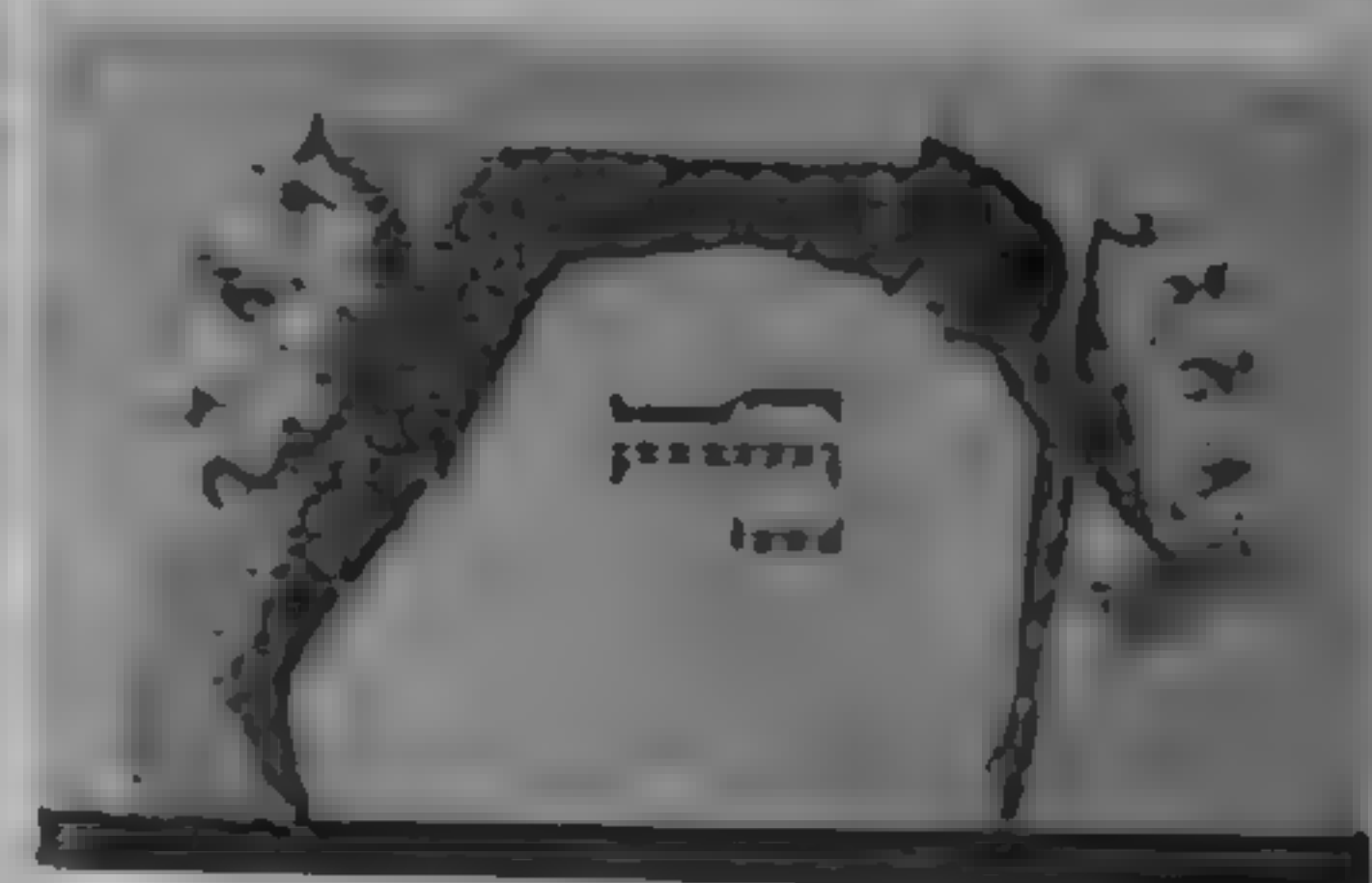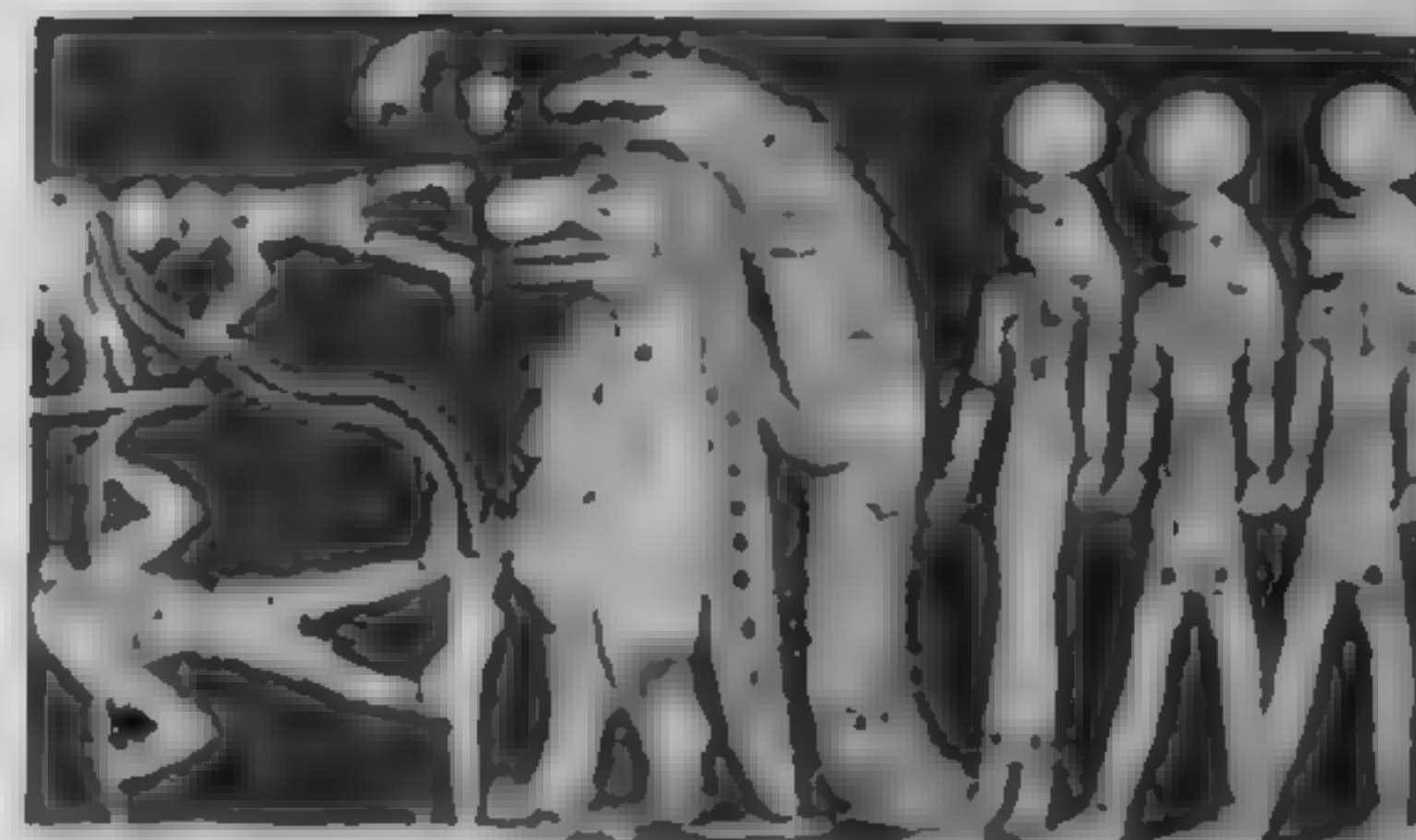
१. थीब्ज के मुख्य मंदिर का स्तंभागार। (पुनर्कल्पित।) छत विशाल स्तंभों पर टिकी हुई है। ऐसे एक स्तंभ पर १०० आदमी खड़े हो सकते थे। स्तंभों और उनपर खुदी हुई मानव आकृतियों की आदमी के कद से तुलना करें। २. प्राचीन मिस्रियों की कल्पना में देवता ऐसे हुआ करते थे। (यह चित्र एक समाधि से लिया गया है।) मिस्रियों की परिवेशी प्रकृति उनके देवी-देवताओं के स्वरूप में कैसे प्रतिबिंबित हुई? ३. प्राचीन मिस्रवासी सोचते थे कि आकाश और सूर्य ऐसे हैं। (प्राचीन चित्र।) सूर्यदेवता रा आकाश की यात्रा कर रहा है। सोचें और बतायें कि मिस्रवासी सूर्य के इतने भक्त क्यों थे।

इसी प्राकृतिक परिघटना ने प्राचीन मिस्र में देवता की मृत्यु और फिर पुनरुज्जीवित होने के आख्यान को जन्म दिया। रेगिस्तान का दुष्ट देवता सेत, जिसका चेहरा लाल और आंखें सूजी-सूजी हैं, अपने ५० अनुचरों के साथ आकर खेतों में अनाज के उगने में मदद देनेवाले **ओसिरिस** देवता की हत्या कर देता है। किंतु जैसे प्रकृति में पुनः जीवन का संचार हो जाता है, वैसे ही ओसिरिस भी पुनः जीवित हो उठता है।

३. पारलौकिक जीवन में विश्वास। पुनरुज्जीवित ओसिरिस उस लोक का शासक और न्यायाधीश बना, जहां लोगों की आत्माएं उनकी मृत्यु के बाद वास करती हैं। इस काल्पनिक लोक और जीवन को **परलोक** और **पारलौकिक जीवन** (मरणोपरांत जीवन) कहते हैं। ओसिरिस के लोक में पानी की कमी न थी और फ़सल भी आदमी जितनी ऊंची होती थी। किंतु हर कोई आत्मा इस मृतक लोक में नहीं पहुंच सकती थी। ओसिरिस निर्णय करता था कि किस आत्मा को उसमें प्रवेश दिया जाये। यदि आदमी ने अपने जीवनकाल में देवताओं की इच्छा

का उल्लंघन किया होता था, तो ओसिरिस उसे कठोर दंड देता था और उसकी आत्मा को खूंखार जीव खा जाते थे।

मिस्रवासियों का विश्वास था कि शव को यदि सुरक्षित रखा जाये, तो आत्मा उसमें पुनः लौट सकती है। अतः वे शव से अंतड़ियां, वगैरह निकालकर उसे एक लवणयुक्त घोल से साफ़ करते थे और फिर विशेष रसों में भिगोये हुए सफ़ेद कपड़े में लपेट देते थे। ऐसा शव सड़ता नहीं बल्कि सूख जाता है। सूखे शवों को **ममी** कहते हैं। ममी बनाने में बहुत खर्च आता था, इसलिए केवल संपन्न लोगों के शवों को ही ममी बनाकर सुरक्षित रखा जाता था।

मिस्रवासियों के देवताओं और पारलौकिक जीवन से संबंधित आख्यान हमें बचकाने और हास्यजनक लगते हैं। किंतु प्राचीन मिस्र के निवासी उनमें विश्वास करते थे और ओसिरिस से बहुत डरते थे।

४. पुरोहित वर्ग। मंदिरों को देवताओं का निवास माना जाता था। उनमें उनकी मूर्तियां स्थापित की जाती थीं। देवताओं का अनुग्रह पाने के लिए लोग उनकी पूजा करते थे, उनके सामने भेंटें और बलियां चढ़ाते थे। किसान खुद भूखे रह लेते थे, मगर देवताओं को अनाज, साग-सब्जियां, आदि नियमित रूप से चढ़ाना कभी नहीं भूलते थे। दासस्वामी मंदिरों को सोना, दास, मवेशी, आदि और फ़िराऊन उपजाऊ जमीनें भी भेंट किया करते थे। मंदिरों के पास अपार संपत्ति थी। थीब्ज के मंदिर के पास ८० हजार से अधिक दास थे।

मंदिरों में सभी अनुष्ठान-कार्य **पुरोहितों (पुजारियों)** के जरिये किये जाते थे। यह माना जाता था कि देवता उनके हाथों का दिया हुआ भोग ही स्वीकार करते हैं, अतः वे ही देवताओं की मूर्तियों के सामने खाद्य, पेय, आदि रखते थे। मिस्रवासियों का विश्वास था कि पुरोहितों का देवताओं से प्रत्यक्ष संपर्क होता है, पुरोहित देवताओं तक लोगों की भेंटें ही नहीं, याचनाएं भी पहुंचा सकते हैं और देवताओं को लोगों से जो कहना होता है, वे पुरोहितों के ही मुंह से कहते हैं। पुरोहित की वाणी देवताओं की वाणी मानी जाती थी।

मंदिरों की सारी संपत्ति का प्रबंध पुरोहितों के हाथों में था। वे सबसे बड़े दासस्वामियों, भूमिपतियों और संपत्तिधरों में गिने जाते थे और अपने दासों तथा क़र्ज़दारों का निर्मम शोषण किया करते थे।

५. फ़िराऊनों का दैवीकरण। पुरोहित लोग मिस्रवासियों को फ़िराऊनों तथा दूसरे दासस्वामियों के आदेशों का कठोरतापूर्वक पालन करने की शिक्षा देते थे। वे कहते थे, "आज्ञाकारी देवताओं का प्रिय होता है और आज्ञा न माननेवाले से देवता क्रुद्ध हो जाते हैं।" वे फ़िराऊनों की आज्ञाओं का उल्लंघन करनेवालों को सूखा, प्लेग, दुश्मनों के हमले और ओसिरिस के दंड का भय दिखाया करते थे।

मिस्रवासियों को लगता था कि फ़िराऊन जैसी असीम शक्ति और सत्ता किसी आदमी नहीं, बल्कि देवता के ही पास हो सकती है। अतः वे फ़िराऊन को "महादेव" कहा करते थे। उनकी स्तुति में कहा जाता था, "वह सूर्य है, जो अपनी किरणों से देखता है।" मंदिरों में देवताओं की मूर्तियों और चित्रों के साथ-साथ फ़िराऊनों की मूर्तियां और चित्र भी बनाये जाते थे। (देखें पृष्ठ ६२, चित्र १ और रंगीन छायाचित्र ४।) आम लोग ही नहीं, सामंत
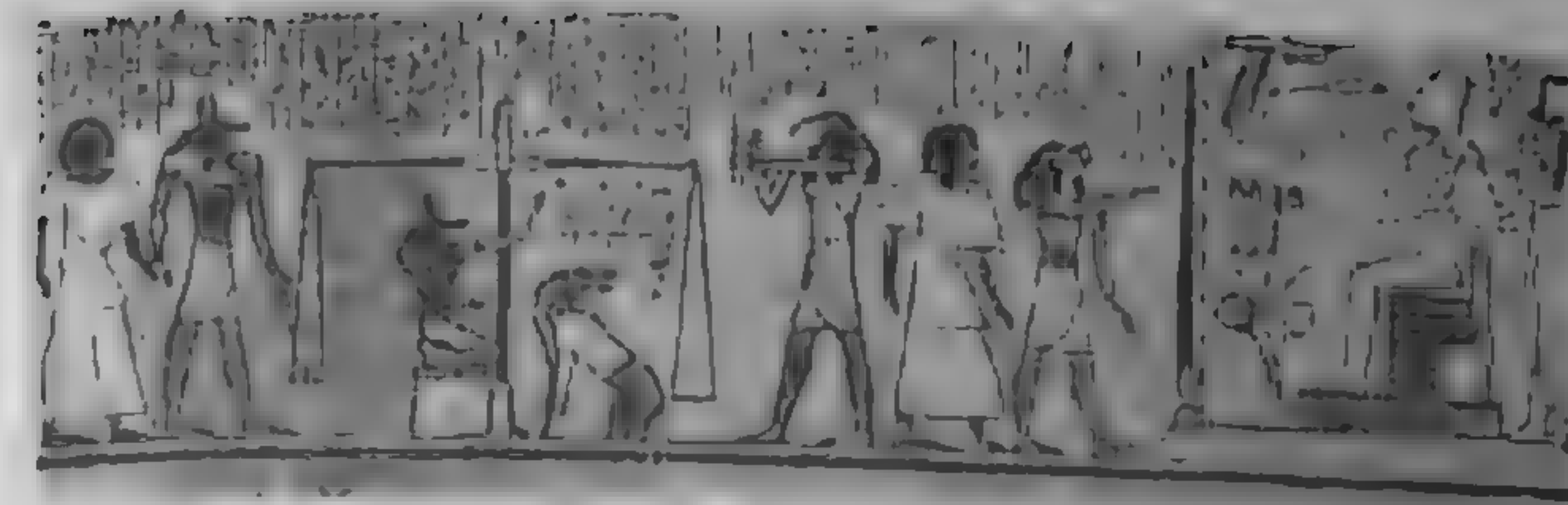
ओसिरिस का दरबार। (एक प्राचीन मिस्री चित्र।) ओसिरिस सिंहासन पर बैठा हुआ है। उसके सिर पर मुकुट और हाथ में दंड और पाश है, जो राज्यसत्ता के चिह्न माने जाते थे। अन्य देवता मृतक के हृदय को तौल रहे हैं और आत्मा ओसिरिस के सामने खड़ी है। मगर जैसे सिरवाला सिंह मृतक की आत्मा के भाग्य के निर्णय की प्रतीक्षा कर रहा है।
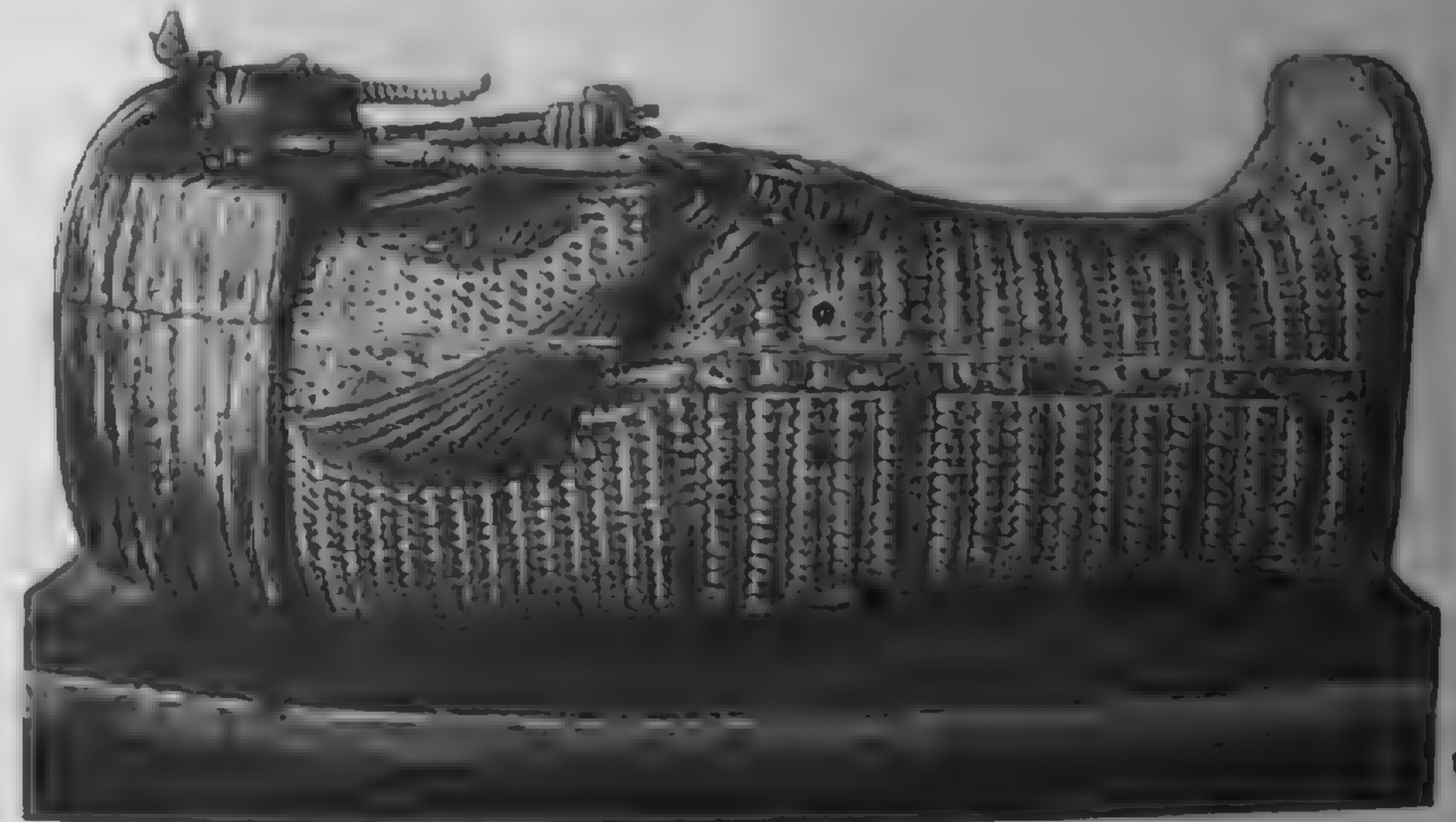
१. ओसिरिस के पुनरुज्जीवन का एक प्राचीन मिस्री चित्र। पास में ओसिरिस का पुत्र होरस खड़ा हुआ है।
२. स्वर्णनिर्मित शव-पेटिका, जिसमें फ़िराऊन का शव रखा गया था। पेटिका के ढक्कन पर फ़िराऊन की आकृति बनी हुई है।

और सम्भ्रांत लोग भी फ़िराऊन के सामने दंडवत करते थे और उसके पदचिह्न चूमा करते थे। फ़िराऊन की जूती चूम पाना परम सौभाग्य की बात मानी जाती थी।

मिस्र में धर्म ने फ़िराऊनों की सत्ता और दासस्वामियों के प्रभुत्व को और मजबूत बनाया। देवताओं का क्रोधभाजन बनने और मरणोपरांत जीवन में दंड के पाने के भय से उत्पीड़ित लोग अपने उत्पीड़कों के विरुद्ध सफल संघर्ष न कर पाये।

१. मंदिर की दीवार पर खुदा हुआ फ़िराऊन और युद्ध की देवी का चित्र। फ़िराऊन को किन चिह्नों से पहचाना जा सकता है? फ़िराऊनों को देवी-देवताओं के साथ क्यों चित्रित किया जाता था? २. एक प्राचीन समाधि से प्राप्त पुरोहित की मूर्ति।

'नील महिमा' से:

इस गीत में मिस्रवासियों के लिए नील नदी के महत्त्व के बारे में क्या कहा गया है? इस गीत के किन शब्दों से यह पता चलता है कि प्राचीन मिस्री नील नदी को जानदार मानते थे?

जय हो, नील, तुम्हारी!
तू बहती मिस्र को जीवन देती,
तू रुकती, जीवन गति रुक जाती।
जब तू क्रुद्ध, त्राहि-त्राहि मच जाये,
राजा-रंक सभी लुट जायें।

तू उठती, धरती खिल पड़ती,
जीवन-लहर उसमें भरती।
तू अन्नदायी, धन-धान्यमयी है,
सौंदर्य सभी तेरी रचना है।
हर्षविभोर बच्चे हम तेरे,
तव महिमा गायें, गाता तू जैसे।

? १. मिस्रवासियों के धर्म से भी उनके जीवन के बारे में बहुत सी बातें मालूम की जा सकती हैं। मिस्रवासियों के धार्मिक विश्वास मिस्र की प्रकृति के बारे में क्या जानकारी देते हैं? क्या मिस्रवासियों के धर्म से यह मालूम किया जा सकता है कि उनका मुख्य धंधा क्या था? मिस्री धर्म में ऐसी क्या बातें हैं, जो वर्गों और राज्य की उत्पत्ति पर प्रकाश डालती हैं? २. मिस्र में पुनरुज्जीवित देवता का आख्यान क्यों पैदा हुआ? ३. पारलौकिक जीवन में विश्वास से किसको लाभ होता था और क्यों? ४. § ११ से आपको धार्मिक अंधविश्वासों के बारे में कौन सी नयी बातें मालूम हुई हैं? इन विश्वासों से और क्या हानियां हुईं? ५. § ११ से आपको दासप्रथात्मक व्यवस्था के बारे में कौन सी नयी बातें मालूम हुई हैं?

§ १२. प्राचीन मिस्र में विज्ञान और लेखन कला की उत्पत्ति

याद करें कि आदिम लोग प्रकृति के बारे में क्या जानते थे और अपनी जानकारी को उन्होंने कैसे इस्तेमाल किया।

१. **गणित का जन्म।** किसान का इन चीजों का हिसाब लगाये बिना काम नहीं चल सकता था कि उसने कितना अनाज बटोरा है, कितना बोवाई पर खर्च होगा और कितना उसे अपने खाने के लिए चाहिए। कांसा तैयार करते हुए शिल्पी को तांबे और टीन की ठीक-ठीक मात्रा का हिसाब रखना पड़ता था। बांधों और इमारतों का निर्माण भी जटिल गणनाओं के बिना संभव नहीं था। यहां इसका पूरा-पूरा हिसाब लगाना जरूरी था कि निर्धारित अवधि में निर्माण पूरा करने के लिए कितने कामगर लगाने होंगे और कितनी सामग्रियों की जरूरत पड़ेगी।

इस तरह श्रम ने ही **अंकगणित** को जन्म दिया। मिस्रवासी भिन्न से परिचित थे और १० लाख तक की संख्याओं को जोड़, घटा और विभाजित कर लेते थे। १० लाख की संख्या लिखने के लिए आदमी को हाथ उठाये हुए चित्रित किया जाता था, जैसे वह इतनी बड़ी संख्या पर आश्चर्य प्रकट कर रहा हो।

नहरें खोदने और खेतों को टुकड़ों में बांटने में भूमि और कोणों को मापना पड़ता था। इसने **ज्यामिति (रेखागणित)** को जन्म दिया।

२. **खगोलविज्ञान का जन्म।** नील में बाढ़ का मौसम शुरू होने से पहले-पहले किसानों को खेत, नहरें और बांध तैयार कर लेने होते थे। मिस्रवासियों ने देखा कि बाढ़ से पहले आकाश में नक्षत्र हर साल एक निश्चित स्थिति में होते हैं। इन पर्यवेक्षणों से ही **खगोलविज्ञान** – ग्रहों
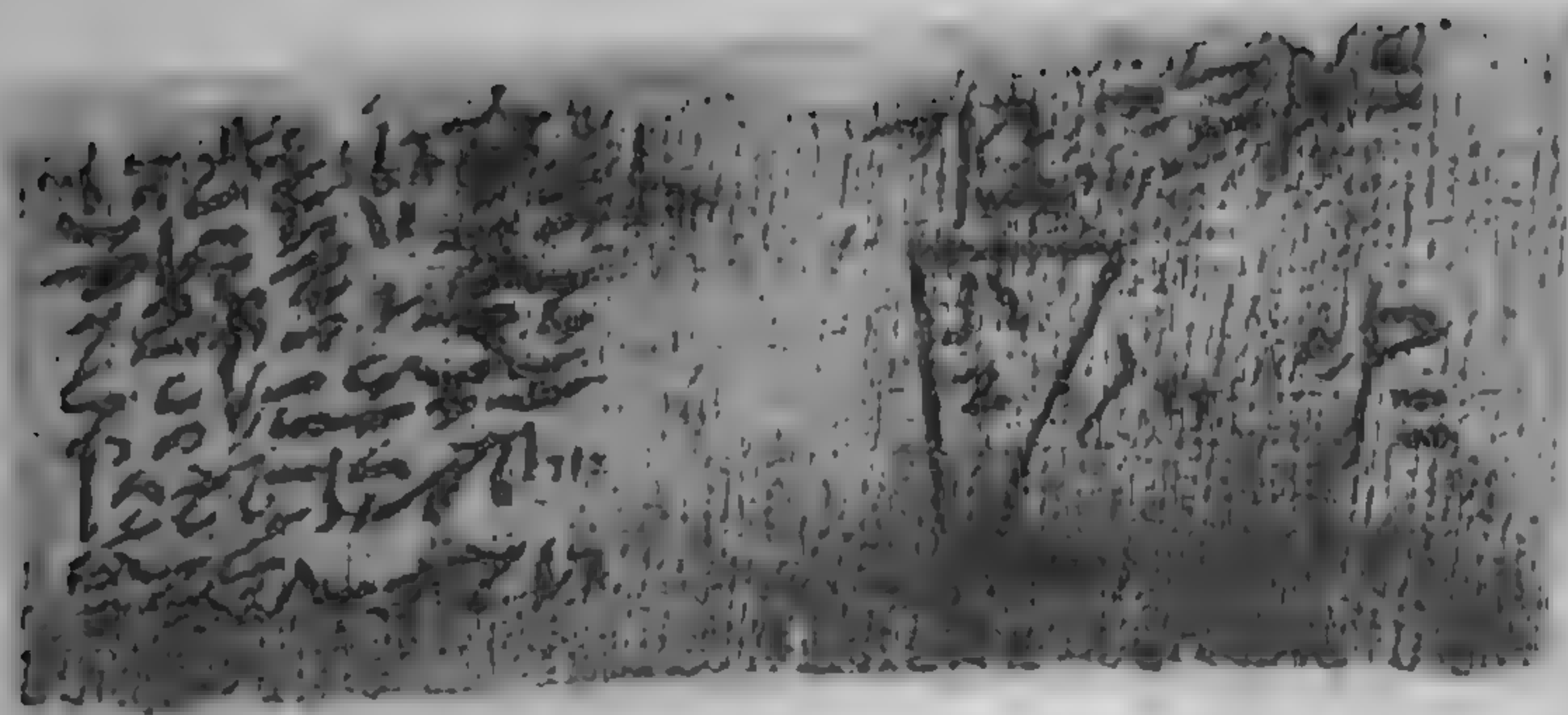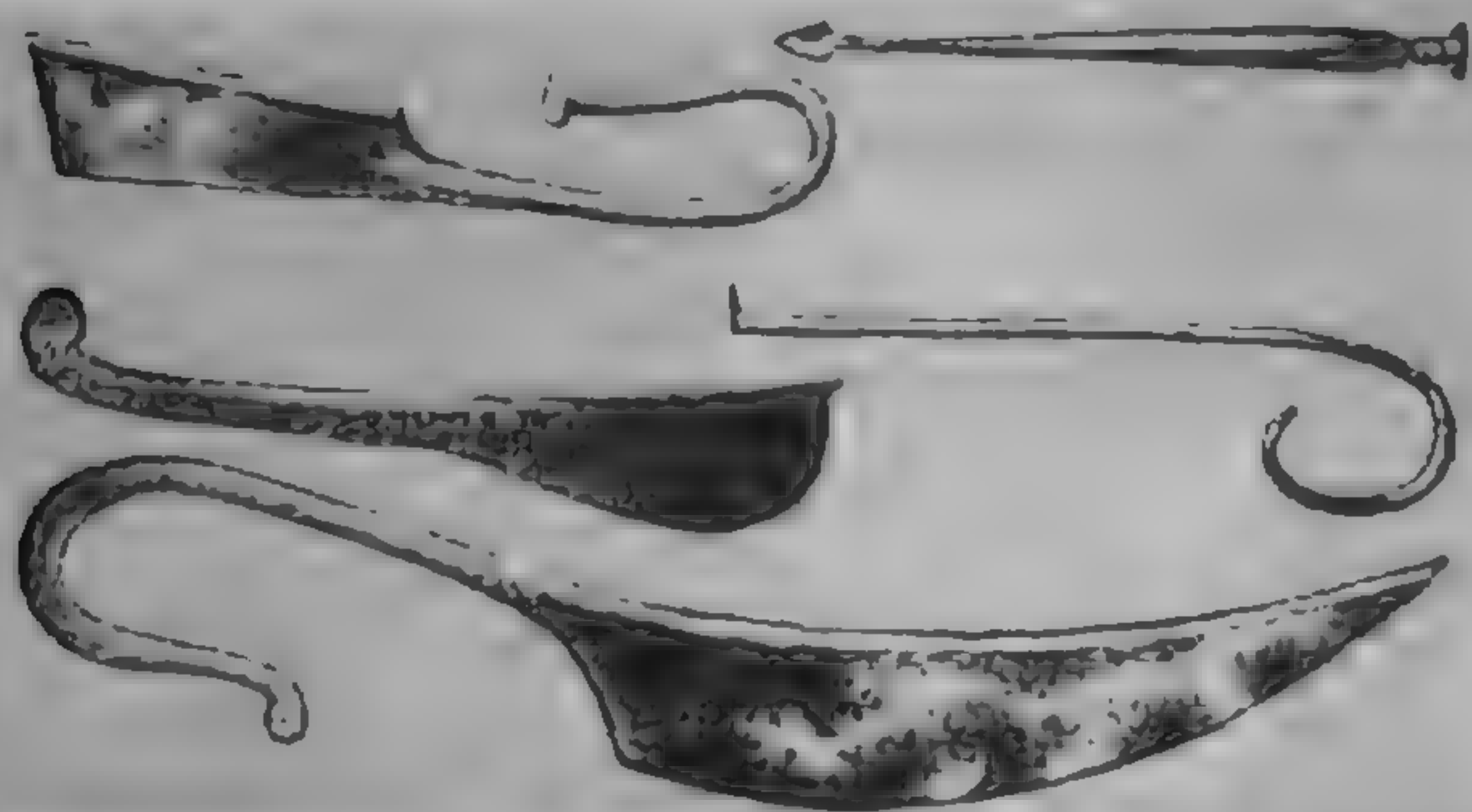
१. प्राचीन मिस्री पेपाइरस का एक अंश, जिसपर ज्यामितीय आकृति भी बनी हुई है। २. कांस्यनिर्मित प्राचीन मिस्री शल्यक्रिया उपकरण। **इन उपकरणों की खोज से क्या पता चलता है?**

व नक्षत्रों का अध्ययन करने के विज्ञान – की नींव पड़ी। मिस्रवासियों ने नक्षत्रों से युक्त आकाश का मानचित्र भी बना लिया। सागर और रेगिस्तान में वे नक्षत्रों को देखकर दिशा निर्धारण करते थे। बेशक तब उनके पास दूरबीन जैसी कोई चीज़ नहीं थी, फिर भी उन्हें कई नक्षत्रों का ज्ञान हो गया था।

मिस्रवासियों ने **पंचांग** भी बनाया। उन्होंने गणना की कि वर्ष में ३६५ दिन होते हैं। (सोचें और बतायें कि इसमें क्या त्रुटि थी।)

३. **आयुर्विज्ञान**। आयुर्विज्ञान का जन्म प्रागैतिहासिक काल में ही हो गया था। किंतु शवों को ममी बनाकर सुरक्षित रखने के रिवाज की बदौलत मिस्रवासियों ने मानव शरीर की भीतरी रचना का भी अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया था और इससे बहुत से रोगों की चिकित्सा में मदद मिली। मिस्री चिकित्सक नाड़ी की गति देखकर रोग का निदान करते थे। वे बहुत सी वनस्पतियों के रोगहर गुणों से परिचित थे। उनके बहुत से ऐसे कांस्य उपकरण आज तक बच रहे हैं, जिनसे वे शल्यक्रिया करते थे।

४. **लेखन कला**। चौथी सहस्राब्दी ईसापूर्व तक मिस्रवासियों का ज्ञान-भंडार इतना बढ़ चुका था कि सभी कुछ याद रखना और मौखिक रूप से दूसरों को बता पाना अब संभव नहीं था। इस तरह लिखने की आवश्यकता पैदा हुई। **लेखन कला या लिपि** का जन्म मिस्र में राज्य की उत्पत्ति के साथ हुआ।

आरंभ में मिस्रवासी जो कहना चाहते थे, उसका सिर्फ़ चित्र बना देते थे। मिसाल के लिए, मध्य में बिंदु से युक्त गोले का अर्थ सूर्य और धनुष-बाण लिये आदमी का अर्थ सैनिक था। (याद करें कि चित्रों की सहायता से कैसे घटनाओं का वर्णन किया जाता था। देखें पृष्ठ ४८ पर दिया चित्र।) इसके बाद चिह्नों की सहायता से पूरे के पूरे शब्दों को ही नहीं, अलग-अलग ध्वनियों और शब्दों के हिस्सों को भी व्यक्त किया जाने लगा।

चित्राकार चिह्नों को **चित्राक्षर** और उनपर आधारित लिपि को **चित्रलिपि** कहा जाता है। मिस्री लिपि में कोई ७५० चित्राक्षर थे। तेज़ लिखाई के लिए अधिक आसान चिह्न बनाये गये थे।

मिस्र में लेखन के लिए बहुत अच्छी सामग्री उपलब्ध थी। नील का पानी जहां छिछला था, वहां **पेपाइरस** नामक ४-५ मीटर ऊंची नरकल जैसी झाड़ियां उगा करती थीं। मिस्री इनके तनों को काटकर पतली-पतली परतें निकाल लेते थे और उन्हें आपस में चिपकाकर क़ागज़ के पन्ने जैसा बना लेते थे। अब इस पन्ने पर नरकल की क़लम और स्याही से लिखा जा सकता था। अगर पन्ना पूरा न पड़ता, तो उसपर नीचे एक और पन्ना चिपका लिया जाता था। इस तरह लंबी-लंबी पट्टियां बन जाती थीं। उनमें से एक की लंबाई तो ४० मीटर है। लिखे हुए पन्नों को भी पेपाइरस ही कहा जाता है। मिस्रवासी लेख पत्थरों पर भी खोदा करते थे।

५. **प्राचीन मिस्र में शिक्षा और विद्यालय**। मिस्री साम्राज्य को पढ़े-लिखे सरकारी कर्मचारियों, अधिकारियों और दूसरे शिक्षित लोगों की आवश्यकता थी। इसलिए मिस्र में लड़कों को शिक्षा देने के लिए विद्यालय खोले गये। उनमें केवल सामंतों, अधिकारियों और पुरोहितों के बच्चों को ही लिया जाता था। शिक्षा कई वर्ष तक जारी रहती थी। विद्यार्थी लिखने का अभ्यास और गणित के सवाल किया करते थे। छोटे विद्यार्थी मिट्टी के टूटे हुए बर्तनों के ठीकरों पर लिखते थे और बड़े विद्यार्थी पेपाइरस के पन्नों पर। विद्यार्थियों के लिखे हुए कुछ निबंध, अभ्यास, आदि आज भी सुरक्षित हैं, जिन्हें उनके अध्यापकों ने सुधारा हुआ है।

विद्यार्थियों को हिदायत दी जाती थी, "अपने हाथ से लिखो, अपने मुंह से पढ़ो, जो तुमसे ज़्यादा जानते हैं, उनकी सलाह लो... नहीं तो तुम्हें पीटेंगे। बालक के कान उसकी पीठ पर होते हैं, जब उसे पीटा जाता है, वह सुनता है।" अध्यापक के सहायक को "छड़ीवाला" कहा जाता था। उसका काम आलसी और आज्ञा न माननेवाले विद्यार्थियों को दंड देना था।

हालांकि प्राचीन मिस्र में लेखन कला और ज्ञान-विज्ञान केवल दासस्वामियों की ही

5 158
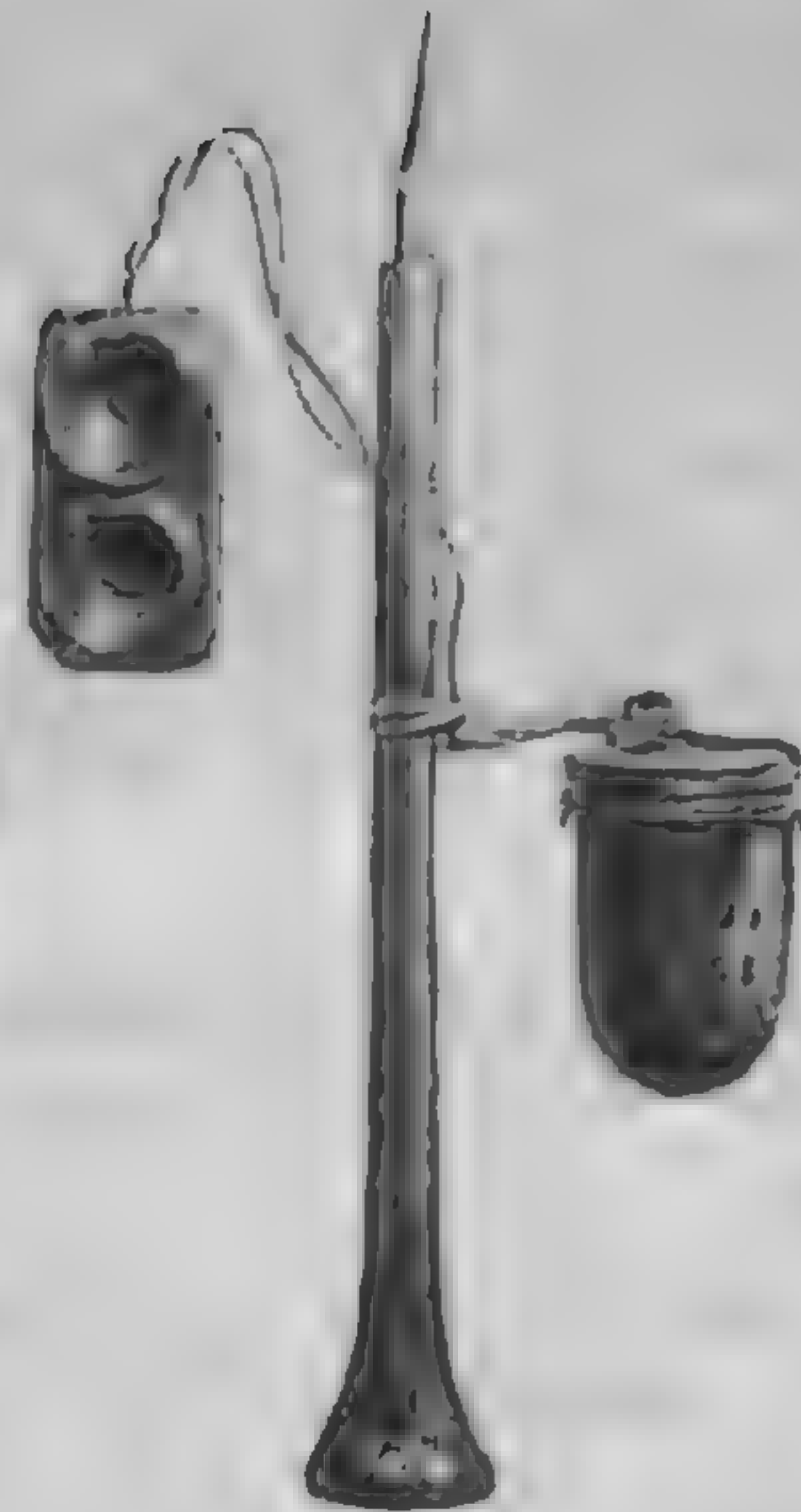
१. नक्षत्रपूर्ण आकाश का प्राचीन मिस्री मानचित्र। प्राचीन मिस्रवासी नक्षत्रों तथा राशियों को परस्पर गड्ड करते थे और उन्हें देवताओं, मनुष्यों और प्राणियों (सिंह, दरियाई घोड़ा बिच्छू, आदि) के रूप में चित्रित किया करते थे। मानचित्र दिखाता है कि मिस्री विज्ञान में धार्मिक विश्वासों का कितना सम्मिश्रण था। २. लिखने की सामग्री : दवात, नरकुल की कलम और पानी का डिब्बा। ३. मिस्री चित्रलिपि।

सैनिक

जाना

सूर्य

रोना

नदी में ऊपर की ओर जाना
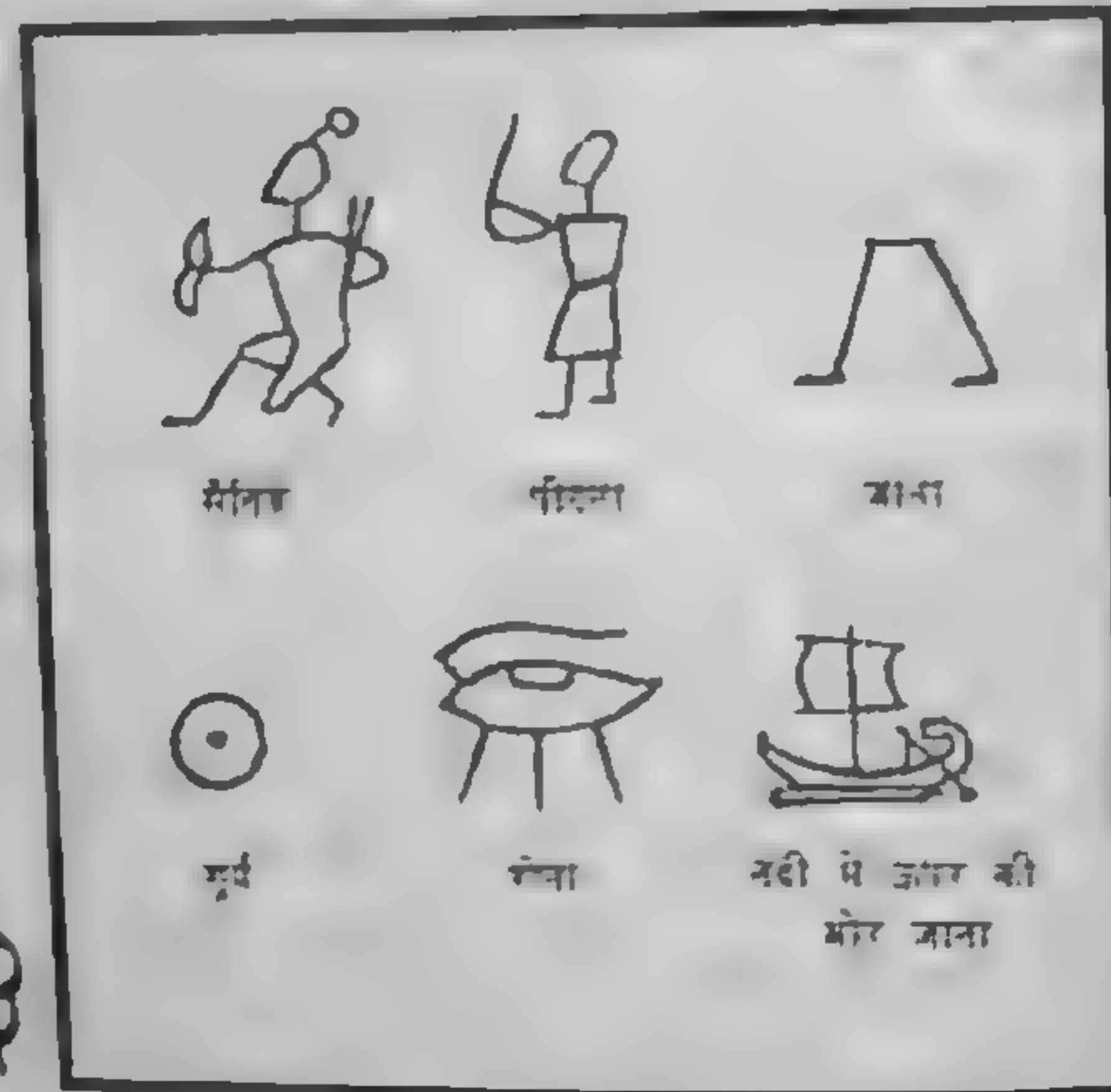
पढ़ते न थे, फिर भी उनके आविर्भाव ने इतिहास में बहुत बड़ी भूमिका अदा की। ज्ञान-विज्ञान के विकास के कारण कृषि, उद्योग-धंधों और निर्माण कला के विकास में मदद मिली। लेखन कला की बदौलत ज्ञान को सुरक्षित रखना, नयी पीढ़ियों को सिखाना और दूसरी जातियों को भी उससे परिचित कराना संभव हुआ।

प्राचीन मिस्री लिपि कैसे पढ़ी गयी?

प्राचीन मिस्री जिस भाषा में बोला और लिखा करते थे, उसे आगे चलकर लोग भूल गए। मिस्री लेखों को कोई नहीं पढ़ सकता था। लगता था कि चित्राक्षर हमेशा पहेली ही बने रहेंगे।

१९वीं शताब्दी के आरंभ में कोई आदमी मिस्र के रोसेट्टा नामक नगर में मिला एक पत्थर यूरोप लाया। (देखें पृष्ठ ८, चित्र ११)। उसपर मिस्री और यूनानी भाषाओं में अभिलेख खुदे हुए थे, जिनमें राजा के नाम के गिर्द आयत खींचा हुआ था। यूनानी और उस काल में ज्ञात दूसरी प्राचीन भाषाएं जाननेवाले एक युवा फ्रांसीसी विद्वान शांपोलियों का अनुमान था कि राजा के नाम में हर चित्राक्षर किसी निश्चित अक्षर का द्योतक है, किंतु कुछ स्वरों को छोड़ दिया गया है। विभिन्न भाषाओं के अभिलेखों की तुलना करके शांपोलियों ने कुछ चित्राक्षरों का अर्थ मालूम कर लिया। इस काम में उसे एक अन्य पत्थर पर खुदे अभिलेख से बड़ी सहायता मिली, जिसमें एक ऐसे नारी नाम के गिर्द आयत बना हुआ था, जिसे वह जानता था। ज्ञात अर्थवाले चित्राक्षरों का इस्तेमाल करके शांपोलियों फिर थुत्मोस और दूसरे फ़िराऊनों के नाम पढ़ने में भी सफल हो गया। इस तरह प्राचीन मिस्री लेखों का पढ़ा जाना आरंभ हुआ।

शांपोलियों के काम को दूसरे विद्वानों ने आगे जारी रखा। आज प्राचीन मिस्री लेख पहेली नहीं रह गये हैं। पेपाइरस और पत्थर पर लिखे हुए हजारों प्राचीन मिस्री लेख अब तक पढ़े जा चुके हैं।
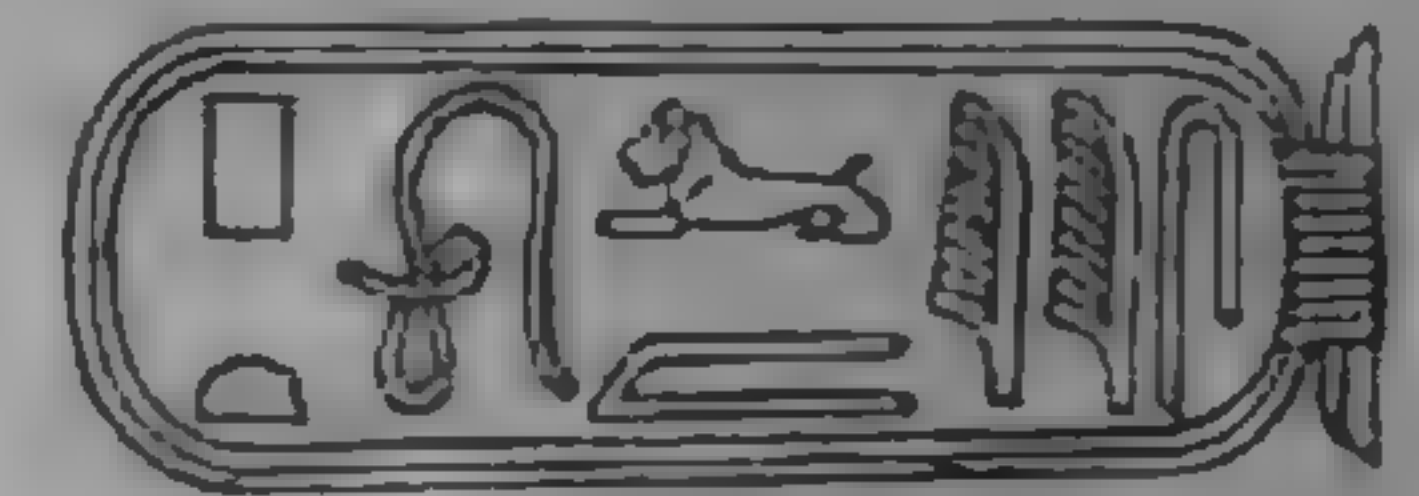
टॉलेमी और क्लिओपेट्रा के नामों से युक्त अभिलेख। दोनों में 'ट' के लिए अलग-अलग प्रतीक इस्तेमाल किये गये हैं। क्लिओपेट्रा के नाम में अंतिम दो प्रतीक स्त्रीलिंग के सूचक हैं।

? १. प्राचीन मिस्र में विभिन्न विज्ञानों का जन्म कैसे हुआ? २. मान लो कि प्राचीन मिस्रवासियों ने किसी बंजर, ऊंची जगह पर स्थित खेत में अनाज बोने का फैसला किया है। बताओ कि इस काम को पूरा करने के लिए उन्हें किन बातों का ज्ञान होना चाहिए और किन बातों का हिसाब लगाना होगा? ३. सागर और रेगिस्तान में यात्रा के लिए किन बातों का ज्ञान होना और किन बातों का हिसाब लगाना आवश्यक है? ४. प्राचीन मिस्र में लेखन कला का आरंभ और विकास कैसे हुआ? प्राचीन मिस्री लिपि और आधुनिक लिपियों में क्या अंतर है? ५. प्राचीन मिस्र में पढ़े-लिखे लोग कम क्यों थे?

§१३. प्राचीन मिस्री साहित्य और कलाएं

(मानचित्र २)

याद करें कि कला का जन्म कब और कैसे हुआ था (§३, अनुच्छेद १)।

१. साहित्य। मिस्री पेपाइरसों को पढ़कर वैज्ञानिकों को मालूम हुआ कि प्राचीन मिस्रवासी साहित्य की रचना करने लग गये थे।

स्तोत्र (गीत) और लोगों के जीवन तथा
देवी-देवताओं तथा फ़िराऊनों की प्रशस्ति में रची जाती थी। मिस्रवासियों ने बहुत सी पौराणिक
अन्य देशों की यात्राओं के बारे में कहानियां आख्यानों की भी रचना की।
कथाओं, यानी देवी-देवताओं और काल्पनिक वीरों से संबंधित "उपदेश" भी बहुत प्रचलित थे, जिनमें आम
इनमें सबसे प्रसिद्ध ओसिरिस आख्यान था। अपने से उच्च मानकर उनके सामने झुकने
लोगों को फ़िराऊनों और संभ्रात वर्ग के लोगों को भुकाओ!", "आदमी को जन्म से
की सीख दी जाती थी: "अधिकारियों के सामने सिर चाहिए", आदि।
ही अधिकारियों की आज्ञा का पालन करना सीखना
गरीब लोग अपने गीतों और कहावतों को चूंकि लिख नहीं पाते थे, इसलिए उनमें
से बहुत कम ही हम तक पहुंच पाये हैं। जो गीत और कहावतें हमें ज्ञात हो सकी हैं, उनके
हर शब्द में इन लोगों की हृदयविदारक कराह की गूंज है।
२. प्राचीन मिस्री समाधियां। लिखित स्रोत-सामग्रियों के अलावा समाधियां और मंदिर भी
हमें प्राचीन मिस्रियों के विश्वासों और दृष्टिकोणों के बारे में बताते हैं।
दूसरी सहस्राब्दी ईसापूर्व में ही पिरामिडों का निर्माण बंद हो गया था। अब फ़िराऊनों
और अमीर लोगों को दफ़नाने के लिए पहाड़ियों को अंदर से तराशकर समाधियां बनायी
जाने लगीं, जिनमें कई-कई कमरे होते थे। समाधि में ममी को रखा जाता था। ममी शायद
सुरक्षित न रह पाये, इस डर से समाधि में पत्थर या लकड़ी से बनी मूर्तियां भी रखी जाती
थीं, क्योंकि मिस्रियों के विश्वास के अनुसार तब मृतक की आत्मा मूर्ति में वास कर सकती
थी। मिस्री मूर्तिकारों ने आदमी का चेहरा गढ़ने में बड़ा नैपुण्य प्राप्त कर लिया था। समाधि
के भीतर छाये धुंधलके में लगता था कि सामने मूर्ति नहीं, जीवित आदमी ही मौजूद है।
(देखें रंगीन छायाचित्र १।)
समाधियों की दीवारों पर रंगों से चित्र बनाये जाते थे, जिनमें अमीर लोगों के जीवन
को दर्शाया होता था, जैसे दास खेतों में खड़ी घनी फ़सल काट रहे हैं, शिल्पशालाओं में कारीगर
काम कर रहे हैं, दावत के लिए पशु-पक्षी काटे जा रहे हैं, पास ही स्वयं दावत चल रही
है, वादक और नर्तक घर के मालिक और उसके मेहमानों का मनोरंजन कर रहे हैं, आदि।
समाधियों में लकड़ी या मिट्टी से बनी रसोइयों, नौकरों और दूसरे कारिंदों की लघु
मूर्तियां भी रखी होती थीं। मिस्रवासियों का विश्वास था कि चित्रों और मूर्तियों में जो कुछ
भी अंकित किया जायेगा, वह फिर वास्तविक बन जायेगा और मृतक जीवित आदमी जैसा
ही जीवन बिताता रहेगा। अमीर लोग मरने के बाद भी दासस्वामी बने रहना चाहते थे।
किसान की क़ब्र में उसके शव के साथ लकड़ी के तख़्ते पर तराशी हुई आदमी की मूर्ति
रखी जाती थी। वह ममी का काम करती थी। मरे हुए दासों को मामूली और कई-कई दासों
के लिए एक साथ खोदे गये गड्ढे में दफ़नाया जाता था।
३. प्राचीन मिस्र के मंदिर। प्राचीन मिस्र में वास्तुकारों की देख-रेख में अनेक विराट और
भव्य मंदिर बनाये गये थे।
मंदिर के मार्ग के दोनों ओर स्फ़िंक्स, यानी नरसिंही मूर्तियां खड़ी की जाती थीं।
स्वयं मंदिर के द्वार पर फ़िराऊन की मूर्तियां खड़ी होती थीं, जो आकार में आदमी से ५-६
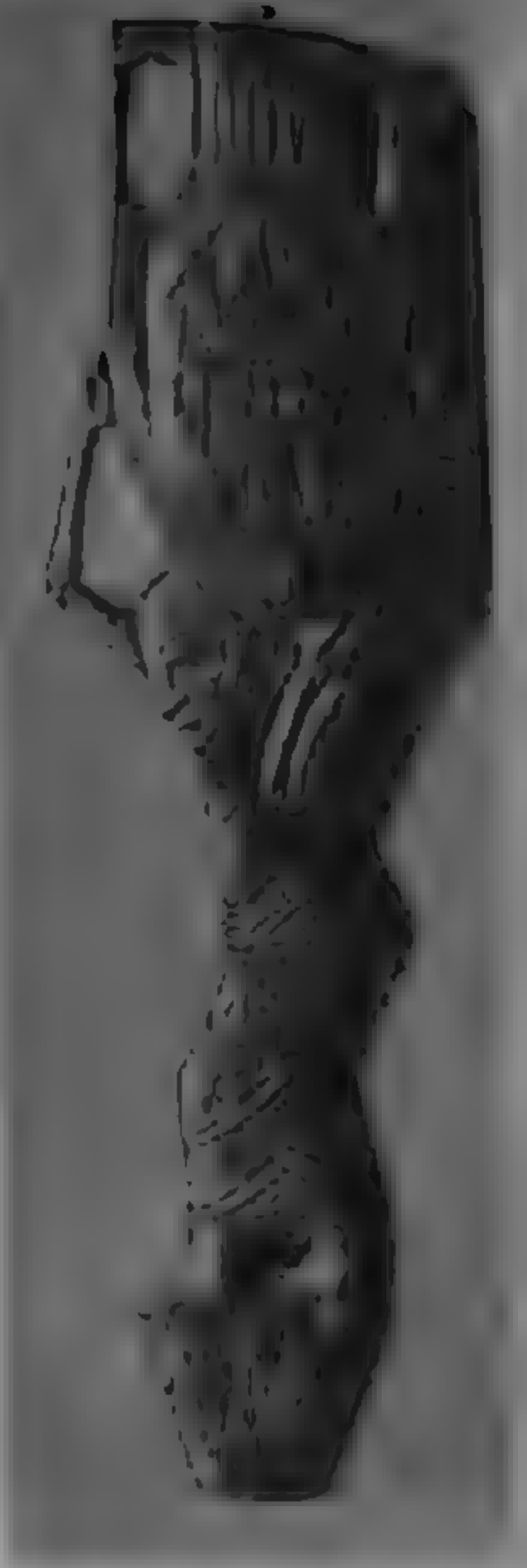
१. एक प्राचीन मिस्री पोत का मॉडल। समाधियों में ऐसे मॉडल क्यों रखते जाते थे? २. एक समाधि से प्राप्त निरीक्षक की मूर्ति। ३. कलश उठाये एशियाई की आकृति का काष्ठ-चम्मच।

मंदिर के प्रांगण में पहुंचा
गुना बड़ी होती थीं। दो मीनारों के बीच स्थित संकरे दरवाज़े से
जाता था।
प्रांगण के पार एक बहुत बड़ा कक्ष होता था, जिसमें बहुत कम प्रकाश पहुंच पाता
था। उसकी छत दर्जनों स्तंभों पर टिकी होती थी, कुछ कक्षों में स्तंभ पेपाइरस के नलों की
गांठों जैसे बनाये जाते थे, तो कुछ में ऊंचे छरहरे ताड़ जैसे और कुछ में ऐसे डंठल के आकार
के, जिसके शीर्ष पर फूल खिल रहा है। (देखें पृष्ठ ५९, चित्र १।)
थीब्ज़ के मुख्य मंदिर के स्तंभ २३ मीटर ऊंचे हैं। इस मंदिर की गहरे नीले रंग से
रंगी छत पर सुनहरे तारे बनाये गये हैं। मीनारों, दीवारों और स्तंभों पर फ़िराऊनों और
पशुओं के सिरवाले देवी-देवताओं के चित्र उकेरे हुए हैं। (देखें पृष्ठ ५९, चित्र १ और
पृष्ठ ५७, चित्र २।) कुछ चित्रों में फ़िराऊन को देवताओं से वार्तालाप करता हुआ दिखाया
गया है, तो कुछ में शत्रु सेना से लड़ता तथा उसपर विजय पाता हुआ और कुछ में एक ही
हाथ से कई-कई युद्धबंदियों को पकड़ता हुआ। नील नदी के तट पर आज भी फ़िराऊनों की
विराट प्रतिमाएं खड़ी हैं।

चौथा अध्याय

प्राचीन पश्चिमी एशिया

सभ्यता का आविर्भाव विश्व के जिन भागों में सबसे पहले हुआ था, उनमें से एक पश्चिमी एशिया है। पूर्व में ईरान के पठार से लेकर पश्चिम में भूमध्य और काला सागरों तक फैला यह भूभाग अधिकांशतः रेगिस्तानी और शुष्क मैदानी है, जिसमें बीच-बीच में कई उपजाऊ नदी घाटियां हैं। इनमें सबसे बड़ी दजला और फ़रात नदियों की घाटियां हैं।

§ १४. मेसोपोटामिया में वर्गों की उत्पत्ति

(मानचित्र २)

याद करें कि पशुपालन और कृषि के विकास ने किस प्रकार के समुदायों को जन्म दिया था (§५, अनुच्छेद ३)।

१. दक्षिणी मेसोपोटामिया की भौगोलिक विशेषताएं। दजला और फ़रात नदियां काकेशिया के दक्षिण में स्थित पहाड़ों से निकलती हैं और फ़ारस की खाड़ी में जाकर गिरती हैं। इन नदियों के मध्य तथा निचले भागों में स्थित प्रदेश को प्राचीन यूनानियों ने **मेसोपोटामिया**, अर्थात नदियों के बीच का प्रदेश (दोआब) नाम दिया था।

मेसोपोटामिया का दक्षिणी भाग नदियों द्वारा जमा की हुई चिकनी मिट्टी का बना हुआ और मैदानी है। सर्दियों में, जो छोटी होती हैं, यहां मूसलाधार वर्षा होती है, जिससे चारों ओर कीचड़ ही कीचड़ हो जाता है। फिर बसंत में पहाड़ों में बर्फ़ गलती है, तो दजला और फ़रात, दोनों नदियों में बाढ़ आ जाती है और पानी दूर-दूर तक फैल जाता है।

बाढ़ के बाद सारी भूमि को हरियाली ढक लेती है। लेकिन तापमान चूंकि छाया में भी ५०° सेंटीग्रेड तक पहुंच जाता है, इसलिए हरियाली जल्दी ही खत्म हो जाती है और फिर हर ओर गर्मी से झुलसा हुआ, कत्थई रंग का मैदान ही नजर आता है। जहां कहीं गढ़ों में पानी ठहर गया था, वहां दलदल बन जाता है।

दक्षिणी मेसोपोटामिया का एक दृश्य। नदी के तट पर झोपड़ियां, मिट्टी की चारदीवारी और खजूर का बाग स्पष्ट देखे जा सकते हैं।

दक्षिणी मेसोपोटामिया में न धातुएं पायी जाती हैं और न ही पत्थर। लेकिन नदियों की गाद से ढकी यहां की मिट्टी बहुत ही उपजाऊ है।

२. दक्षिणी मेसोपोटामिया के पहले निवासी। दक्षिणी मेसोपोटामिया की उपजाऊ भूमि ने यहां कृषकों को आकर्षित किया। सातवीं-छठी सहस्राब्दी ईसापूर्व में ही यहां के निवासी कुदाली से खेती और भेड़-बकरियों तथा गायों का पालन करने लग गये थे। दलदलों में उगनेवाले सरकंडों और मिट्टी से वे अपने रहने के लिए झोपड़ियां बनाते थे।

बाढ़ इन झोपड़ियों को बहा ले जाती थी और आदमी और जानवर भी जान से हाथ धो बैठते थे। कभी-कभी तो दजला और फ़रात में पानी इतना चढ़ जाता था कि दोनों नदियां मिलकर एक बन जाती थीं। ऐसे में लोगों को लगता था कि सारे विश्व में जल-प्लावन हो गया है, यानी प्रलय आ गया है। दलदली ज्वर, बिच्छुओं और तरह-तरह के कीड़े-मकोड़ों से लोग अलग त्रस्त रहते थे। शेर उनके मवेशियों को खा जाते थे। सरकंडों के जंगलों में विचरनेवाले सूअर आकर उनकी फ़सलें नष्ट कर जाते थे।

किंतु लोगों ने कठिनाइयों के सामने हार न मानी। पड़ोसी समुदायों से संगठित होकर वे दलदलों को सुखाने और भूमि की सिंचाई के लिए नहरें खोदते थे, बांध बनाकर अपनी

१. दक्षिणी मेसोपोटामिया में प्रयुक्त हल। (प्राचीन चित्र।) इस पर बीज बोने की युक्ति भी लगी है। जुताई और बुवाई साथ-साथ की जाती थी। **बतायें कि चित्र में कौन आदमी क्या काम कर रहा है?** २. मेसोपोटामिया में प्राप्त एक बाट। **बाटों का प्रयोग क्या दिखाता है?** ३. देव-दानव युद्ध की कथा का एक प्राचीन चित्र। (यह कथा पृष्ठ ७५-७६ पर पढ़ें।) ४. इस पाटी पर मेसोपोटामियाई प्रलयाख्यान लिखा हुआ है।

बस्तियों और बाग़ों की बाढ़ से रक्षा करते थे। कृषकों ने हल का आविष्कार कर लिया, जिससे वे अब भारी चिकनी मिट्टी को भी जोत सकते थे। (देखें चित्र १।) भीषण गरमी में भी वे नहरों से पानी उठाकर अपने खेत सींचते थे।

३. तीसरी सहस्राब्दी ईसापूर्व में दक्षिणी मेसोपोटामिया की अर्थव्यवस्था। आदमी की मेहनत ने दलदलों और मरु पर विजय पा ली। दक्षिणी मेसोपोटामिया के सारे मैदान में नहरों का गोरखा जाल बिछ गया। खेतों में गेहूं और जौ उगाये जाने लगे थे। बस्तियों के गिर्द **खजूर** के पेड़ों के बाग़ लहलहाने लगे थे। मेसोपोटामियावासी उन्हें "जीवन वृक्ष" कहते थे। खजूर के फलों से आटा और गुड़ तैयार होता था, गुठलियां ईंधन के काम आती थीं, पेड़ की छाल के रेशों से रस्सियां बटी जाती थीं और पत्तों से टोकरियां बुनी जाती थीं। चरागाहों में लंबी और घुंघराली ऊनवाली भेड़ों और गायों के रेवड़ चरते थे।

नगरों में शिल्पी रहते थे और ज़ोरशोर का व्यापार होता था। दक्षिणी मेसोपोटामिया के निवासी पड़ोसी जातियों से धातुएं, लकड़ी और पत्थर लेते थे और बदले में उन्हें अनाज, ऊन और खजूर देते थे। मेसोपोटामियाई शिल्पियों ने चौथी सहस्राब्दी ईसापूर्व में ही तांबा, सोना और फिर कांसे से विभिन्न वस्तुएं बनाना सीख लिया था। उनके द्वारा निर्मित ऊनी वस्त्र दूर-दूर तक मशहूर थे। मेसोपोटामिया के लोग मिट्टी से घड़े, संदूक और नालियां बनाते थे। मिट्टी की ईंटें चिनकर मकानों का निर्माण किया जाता था।

दक्षिणी मेसोपोटामिया की भूमि इतनी उर्वर थी कि उसमें बोया हुआ अनाज का एक दाना सौ दाने देता था और खजूर के एक पेड़ से साल में ५० किलोग्राम तक खजूर पाया जा सकता था। **इतनी ऊंची पैदावार का मतलब था कि आदमी अपनी आवश्यकता से अधिक उत्पादन कर सकता था। इसने कुछ लोगों द्वारा दूसरे लोगों का शोषण किये जाने की संभावना को जन्म दिया।**

४. वर्गों का उत्पन्न होना। संभ्रांत लोगों और पुरोहितों ने भूमि के बड़े-बड़े हिस्सों पर कब्ज़ा कर लिया और दास रखने लगे। उनके पास बड़ी मात्रा में चांदी भी जमा हो गयी, जो मुद्रा का काम देती थी।

युद्धों में पकड़े गये लोगों को दास बनाया जाने लगा। दास मंदिरों और संभ्रांत लोगों के खेतों, बाग़ों, कर्मशालाओं, आदि में काम करते थे। मेसोपोटामिया में दासों को "आंख न उठानेवाले" कहा जाता था, क्योंकि उनके लिए अपने मालिक का चेहरा देखना वर्जित था।

बहुत से किसान और शिल्पी धनी लोगों के क़र्ज़दार बनते गये। उन्हें क़र्ज़ पर भारी ब्याज भी चुकाना पड़ता था। यह चूंकि ग़रीबों के बस के बाहर होता था, इसलिए वे जीवनभर क़र्ज़दार बने रहते थे। वे दिन-रात कमरतोड़ मेहनत करते थे, ताकि हर साल ब्याज चुकाते रह सकें। समय पर ब्याज न दे पाने पर उनके परिवारों और ख़ुद उन्हें भी दास बनाया जा सकता था।

जिन ग़रीबों के पास अपनी भूमि न होती थी, वे अमीर लोगों से लगान पर ज़मीन लेते थे और बदले में मालिक को खेत की आधी और बाग़ की दो तिहाई उपज देते थे।

इस प्रकार **दक्षिणी मेसोपोटामिया** में कृषि, पशुपालन और शिल्पों के विकास के साथ **दासों, स्वतंत्र सामुदायिक किसानों और दासस्वामी संपन्न लोगों के वर्ग उत्पन्न होने लगे।**

दक्षिणी मेसोपोटामियाई सृष्टि तथा प्रलय कथाएं

प्रलय की कथा का जन्म दक्षिणी मेसोपोटामिया में ही क्यों हुआ? क्या ऐसी कथा प्राचीन मिस्र में भी पैदा हो सकती थी?

१. एक समय था कि जब सारी पृथ्वी पानी से ढकी हुई थी। देवता भूमि को जल से अलग करना चाहते थे, पर एक भयंकर दैत्य उन्हें ऐसा नहीं करने दे रहा था। तब सबसे बड़े देवता ने उस दैत्य से लड़ाई की और उसे मारकर उसके शरीर के दो टुकड़े कर दिये। ऊपरी टुकड़े से देवता ने आकाश और तारे बनाये और निचले

टुकड़े से भूमि। उसपर उसने पेड़-पौधे लगाये और जानवर बनाये। फिर उसने मिट्टी से पहले आदमी बनाये, जो देखने में भी और बुद्धि में भी बिल्कुल देवताओं जैसे थे।

२. एक बार देवता किसी बात पर लोगों से क्रुद्ध हो गये और उन्हें नष्ट करने के लिए उन्होंने सारी धरती को पानी में डुबो देने का निश्चय किया। किंतु जल-देवता ने इसकी खबर सरकंडों को दे दी, जिनसे किसी आदमी की झोपड़ी बनी हुई थी। सरकंडों ने यह बात झोपड़ी के मालिक को बता दी। उसने एक बड़ी नौका बनायी और उसमें अपने सारे परिवार, कुछ सबसे बढ़िया शिल्पियों और जानवरों तथा पक्षियों को बिठा दिया। देवताओं ने जो दिन तय किया था, उस दिन सारे आकाश में काले बादल घिर आये और मूसलाधार वर्षा होने लगी। सारी धरती पानी में डूब गयी। नौका में बैठे लोगों के अलावा और सभी लोग मारे गये।

छः दिन बाद वर्षा और तूफ़ान रुक गये। पानी घटने लगा। कौए ने उड़कर भूमि का पता लगाया और नौका पर सवार लोग और जानवर वहां उतर गये।

मेसोपोटामिया से ये कथाएं दूसरे देशों में पहुंचीं। इनसे प्रकृति की शक्तियों से भयभीत लोगों का देवी-देवताओं में विश्वास और पक्का बना। पुरोहितों ने इससे लाभ उठाया और लोगों को धमकाया कि यदि वे देवताओं को प्रसन्न नहीं रखेंगे, तो पृथ्वी पर फिर प्रलय और दूसरी विपदाओं का आगमन हो सकता है।

? १. दक्षिणी मेसोपोटामिया और मिस्र की भौगोलिक विशेषताओं की तुलना करें। उनमें क्या समानताएं और क्या अंतर हैं? २. प्राचीन काल में मिस्र और दक्षिणी मेसोपोटामिया के लोगों के धंधों में क्या समानताएं थीं? ३. दक्षिणी मेसोपोटामिया के कृषक समुदायों में क्यों रहते थे? ४. दक्षिणी मेसोपोटामिया में वर्गों का जन्म क्यों हुआ? यदि उत्तर देने में कठिनाई हो, तो यह याद करें कि प्राचीन मिस्र में वर्गों का उदय क्यों हुआ था (§७)। ५. धनी दासस्वामी लोग स्वतंत्र गरीबों का शोषण कैसे करते थे? ६. दक्षिणी मेसोपोटामिया में कृषि का आविर्भाव लगभग कितने हज़ार वर्ष पहले हुआ था?

§१५. सबसे प्राचीन मेसोपोटामियाई राज्य और बेबीलोनी साम्राज्य

(मानचित्र २)

याद करें कि मिस्र में राज्यों की स्थापना कब और क्यों हुई थी और राज्य के क्या लक्षण होते हैं (§८, अनुच्छेद १)।

१. मेसोपोटामिया के पहले राज्य। चौथी सहस्राब्दी ईसापूर्व के अंत में दक्षिणी मेसोपोटामिया में वर्गों के उदय के साथ-साथ राज्यों की स्थापना भी शुरू हो गयी थी। लगभग हर नगर एक पृथक राज्य था। सेना, अधिकारियों, प्रहरियों और जल्लादों की मदद से ये **नगर-राज्य** गरीबों और दासों का क्रूर दमन करते थे।

कभी एक, तो कभी दूसरे नगर-राज्य का शासक पड़ोसी नगरों पर धावा बोलकर उन्हें नष्ट कर डालता था और उनके निवासियों को बंदी बनाकर हांक ले जाता था या फिर कर देने को विवश करता था।

२. बेबीलोन का उत्कर्ष। फरात नदी जहां दजला नदी के काफ़ी निकट आ जाती है, वहां उसके तट पर **बेबीलोन** या **बाबुल** नाम का एक नगर था। उसकी भौगोलिक स्थिति बहुत उत्तम थी। नदी मार्गों से व्यापारी लोग नावों और बजरों पर तरह-तरह के माल यहां लाते थे, जिनकी स्थानीय निवासियों को जरूरत थी, और उनका दक्षिणी मेसोपोटामिया में उत्पादित मालों के साथ विनिमय करते थे। (याद करें कि स्थानीय निवासी किन मालों का उत्पादन करते थे और किन बाहरी मालों की उन्हें जरूरत थी।) मेसोपोटामिया के मुख्य स्थल मार्ग भी बेबीलोन से होकर ही गुजरते थे। उनपर मालों से लदे गदहों के कारवां आते-जाते रहते थे।

बेबीलोन मेसोपोटामिया का सबसे बड़ा व्यापारिक नगर और एक शक्तिशाली साम्राज्य की राजधानी बन गया। नगर के केंद्र में स्थायी दूकानों की कतारों और बड़े-बड़े माल गोदामों से युक्त बाजार था और छोरों पर शिल्पियों, पच्चीकारों और नाविकों की कच्ची झोंपड़ियां थीं।

३. हम्मूराबी के शासनकाल में बेबीलोनी साम्राज्य। १७९२ ईसापूर्व में बेबीलोन का शासक हम्मूराबी बना, जिसने १७५० ईसापूर्व तक राज किया।

बेबीलोन की अपार संपदा के बूते पर हम्मूराबी ने एक विशाल सेना खड़ी कर ली थी। उसने मेसोपोटामिया के विभिन्न राज्यों के आपसी झगड़ों से भरपूर लाभ उठाया। सबसे पहले उसने उनमें से एक के साथ मैत्री संधि की और उसके साथ मिलकर दूसरे राज्यों के इलाक़ों पर अधिकार कर लिया। इसके बाद हम्मूराबी ने अचानक उस राज्य पर भी हमला कर दिया, जो हाल ही तक उसका मित्र था। इस प्रकार बल-प्रयोग और चालबाजी से हम्मूराबी सारे मेसोपोटामिया को अपने वश में करने में सफल हो गया। बेबीलोन के शासक के अधीन अब एक शक्तिशाली साम्राज्य स्थापित हो चुका था। (रंगीन मानचित्र २ में हम्मूराबी के राज्यक्षेत्र को ढूंढिये।)
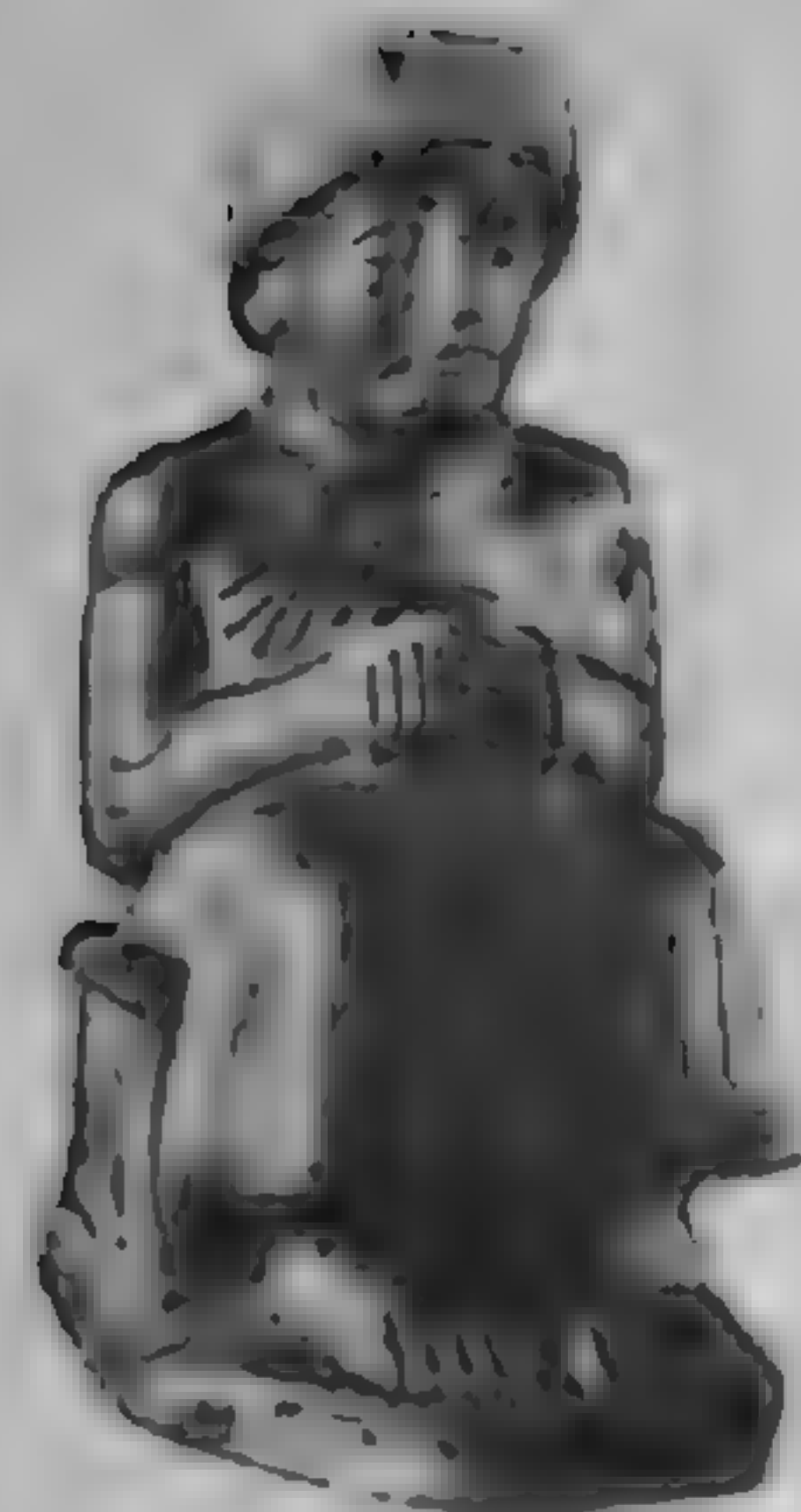
१. लगश नगर के शासक की मूर्ति। तीसरी सहस्राब्दी ईसापूर्व। ऐसी मूर्तियां बनाये जाने से किस बात का प्रमाण मिलता है? २. इस स्तंभ का शीर्षभाग, जिसपर हम्मूराबी की विधि खुदी हुई है। देवता सम्राट को सत्ता का प्रतीक–दंड–दे रहा है। सोचकर बतायें कि हम्मूराबी ने स्तंभ पर विधि-संहिता के साथ-साथ ऐसा चित्र भी खोदने का आदेश क्यों दिया था?

४. **हम्मूराबी की विधि-संहिता**। हम्मूराबी के शासनकाल में एक **विधि-संहिता** बनायी गयी थी, जिसका पालन बेबीलोनी साम्राज्य की सारी प्रजा के लिए अनिवार्य था। सरकारी अधिकारी इस संहिता में दिये हुए विधानों के अनुसार नागरिकों के आपसी झगड़ों का निपटारा करते थे और नजाला का उल्लंघन करनेवालों को दंड देते थे। विधि-संहिता में बताया गया था कि किस प्रकार के अपराधों के लिए क्या दंड दिया जाना चाहिए।

बीसवीं शताब्दी के आरंभ में पुरातत्त्ववेत्ताओं को काले पत्थर का एक स्तंभ मिला था, जिसकी ऊंचाई कोई ढाई मीटर थी। उसपर सबसे ऊपर स्वयं सम्राट हम्मूराबी का चित्र बना था और नीचे उसकी विधि-संहिता खुदी हुई थी।(पृष्ठ ३८-३९ पर दिया इस विधि-संहिता का अंश पढ़ें और प्रश्नों का उत्तर दें।)

मिस्री राज्य की भांति बेबीलोनी राज्य भी वह शक्ति था, जिसकी सहायता से दासस्वामी वर्ग गरीबों और दासों पर अपना प्रभुत्व बनाये रखता था। यह दासस्वामियों का और दासप्रथात्मक राज्य था।

हम्मूराबी की विधि-संहिता से:

यह विधि-संहिता बेबीलोनी साम्राज्य में दासों की स्थिति पर क्या प्रकाश डालती है? कौन से विधान ... सुनिश्चित करते हैं? संहिता किन मामलों में एक जैसे अपराधों के लिए अलग-अलग तरह के दंडों की व्यवस्था करती है? क्या आप हम्मूराबी के इस कथन से सहमत हैं कि उसके विधान "न्यायसंगत और "उदात्त" हैं?

"मैं, हम्मूराबी, देवताओं द्वारा नियुक्त शासक, सभी राजाओं में प्रथम और फरात के तटवर्ती सभी ग्रामों-नगरों का विजेता हूं। मैंने समस्त देश को सत्य और न्याय की शिक्षा दी है और लोगों को समृद्धि प्रदान की है।

"आज से:

"जो मंदिर अथवा राजा की संपत्ति चुरायेगा, उसे प्राणदंड मिलेगा और जो चुरायी हुई वस्तु लेगा, वह भी प्राणदंड का भागी होगा।

"जो दास या दासी चुरायेगा, उसे प्राणदंड मिलेगा।

"जो भागे हुए दास को शरण देगा, उसे प्राणदंड मिलेगा।

"जो दास का निशान* मिटायेगा, उसकी अंगुलियां काट दी जायेंगी।

"जो पराये दास की हत्या करेगा, उसे बदले में दास देना होगा।

"जो पराया बैल मारेगा, उसे बदले में बैल देना होगा।

"जो क़र्ज़दार है, उसकी पत्नी, पुत्र अथवा पुत्री को तीन वर्ष तक दास बनकर रहना होगा।

"जो अपने बराबर के किसी व्यक्ति को थप्पड़ मारेगा, उसे जुर्माना भरना होगा।

"जो अपने से उच्च वर्ग के किसी व्यक्ति (अर्थात् संभ्रांत, पुरोहित, आदि) को थप्पड़ मारेगा, उसे बैल के चमड़े से बने ६० कोड़े लगाये जायेंगे।"

विधि-संहिता के अंत में कहा गया था: "मैं, हम्मूराबी, न्यायप्रिय राजा हूं और ये विधान सूर्यदेव शम्स ने मुझे प्रदान किये हैं। मेरे शब्द उदात्त और मेरे कार्य अनुपम हैं।"

? १. दक्षिणी मेसोपोटामिया में राज्यों की उत्पत्ति क्यों हुई? यदि उत्तर देने में कठिनाई हो, तो याद करें कि प्राचीन मिस्र में राज्यों की उत्पत्ति क्यों हुई थी (§ ८, अनुच्छेद १)। २. बतायें: क) हम्मूराबी की विधि-संहिता किनके हितों की रक्षा करती थी? ख) बेबीलोनी राज्य में कैसी सामाजिक व्यवस्था थी? अपने उत्तर की पुष्टि में प्रमाण दें। ३. हम्मूराबी ने अपनी सत्ता को मजबूत बनाने के लिए किन को कैसे इस्तेमाल किया? ४. राज्य के विषय में आपको कौन सी नयी बातें मालूम हुई हैं?

---

* दास के शरीर पर निशान (ठप्पा) इसलिए लगाया जाता था, ताकि मालूम हो सके कि उसका मालिक कौन है।
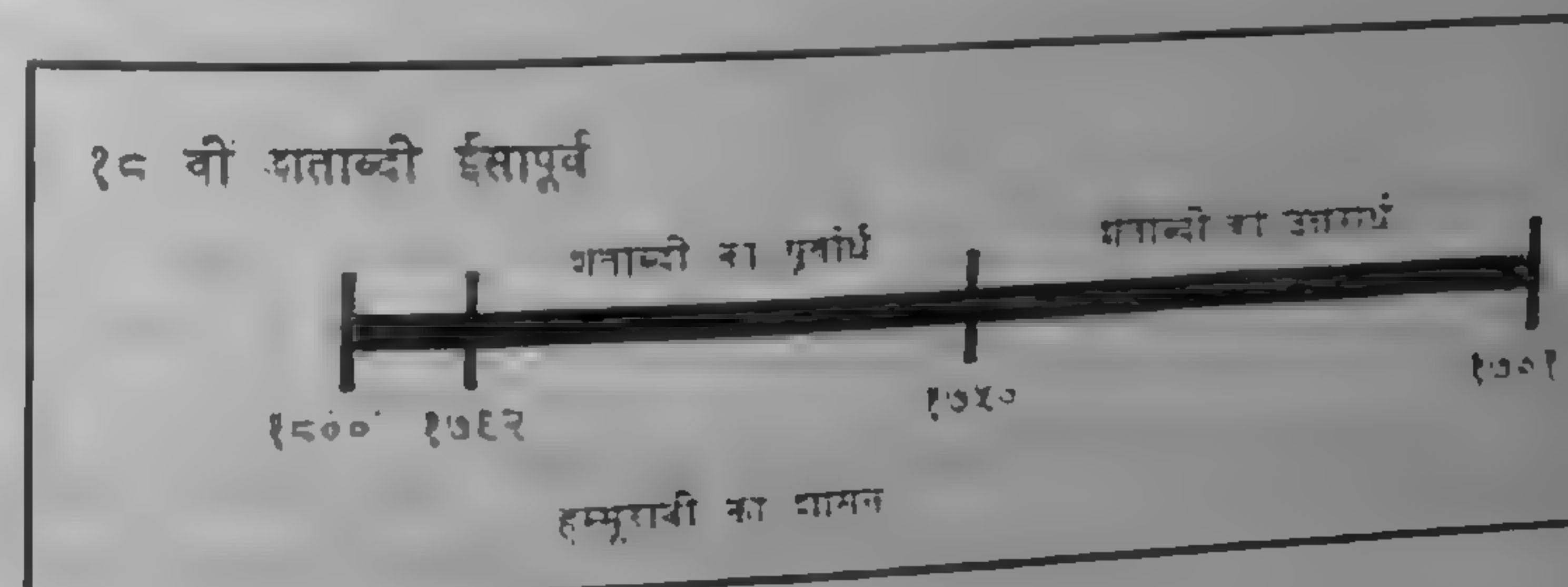
१८ वीं शताब्दी ईसापूर्व

तालिका को गौर से देखें और उसमें १८वीं शताब्दी ईसापूर्व का पहला और अंतिम
वर्ष ढूंढ़ें। पहले वर्ष की तिथि अंतिम वर्ष की तिथि से बड़ी क्यों है? शताब्दी का पूर्वार्ध १८००
में आरंभ और १७५० में समाप्त हुआ था। उत्तरार्ध कब शुरू हुआ और कब खत्म हुआ?

तालिका में हम्मूराबी का शासनकाल भी दिखाया हुआ है। गिनकर बतायें कि उसने
कितने वर्ष शासन किया। उसका शासनकाल आज से कितने वर्ष पहले शुरू और कितने वर्ष
पहले खत्म हुआ था? १७६२ ईसापूर्व में पहले कौन सा वर्ष था और बाद में कौन सा वर्ष
आया? बेबीलोन में जब हम्मूराबी शासन कर रहा था, मिस्र के इतिहास में कौन सी घटनाएं
घटी थीं? हम्मूराबी की मृत्यु के २३२ वर्ष बाद बेबीलोन पर पर्वतीय जातियों ने अधिकार
कर लिया। गिनकर बतायें कि यह घटना किस वर्ष की है।

§१६. पहली सहस्राब्दी ईसापूर्व का पश्चिमी एशिया

(मानचित्र २ और पृष्ठ ८४ पर दिया मानचित्र)

याद करें कि चौथी-दूसरी सहस्राब्दियों में पश्चिमी एशिया के निवासी किन धातुओं से परिचित थे (§ १४, अनुच्छेद ३,४)।

१. लोहे का आविष्कार। दूसरी सहस्राब्दी के अंत और पहली सहस्राब्दी के आरंभ में पश्चिमी एशिया के निवासियों ने **लोहा** गलाना और उससे तरह-तरह के औजार बनाना सीख लिया था। वे मिट्टी की भट्ठी बनाते थे और उसमें लकड़ी का कोयला और लौह अयस्क के टुकड़े डाल देते थे। फिर धौंकनियों से हवा फूंक-फूंककर कोयले को खूब जलाया जाता था। ऐसा करने से अयस्क के टुकड़े पिघल जाते थे और अंत में शुद्ध लोहे के डले ही बाक़ी बचे रहते थे, जिनसे लुहार काम करने के औजार और हथियार गढ़ लेते थे।

प्रकृति में लौह अयस्क तांबे और टीन के अयस्क के मुकाबले कहीं ज्यादा मिलता है। इसलिए लोहे के औजारों का तांबे या कांसे के औजारों के मुकाबले कहीं ज्यादा प्रचलन हुआ।

२. लोहे के आविष्कार का महत्त्व। हल में लोहे का फाल लगाकर नदी घाटियों की मुलायम भूमि ही नहीं, स्तेपियों (मैदानों) की कड़ी भूमि भी जोती जा सकती थी। लोहे के फावड़ों और कुदालों से पहाड़ी तलहटियों की पथरीली जमीन में नहरें खोदी जा सकती थीं, इसलिए किसान खेतों को सींचने के लिए पहाड़ी नदियों को इस्तेमाल करने लगे। फलस्वरूप पश्चिमी एशिया की स्तेपियों और पहाड़ी तलहटियों में कृषि का तेजी से विकास होने लगा। जहां लोग पहले केवल वन्य जानवरों का शिकार किया करते थे या भेड़-बकरियां चराया करते थे, वहां पहली सहस्राब्दी ईसापूर्व तक खेत और बाग़ लहलहाने लग गये। लोहे के औज़ारों की मदद से मजबूत नौकाएं और गाड़ियां भी बनायी जाने लगीं और इससे व्यापार के विकास में और आसानी हुई।

लोहे से बने काम के औजार इस्तेमाल करके किसान और शिल्पी पहले से कहीं ज्यादा उत्पादन करने लगे थे। उनका श्रम कहीं ज्यादा उत्पादक और फलदायी बन गया था।

कृषि और शिल्पों का विकास हुआ, तो दासों की मांग और उनकी तादाद भी बढ़ी। पश्चिमी एशिया में दासप्रथात्मक व्यवस्था का तेजी से विकास हुआ। मैदानी और पर्वतीय इलाकों में नये-नये राज्य पैदा हो गये। वर्तमान सोवियत संघ के क्षेत्र पर भी पहला राज्य कायम हुआ। यह कॉकेशिया में स्थित **उरार्तू** राज्य था।

३. फ़िनीशियाई सागरयात्री। कृषि, पशुपालन और शिल्पों का विकास व्यापार की वृद्धि में सहायक हुआ था। पहली सहस्राब्दी ईसापूर्व के आरंभ में भूमध्यसागर के पूर्वी तट पर स्थित नगर बड़ी तेजी से फूलने-फलने लगे। उनमें **फ़िनीशियन (फ़िनीशियाई)** या **पणि** नामक एक छोटी सी जाति के लोग रहते थे। सागर तट से कुछ दूर एक टापू पर बसा **टायर** नगर सबसे समृद्ध फ़िनीशियन नगर था।

फ़िनीशियनों को पश्चिमी एशिया में सबसे उत्तम पोत-निर्माता और नाविक माना जाता था। उनके पोत आसपास के सागरों में ही नहीं, अटलांटिक महासागर में भी जाया करते थे। भूमध्यसागर तट के सभी नगरों में फ़िनीशियन व्यापारी पाये जाते थे, जो पश्चिमी एशियाई मालों का स्थानीय मालों से विनिमय करते थे। फ़िनीशियन दासों का व्यापार भी करते थे। वे सागरों में पोतों पर हमला करके उनपर सवार लोगों को पकड़ लेते थे और दास बनाकर बेच देते थे। (देखें रंगीन चित्र ६।)

फ़िनीशियन सागर व्यापार भूमध्यसागर से लगे अनेक देशों में दासप्रथात्मक व्यवस्था के मजबूत बनने और उनमें पश्चिमी एशिया की संस्कृति के फैलने में सहायक हुआ।

फ़िनीशियन नगर अपनी स्वतंत्रता कुछ ही समय तक सुरक्षित रख सके। शीघ्र ही शक्तिशाली पड़ोसियों ने उनपर क़ब्ज़ा कर लिया।

४. पारसीक सम्राटों के विजय अभियान। पश्चिमी एशिया में कभी कोई राज्य प्रबल बन जाता था, तो कभी कोई। आठवीं-सातवीं शताब्दी ईसापूर्व में वहां का सबसे शक्तिशाली राज्य दजला के तट पर स्थित **असीरिया** अथवा **असुर** था। उसके बाद फिर कुछ समय तक बेबीलोन के राजाओं का वर्चस्व छा गया।

छठी शताब्दी ईसापूर्व के मध्य में पश्चिमी एशिया में नये विजेता पुन आये। ये **पारसीक**, यानी प्राचीन ईरानवासी थे। छठी शताब्दी ईसापूर्व के आरंभ तक उन्होंने फ़ारस की खाड़ी के पूर्व में अपने राज्य की स्थापना कर ली थी। उनके पास उत्कृष्ट घुड़सवार सेना थी। पारसीक धनुर्धर सैनिक अपने अचूक निशाने के लिए प्रसिद्ध थे। पारसीक सम्राट **कुरुश (साइरस)** एक के बाद दूसरा देश जीतता गया। गहरी खाई और दो-दो दीवारों से आरक्षित बेबीलोन को जीत पाना बहुत कठिन था। किंतु बेबीलोनी पुरोहितों ने गद्दारी करके कुरुश की सेनाओं के सामने नगर-दुर्ग के द्वार खोल दिये। इस प्रकार ५३८ **ईसापूर्व** में बेबीलोन पर भी पारसीकों का अधिकार हो गया।

मध्य एशियाई अभियान के दौरान कुरुश की हत्या कर दी गयी। शत्रुओं ने यह कहते हुए उसका सिर रक्त से भरे चमड़े के थैले में बंद कर दिया कि तुम रक्त के प्यासे थे, तो लो अब जी भरकर पियो।

6-158
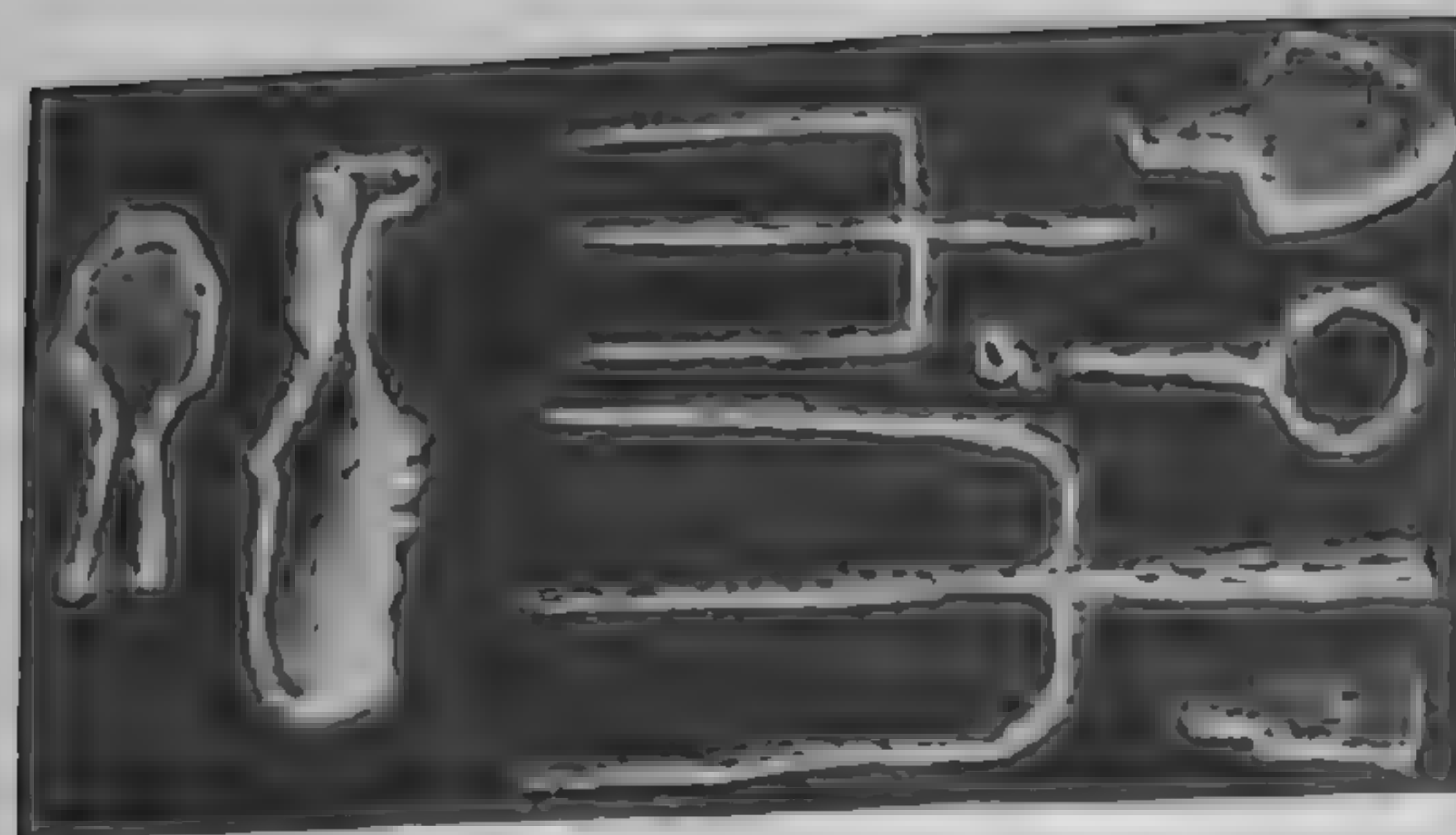
१. पहली सहस्राब्दी ईसापूर्व के लौहनिर्मित काम के औज़ार। इनसे क्या काम किये जाते थे? २. काम करने जाते किसान। (एक प्राचीन चित्र।) ३. फ़िनीशियाई पोत। (एक प्राचीन उत्कीर्ण चित्र।) इस पोत की पृष्ठ ६६ पर दिखाये गये मिस्री पोत से तुलना करें और बतायें कि दोनों में कौन सुदूर सागर-यात्राओं के लिए अधिक उपयुक्त था।

कुरुश की मृत्यु से पारसीकों के विजय अभियान रुके नहीं। शीघ्र ही एक विशाल पारसीक सेना ने मिस्र पर आक्रमण कर दिया। फ़िराऊन की सेना के भाड़े के सैनिकों में से कुछ द्रोह करके पारसीकों से जा मिले। मिस्री सेना हार गयी और **५२५ ईसापूर्व** में मिस्र पर पारसीकों का अधिकार हो गया।

५. पांचवीं शताब्दी ईसापूर्व का पारसीक साम्राज्य। सम्राट **दारयवउश प्रथम**, जिसे दारा या **डेरियस प्रथम** भी कहा जाता है, के शासनकाल (५२२-४८६ ईसापूर्व) को पारसीक साम्राज्य का चरमोत्कर्ष काल कहा जाता है। दारयवउश प्रथम का साम्राज्य पश्चिम में मिस्र से लेकर पूर्व में सिंधु नदी तक फैला हुआ था।

विजित देशों की जनता को पारसीक सम्राट को भारी कर अदा करना और अपने नवयुवकों को सम्राट की सेना में नौकरी के लिए भेजना पड़ता था। कर की उगाही के बाद ग्राम व नगर ऐसे लगते थे कि जैसे कोई अभी-अभी उन्हें आकर लूट गया हो। उधर सरकारी खज़ाना

४. छठी शताब्दी ईसापूर्व के बेबीलोन नगर का विहंगम दृश्य। (पुनर्संरचित चित्र और उसका नक्शा।) चित्र देखकर बतायें कि उसमें राजप्रासाद, झूलते हुए उद्यान (स्तंभों पर टिकी सीढ़ीदार छतों पर मिट्टी डालकर लगाये हुए उद्यान, जिन्हें सींचने के लिए पानी दास लाया करते थे; इन्हें भी विश्व का एक चमत्कार माना जाता है) और नक्शे में प्रदर्शित अन्य इमारतें कहां हैं। (रंगीन छायाचित्र [illegible] भी देखें।)

उत्तरोत्तर भरता ही जा रहा था। सम्राट के अनगिनत महल और तहखाने सोने की सिल्लियों से अटे पड़े थे।

विजित देशों में जब-तब विद्रोह फूट पड़ते थे। सम्राट को उनकी सूचना तुरंत ही मिल जाती थी। मार्गों पर पारसीकों ने घुड़सवारों की चौकियां कायम की हुई थीं। "सारसों जैसे तीव्रगामी" घुड़सवार स्थानीय अधिकारियों से प्राप्त रपटें राजधानी तक और सम्राट के आदेश स्थानीय अधिकारियों तक पहुंचा देते थे। विद्रोहियों के विरुद्ध भेजी गयी सेनाएं निर्ममतापूर्वक उन्हें कुचल डालती थीं। फिर भी **पारसीक सम्राट विजित देशों की जनता को, जो विजेताओं से घोर नफ़रत करती थी, बड़ी कठिनाई से अपने वश में रख पाते थे।**

? १. लोहे के आविष्कार के बाद पश्चिमी एशिया में कई नये राज्यों का उदय क्यों हुआ? उत्तर देने में आसानी के लिए प्रश्न को इन तीन हिस्सों में बांट सकते हैं: क) लोहे के आविष्कार के बाद श्रम अधिक [illegible] ख) [illegible] ग) श्रम को उत्पादकता [illegible] उत्पादक या फलदायी क्यों बन गया?

ईसापूर्व छठी शताब्दी के अंत – पांचवीं शताब्दी के आरंभ का पारसीक साम्राज्य

ग) वर्गों की उत्पत्ति के बाद राज्य की उत्पत्ति क्यों हुई ? २. पहली सहस्राब्दी ईसापूर्व में फ़िनीशियन नगर तेज़ी से विकास क्यों करने लगे ? ३. मानचित्र २ में पारसीक साम्राज्य की सीमाएं दिखायें। पारसीक साम्राज्य के क्षेत्र में पहले कौन-कौन से स्वतंत्र राज्य थे ? ४. लोहे का उपयोग लगभग कितने हज़ार वर्ष पहले शुरू हुआ था ? ५. पारसीकों ने बेबीलोन को किस शताब्दी में और उस शताब्दी के भी किस अर्धांश तथा किस चतुर्थांश में जीता था ? पारसीकों की बेबीलोन विजय और मिस्र विजय की तिथियों के बीच कितने वर्षों का अंतर है ?

§ १७. पश्चिमी एशिया के प्राचीन निवासियों की संस्कृति

(मानचित्र २)

याद करें कि प्राचीन मिस्रवासी किस लिपि में और किस सामग्री पर लिखते थे (§१२, अनुच्छेद ४) और उनका ज्ञान-विज्ञान का क्रमविकास कैसे हुआ था (§१३, अनुच्छेद १-३)।

१. मेसोपोटामिया में पुरातात्त्विक खुदाइयां। मेसोपोटामिया के मैदान में कई जगह बड़े-बड़े टीले पाये जाते हैं। उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में पुरातत्त्ववेत्ता उनकी खुदाई करने लगे। उनमें मिट्टी की ऊपरी परत के नीचे प्राचीन नगरों, प्रासादों, मंदिरों और दुर्गों के खंडहर मिले। सबसे पहले असीरियाई नगर पाये और खोदे गये थे। (देखें रंगीन छायाचित्र ५।)

शक्तिशाली असीरियाई साम्राज्य सातवीं शताब्दी ईसापूर्व में शत्रुओं के हाथों ध्वस्त हो गया था। पुरातात्त्विक खुदाइयों से प्राचीन लेखकों के इस कथन की साफ़-साफ़ पुष्टि होती है कि असीरियाई नगर आग में जलकर नष्ट हुए थे।

असीरियाई नगरों के बाद पुरातत्त्ववेत्ताओं ने पश्चिमी एशिया में कई दूसरे प्राचीन नगर भी खोज निकाले।

२. असीरियाई कला। पश्चिमी एशिया में पायी गयी प्राचीन कलाकृतियों में सबसे प्रभावोत्पादक असीरियाई साम्राज्य के काल के भवन, मूर्तियां, आदि हैं।

असीरियाई सम्राटों के प्रासाद नगर में सबसे भव्य और सबसे ऊंचे होते थे। उन्हें दासों द्वारा ढोकर लायी मिट्टी से निर्मित टीलों पर बनाया जाता था। प्रासाद के चारों ओर परकोटा होता था। मुख्य द्वार पर मनुष्यों के सिरवाले परदार वृषभों की विशाल प्रस्तर मूर्तियां स्थापित की जाती थीं। (देखें पृष्ठ ८८, चित्र १।) प्रासाद की भीतरी दीवारें पत्थर की बनी होती थीं और उनपर देवी-देवताओं, सैनिक अभियानों, विजय उत्सवों, शत्रु नगरों के विनाश, युद्धबंदियों को मारे अथवा दास बनाये जाने, सम्राट द्वारा सिंहों के आखेट, आदि के उद्भृत चित्र खुदे होते थे। असीरियाई मूर्तिशिल्पियों ने गुस्से में भरकर शिकारी पर झपटते या घायल होकर दम तोड़ते हिंस्र जानवरों के चित्रण में अद्भुत निपुणता प्राप्त कर ली थी।

३. कीलाक्षरी लिपि। असीरियाई साम्राज्य की राजधानी निनेवह् की खुदाई के दौरान पुरातत्त्व-

१. विद्रोहियों पर पारसीक सम्राट दारयवहुश प्रथम की विजय के उपलक्ष्य में एक चट्टान पर खोदा गया चित्र। सम्राट विद्रोहियों के सबसे बड़े सरदार को पैर तले दबाये हुए है और सामने अन्य सरदार खड़े हैं, जिनके हाथ बंधे हुए हैं। सम्राट के पीछे उसका अंगरक्षक है। मानचित्र २ देखकर बतायें कि यह चित्र कहां खुदा हुआ है। इस चित्र के आधार पर पारसीक सम्राट की सत्ता के बारे में क्या निष्कर्ष निकाला जा सकता है ? २. पारसीकों द्वारा विजित लोगों से कर की उगाही। (प्राचीन उत्कीर्ण चित्र।) इस चित्र में आप कौन सा नया पालतू जानवर देख रहे हैं ?

१ २

१. एक असीरियाई उद्भृत चित्र, जिसमें शत्रु नगर की घेराबंदी दिखायी गयी है। नगर की दीवार पर खड़ा एक आदमी दया की भीख माँग रहा है। तांबे के बिल्लों से सजे, चमड़े के आवरणवाले रथ जैसी चीज के अंदर एक भारी-भरकम शहतीर छिपा हुआ है, जिसका अग्रभाग धातु से मढ़ा होता था। इससे नगर की दीवार पर चोटें की जाती थीं, ताकि वह टूट जाये। दायीं ओर दो असीरियाई सैनिक खड़े हैं, जिनमें से एक कवच पहने हुए है और दूसरे ने टहनियों से बनी हुई आदमकद ढाल थामी हुई है। ऊपर भालों पर [illegible] मारे गये बंदी लटके हुए हैं। नीचे एक बंदी मरा पड़ा है। **सोचकर बतायें कि चित्रकार असीरियाइयों को क़द में उनके शत्रुओं के मुक़ाबले बड़ा क्यों दिखाता है। इस उद्भृत चित्र के ज़रिये वह दर्शकों के मन में क्या भाव पैदा करना चाहता था?** २. असीरियाई सम्राट सिंह का शिकार कर रहा है।

वेत्ताओं को वहां के राजप्रासाद में एक विशाल "पुस्तकालय" मिला, जिसमें कोई २० हज़ार "पुस्तकें" थीं। अग्निकांड में प्रासाद तो जल गया, मगर पुस्तकालय सुरक्षित बना रहा, क्योंकि "पुस्तकें" मिट्टी की बनी हुई थीं।

मेसोपोटामिया में लेखनकला का आविष्कार चौथी सहस्राब्दी ईसापूर्व में हो गया था। यहां पेपाइरस नहीं होता, इसलिए लोग गीली मिट्टी की पाटियों पर लिखते थे, जिन्हें बाद में सुखा या आग में पका लिया जाता था।

आरंभ में मेसोपोटामियावासी चित्रलिपि का प्रयोग करते थे। किंतु गीली मिट्टी की पाटी पर खरोंचकर चित्र बनाना कठिन होता है, इसलिए लिखने की सींक की नोक मिट्टी में दबा-दबाकर रेखाएं बनायी जाने लगीं, जिनका आकार फन्नियों जैसा होता था। रेखाओं को अलग-अलग तरह से खींचकर कोई एक हज़ार प्रतीक बना लिये गये। हर प्रतीक कई फन्नीनुमा रेखाओं से बनता था और पूरे शब्द या किसी एक अक्षर का बोध कराता था। (देखें पृष्ठ ८६, चित्र ४।) यह लिपि **कीलाक्षरी लिपि** कहलाती है। दक्षिणी मेसोपोटामिया से यह सारे पश्चिमी एशिया में फैल गयी।

वैज्ञानिकों ने कीलाक्षरी लिपि में मिट्टी की पाटियों पर लिखे हुए आख्यानों, कथाओं, विधि-संहिताओं और वैज्ञानिक रचनाओं को पढ़ लिया है। निनेवह में मिली कई पाटियों पर सृष्टि की रचना और प्रलय की कहानी लिखी हुई थी (देखें [illegible] का परिशिष्ट)। पत्थर के स्तंभ पर खुदी हुई हम्मूराबी की विधि-संहिता भी कीलाक्षरी में ही लिखी हुई थी।

४. सबसे प्राचीन वर्णमाला। लेखनकला के विकास में फ़िनीशियाई लोगों ने बहुत बड़ा योग दिया है। ये लोग मुख्यतः व्यापारी थे और व्यापारिक लेन-देन में जल्दी-जल्दी लिखने की ज़रूरत पड़ती थी। अपनी जटिलता के कारण चित्रलिपि या कीलाक्षरी लिपि में जल्दी लिखना संभव नहीं था। फ़िनीशियाई व्यापारियों ने इसके लिए मिस्रवासियों के अनुभव से लाभ उठाया, जिनकी लिपि में शब्दों ही नहीं, अलग-अलग अक्षरों का भी बोध करानेवाले प्रतीक थे। इस तरह फ़िनीशिया में एक **वर्णमाला** बनायी गयी, जिसमें २२ व्यंजन थे। लिखाई में स्वरों को छोड़ दिया जाता था। वर्णमाला के विकास से लिखना और सीखना, दोनों ही सुगम बन गये।

५. ज्ञान-विज्ञान। मेसोपोटामिया में स्कूली अभ्यास-पुस्तिकाएं भी पायी गयी हैं। उनमें विद्यार्थियों के लिए गणित के तरह-तरह के अभ्यास दिये गये हैं, जैसे अलग-अलग क्षेत्रफल के खेतों से बटोरी गयी फ़सल का हिसाब लगाना, चांदी की एक निश्चित मात्रा को पांच भाइयों में इस प्रकार बांटना कि हर भाई को अपने से बादवाले से १/५ अधिक मिले, ब्याज निकालना, मालूम करना कि अगर एक आदमी दिन में इतनी मिट्टी खोदता है, तो पहाड़ के ढाल पर अलग-अलग गहराई के चार तालाब खोदने में कितने दिन लगेंगे वगैरह, वगैरह। (सोचकर बतायें कि इस प्रकार के अभ्यासों से मेसोपोटामिया के लोगों के जीवन के बारे में क्या निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं। कम से कम पांच निष्कर्ष निकालें। मेसोपोटामिया में गणित का जन्म क्यों और कैसे हुआ?)

मेसोपोटामिया के निवासियों ने चिकित्सा के क्षेत्र में बड़ी प्रगति कर ली थी। ४० पाटियों पर रोगों की चिकित्सा की विधियां बतायी गयी हैं।

बेबीलोन के पुरोहित एक ऊंची मीनार से ग्रहों और नक्षत्रों का अध्ययन किया करते थे और बता देते थे कि सूर्यग्रहण या चंद्र-ग्रहण कब होगा। वर्ष को मासों तथा सप्ताहों और दिन को घंटों तथा मिनटों में बांटा जाता था (बेबीलोनी लोगों का एक घंटा हमारे दो घंटे तथा मिनट हमारे चार मिनट के बराबर था)।

किंतु पश्चिमी एशिया के प्राचीन निवासियों का ज्ञान सच्चे विज्ञान से अभी बहुत पिछड़ा हुआ था। बेबीलोनवासी सोचते थे कि आकाश एक बहुत बड़े चंदोवे की तरह है, जिसमें अनगिनत छेद हैं और इन छेदों से ही पृथ्वी पर वर्षा की बूंदें गिरती हैं। वे सूर्य, चंद्रमा और नक्षत्रों को देवता मानकर उनकी पूजा करते थे। रोगों के इलाज में चूहे की जीभ, कुत्ते का बाल, भूरे बैल का कान, जैसी "दवाएं" भी इस्तेमाल की जाती थीं।

पश्चिमी एशिया में जिस संस्कृति – लेखनकला, ज्ञान-विज्ञान और कला – का विकास हुआ, वह मिस्री संस्कृति जितनी ही प्राचीन थी।

१. मनुष्य जैसे सिरवाला पंखदार वृषभ की मूर्ति। ऐसी मूर्तियां असीरियाई प्रासादों के मुख्य द्वार के आगे खड़ी की जाती थीं। वृषभ को यदि बगल से देखें, तो वह चलता हुआ प्रतीत होता है और यदि आगे से देखें, तो खड़ा हुआ। मूर्तिकार यह चमत्कार कैसे पैदा कर सका? २. शिरस्त्राण तथा कवच पहने और भाले, ढाल तथा अन्य अस्त्रों से लैस असीरियाई सैनिक। (प्राचीन उद्धृत चित्र।) ३. कीलाक्षरी लेख से युक्त एक मिट्टी की पाटी। ४. कीलाक्षरी लिपि में प्रयुक्त प्रतीकों का विकास: पक्षी, हल, पैर। ५. फिनीशियाई वर्णमाला के अक्षर।

असीरियाई सैनिकों के बारे में उनके समकालीनों की कहानियां

इन कहानियों के आधार पर असीरियाई सेना और सैनिकों के बारे में क्या कहा जा सकता है? ये कहानियां किन लोगों ने रची थीं?

असीरियाई सैनिकों के बारे में: "देखो, वे कितनी तेजी से और बेरोकटोक बढ़े आ रहे हैं! सभी कितने चौकन्ने और सावधान हैं! उनके घोड़ों के सुम मानो पत्थर के हैं और रथों के पहिये तूफान जैसे हैं। उनकी गरज शेर की चिंघाड़ जैसी है। कोई उनसे बचकर नहीं निकल सकता।"

असीरियाई सेना के कार्केमिश अभियान के बारे में: "मैंने घाटियों और पहाड़ों में उनके खून की नदियां बहा दीं, मैंने मैदानों और पहाड़ों को स्याह ऊन जैसा रंग दिया, आसपास के गांवों और बस्तियों को तबाह कर डाला और नहरों के ताजे पानी को दलदल बना दिया। मेरे सैनिकों ने लहलहाते बागों में घुसकर उन्हें लोहे के कुल्हाड़ों की चोटों से गुंजा दिया... मैंने खेतों में अनाज की एक भी बाली नहीं रहने दी।" (देखें रंगीन चित्र ८।)

निनेवह के पतन के बारे में: "धिक्कार है तुझे निनेवह! ओह, तूने कितना खून बहाया, कितना छल-कपट किया, कितनी लूट मचायी! घुड़सवार सरपट दौड़े जा रहे हैं, तलवारें कौंध रही हैं, भाले चमक रहे हैं! चारों ओर लाशों के ढेर लगे हैं... निनेवह खाक में मिल गया है! उसके नाश पर कौन रोयेगा! हर कोई खुशी से नाच रहा है, क्योंकि तेरे जुल्म किसने नहीं सहे थे!"

? १. प्राचीन [illegible] पश्चिमी एशिया के इतिहास के बारे में हमें क्या बताती हैं? २. मिस्र और मेसोपोटामिया की लिपियों में अंतर क्यों पैदा हुआ? ३. मेसोपोटामिया में मिस्र जैसे ज्ञान-विज्ञान का विकास क्यों हो पाया? ४. असीरियाई मूर्तिकारों ने कैसी कृतियां बनाने में विशेष नैपुण्य प्राप्त किया था? ५. चित्रों और लिखित दस्तावेजों से प्राप्त जानकारी के आधार पर असीरियाई साम्राज्य का वर्णन करें।

प्राचीन मिस्र तथा मेसोपोटामिया के इतिहास की सबसे महत्वपूर्ण घटनाएं

सहस्राब्दी	शताब्दी	प्राचीन मिस्र	मेसोपोटामिया
ईसापूर्व ४	XXXII, XXXI		नगर राज्यों की स्थापना। चौथी सहस्राब्दी ईसापूर्व का अंत
३	XXX, XXIX, XXVIII, XXVII, XXVI, XXV, XXIV, XXIII, XXII, XXI	मिस्री साम्राज्य की स्थापना। लगभग ३००० ईसापूर्व खुफ़ू के पिरामिड का निर्माण, लगभग २६०० ईसापूर्व	
२	XX, XIX, XVIII, XVII, XVI, XV, XIV, XIII, XII, XI	गरीबों और दासों का विद्रोह। लगभग १७५० ईसापूर्व थुत्मोस तृतीय की विजयें। लगभग १५०० ईसापूर्व	हम्मूराबी का शासनकाल १७९२–१७५० ईसापूर्व
१	X, IX, VIII, VII, VI	मिस्र पर पारसीकों का अधिकार। ५२५ ईसापूर्व	बेबीलोन पर पारसीकों का क़ब्ज़ा। ५३८ ईसापूर्व

पांचवां अध्याय

प्राचीन भारत

§१८. पहली सहस्राब्दी ईसापूर्व के आरंभ तक का भारत

(मानचित्र ३)

याद करें कि सभ्यता और संस्कृति के विकास में लोहे के आविष्कार ने क्या भूमिका निभाई थी (§१६, अनुच्छेद २)।

१. भारत की भौगोलिक स्थिति और प्राकृतिक विशेषताएं। भारत* एशिया महाद्वीप के दक्षिण में **भारतीय प्रायद्वीप** और उससे संलग्न महाद्वीपीय भाग पर स्थित एक विशाल देश है।

विश्व में सबसे ऊंची **हिमालय पर्वतमाला**, जिसकी चोटियां सदा बर्फ़ से ढकी रहती हैं, भारत को अन्य देशों से अलग करती है। इन पर्वतों में उत्तर-पश्चिम में कुछेक महत्वपूर्ण दर्रे हैं और पुराने ज़माने में ये दर्रे ही भारत को बाहरी देशों से जोड़ते थे।

लगभग सारे भारतीय प्रायद्वीप की भूमि पठारी है। यहां तांबा और लोहा प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं। इस पठारी प्रदेश और हिमालय के बीच पश्चिम में **सिंधु (सिंध)** नदी और पूर्व में **गंगा** नदी की घाटियां हैं। ये दोनों नदियां हिमालय से निकलती हैं और गरमियों में पहाड़ों में बर्फ़ के पिघलने और वर्षा के आगमन से दोनों का पाट बहुत चौड़ा हो जाता है।

हिमालय भारत को उत्तरी हवाओं से बचाता है, इसलिए देश में शीतकाल में भी कड़ी ठंड नहीं पड़ती। सिंध की घाटी में वर्षा कम होती है। सिंधु के मैदान की जलवायु शुष्क है। गंगा की घाटी में गरमियों में मूसलाधार वर्षा होती है। प्राचीन काल में वह दलदली और दुर्गम, घने वनों से आच्छादित थी, जिनमें बाघ, तेंदुआ, हाथी, विषैले सांप आदि बहुत ही तरह-तरह के जीव पाये जाते थे।

२. भारत के प्राचीनतम नगर। भारत में लोग लाखों वर्षों से रहते आये हैं। यहां प्रागैतिहासिक मानव के अनगिनत अवशेष पाये गये हैं। बहुत समय तक वैज्ञानिकों का मत था कि भारत में पहली सहस्राब्दी ईसापूर्व में जाकर ही लोगों का वर्गों में विभाजन और पहले राज्यों का आविर्भाव हो पाया था। किंतु कोई ५० वर्ष पहले पुरातत्ववेत्ताओं को सिंधु घाटी में तीसरी-दूसरी सहस्राब्दियों के नगरों के खंडहर मिले।

---

* भारत के अंतर्गत वर्तमान भारत गणराज्य के अलावा उससे लगे कई अन्य देश भी शामिल किये जाते हैं।

भारत की एक प्राचीन नहर, जो आज तक बच रही है। (छायाचित्र।)

इन नगरों की सड़कें सीधी और मकान पक्की ईंटों के बने, दो-तीन मंजिले, भीतर से खूब सजे हुए थे। घरों में नहाने के लिए स्नानागार भी थे। गरीबों के मुहल्लों में मकान कच्ची ईंटों के बने होते थे। नगर के एक छोर पर टीले पर किला बना होता था और उससे कुछ ही दूर अनाज रखने के लिए बड़े-बड़े गोदाम बनाये जाते थे।

सिंधु घाटी के निवासी अनाज के अलावा कपास की खेती भी करते थे। खेतों की सिंचाई की व्यवस्था भी थी। सिंधु घाटी के लोग गाय-बैल और भेड़-बकरियां पालते थे।

नगर व्यापार और शिल्पों के केंद्र थे। शिल्पी तांबा, कांसा और सोने से तरह-तरह की वस्तुएं और औजार बनाते थे। सूती कपड़ों का मेसोपोटामिया को भी निर्यात किया जाता था।

पुरातत्ववेत्ताओं को सिंधु घाटी के नगरों की खुदाई में पत्थर और हड्डी से बनी सैकड़ों मुहरें मिली हैं। उनपर घरेलू जानवरों की आकृतियां बनी हुई हैं और लेख भी खुदे हुए हैं।

ये पत्रों को मुहरबन्द करने के काम आती थीं। किंतु सिंधु लिपि को अभी तक पढ़ा नहीं जा सका है। इसलिए सिंधु घाटी की सभ्यता के बारे में हमारा ज्ञान अभी वहां प्राप्त अन्य वस्तुओं पर ही आधारित है।

दूसरी सहस्राब्दी ईसापूर्व में सिंधु घाटी के नगर उजड़ गये। ऐसा क्यों हुआ, यह प्रश्न भी रहस्य बना हुआ है।

३. भारत में आर्यों का आगमन। दूसरी सहस्राब्दी ईसापूर्व में भारत में उत्तर-पश्चिम से आर्य क़बीलों ने प्रवेश किया। ये **खानाबदोश** क़बीले थे और गाय-बैल तथा घोड़े पालते थे। यह संयोग की बात नहीं है कि उनका एक प्रमुख देवता सूर्य था, जो प्रतिदिन अपने स्वर्णिम अश्वरथ पर सवार होकर आकाश की यात्रा करता था।

आर्य जन (क़बीले) का निर्वाचित सेनानी, **राजन्** (राजा) कहलाता था। वह अपने क़बीलेवालों से उनकी उपज का एक अंश पाता था, जिसे स्वेच्छा से दिया हुआ माना जाता था।

सांस्कृतिक विकास के मामले में खानाबदोश आर्य क़बीले सिंधु घाटी के लोगों से बहुत पिछड़े हुए थे। वे लेखनकला से अपरिचित थे और अपने आख्यानों, गीतों, आदि को अपने बड़ों से सुनकर कंठस्थ कर लिया करते थे।

अपने पशुओं के रेवड़ों के साथ आगे बढ़ते हुए आर्य शनैः शनैः भारत के अधिकांश भाग में बस गये। खानाबदोश पशुचारण का धंधा छोड़ अब उन्होंने कृषि का धंधा अपना लिया और पड़ोसी समुदाय बनाकर स्थायी जीवन बिताने लगे। साथ ही देश की मूल आबादी के साथ भी उनका अधिकाधिक मिश्रण होता गया।

४. पहली सहस्राब्दी ईसापूर्व में भारतीयों के धंधे। कोई १००० ईसापूर्व में भारत के निवासी लोहे का उपयोग करने लग गये थे।

लोहे के कुल्हाड़ों और फावड़ों से लैस लोगों के सामने जंगल नहीं टिक पाये। पड़ोसी समुदायों ने पेड़ व झाड़ियां साफ़ करके और नहरें खोदकर सारी ही गंगा घाटी को कृषियोग्य बना लिया। नमी और गर्मी की प्रचुरता के कारण यहां की उपजाऊ भूमि पर बहुत अच्छी पैदावार होती थी।

लोहे के फालवाले हल और लोहे के फावड़ों से कड़ी ज़मीन की भी जुताई की जा सकती थी। हल पर बैलों को जोता जाता था। इस तरह कृषि का भारत के पठारी क्षेत्र में भी प्रसार होने लगा।

भारत के लोग गेहूं, जौ, धान, गन्ना और कपास उगाते थे। कपास के रेशे से कपड़े बुने जाते थे, जो मजबूत होने के साथ-साथ बहुत महीन भी होते थे।

खेतों और बागों की सिंचाई के लिए रहट भी इस्तेमाल किया जाता था।

मवेशियों के अलावा पक्षी भी पाले जाते थे। जंगली मुर्गों को सबसे पहले भारत में ही पालतू बनाया गया था।

हाथियों को साधकर उनसे तरह-तरह के भारी काम करवाये जाते थे, जैसे पेड़ों को उखाड़ना, सवारियों व माल को ढोना, आदि। हाथियों को लड़ाइयों में भी इस्तेमाल किया जाता था। वे शत्रु सेना की पांतों में घुसकर उसके सैनिकों को रौंद डालते थे।

भारत की एक प्राचीन नहर, जो आज तक बह रही है। (छायाचित्र।)

इन नगरों की सड़कें सीधी और मकान पक्की ईंटों के बने, दो-तीन मंजिले, भीतर से खूब सजे हुए थे। घरों में नहाने के लिए स्नानागार भी थे। गरीबों के मुहल्लों में मकान कच्ची ईंटों के बने होते थे। नगर के एक छोर पर टीले पर किला बना होता था और उससे कुछ ही दूर अनाज रखने के लिए बड़े-बड़े गोदाम बनाये जाते थे।

सिंधु घाटी के निवासी अनाज के अलावा कपास की खेती भी करते थे। खेतों की सिंचाई की व्यवस्था भी थी। सिंधु घाटी के लोग गाय-बैल और भेड़-बकरियां पालते थे।

नगर व्यापार और शिल्पों के केंद्र थे। शिल्पी तांबा, कांसा और सोने से तरह-तरह की वस्तुएं और औजार बनाते थे। सूती कपड़ों का मेसोपोटामिया को भी निर्यात किया जाता था।

पुरातत्ववेत्ताओं को सिंधु घाटी के नगरों की खुदाई में पत्थर और हड्डी से बनी सैकड़ों मुहरें मिली हैं। उनपर घरेलू जानवरों की आकृतियां बनी हुई हैं और लेख भी खुदे हुए हैं।

ये पत्रों को मुहरबंद करने के काम आती थीं। किंतु सिंधु लिपि को अभी तक पढ़ा नहीं जा सका है। इसलिए सिंधु घाटी की सभ्यता के बारे में हमारा ज्ञान अभी वहां प्राप्त अन्य वस्तुओं पर ही आधारित है।

दूसरी सहस्राब्दी ईसापूर्व में सिंधु घाटी के नगर उजड़ गये। ऐसा क्यों हुआ, यह प्रश्न भी रहस्य बना हुआ है।

३. भारत में आर्यों का आगमन। दूसरी सहस्राब्दी ईसापूर्व में भारत में उत्तर-पश्चिम से आर्य क़बीलों ने प्रवेश किया। ये **खानाबदोश** क़बीले थे और गाय-बैल तथा घोड़े पालते थे। यह संयोग की बात नहीं है कि उनका एक प्रमुख देवता सूर्य था, जो प्रतिदिन अपने स्वर्णिम अश्वरथ पर सवार होकर आकाश की यात्रा करता था।

आर्य जन (क़बीले) का निर्वाचित सेनानी, **राजन्** (राजा) कहलाता था। वह अपने क़बीलेवालों से उनकी उपज का एक अंश पाता था, जिसे स्वेच्छा से दिया हुआ माना जाता था।

सांस्कृतिक विकास के मामले में खानाबदोश आर्य क़बीले सिंधु घाटी के लोगों से बहुत पिछड़े हुए थे। वे लेखनकला से अपरिचित थे और अपने आख्यानों, गीतों, आदि को अपने बड़ों से सुनकर कंठस्थ कर लिया करते थे।

अपने पशुओं के रेवड़ों के साथ आगे बढ़ते हुए आर्य शनै: शनै: भारत के अधिकांश भाग में बस गये। खानाबदोश पशुचारण का धंधा छोड़ अब उन्होंने कृषि का धंधा अपना लिया और पड़ोसी समुदाय बनाकर स्थायी जीवन बिताने लगे। साथ ही देश की मूल आबादी के साथ भी उनका अधिकाधिक मिश्रण होता गया।

४. पहली सहस्राब्दी ईसापूर्व में भारतीयों के धंधे। कोई १००० ईसापूर्व में भारत के निवासी लोहे का उपयोग करने लग गये थे।

लोहे के कुल्हाड़ों और फावड़ों से लैस लोगों के सामने जंगल नहीं टिक पाये। पड़ोसी समुदायों ने पेड़ व झाड़ियां साफ़ करके और नहरें खोदकर सारी ही गंगा घाटी को कृषियोग्य बना लिया। नमी और गर्मी की प्रचुरता के कारण यहां की उपजाऊ भूमि पर बहुत अच्छी पैदावार होती थी।

लोहे के फालवाले हल और लोहे के फावड़ों से कड़ी जमीन की भी जुताई की जा सकती थी। हल पर बैलों को जोता जाता था। इस तरह कृषि का भारत के पठारी क्षेत्र में भी प्रसार होने लगा।

भारत के लोग गेहूं, जौ, धान, गन्ना और कपास उगाते थे। कपास के रेशों से कपड़े बुने जाते थे, जो मजबूत होने के साथ-साथ बहुत महीन भी होते थे।

खेतों और बागों की सिंचाई के लिए रहट भी इस्तेमाल किया जाता था।

मवेशियों के अलावा पक्षी भी पाले जाते थे। जंगली मुर्गों को सबसे पहले भारत में ही पालतू बनाया गया था।

हाथियों को साधकर उनसे तरह-तरह के भारी काम करवाये जाते थे, जैसे पेड़ों को उखाड़ना, सवारियों व माल को ढोना, आदि। हाथियों को लड़ाइयों में भी इस्तेमाल किया जाता था। वे शत्रु सेना की पांतों में घुसकर उसके सैनिकों को रौंद डालते थे।

कठिन परिश्रम करके भारतीयों ने अपने देश को समृद्ध, लेकिन अपने में तरह-तरह के खतरे छिपायी हुई प्रकृति पर विजय पा ली।

? १. [illegible] और सिंधु की [illegible] में क्या समानताएं और क्या अंतर थे? २. भारत की कौन सी प्राकृतिक विशेषताएं प्राचीन काल में उसके आर्थिक विकास में सहायक रहीं? प्राचीन भारत के लोगों को किन [illegible] का सामना करना पड़ा? [illegible] सिंधु घाटी का [illegible] क्यों किया गया? ३. [illegible] सिद्ध करें कि तीसरी-दूसरी सहस्राब्दी ईसापूर्व में सिंधु घाटी में वर्ग और राज्य थे या नहीं। अपने उत्तर की पुष्टि में प्रमाण दें। ४. खानाबदोश आर्य अपने रहने की जगहें क्यों बदलते रहते थे? आर्यों के धर्म में उनका कौन सा ढंग प्रतिबिंबित हुआ है? ५. प्राचीन भारतीयों ने आर्थिक क्षेत्र में क्या सफलताएं पायी थीं?

§१९. पहली सहस्राब्दी ईसापूर्व में भारत में दासप्रथात्मक राज्यों का आविर्भाव और विकास

(मानचित्र ३)

याद करें कि प्राचीन मिस्र में दासों को क्या कहा जाता था (§७, अनुच्छेद २) और राज्य के क्या लक्षण होते हैं।

१. वर्गों की उत्पत्ति। राजा, पुरोहित और दूसरे संभ्रांत लोग भारतीय जनता की मेहनत के फलों को हड़प लेते थे। उन्हें पड़ोसी समुदायों से उनकी कृषि तथा पशुपालन की पैदावार का एक अंश भी मिलता था। समुदायों के सदस्य किसान भारी हलों से खेत जोतते थे या दूसरे मेहनत के काम करते थे और संभ्रांत लोग अपने रथों पर आते-जाते थे, शिकार में समय बिताते थे या पड़ोसियों से लड़ते रहते थे।

युद्धबंदियों को दास बना लिया जाता था और उन्हें "म्लेच्छ", "दस्यु", "दास" (आरंभ में इस शब्द का अर्थ "शत्रु" था), आदि नामों से पुकारा जाता था। निरीक्षकों की निगरानी में उनसे घरेलू, खेती के और दूसरे काम करवाये जाते थे।

संभ्रांत लोग दासस्वामी बन गये और सामुदायिक किसानों व दासों का शोषण करने लगे।

२. राज्य की उत्पत्ति। किसानों और दासों पर अपना अंकुश बनाये रखने के लिए राजा अपने पास सशस्त्र लोग रखते थे। इन्हें ही आगे चलकर **स्थायी सेना** में बदल दिया गया।

दासों की निगरानी करनेवाले **प्रहरी** (पुलिस) बन गये।

राजा के जो चाकर समुदायों से अनाज, पशु, आदि वसूलते थे, वे अब कर उगाहनेवाले **कर्मचारी** और **न्यायाधीश** कहलाये जाने लगे।

राजा जो पहले मात्र निर्वाचित सेनानी ही होता था, शनैः शनैः सर्वसत्तासंपन्न राजा बन बैठा और उसका पद मौरूसी बन गया।

इस प्रकार पहली सहस्राब्दी ईसापूर्व के आरंभ में भारत में राजा, सेना, प्रहरियों और पदाधिकारियों से युक्त राज्य का आविर्भाव हुआ।

दासस्वामी लोग अपनी संपत्ति और जीवन की रक्षा के लिए राज्य की आवश्यकता को समझते थे। वे कहते थे कि यदि राजा उनकी रक्षा नहीं करेगा, तो उन्हें मार डाला जायेगा। शोषित जनसामान्य पर अपना दबदबा बनाये रखने के लिए वे धर्म का भी सहारा लेते थे।

३. वर्ण व्यवस्था। प्राचीन भारतीय **ब्रह्म** को विश्व का स्रष्टा मानते थे। इसलिए पुरोहितों को **ब्राह्मण** (ब्रह्म का ज्ञाता) कहा जाने लगा।

ब्राह्मण कहते थे कि ब्रह्म ने लोगों को अपने ही शरीर के विभिन्न भागों से उत्पन्न किया है। ब्राह्मण उसके मुख से उत्पन्न हुए, अतः उनका वचन स्वयं ब्रह्म का वचन होता था। बाहुओं से **क्षत्रियों** का, जंघा से **वैश्यों** (किसानों तथा शिल्पियों) का और धूल-धूसरित अपने पैरों से **शूद्रों**, यानी चाकरों का जन्म हुआ। इस प्रकार ब्राह्मणों के अनुसार स्वयं ईश्वर ने ही लोगों का विभिन्न **वर्णों** में विभाजन किया है। ब्राह्मण की संतान ब्राह्मण होती थी और शूद्र की संतान शूद्र। मनुष्य जीवन भर उसी वर्ण का रहता था, जिसमें वह पैदा हुआ था।

शूद्रों का जीवन कठिन था, किंतु उनसे भी सबसे बदतर दयनीय हालत तो **अस्पृश्यों** (**अछूतों**) की थी। वे किसी वर्ण में नहीं गिने जाते थे। माना जाता था कि उनके स्पर्श से ही आदमी अपवित्र हो जाता है। अस्पृश्य की संतान जन्म से ही अस्पृश्य बन जाती थी। अस्पृश्यों को सबसे कठिन, सबसे गंदे और सबसे घृणित काम करने पड़ते थे, जैसे मल-मूत्र साफ़ करना, मरे हुए जानवरों की खाल निकालना, आदि।

यह भी मानो स्वयं ईश्वर ने ही निर्धारित किया था कि किस वर्ण का आदमी क्या काम करेगा और समाज में क्या हैसियत रखेगा। ब्राह्मणों के अनुसार स्वयं ईश्वर ने ही राजा और सैनिकों को रचा है, ताकि वे सब से नियमों का पालन करवायें और पुरोहित तथा दासस्वामी वर्ग के प्रभुत्व को सुरक्षित रखें। नियमों का उल्लंघन करनेवालों को कठोर दंड दिया जाता था।

धर्म दासप्रथात्मक राज्य का समर्थन करता था और राज्य धर्म का।

४. भारत का मौर्य साम्राज्य के अंतर्गत एकीकरण। पहले आर्य राज्य गंगा की उर्वर घाटी में कायम हुए थे। उनके बाद भारत के अन्य भागों में भी राज्यों का उदय होने लगा। आरंभ में वे छोटे-छोटे ही थे। अकेले उत्तरी भारत में ही उनकी संख्या बड़ी [illegible] थी।

एक दूसरे के प्रदेश, दासों और संपत्ति पर कब्जा करने के लिए राज्यों के बीच आपस में लड़ाइयां चलती रहती थीं, जिसके फलस्वरूप कुछ राज्यों का जोर हो जाता था तो कुछ का उत्कर्ष।

छठी शताब्दी ईसापूर्व में **मगध** राज्य की शक्ति और प्रभाव में वृद्धि होने लगी। उसके शासकों ने गंगा घाटी और उससे लगे राज्यों के काफ़ी बड़े भाग पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया। मगध राज्य की राजधानी **पाटलिपुत्र** नगर (वर्तमान पटना) था।

चौथी शताब्दी ईसापूर्व के अंत में जब पाटलिपुत्र में **मौर्य** वंश की सत्ता स्थापित हुई, तो मगध साम्राज्य का और भी अधिक विस्तार हुआ। एक प्राचीन लेखक के अनुसार मौर्यों की सेना बहुत बड़ी थी। उसमें आदमक़द धनुषों, तलवारों और ढालों से लैस ६ लाख पैदल सैनिक, ३० हजार अश्वारोही सैनिक और ९ हजार हाथी थे।

मौर्य वंश के तीसरे सम्राट **अशोक** के शासनकाल (तीसरी शताब्दी ईसापूर्व) को मगध साम्राज्य के चरमोत्कर्ष का काल कहा जाता है। थोड़े से दक्षिणी भाग को छोड़कर शेष सारा भारत अशोक के अधिकार में आ गया था।

किंतु मौर्यों का विशाल साम्राज्य ज्यादा न टिक पाया। अशोक के शासनकाल के अंतिम दिनों में ही उसका विघटन आरंभ हो गया था और दूसरी शताब्दी ईसापूर्व के आरंभ तक वह कई स्वतंत्र राज्यों में बंट गया। कोई ५०० वर्ष बाद भारत में फिर एक और विशाल साम्राज्य—गुप्त साम्राज्य—की स्थापना हुई, किंतु वह भी अशोक के साम्राज्य जितना बड़ा न था।

सुदृढ़ मौर्य साम्राज्य की स्थापना से भारत में आंतरिक युद्धों का अंत हो गया था। इससे भारतीय संस्कृति के विकास और अन्य देशों के साथ भारत के संबंधों के सुदृढ़ीकरण में बड़ा योग मिला।

ब्राह्मणों की शिक्षाएं

इन शिक्षाओं के आधार पर सिद्ध करें कि प्राचीन भारत में धर्म लोगों के बीच असमानता को प्रोत्साहित करता था। ब्राह्मणों के अनुसार राज्य की उत्पत्ति कैसे हुई? इस बारे में उन्होंने जो सिद्धांत प्रतिपादित किया, उससे उन्हें क्या लाभ होता था?

ब्राह्मण ईश्वर के शरीर के सर्वोत्कृष्ट भाग से उत्पन्न हुए हैं। इसलिए वे सर्वोच्च हैं। उनकी इच्छा तुरंत पूरी की जानी चाहिए।

ईश्वर ने शूद्रों के लिए एक ही काम बताया है—ऊंचे वर्णों की सेवा करना।

क्षत्रिय ब्राह्मण के बिना उन्नति नहीं कर सकता और ब्राह्मण क्षत्रिय के बिना।

ईश्वर ने राजा और क्षत्रियों को विश्व की रक्षा के लिए रचा है।

जो शूद्र उच्च वर्णों को अपशब्द कहे, उसकी जीभ दहकती सलाख से दाग देनी चाहिए और जो शूद्र ब्राह्मण से बहस करे, उसके मुंह व कान में खौलता तेल भर देना चाहिए।

जो शूद्र ब्राह्मण पर हाथ उठाये, उसका हाथ काट डालना चाहिए और जो ब्राह्मण को लात मारे, उसका पैर काट डालना चाहिए।

ब्राह्मण को प्राणदंड नहीं दिया जा सकता। इसके बजाय उसे सिर्फ़ सिर मूंड़कर छोड़ दिया जाना चाहिए।

? १. प्राचीन भारत में राज्य की उत्पत्ति क्यों और कैसे हुई? २. वर्ण व्यवस्था क्यों पैदा हुई? क्या आदिम सामुदायिक समाज के रहते यह पैदा हो सकती थी? अपने उत्तर की पुष्टि में प्रमाण दें। ३. भारत में धर्म राज्य का समर्थन क्यों करता था? ४. सोचकर बतायें कि मौर्य साम्राज्य की स्थापना भारतीय संस्कृति के विकास में सहायक कैसे हुई?

§ २०. प्राचीन भारत की संस्कृति

(मानचित्र ३)

याद करें कि प्राचीन मिस्र और पश्चिमी एशिया में ज्ञान-विज्ञान की किन शाखाओं का विकास हुआ था (§१२ और §१७)।

१. प्राचीन भारत के नगर। पहली सहस्राब्दी के मध्य में भारत में नगरों का तेजी से विकास होने लगा था। सबसे बड़ा नगर पाटलिपुत्र था। वह गंगा के तट के साथ-साथ कई किलोमीटर तक फैला हुआ था। उसके गिर्द एक गहरी खाई और ऊंची दीवार बनी हुई थी। दीवार में ६४ द्वार थे।

नगर के मध्य में स्तंभों, नक्क़ाशी के काम और तरह-तरह की मूर्तियों से अलंकृत राज-प्रासाद स्थित था। उसकी भव्यता और ऐश्वर्य से पारसीक सम्राटों के विख्यात प्रासाद भी टक्कर नहीं ले पाते थे।

अनेक नगरों का निर्माण सुनियोजित ढंग से हुआ था। उनकी सड़कें सीधी थीं। नगरों में शिल्प और व्यवसाय तेजी से विकास कर रहे थे। हाथीदांत, पत्थर और लकड़ी पर नक्क़ाशी करनेवालों, बुनकरों, लुहारों, कुम्हारों, आदि के अपने अलग मुहल्ले होते थे। राजा शिल्पियों को विशेष संरक्षण प्रदान करता था और कभी-कभी करों से छूट भी दे देता था।

पाटलिपुत्र दूसरे भारतीय नगरों और अन्य देशों से चौड़े और पक्के मार्गों से जुड़ा हुआ था। इन मार्गों पर जगह-जगह कुएं बने हुए थे।

पाटलिपुत्र और अन्य भारतीय नगर शिक्षा और चिकित्सा के केंद्र थे।

२. शिक्षा, लेखनकला और गणित। कृषि तथा शिल्पों के विकास और राज्यों की स्थापना के फलस्वरूप भारत में तीसरी-दूसरी सहस्राब्दी ईसापूर्व की विस्मृत लिपि के स्थान पर एक नयी लिपि का विकास हुआ, जिसका नाम ब्राह्मी था। आधुनिक उत्तरी भारतीय लिपियां ब्राह्मी से ही निकली हैं। इसके अलावा खरोष्ठी नामक एक अन्य लिपि भी प्रचलित थी। भारत के लोग सुखाये पत्तों (ताड़पत्र), भूर्ज की छाल (भूर्जपत्र), आदि पर लिखा करते थे।

भवनों और शहरी महल्लों की ज्यामितीय दृष्टि से सही अनुपातता और नगर निर्माण में ज्यामितीय नियमों का कठोर पालन दिखाते हैं कि भारतीय ज्यामिति से भली भांति परिचित थे।

गणित में **शून्य** का प्रयोग भारतीयों की ही देन है। शून्य की बदौलत वे दस संकेतों—अंकों—की सहायता से कोई भी गणना कर सकते थे। आज भारतीय अंक पद्धति सारे विश्व में इस्तेमाल की जाती है। यूरोपीय अंकों को अरबी अंक कहते हैं, क्योंकि उन्होंने उन्हें अरबों से सीखा था। किंतु स्वयं अरब उन्हें हिंदसा कहते हैं और यह शब्द हिंद—यानी भारत—से उत्पन्न हुआ है।

नगरों में पाठशालाएं होती थीं, जिनमें लिखना-पढ़ना, व्याकरण, गणित, साहित्य आदि सिखाये जाते थे। किंतु वर्ण व्यवस्था के कारण शिक्षा का व्यापक प्रसार न हो पाया।

प्रस्तर शिल्प के शानदार स्मारक हैं। हर स्तंभ एक ही पत्थर से बना हुआ है। उनमें से एक के शीर्षभाग पर विभिन्न दिशाओं में देखती हुई चार सिंह आकृतियां बनी हैं। लगता है कि जैसे प्रहरियों की भांति खड़े ये सिंह अशोक के साम्राज्य की सीमाओं की रखवाली कर रहे हों।

पहली शताब्दी ईसापूर्व में निर्मित सांची का स्तूप, उसकी प्रस्तर वेदिका और द्वार बड़ी उत्कृष्ट और प्रख्यात कृतियां हैं। मूर्तिकारों ने द्वारों पर तरह-तरह की पशु आकृतियां, पत्तियां और लताएं और पौराणिक देवी-देवताओं की मूर्तियां बनायी हैं।

प्राचीन भारत में चट्टानों को अंदर से तराशकर गुफाओं जैसे चैत्य (मंदिर और विहार) भी बनाये जाते थे। पहली शताब्दी ईसापूर्व में निर्मित एक गुफा-चैत्य के स्तंभ कांच की तरह चमकते हुए और चिकने हैं। चैत्य में प्रकाश आगे की दीवार में बने गवाक्ष से ही प्रवेश करता है। भीतर के धुंधलके में दीवारों पर बनी मानव तथा पशु आकृतियां अत्यंत प्रभावोत्पादक लगती हैं। चैत्य का सारा वातावरण उपासक के मन में अपनी अकिंचनता और तुच्छता की भावना ही पैदा करता था।

भारत ने **शतरंज के खेल** को जन्म दिया। हाथीदांत के बने मोहरों की आकृति प्राचीन भारतीय सैनिकों जैसी होती थी। आगे प्यादे होते थे, बीच में राजा तथा सेनानी और बगल में हाथी और उनके पीछे अश्वारोही सैनिक। सबसे किनारे पर रथ – नौकाएं – होती थीं। प्राचीन भारत में शतरंज को "चतुरंग" कहते थे।

६. अन्य देशों के साथ भारत के संबंध। सिंधु सभ्यता की अवनति के बाद भारत के अन्य देशों के साथ संबंध भी शिथिल पड़ गये थे। किंतु जब कृषि, पशुपालन तथा शिल्प पुनः फूलने-फलने लगे और बड़े-बड़े राज्यों का निर्माण और शिक्षा का प्रसार हुआ, तो ये संबंध फिर बढ़ने लगे। भारत के तटवर्ती नगरों से पश्चिम में मेसोपोटामिया तथा मिस्र की ओर पूर्व में दक्षिण-पूर्वी एशिया, श्रीलंका तथा चीन को तरह-तरह के मालों से लदे जहाज रवाना होते थे। उत्तर-पश्चिम के पहाड़ी दर्रों से गुजरनेवाले स्थलमार्गों पर बड़े-बड़े सार्थ (कारवां) मध्य एशिया तथा भूमध्यसागर क्षेत्र को आया-जाया करते थे। भारत के महीन वस्त्रों, रत्नों, हाथी-दांत और अन्य विलास सामग्रियों की यूरोप तक में बड़ी कद्र की जाती थी। बाहरी देशों और भारत के बीच व्यापारियों का ही नहीं, दूतमंडलों, विद्वानों और यात्रियों का भी आना-जाना लगा रहता था।

दक्षिण-पूर्वी एशिया के देशों के साथ भारत के विशेषतः घनिष्ठ संपर्क थे। भारतवासी हिंदचीन और इंडोनेशिया के लोगों के साथ व्यापार ही नहीं करते थे, बल्कि बहुत से वहां जाकर बस भी गये थे। भारत से आये शिक्षित लोगों को इन देशों में उच्च पदों पर नियुक्त किया जाता था। दक्षिण-पूर्वी एशिया के देशों में लिपि, कला, शिल्प और ज्ञान-विज्ञान के विकास में प्राचीन भारत का बहुत बड़ा योगदान था।

भारत की जनता ने प्राचीन विश्व की अन्य सभ्य जातियों से बहुत कुछ सीखा और उन्हें भी बहुत सी नयी बातें सिखायीं। प्राचीन विश्व की सभ्यता और संस्कृति के विकास में भारत का बहुत बड़ा योगदान था।

महाभारत की संक्षिप्त कथा

जब यह महाकाव्य रचा गया था, भारत में कौन सी सामाजिक व्यवस्था थी? अपने उत्तर की पुष्टि में प्रमाण दें।

महाभारत में कौरवों और पांडवों के संघर्ष का वर्णन किया गया है। पांडव पांच भाई थे। उनके पिता की मृत्यु के बाद उनके चचेरे भाई कौरवों ने उनका राज्य छीन लिया। पांचों पांडव बड़े वीर थे। एक बार एक पड़ोसी राजा ने घोषणा की कि वह अपनी कन्या का विवाह उस पुरुष से करेगा, जो ऊपर चक्र से घूमती मछली की आंख नीचे तेल में छाया देखकर ही बींध डालेगा। भारत के कोने-कोने से शूर-वीर इस प्रतियोगिता में भाग लेने आये। लेकिन अकेला अर्जुन ही, जो पांच पांडवों में से एक था, लक्ष्य को बींध सका। राजकन्या का विवाह उससे हो गया।

पांडवों के सबसे बड़े भाई को जुए की लत थी। एक बार जुए में वह स्वयं अपने को, अपने भाइयों और पत्नी को भी दांव पर लगाकर हार गया। सब दास बन गये। बाद में मुक्ति पा लेने के बाद भी वे शांतिमय तरीकों से अपना राज्य वापस न पा सके। अब कौरवों और पांडवों के बीच युद्ध छिड़ गया। कुछ जनों (कबीलों) ने पांडवों का साथ दिया और कुछ ने कौरवों का। दोनों पक्षों की विशाल सेनाओं के बीच १८ दिन तक घमासान युद्ध चलता रहा। सारा रणक्षेत्र लाशों से पट गया। अनगिनत लोग घायल हुए।

युद्ध में कभी एक पक्ष का पलड़ा भारी पड़ता, तो कभी दूसरे का। अंततः विजय पांडवों की हुई। वे राजा बन गये और उनका राज्य सागर तट तक फैल गया।

? १. पाटलिपुत्र नगर के बारे में आप क्या जानते हैं? २. पहली सहस्राब्दी ईसापूर्व में भारतीय संस्कृति के विकास में क्या बातें सहायक हुईं? ३. पहली सहस्राब्दी ईसापूर्व – पहली सहस्राब्दी ईसवी के आरंभ में भारत के लोगों ने संस्कृति के क्षेत्र में क्या सफलताएं पायीं? ४. प्राचीन भारत के साहित्य और मूर्तिकला में आपको क्या और क्यों पसंद है? ५. भारतीय जनता की कौनसी प्राचीन उपलब्धियां आज भी प्रयोग में लायी जाती हैं?

§२१. प्राचीन श्रीलंका

१. श्रीलंका की भौगोलिक स्थिति। श्रीलंका भारत उपमहाद्वीप के दक्षिण में हिंद महासागर में स्थित एक बड़ा द्वीप है। यहां से विषुवत रेखा अधिक दूर नहीं है। यह हिंद महासागर के लगभग बीच में है और पूर्व तथा पश्चिम को जोड़नेवाले अधिकांश सागर मार्ग श्रीलंका को छूते हुए गुजरते हैं। एक संकरा सा जलसंयोजी भारत प्रायद्वीप को श्रीलंका से अलग करता है। इस जलसंयोजी में अनेक छोटे-छोटे टापू और मूंगे की चट्टानें हैं जिनके कारण भारत और श्रीलंका के बीच आवागमन में बड़ी आसानी होती थी। संभवतः ये समुद्रतल में डूबी किसी प्राचीन पर्वतमाला के अवशेष हैं। एक प्राचीन किंवदंती इन्हें राम की वानर सेना द्वारा निर्मित सेतु के अवशेष बताती है।

२. श्रीलंका की प्राकृतिक विशेषताएं। श्रीलंका का धरातल, मिट्टी और जलवायु सभी जगह एक जैसे नहीं हैं। द्वीप का मध्य भाग पहाड़ी है और उसके चारों ओर मैदान हैं। दक्षिण-

जाता था। इसका निर्माण राजा दुत्थगामनी के काल में आरम्भ हुआ था। दैगोबा की भव्य रचना निर्दोष आकृति उनके निर्माताओं की सुरुचि का ही नहीं, उनके गणित के उच्च ज्ञान का भी प्रमाण है। **सिगिरिय** (**सिंहगिरि**) के भित्तिचित्रों में बनी रमणीय मानव आकृतियां बिल्कुल सजीव सी लगती हैं।

श्रीलंका में प्राचीन कलास्मारकों को बहुत सहेजकर रखा जाता है।

? १. श्रीलंका के प्राचीन इतिहास की जानकारी किन स्रोतों से मिलती है? २. श्रीलंका की प्राकृतिक परिस्थितियां किन धंधों के विकास में और कैसे सहायक बनीं? ३. प्राचीन श्रीलंका में किन जातियों के लोग रहते थे? ४. श्रीलंका द्वीप पर राज्य का आविर्भाव कैसे हुआ? इसने देश के इतिहास में क्या भूमिका निभायी?

छठा अध्याय

प्राचीन चीन

§ २२. चीनी राज्य का निर्माण

(मानचित्र ३)

१. चीन की भौगोलिक विशेषताएं। चीन का पूर्व में सागर से लगा भाग मैदानी और शेष सारा भाग पठारी और पहाड़ी है।

सागर तट से लगे इलाकों में प्रचुर वर्षा होती है। किंतु ज्यों-ज्यों हम पश्चिम की ओर बढ़ते हैं, वर्षापात कम होता जाता है। पश्चिमी भागों में प्रायः भयंकर सूखा पड़ता है।

मैदानी भाग में चीन की दो सबसे बड़ी नदियां बहती हैं: **ह्वाङहो** (इसे **पीली नदी** भी कहते हैं) और **याङत्सी**। ह्वाङहो की घाटी महीन पीली बालू जैसी **लोएस** मिट्टी से बनी है। यहां कुदाल और हल से आसानी से खेती की जा सकती है और अगर भूमि को पर्याप्त नमी मिले, तो उसपर बहुत अच्छी पैदावार होती है।

वर्षाकाल में बाढ़ आने से ह्वाङहो का पाट दसियों और कहीं तो सैकड़ों किलोमीटर चौड़ा हो जाता है और पानी लोएस को बहा ले जाता है। ह्वाङहो ने अनेक बार अपनी धार बदली है। जब-जब ऐसा हुआ, पूरे के पूरे गांव और बस्तियां उसके गर्भ में समा गये। इसी कारण चीन के लोग इसे "भटकती नदी", "चीन का दुख" या "हज़ारों अभिशापों की नदी" भी कहते थे।

याङत्सी के तट की भूमि भी बड़ी उपजाऊ है। प्राचीन काल में यह घने जंगलों से ढकी हुई थी।

२. दूसरी सहस्राब्दी ईसापूर्व में ह्वाङहो घाटी में दासप्रथात्मक राज्य की स्थापना। दूसरी सहस्राब्दी ईसापूर्व के आरम्भ तक ह्वाङहो घाटी के मध्य भाग में कृषि का काफ़ी विकास हो चुका था। किसान ज्वार-बाजरा, गेहूं, धान और साग-सब्जियां उगाया करते थे और मवेशी पालते थे। उन्होंने **शहतूत के कीड़े** पालना और सुन्दर रेशमी वस्त्र बनाना भी सीख लिया था।

ह्वाङहो के तट पर खुदाइयों में पुरातत्ववेत्ताओं को दूसरी सहस्राब्दी ईसापूर्व की बहुत सी कब्रें मिली हैं। उनमें से कुछ में शवों को चटाइयों में लपेटकर रखा हुआ था। हर शव के निकट एक घड़ा भी था, जिसमें खाने की चीजें थीं। अन्य कब्रें जमीन के नीचे बने मकानों जैसी थीं। उनमें ताबूत के चारों ओर सोने के आभूषण, लड़ाई के हथियार और विभिन्न

१. धान के लिए खेत की जुताई। (एक प्राचीन चीनी चित्र।) खेत में पानी भरा हुआ है, क्योंकि धान की फ़सल के लिए बहुत नमी की ज़रूरत होती है। पाठ में वह स्थल खोजें, जहां इस तरह के काम के बारे में विस्तार से बताया गया है। २. खान-मजदूर। (एक प्राचीन चीनी मूर्तिका।) ऐसी मूर्तियों का मिलना किस बात का साक्षी है? ३. चीन में प्राचीन कब्रों में मिले घरों के मिट्टी के बने मॉडल। बतायें कि इस प्रकार के घरों में कौन रहते होंगे।

१

और भूखन हैं कि पहाड़ और घाटियां भी कम पड़ जाती हैं। उनके सामने गाने-बजानेवालों का हुजूम लगा रहता है। उनके घरों में शराब पानी की तरह बहती है और गोश्त तो इतना है कि सड़ने लग जाता है।"

किसान और दास लोग दासस्वामियों को "बेईमान और हरामखोर चूहे" कहा करते थे। ३. किसान और दास जंगलों और पहाड़ों में भाग जाते थे और फिर सशस्त्र दस्ते बनाकर दासस्वामियों और सरकारी अधिकारियों पर हमले करते थे। चीनी इतिहास ग्रंथों में हमें प्रायः ऐसे वाक्य पढ़ने को मिलते हैं, जैसे "दासों ने खानों के प्रबंधक को मार डाला और हथियारों पर कब्ज़ा कर लिया", "अधिकारियों पर हमला करके दासों का अपहरण कर लिया और गोदामों से अनाज को लूट डाला", "अधिकारी को मारकर हथियार छीन लिये", आदि।

प्राचीन चीन के इतिहास में एक सबसे बड़ा विद्रोह पहली शताब्दी ई० के आरम्भ में हुआ था। यह **लाल भौंहवालों के विद्रोह** के नाम से विख्यात है। (इसकी कहानी पृष्ठ ११२ पर पढ़ें।) ४. दूसरी शताब्दी ईसवी के अंत में, यानी "लाल भौंहवालों" के विद्रोह के कोई डेढ़ सौ वर्ष बाद, तीन **खान** भाइयों ने लोगों का आह्वान किया कि सम्राट की सत्ता उखाड़ फेंकें और एक नयी जनहितकारी व्यवस्था कायम करें। सारे चीन में विद्रोह की तैयारियां होने लगीं। [illegible] धर्मशालाओं और गांवों में गुप्त रूप से सशस्त्र दस्ते बनाये जाने लगे।

किंतु १८४ ईसवी में किसी ने गद्दारी करके विद्रोह के षड्यंत्र की खबर अधिकारियों [illegible]। खान भाइयों के १००० से अधिक समर्थकों को पकड़कर मृत्युदंड दे दिया गया। [illegible] भाइयों ने विद्रोह तुरंत शुरू करने का आदेश दिया। विद्रोह की आग देखते ही देखते [illegible] सभी प्रांतों में फैल गयी। लाखों किसान और दास शासन के विरुद्ध उठ

२ ३

खड़े हुए। उन्होंने नगरों पर क़ब्ज़ा कर लिया, अमीरों की सम्पत्ति-जायदाद छीन ली और क़ैदियों तथा दासों को मुक्त कर दिया। विद्रोही अपने सिरों पर पीली पट्टी बांधे होते थे, इसलिए उनका विद्रोह **पीली पट्टीवालों का विद्रोह** कहलाया।

सम्राट और दासस्वामी वर्ग भयभीत होकर सभी नागरिक तथा सैनिक अधिकारियों को, पुत्रों तथा वफ़ादार सेवकों को विद्रोहियों के दमन के लिए लामबंद करने लगे। दासस्वामियों ने विशाल सेनाएं जुटायीं और खुद उनका नेतृत्व किया। लगभग सारे ही चीन में शोषकों और शोषितों के बीच घमासान लड़ाई छिड़ गयी। (देखें रंगीन चित्र १०।) ५. विद्रोहियों के शत्रुओं को भी उनके शौर्य-पराक्रम की दाद देनी पड़ी। किंतु "पीली पट्टीवालों" के बीच एकता का अभाव था। उनके सभी दस्ते अलग-अलग लड़ रहे थे। फिर उनके पास शाही सेनाओं जैसे हथियार और अनुभवी सेनानायक भी नहीं थे।

शाही सेना ने "पीली पट्टीवालों" के शिविर पर सहसा हमला करके उन्हें दलदल और नदी की ओर पीछे हटने को मजबूर कर दिया, जहां उनके ५० हज़ार आदमी डूब गये। कोई

१ लाख विद्रोही एक दूसरी लड़ाई में मारे गये। शाही सेनाध्यक्ष ने उनके सिरों का ढेर लगाने का आदेश दिया। "पीली पट्टीवालों" के मुख्य दस्ते परास्त हो गये थे और चान भाई युद्ध में मारे गये थे। विजेताओं ने उन सबको प्राणदंड दिया, जिनपर विद्रोहियों से सहानुभूति रखने का संदेह था। यहां तक कि स्त्रियों और बच्चों को भी नहीं बख्शा गया।

किंतु विद्रोह की आग इसके बाद भी शांत न हुई। पराजित दस्तों की जगह पर नये-नये दस्ते पैदा होते रहे। घमासान लड़ाइयों, नृशंस अत्याचारों तथा मृत्युदंडों का सिलसिला २० वर्ष तक चलता रहा। उसके बाद जाकर ही दासस्वामी विद्रोहियों को पूरी तरह कुचल सके।

हालांकि विद्रोहों का अंत पराजय में हुआ, लेकिन हान वंश, जिससे जनता घोर नफ़रत करती थी, अब पहले जैसा शक्तिशाली नहीं रह गया। कुछ वर्ष बाद अंतिम हान सम्राट की हत्या हो गयी। हान साम्राज्य कई छोटे-छोटे राज्यों में बंट गया।

"लाल भौंहवालों" का विद्रोह

(प्राचीन चीनी इतिहासकारों के वृत्तांतों से)

विद्रोही ऐसे प्रकट हुए, जैसे कि शहद की मक्खियों के झुंड हों। फ़ान् चुन बहुत वीर था। आम लोग उसके साथ हो गये। लड़ाई की तैयारी करते हुए फ़ान् चुन और उसके समर्थकों ने अपनी भौंहों पर लाल रंग लगा लिया, ताकि सम्राट के सैनिकों से अलग दिखें।

सम्राट ने अपने नौ आदमियों को सेनानायक नियुक्त किया और उन्हें "व्याघ्र" की उपाधि प्रदान की। उनके अधीन दसियों हज़ार सैनिक थे। हर सैनिक को ४००० सिक्के दिये गये। किंतु सैनिक लड़ना नहीं चाहते थे। छः "व्याघ्र" विद्रोहियों के हाथों परास्त होकर भाग गये। तीन "व्याघ्र" बची-खुची सेना को इकट्ठा करके राजधानी की रक्षा करने लगे।

चारों ओर से विद्रोही दस्ते राजधानी की ओर बढ़ रहे थे। सम्राट ने जेलों से सभी अपराधियों को छोड़कर उन्हें हथियारबंद करने का आदेश दिया। लेकिन नगर से बाहर निकलते ही इस फ़ौज में भगदड़ मच गयी।

विद्रोही राजधानी में घुस आये। नगर में सर्वत्र आग लगी हुई थी, सड़कों पर लड़ाई चल रही थी। सम्राट एक बड़ी झील के मध्य में स्थित टापू पर बने अपने महल में छिप गया।

विद्रोहियों ने महल को घेर लिया और तीरों की वर्षा करने लगे। सम्राट के अनेक अंगरक्षक मारे गये। शेष के पास भी तीर ख़त्म हो गये थे। अब हाथापाई शुरू हो गयी। विद्रोहियों ने सम्राट को पकड़ लिया और उसका सिर काट डाला।

"लाल भौंहवाले" अपनी विजय से समुचित लाभ न उठा सके। किसान और दास सोचते थे कि उनके सभी कष्टों का कारण दुष्ट सम्राट है और यदि कोई न्यायी सम्राट गद्दी पर बैठ जाये, तो उनकी मुसीबतें ख़त्म हो जायेंगी। अतः उन्होंने दासस्वामियों को नया सम्राट गद्दी पर बिठाने से नहीं रोका।

? १. §२३ में से स्थान बतायें, जिनके लिए ये शीर्षक दिये जा सकते हैं: "शोषकों के विरुद्ध किसानों और दासों का संघर्ष", "'पीली पट्टीवालों' की पराजय", "दासस्वामियों का जीवन", "किसानों और दासों की दशा" और "'पीली पट्टीवालों' का विद्रोह"। २. प्राचीन चीन में किन लोगों को दास बनाया जा सकता था? ३. "पीली पट्टीवालों" के विद्रोह के क्या कारण थे? किस घटना की वजह से विद्रोह इतनी तेज़ी से फैला? ४. विद्रोह सफल क्यों न हो पाया? ५. "पीली पट्टीवालों" का विद्रोह कितने वर्ष पहले और किस शताब्दी में हुआ था? वह शताब्दी के अंत में हुआ था या आरम्भ में? चीन के एक साम्राज्य में एकीकरण और "पीली पट्टीवालों" के विद्रोह के बीच कितने वर्षों का अंतराल है? ६. पाठ और चित्रों के आधार पर बतायें कि जो किसान दास बनाये गये थे और जिन्होंने "पीली पट्टीवालों" के विद्रोह में भाग लिया था, उनका जीवन किस प्रकार का था।

§२४. प्राचीन चीन की संस्कृति

याद करें कि प्राचीन मिस्र, मेसोपोटामिया और भारत में ज्ञान-विज्ञान की किन शाखाओं का विकास हुआ था और क्यों हुआ था (§१२, अनुच्छेद १,२,३; §१७, अनुच्छेद ४; §२०, अनुच्छेद २,३)।

१. लेखनकला। चीन में लेखनकला का आविष्कार कोई २००० ईसापूर्व में हुआ था। चीनी चित्रलिपि में लिखते थे, जिसमें हर चिह्न एक अलग शब्द का बोध कराता था। उदाहरण के लिए, 木 का मतलब 'वृक्ष', ऐसे ही दो चिह्नों 林 का मतलब 'वन' और तीन चिह्नों 森 का मतलब 'घना वन' था। चीनी चित्रलिपि में दसियों हज़ार चिह्न थे।

१. बांस की पाटियों पर प्राचीन चीनी लेख। यात्रा पर जाते समय चीनी विद्वान अपने साथ ऐसी "पुस्तकें" ले जाता था। २. कागज़ का उत्पादन। (प्राचीन चीनी चित्र।) बायें – कारीगर ने लुगदी तैयार की जा रही है। दायें – नली से बहकर आती लुगदी से कागज़ के ताव बनाये जा रहे हैं।

१ २

प्राचीन पूर्व के लोगों ने दासप्रथात्मक व्यवस्था के युग में विश्व अर्थव्यवस्था तथा संस्कृति के विकास में बड़ा योग दिया।

प्राचीन पूर्व में लोग कौन सी फसलें उगाते और कौन से जानवर पालते थे? उन्होंने किन शिल्पों में विशेष निपुणता प्राप्त की थी? प्राचीन पूर्व में कौन-कौन सी लिपियां प्रचलित थी? यहां ज्ञान-विज्ञान की किन शाखाओं का जन्म और किन चीजों का आविष्कार हुआ? प्राचीन पूर्व के साहित्य, वास्तुकला और मूर्तिकला की जो कृतियां आपको मालूम हैं, उनके नाम बतायें।

प्राचीन यूनान

सातवां अध्याय

यूनान का आरंभिक इतिहास

§ २५. प्राचीन यूनान की भौगोलिक व प्राकृतिक विशेषताएं और लोग

(मानचित्र ४ और पृष्ठ १२३ पर दिया मानचित्र)

१. **यूनान** एक छोटा सा पहाड़ी देश है और यूरोप के दक्षिण में **बाल्कन प्रायद्वीप** के दक्षिणी भाग में स्थित है।

यहां के पहाड़ खड़े और चट्टानी हैं। उनपर झाड़ियां और थोड़ी-बहुत घास ही उगती है। मैदानों में भूमि उपजाऊ है। यूनान में लोहा, तांबा, चांदी और **संगमरमर** पाये जाते हैं।

ईजियन सागर से लगा पूर्वी यूनान का तट बहुत कटा-फटा है। संकरी स्थलग्रीवाएं जल में और जलग्रीवाएं स्थल में दूर-दूर तक चली गयी हैं। खाड़ियों में जहाजों के लंगर डालने के लिए बहुत अच्छी-अच्छी जगहें हैं। सागर में मछलियां काफ़ी पायी जाती हैं।

ईजियन सागर में टापुओं की भरमार है। वे एक दूसरे के इतने क़रीब-क़रीब स्थित हैं कि लगभग हर किसी से दूसरे टापू दिखायी दे जाते हैं।

यूनान में प्रायः भूकंप आते हैं। सरदियों में वर्षा होती है और कभी-कभी तेज़ तूफ़ान भी चलते हैं। अन्य ऋतुओं में आकाश साफ़ रहता है और सूरज चमचमाता रहता है। नदियां गरमियों में लगभग पूरी तरह सूख जाती हैं। यात्रा पर जा रहे मित्रों को यूनानी लोग "निष्कंटक यात्रा और ताजे जल" की कामना किया करते थे।

२. प्रकृति ने यूनान को तीन भागों में बांटा है: **दक्षिणी, मध्य और उत्तरी।** समुद्री खाड़ियां दक्षिणी यूनान या **पेलोपोनेसस** को मध्य यूनान से अलग करती हैं। उनके बीच एक संकरे से स्थलग्रीवा द्वारा ही संपर्क बना रहता है। मध्य यूनान को उत्तरी यूनान से पहाड़ अलग करते हैं। पहाड़ों और सागर के बीच स्थित संकरे **थर्मापिली के गलियारे** से ही इन दोनों भागों के बीच आना-जाना हो सकता था।

पहाड़ यूनान के हर भाग को कई छोटे-छोटे प्रदेशों में बांट देते हैं। एक प्रदेश से दूसरे में या तो सागर मार्ग से या फिर पहाड़ी पगडंडियों से ही पहुंचा जा सकता था।

३. लगभग एक शताब्दी पहले तक विद्वानों को यूनान के आरंभिक इतिहास के बारे में बहुत कम जानकारी थी और माना जाता था कि यूनान का इतिहास पहली सहस्राब्दी ईसापूर्व में ही शुरू होता है।

यूनान का एक दृश्य। (छायाचित्र।) **इसमें यूनान की कौन सी भौगोलिक विशेषताएं देखी जा सकती हैं?**

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में पेलोपोनेसस के एक उर्वर मैदान में उस स्थल पर खुदाई की गयी, जहां प्राचीन काल में **माइसीनी** नामक नगर स्थित था। पता चला कि माइसीनी की स्थापना दूसरी सहस्राब्दी ईसापूर्व के मध्य से पहले ही हो गयी थी। नगर के बीच में एक ऊंचे टीले पर **एक्रोपोलिस** (दुर्ग) स्थित था। बड़े-बड़े पत्थरों से निर्मित प्राचीर उसे बाह्य आक्रमणों से बचाती थी। एक्रोपोलिस में एक प्रासाद बना था, जिसके ... थे। पुरातत्त्ववेत्ताओं को पत्थर की क़ब्रें मिलीं। मृतकों के चेहरे सोने के मुखौटों से ढंके थे। क़ब्रों में कांसे के हथियार और उत्कृष्ट कारीगरी का परिचय देनेवाली सोने की वस्तुएं भी पायी गयीं।

माइसीनी के बाद दूसरी सहस्राब्दी ईसापूर्व के अन्य नगर और प्रासादों के खंडहर भी प्रकाश में आये। पुरातत्त्ववेत्ताओं को कुछ मिट्टी की पाटियां मिलीं, जिनपर किसी अज्ञात लिपि में लेख खुदे हुए थे। इन्हें अब पढ़ लिया गया है। पाटियों पर दासों की सूचियां, ... की सूचियां तथा उनसे उगाहे जानेवाले करों की मात्रा, स्थल तथा नौसैनिकों की भरती व शस्त्र-सज्जा के विवरण, आदि लिखे हुए थे। दूसरी सहस्राब्दी ईसापूर्व के सभी नगरों के खंडहर दिखाते हैं कि वे अग्निकांड में भस्म हुए थे। इस प्रकार इतिहासकारों को यूनान के प्रारंभिक इतिहास के बारे में मालूम हुआ। (पुरातत्त्ववेत्ताओं की इन खोजों से दूसरी सहस्राब्दी ईसापूर्व
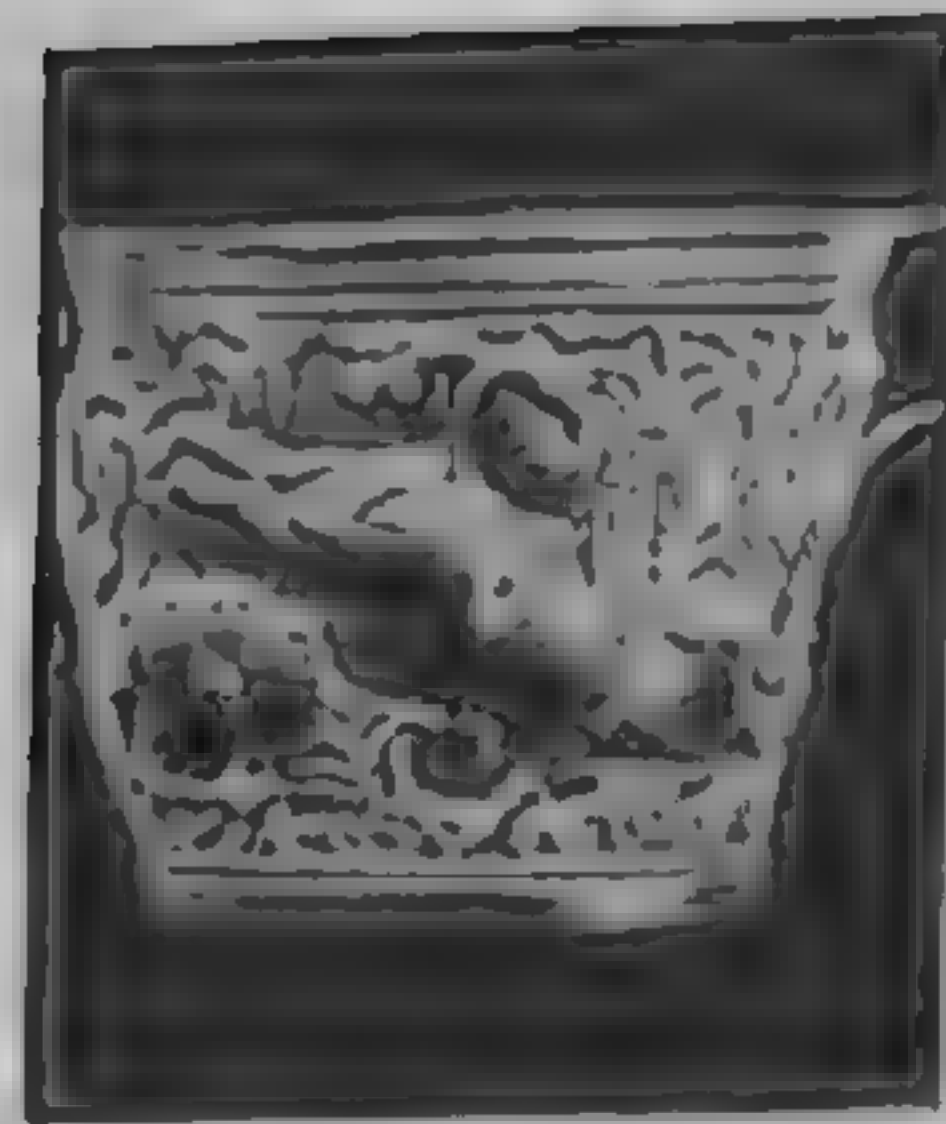
१. माइसीनी के ऐक्रोपोलिस का "सिंहद्वार"। पत्थर के खंडों पर ध्यान दें, जिनसे दीवार बनी है। २. पेलोपोनेसस से प्राप्त एक स्वर्ण चषक। ३. कब्र में मृतक के शव के चेहरे को ढापनेवाला एक स्वर्ण मुखौटा। ४. मिट्टी की पाटी, जिसपर सबसे प्राचीन यूनानी लिपि में लेख खुदा हुआ है। ५. पहली सहस्राब्दी ईसापूर्व के आरंभ तक यूनानियों का विस्तार।

के यूनानियों के धंधों, उनकी समाज व्यवस्था और संस्कृति के बारे में क्या निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं?)
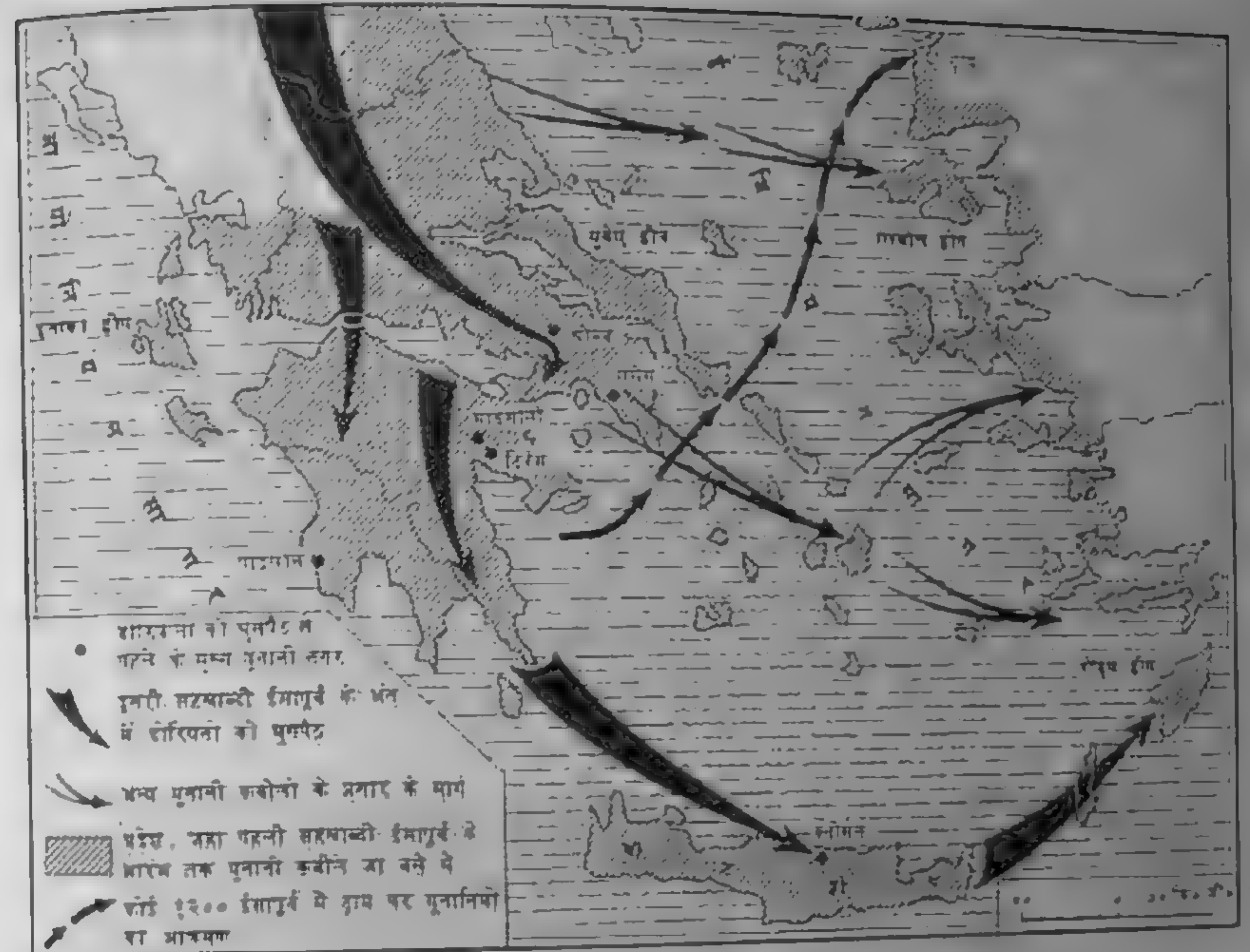
४. बालकन प्रायद्वीप के उत्तरी भाग में **डोरियन** नामक लड़ाकू, बर्बर यूनानी कबीले रहते थे। उनकी संस्कृति माइसीनी की संस्कृति से काफी पिछड़ी हुई थी। दूसरी सहस्राब्दी ईसापूर्व के डोरियन कबीलों ने अपने सरदारों के नेतृत्व में मध्य और दक्षिणी यूनान में घुसकर माइसीनी तथा दूसरे नगरों को लूट लिया और तहस-नहस कर डाला। स्थानीय आबादी के एक भाग ने डोरियनों की अधीनता स्वीकार कर ली और एक भाग बालकन प्रायद्वीप छोड़कर ईजियन सागर के द्वीपों तथा पूर्वी तट पर जा बसा। (पृष्ठ १२३ पर दिये हुए मानचित्र में यूनानी कबीलों के महाप्रव्रजन की दिशाएं दिखायी गयी हैं।)

डोरियनों के आक्रमण का एक परिणाम यूनान की संस्कृति की अवनति होना था। इसके बाद कई शताब्दियों तक यहां पत्थर की लगभग कोई इमारत नहीं बनायी गयी, शिल्प की वस्तुएं भोंडी बनने लगीं और लेखनकला भुला दी गयी।

? १. § २५ में जिन बातों की चर्चा की गयी है, उनके लिए शीर्षक बतायें (पाठ में उन्हें केवल अंकों द्वारा इंगित किया गया है)। २. मानचित्र ४ पर यूनान और उसके प्राकृतिक विभाजन दिखायें और बतायें कि यूनान के एक भाग से दूसरे भाग में स्थल से कैसे जाते थे। ३. यूनान और मिस्र की प्रकृति में क्या अंतर है? प्राचीन काल में यूनान की प्रकृति किन धंधों के विकास में और किन कारणों से सहायक हुई? ४. दूसरी सहस्राब्दी ईसापूर्व के अंत में यूनान की संस्कृति की अवनति के क्या कारण थे? इस अवनति का पता किन बातों से चलता है? ५. मानचित्र ४ और ५ पर वे प्रदेश बतायें, जहां यूनानवासी पहली सहस्राब्दी ईसापूर्व के आरंभ तक जा बसे थे।

§ २६. प्राचीन यूनान की पौराणिक कथाएं

(मानचित्र ४ और ५)

याद करें कि पौराणिक कथा (पुराणकथा, मिथक) किसे कहते हैं (§ १३, अनुच्छेद १)? प्राचीन पूर्वी देशों की किन पौराणिक कथाओं से आप परिचित हैं?

१. यूनान के इतिहास के लिए पौराणिक कथाओं का महत्त्व। यूनान के इतिहास के बारे में जानने का एक स्रोत यूनानियों द्वारा रचित पौराणिक कथाएं हैं। यूनानियों ने उन्हें पीढ़ी-दर-पीढ़ी मौखिक रूप से सुनाकर सुरक्षित रखा। बाद में उन्हें लिखित रूप दे दिया गया। उनके बहुत से नायक और उनमें वर्णित बहुत सी घटनाएं काल्पनिक हैं। किंतु उनसे हमें प्राचीन यूनानियों के काम-धंधों, औजारों, रीति-रिवाजों और इस बारे में बहुत सी जानकारियां मिल

जाती है कि वे किन देशों की यात्राएं किया करते थे। पौराणिक कथाओं से हमें यह भी मालूम होता है कि यूनानी किन देवी-देवताओं में विश्वास करते थे।

ऐतिहासिक स्रोत-सामग्री के तौर पर पौराणिक कथाओं का महत्व इसलिए भी बहुत है कि डोरियनों के आगमन के बाद यूनान में कई सदियों तक लेखन अप्रचलित रहा।

२. हरक्युलिस की कथाएं। यूनानी शक्तिशाली वीर **हरक्युलिस** के कारनामों की कथाएं बहुत पसंद करते थे।

हरक्युलिस से संबंधित कुछ कथाएं इस प्रकार हैं:

एक बहुत बड़ा शेर जब-तब लोगों और उनके मवेशियों पर हमला करता रहता था। उसकी खाल इतनी मजबूत थी कि कांसे की नोकवाले तीर भी उसे भेद नहीं पाते थे। हरक्युलिस ने बबूल का पेड़ तोड़कर एक गदा बनायी। वह इतनी भारी थी कि बीस आदमी मिलकर भी उसे बड़ी मुश्किल से ही उठा पाते थे। गदा लेकर हरक्युलिस शेर की मांद में जा घुसा।

१. सिंह से जूझता हुआ **हरक्युलिस**। (प्राचीन यूनानी मूर्ति।) २. **देदालस और इकारस**। (प्राचीन यूनानी उभरा चित्र।) देदालस को शिल्पी की आम पोशाक में दिखाया गया है।
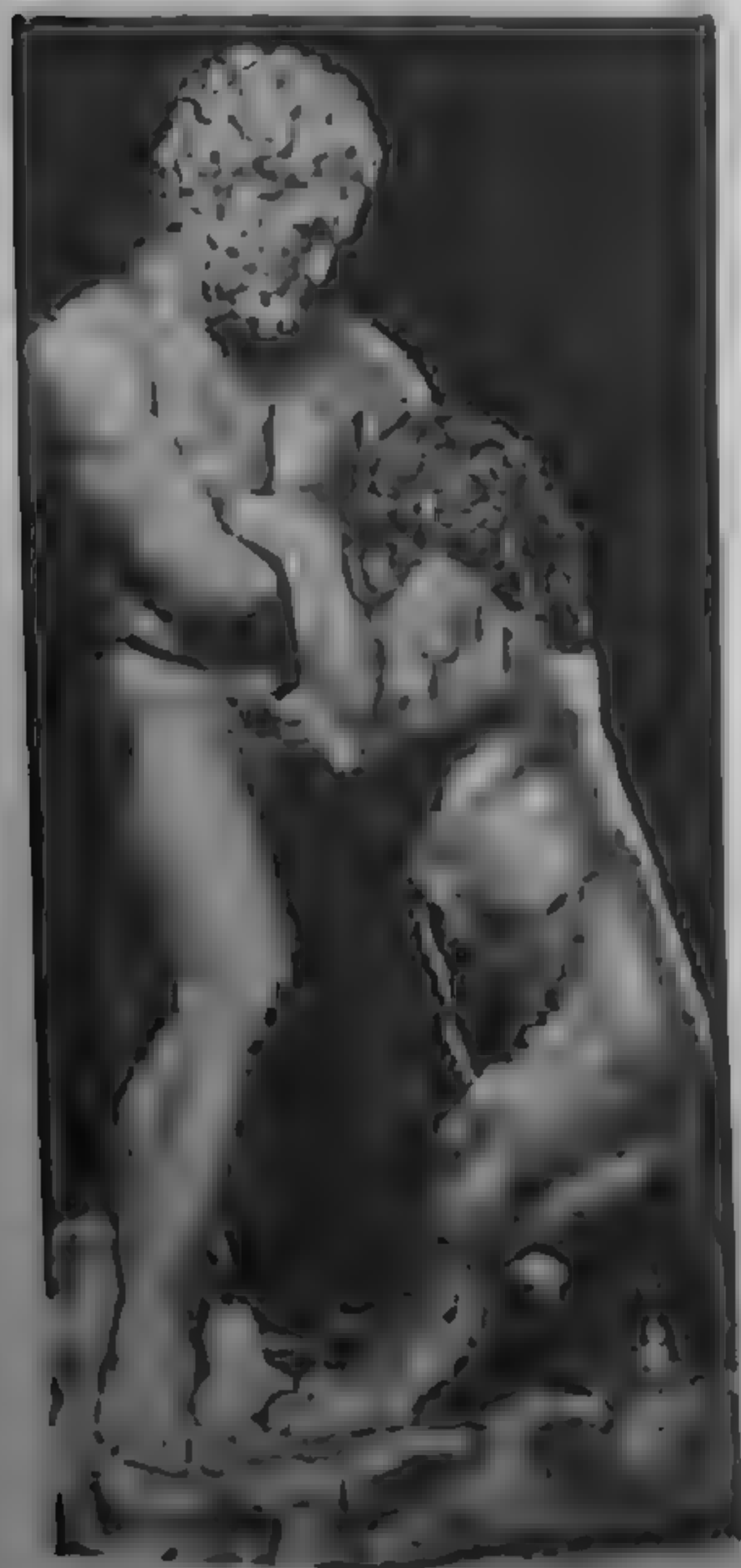
शेर ने उसपर हमला किया, मगर गदा का प्रहार करके वीर ने शेर को चित कर दिया और फिर दोनों हाथों से उसका गला घोंट डाला। तब से हरक्युलिस उस शेर की खाल को बख्तर और टोप की तरह पहनने लगा।

एक दलदल में नौ सिरवाला नाग (यूनानी में उसे "हाइड्रा" कहते थे) रहता था। वह लोगों के मवेशियों को खा जाता था। हरक्युलिस उसे मारने के लिए गया, मगर ज्योंही वह अपनी तलवार से नाग का एक सिर काटता, उसकी जगह पर दो नये सिर उग आते। तब हरक्युलिस ने अपने साथ आये नौजवान से कहा कि नाग के कटे हुए सिरों को आग से दागता जाये। नये सिर उगना बंद हो गये और हरक्युलिस ने नाग को मार डाला।

राजा **ऑजियस** के पास पांच हजार बैल थे। गोशाला को कोई साफ न करता था, इसलिए वह सारी गोबर से भर गयी। हरक्युलिस ने कहा कि वह एक ही दिन में सारा गोबर हटा देगा। राजा जब अपने मेहमानों के साथ दावत उड़ा रहा था, हरक्युलिस ने पास से बहनेवाली दो नदियों पर बांध बना दिया। जल्दी ही नदियां ऊपर तक भर गयीं और फिर उनसे पानी की जो तेज धारा छूटी, तो अपने साथ सारा गोबर भी बहा ले गयी।

एक बार हरक्युलिस सोने के सेब की खोज में निकला। वह यूनान से बहुत दूर पश्चिम में महासागर के तट पर एक बाग में उगता था। लेकिन वहां, यूनानियों के विश्वास के अनुसार आकाश सीधे पृथ्वी तक झुक आया था और केवल वीर **अटलांटिस** ही अपनी पीठ पर उसे थामकर नीचे पृथ्वी पर गिरने से रोके हुए था। (अटलांटिक महासागर का नाम उस पौराणिक वीर के नाम से ही निकला है।) जब तक अटलांटिस सेब तोड़ता, हरक्युलिस ने आकाश को अपनी पीठ पर थाम लिया। आकाश इतना भारी था कि हरक्युलिस घुटने तक पृथ्वी में धंस गया, हड्डियां चरचराने लगीं और बदन से पसीने की नदी बह चली।

हरक्युलिस के कारनामों की और भी बहुत कथाएं हैं। **यूनानी अथक परिश्रमी और वीर के रूप में हरक्युलिस का बड़ा सम्मान करते थे।** डोरियन उसे अपना पूर्वज मानते थे और इसका उन्हें अभिमान था।

३. आरगोनाटों की कथाएं। काकेशिया में काले सागर के तट पर एक वन में सुनहरी भेड़ की खाल लटकी हुई थी। उसका मालिक एक राजा था, जो सारे सागरतट का भी स्वामी था। एक भयंकर अजदहा चौबीसों घंटे उसकी रखवाली करता रहता था।

सारे यूनान से शूरवीर और साहसी नौजवान जमा हुए, जो इस सुनहरी खाल को प्राप्त करने के लिए कैसी भी खतरनाक और लंबी सागर यात्रा पर निकलने को तैयार थे। उन्होंने **जैसन** नामक एक संभ्रांत युवक को अपना नेता चुना। कुशल शिल्पी आरगस ने उनके लिए एक पालदार और डांडों से चलनेवाला लकड़ी का पोत तैयार किया। शिल्पी के सम्मान में पोत को 'आरगो' का नाम दिया गया और उसके नाविकों को **आरगोनाट** कहा जाने लगा।

आरगोनाटों की राह लंबी और अज्ञात सागरों से गुजरती थी। उनके रास्ते में बहुत बार बहती चट्टानें आयीं, जो कभी अलग-अलग दिशाओं में बिखर जाती थीं, तो कभी पास आकर भयंकर गर्जना के साथ आपस में टकराती थीं। 'आरगो' बड़ी मुश्किल से उनके बीच से गुजर सका। चट्टानों की टक्कर से उसकी पतवार के पिछले तख्ते को ही नुकसान पहुंचा था।

अनेकानेक कठिनाइयों और बाधाओं को पार कर आरगोनाट काकेशिया पहुंचे। राजा उन्हें सुनहरी खाल देने को तैयार तो हो गया, मगर उसने पहले जेसन के सामने कुछ शर्तें रखीं। राजा को विश्वास था कि शर्तें पूरी न हो पायेंगी और जेसन मारा जायेगा।

राजा की लड़की **मिडीया** ने जेसन की मदद करने का निर्णय किया। उसने एक जादुई मरहम दिया, जिसे शरीर पर मलने से जेसन में अपूर्व शक्ति आ गयी। उसकी टांगें कांसे के खम्भों जैसी कठोर और हाथ गंडासों जैसे मजबूत बन गये। राजा के नौकरों ने आग उगलनेवाले दो विकराल बैल छोड़े, जो जेसन को देखते ही फुफकारते हुए उसपर झपट पड़े। मगर जेसन का बाल बांका न हुआ। राजा के आदेश पर उसने उन्हें पकड़कर हल में जोत दिया और खेत की जुताई तथा उसमें अजदहे के दांतों की बुवाई पूरी कर दिखायी।

इस बुवाई से खेत में पहले तो भालों और शिरस्त्राणों की नोकें प्रकट हुईं, फिर कांसे के शिरस्त्राण पहने योद्धाओं की एक पूरी की पूरी फ़ौज ही उग आयी। भयंकर गर्जन करते हुए वह जेसन को मारने के लिए लपकी। जेसन ने उनपर पत्थर फेंके, जिससे खुद उनके बीच आपस में ही लड़ाई शुरू हो गयी। इससे फ़ायदा उठाकर जेसन ने अपनी तलवार से सभी को मार डाला।

हालांकि जेसन ने सभी शर्तें पूरी कर दी थीं, पर राजा ने सुनहरी खाल उसे फिर भी नहीं दी। मिडीया ने एक बार फिर जेसन की मदद की। उसने जादू करके अजदहे को, जो सुनहरी खाल की रखवाली कर रहा था, सुला दिया। सुनहरी खाल लेकर आरगोनाट अपने देश को रवाना हो गये। राजा ने अपनी फ़ौज के साथ उनका पीछा किया। मगर आरगोनाट बच निकले और यूनान वापस लौट आये।

देदालस और इकारस की कथा

इस कथा के ज़रिये यूनानियों ने अपने किन स्वप्नों को व्यक्त किया है?

क्रीट द्वीप के राजा के महल में देदालस नाम का एक शिल्पी रहता था, जो कुशल वास्तुकार, मूर्तिकार और बहुत से उपयोगी उपकरणों का आविष्कारक था। राजा उसे द्वीप से कहीं नहीं जाने देता था। तब देदालस ने अपने लिए और अपने बेटे इकारस के लिए पक्षियों के परों और मोम से पंख बनाये। पंखों की मदद से उड़कर दोनों क्रीट छोड़ सकते थे। देदालस ने बेटे को चेतावनी दी कि वह सूर्य के नज़दीक पहुंचने की कोशिश न करे। इकारस ने पहले तो पिता की बात मानी, पर फिर आकाश में बहुत ऊंचे उड़ान भरने लगा। सूर्य की गरम किरणों से मोम पिघल गया और इकारस नीचे समुद्र में गिरकर डूब गया। देदालस उड़ता हुआ सिसिली द्वीप पर जा पहुंचा।

? १. हरक्युलिस और आरगोनाटों की कथाओं में यूनानियों के किन धंधों का ज़िक्र आया है? २. पौराणिक कथाएं यूनानी समाज में असमानता की उत्पत्ति पर क्या प्रकाश डालती हैं? ३. पौराणिक कथाओं के अनुसार यूनानी लोग आदमी के किन गुणों की क़द्र करते थे? इस कथा में क्या नये गुण दर्शाये? ४. प्राचीन यूनानियों की नज़र में आकाश कैसा था? ऐसी मान्यताएं और कहां पायी जाती थीं? ५. हरक्युलिस के कारनामों की कथाओं के लिए उपयुक्त शीर्षक दें।
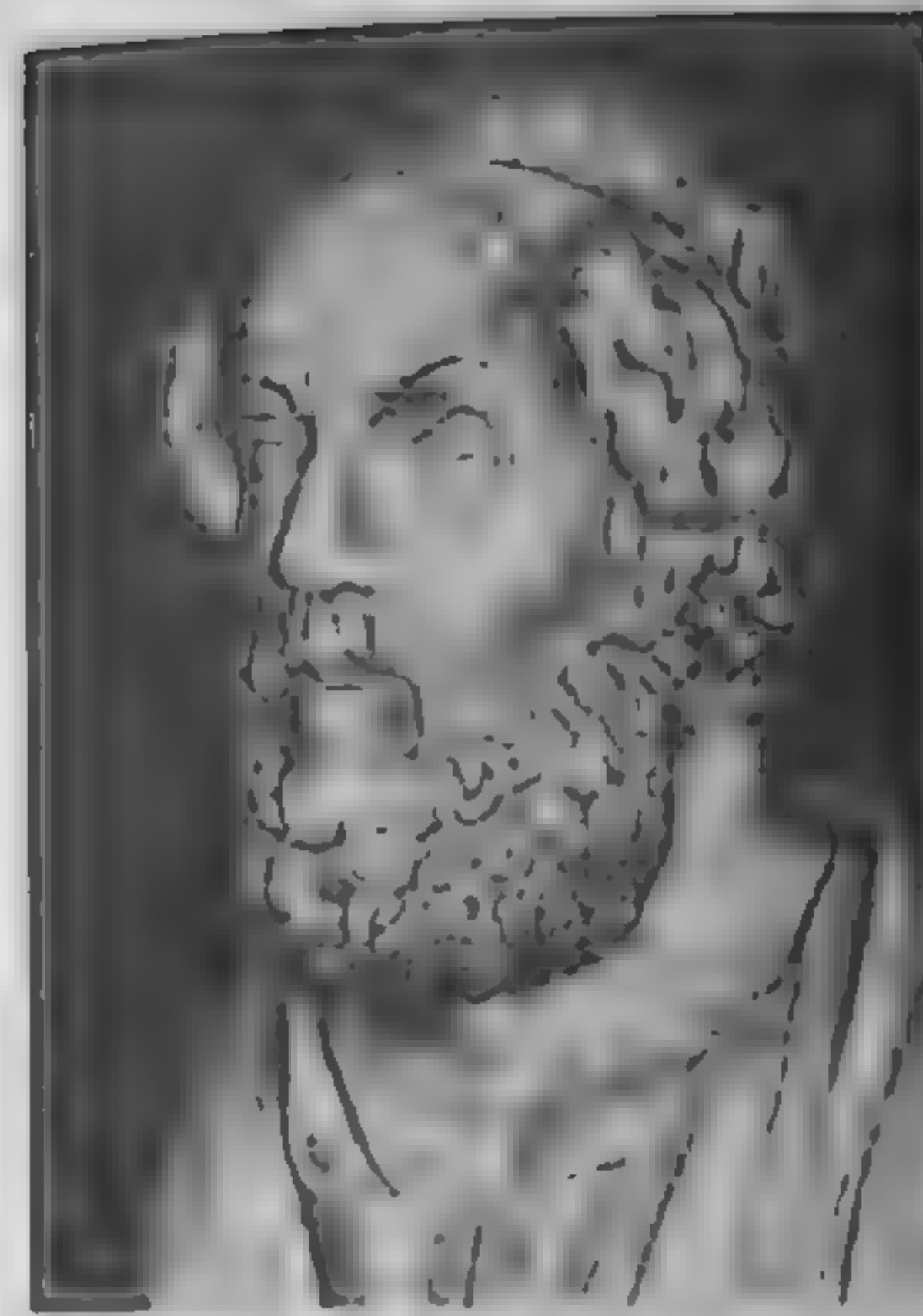
१. होमर की एक प्राचीन यूनानी आवक्ष मूर्ति। सात यूनानी नगर होमर की जन्मस्थली होने का दावा करते थे। २. खुदाई में प्राप्त ट्राय नगर की दीवारें।

§२७. होमर के महाकाव्य 'इलियड' और 'ओडिसी'

(मानचित्र ४ और पृष्ठ १२३ पर दिया मानचित्र)

याद करें कि संभ्रांत लोग किन्हें कहते थे (§५, अनुच्छेद ४)।

१. महाकाव्यों का मूल। प्राचीन यूनानी चारण अपने वीरनायकों के पराक्रम और साहसिक कृत्यों के बारे में गीत रचकर तारवाले बाजों के साथ उन्हें गाया करते थे। ट्राय नगर के साथ यूनानियों के लंबे संघर्ष के बारे में इस तरह के बहुत सारे गीत रचे गये थे।

ट्राय, जिसे प्राचीन यूनानी में **इलियोस** या **इलियोन** और लैटिन में **इलियम** भी कहते थे, एशियाई कोचक के समुद्रतट पर बसा नगर था। अपने सेनानायकों के नेतृत्व में बहुत से यूनानी कबीले उसपर हमला करने निकल पड़े। नगर एक दुर्गम जगह – ऊंची पहाड़ी – पर था और चारों ओर से पत्थरों की दीवार से घिरा हुआ था। यूनानियों ने अपने जहाज़ों को पोत-तट पर खींचकर छावनी डाल ली और दस वर्ष तक ट्राय को घेरे रहे।

ट्राय अभियान से संबंधित गीतों के आधार पर ही **'इलियड'** और **'ओडिसी'** महाकाव्यों की रचना हुई। अनुश्रुतियों के अनुसार इन गीतों का संकलन और परिमार्जन होमर नामक

एक अंधे कवि ने किया था। 'इलियड' और 'ओडिसी' को लिखित रूप छठी शताब्दी ईसापूर्व में मिला।

२. 'इलियड' की कथा। 'इलियड' का नाम इलियोन के नाम से निकला है। उसमें ट्राय की घेराबंदी के दसवें वर्ष की घटनाओं का वर्णन है।

ट्राय को जीतने में लंबे अरसे तक सफलता न मिलने से यूनानियों का मनोबल टूट चुका था। योद्धाओं का हौसला बढ़ाने के लिए सेनानायकों ने उनकी एक सभा बुलायी। सभी योद्धा छावनी के बाहर मैदान में एकत्र हो गये। सभा में एक योद्धा **टेर्सीटीज** ने सेनानायकों और अभिजात लोगों पर यह आरोप लगाते हुए कि वे लूट का सारा माल खुद ही हड़प लेते हैं, दूसरे सभी योद्धाओं का स्वदेश लौट चलने के लिए आह्वान किया। किंतु एक सेनानायक **ओडिसियस** ने टेर्सीटीज को मार-पीटकर चुप करा दिया। दूसरे योद्धाओं को बड़ी मुश्किल से घेराबंदी जारी रखने के लिए तैयार कर लिया गया।

यूनानियों और ट्रायवासियों के बीच लड़ाई फिर छिड़ गयी। यूनानी अपने कबीलों और गोत्रों के अनुसार दस्ते बनाकर आक्रमण करते थे। सामान्य सैनिक पैदल ही लड़ते थे और जिरह-बख्तर पहने तथा भालों व तलवारों से लैस होते थे। सेनानायक घोड़ेजुते रथों पर सवार होकर लड़ते थे। उनके पास भालों के अलावा कांसे के खड्ग होते थे। शरीर तांबे के जिरह-बख्तर से रक्षित होते थे।

यूनानियों में सर्वश्रेष्ठ योद्धा शक्तिशाली और फुर्तीले **एकीलीज** को माना जाता था, जो एक कबीले का प्रमुख भी था। ट्रायवासियों में सबसे शूरवीर **हेक्टर** था। 'इलियड' में इन दो वीरों की लड़ाई का विस्तार से वर्णन किया गया है (देखें परिशिष्ट)।

'इलियड' में कहा गया है कि यूनानियों और ट्रायवासियों के युद्ध में देवता भी तटस्थ नहीं रह सके थे। कुछ देवता यूनानियों की मदद कर रहे थे, तो कुछ ट्रायवालों की। एकीलीज का शिरस्त्राण और कवच धातुशिल्पों के देवता **हेफ़ेस्टोस** ने ही तैयार किया था।

३. ट्राय का पतन। ट्राय के युद्ध का अंत कैसे हुआ, इसका पता हमें अन्य आख्यानों से चलता है।

हेक्टर के साथ लड़ाई के शीघ्र बाद एकीलीज की मृत्यु हो गयी। वह एड़ी में लगे एक विषैले तीर से मरा था। यूनानी पौराणिक कथाओं के अनुसार उसकी मां ने, जो एक देवी थी, बचपन में उसे भूगर्भीय नदी स्तिक्स में नहलाया था, जिसकी वजह से एड़ी को छोड़कर, जिसमें मां उसे पकड़े हुई थी, उसका शेष सारा शरीर अभेद्य बन गया था। यूरोपीय भाषाओं में प्रचलित "एकीलीज की एड़ी" मुहावरा, जिसका अर्थ "मर्मस्थल" है, इससे ही निकला है।

यूनानी जब ट्राय पर लड़ाई से कब्जा न कर सके, तो उन्होंने कपट का सहारा लिया। चतुर ओडिसियस की सलाह पर उन्होंने काठ का एक विशाल घोड़ा बनाया। कुछ योद्धा उसके भीतर छिप गये और बाकी वापस यूनान लौटने का दिखावा करते हुए पास के एक द्वीप पर चले गये। यूनानियों की कपट योजना से अनभिज्ञ ट्रायवासी नगर की दीवारें तोड़कर घोड़े को अंदर ले आये। रात में जब सारा नगर सोया हुआ था, यूनानी योद्धाओं ने घोड़े से बाहर निकलकर नगरवासियों पर हमला कर दिया। उधर द्वीप पर छिपी यूनानी सेना भी लौट आयी
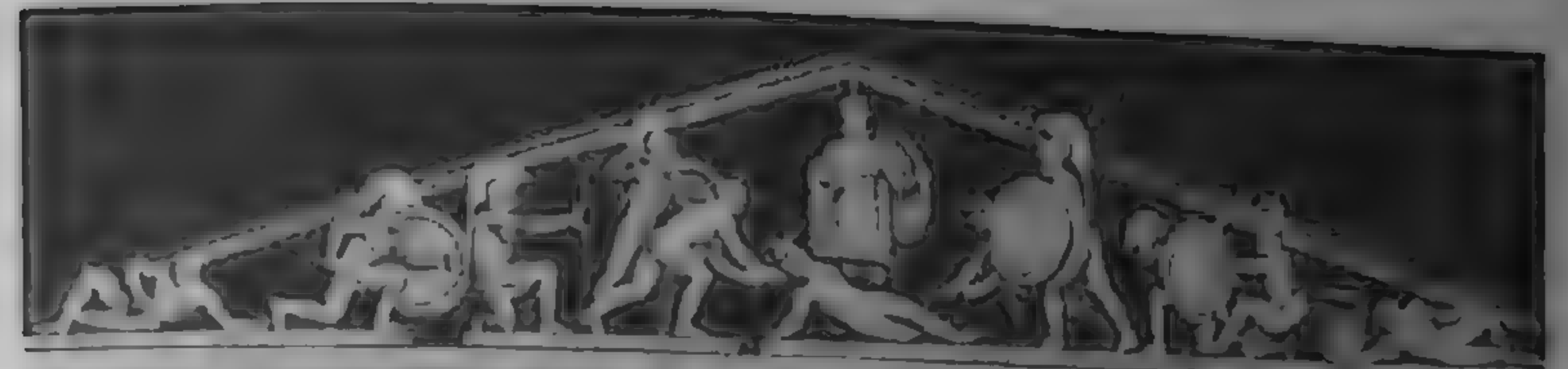
१. ट्रायवासियों द्वारा मारे गये **पेट्रोक्लीज** के शव के लिए लड़ाई। (पांचवीं शताब्दी ईसापूर्व की मूर्ति।) मध्य में यूनानियों की सहायिका **एथीना** खड़ी है। उसके पैरों के पास पेट्रोक्लीज का शव पड़ा है। २. एक प्राचीन यूनानी कलश और उसपर निर्मित **ओडिसियस** और सीरीनों का चित्र। यूनानी पौराणिक गाथाओं के अनुसार निर्जन द्वीप पर रहनेवाली अर्धपक्षी-अर्धनारी सीरीनें अपने गायन से नाविकों को मोहित करके मृत्यु का ग्रास बना देती थीं। उस द्वीप के निकट से गुजरते समय ओडिसियस ने अपने साथियों को मोम से कानों को बंद कर लेने और स्वयं उसे मस्तूल से बांध देने का आदेश दिया था। ओडिसियस अकेला आदमी था, जो सीरीनों का गायन सुनकर भी जीवित बचा रह सका।

और नगर में घुस गयी। ट्राय के सभी पुरुषों को मार डाला गया और स्त्रियों तथा बच्चों को बंदी बना लिया गया। नगर को लूटकर उसमें आग लगा दी गयी। फिर बंदियों और लूट के माल के साथ यूनानी स्वदेश लौट गये। तब से "ट्राय का घोड़ा" मुहावरा ऐसे उपहार के लिए प्रयुक्त होने लगा, जिसे पानेवाला धोखे का शिकार बन सकता है।

४. 'ओडिसी' की कथा। 'ओडिसी' में ओडिसियस के ट्राय से स्वदेश – यूनान के पश्चिमी तट पर स्थित **इथाका** नामक छोटे से द्वीप – लौटते समय के साहसिक कारनामों का वर्णन है।

ट्राय के जलते खंडहरों से धूआं उठना अभी रुका नहीं था कि इथाका के योद्धा बारह पोतों में बैठकर स्वदेश रवाना हो गये। रास्ते में ठंडी उत्तरी हवा के देवता ने भयंकर आंधी चला दी, जिससे यूनानी भटक गये। दो बार ओडिसियस और उसके साथी ऐसे द्वीपों पर जा पहुंचे, जहां दैत्यों का वास था। दैत्यों ने बड़ी-बड़ी चट्टानें गिराकर ग्यारह पोतों को नष्ट कर डाला और उनमें सवार लोगों को मार दिया। केवल ओडिसियस का पोत ही उनसे बचकर भाग निकला। फिर किसी कारणवश वर्षा और बिजली का देवता **जीयस** ओडिसियस और उसके साथियों पर क्रुद्ध हो गया। उसने बिजली गिराकर पोत को नष्ट कर दिया। मस्तूल के एक टुकड़े के सहारे तैरते हुए अकेला ओडिसियस ही बचा रह सका। लहरों ने उसे किनारे पर ला पटका।

दस वर्ष तक भटकने के बाद ओडिसियस जब इथाका पहुंचा तो वहां उसकी मुलाकात एक दास से हुई जो सूअर चरा रहा था। यह दास एक स्वतंत्र परिवार में पैदा हुआ था। वह अभी बच्चा ही था कि फ़िनीशियनों ने उसे चुराकर इथाका में किसी के हाथ बेच दिया था। उससे ओडिसियस को मालूम हुआ कि उसकी अनुपस्थिति में उसके घर पर दूसरे सम्भ्रांत लोगों ने अधिकार कर लिया है। इसलिए वह गरीब के भेस में घर पहुंचा। बिन-बुलाये मेहमानों को मार-भगाकर वह फिर इथाका पर राज करने लगा।

५. यूनान के इतिहास के अध्ययन के लिए 'इलियड' और 'ओडिसी' का महत्त्व। होमर के महाकाव्यों में पौराणिक और लोक कथाएं इतनी हैं कि विद्वान बहुत समय तक उनमें वर्णित सभी घटनाओं को कल्पना की उपज ही मानते रहे थे। बहुतों को तो ट्राय के अस्तित्व में भी विश्वास न था।

किंतु पुरातत्त्ववेत्ताओं ने एशियाई कोचक में सागर तट के निकट हिसारलिक नामक एक टीले की खुदाई की, तो वहां विभिन्न कालों की दस से भी अधिक बस्तियां मिलीं। हर बस्ती अपने पीछे मकानों के खंडहर और फेंकी हुई या छिपायी हुई चीजें छोड़ गयी थी। वहीं ट्राय के खंडहर मिले, जिनपर आग से जलने के निशान साफ़-साफ़ दिखायी दे रहे थे।

खुदाइयों ने दिखाया कि ट्राय नगर वास्तव में था और उसे विनष्ट किया गया था। इतिहासकारों ने ट्राय पर यूनानियों के हमले की तिथि कोई १२०० ईसापूर्व निर्धारित की है। महाकाव्यों में सत्य को मनगढ़ंतों से अलग करके हम जान सकते हैं कि प्राचीन यूनानी क्या धंधे करते थे और उनके काम के औज़ार, हथियार, रीति-रिवाज और घर कैसे थे। यूनान के इतिहास के अध्ययन के लिए होमर के महाकाव्यों का महत्त्व इतना अधिक है कि ग्यारहवीं-नौवीं शताब्दी ईसापूर्व के काल को **होमर काल** कहा जाता है।

होमर के महाकाव्य विश्व साहित्य की महानतम कृतियों में गिने जाते हैं। उन्हें उत्कृष्ट काव्य शैली में लिखा गया है। उनकी भाषा अत्यंत समृद्ध और अभिव्यक्तिपूर्ण है (इन महाकाव्यों के कुछ अंश १२७, २८ और २६ के परिशिष्टों में पढ़ें)।

'इलियड' से। एकीलीज़ और हेक्टर की लड़ाई

एथीना देवी ने, जो यूनानियों की मदद कर रही थी, हेक्टर के भाई का वेश बनाकर और मदद का आश्वासन देकर हेक्टर को एकीलीज़ से लड़ने के लिए राजी कर लिया। पहले एकीलीज़ ने हेक्टर पर भाले से वार किया, किंतु वह झुक गया और भाला ऊपर से निकल गया। तब हेक्टर ने अपने भाले से वार किया, मगर एकीलीज़ ने हेफ़ेस्टोस की दी हुई ढाल पर उसे झेल लिया। एथीना ने एकीलीज़ को दूसरा भाला थमा दिया। हेक्टर ने अपने भाई को आवाज़ लगायी कि उसे दूसरा भाला पकड़ाये। पर वहां भाई तो था नहीं। मजबूर होकर उसने अपना खड्ग निकाला और एकीलीज़ की ओर लपका:

"...खींच म्यान से खड्ग बहुत ही तेज़ धार का,
बड़ा और मज़बूत सबल जांघ के संग अचल जो लटक रहा था,

ऐसे लपका, ऐसे झपटा
ज्यों उकाब काले मेघों को चीर गगन से
किसी मेमने पर कोमल-से या कि भीरु खरहे पर झपटे,
इसी तरह से अपना पैना खड्ग हिलाता हेक्टर झपटा।
और दूसरी ओर एकीलीज़
अति प्रचण्ड, आवेग-वेग से ओत-प्रोत हो
तेज़ी से बढ़ता आता था,
सुन्दर, अद्भुत ढाल वक्ष पर पक्की उसके
शोभा देती,
चमचम करता शिरस्त्राण हिलता-डुलता था उसके सिर पर,
उसके ऊपर लहराते थे बाल सुनहरे,
हेफ़ेस्टोस ने कंघों से था
जिनको अच्छी तरह जमाया।"

एकीलीज़ ने भाले से वार करके हेक्टर को वहीं ढेर कर दिया और फिर उसका मृत शरीर रथ के पीछे बांधकर जय-जयकार करते हुए यूनानियों के शिविर में लौट आया।

'ओडिसी' से। साइक्लोपों के द्वीप पर यूनानी

यह कथा यूनानियों के धंधों पर क्या प्रकाश डालती है?

राह से भटके हुए ओडिसियस और उसके साथियों ने पाया कि वे एक ऐसे द्वीप पर आ पहुंचे हैं, जहां साइक्लोप, यानी माथे पर एक ही आंखवाले विशाल दैत्य रहते हैं। ओडिसियस और उसके कुछ साथी एक साइक्लोप की गुफा में घुस गये। गुफा में पनीर का ढेर लगा हुआ था। पास ही वहीं से भरे बहुत से बरतन भी रखे हुए थे। साइक्लोप भेड़-बकरियां पालते थे।

"किसी दैत्य-राक्षस-सा लम्बा
नर रहता था इसी गुफा में, वह एकाकी,
भेड़-बकरियां पाला करता
नहीं किसी से मतलब रखता,
मिलने-जुलने से कतराता,
गुस्से से हर दम भन्नाता,
उसके लिए नियम-क़ानून नहीं थे कोई
अपनी सूरत, अपने दैत्याकार बदन से भय उपजाता,
उसमें मानव जैसा कुछ भी नज़र न आता,
ऐसे लगता था वह मानो शृंग-शिखर हो
भूला-बिसरा
वन, जंगल से ढका-ढकाया,
औरों के दिल में जो दहशत
पैदा करता आगे बढ़ता।"

करते होते थे। (ट्राय की घेराबंदी के समय यूनानियों की खेलकूद प्रतियोगिताओं में एक मुख्य पुरस्कार लोहे का डला था।

लोहे के औज़ारों का प्रयोग फैला, तो खेतों की जुताई आसान हो गयी, बुवाई का क्षेत्रफल बढ़ गया और अधिक पैदावार हासिल की जाने लगी।

२. समुद्रयात्रा। ईजियन सागर समुद्रयात्राओं के लिए काफ़ी अनुकूल है। यूनानी होमर काल से ही समुद्र में मछलियां पकड़ने और समुद्रपार देशों की यात्राएं करने लग गये थे। (आप यूनानियों की किन यात्राओं के बारे में जानते हैं?) यूनानियों के लकड़ी के पोत बड़ी-बड़ी नौकाओं जैसे थे। उनसे यात्रा करना ईजियन सागर में भी ख़तरे से ख़ाली न था। इसलिए यूनानी जब पानी शांत होता था, तभी और दिन में ही समुद्र में निकलते थे। उनके पोत तट के साथ-साथ या एक बार में एक द्वीप से दूसरे द्वीप तक ही जाते थे और रात होते ही पोत को तट पर खींच लिया जाता था।

३. होमरकालीन यूनान में क़बीला और गोत्र। यूनान की लगभग हर घाटी में या हर द्वीप पर कोई एक ही क़बीला रहता था। क़बीला कई गोत्रों से मिलकर बना होता था और गोत्र परिवारों से मिलकर।

भूमि सारे गोत्र की संपत्ति थी। हर परिवार उसे दिये गये भूखंड पर ही खेती करता था। चरागाह सारे गोत्र का साझा होता था।

यदि किसी गोत्र का कोई आदमी मारा जाता था, तो सारे गोत्र के लोग मिलकर बदला लेते थे। युद्ध में भी गोत्र के सभी सदस्य एक दूसरे की मदद करते थे। (लड़ाई में योद्धा दस्ते कैसे बनाये जाते थे, उनका संचालन कौन करते थे? देखें § २७, अनुच्छेद २।) क़बीले के पुरुषों की सभा में क़बीले से संबंधित सभी मामलों को निपटाया जाता था।

समानता अब नहीं रह गयी थी। गोत्र के कुछ सदस्य अब ग़रीब हो गये थे और जीवन-निर्वाह के लिए या तो दूसरों के यहां काम करते थे या भीख मांगते थे। ओडिसियस जब ग़रीब के भेस में इथाका लौटा था, तो किसी को हैरानी नहीं हुई थी, क्योंकि तब तक यूनान में ग़रीबों की तादाद काफ़ी बढ़ चुकी थी। दूसरी ओर गोत्र के संभ्रांत सदस्य उत्तरोत्तर समृद्ध बनते जा रहे थे।

४. संभ्रांत लोगों के धंधे। संभ्रांत लोग नदी या नाले के पास बड़े-बड़े भूखंडों पर क़ब्ज़ा कर लेते थे। वे ख़ुद ही अपने खेतों में काम करते थे। मिसाल के लिए, ओडिसियस ख़ुद ही हल बनाता था, बढ़ई का काम करता था। (आप ऐसे और किस संभ्रांत यूनानी को जानते हैं, जो बैलों को जोतना और हल चलाना जानता था?) लेकिन खेत जोतने, वगैरह के लिए वे मज़दूर भी रखने लगे थे, जिन्हें काम के एवज़ में खाना और कपड़ा दिया जाता था।

लोहे के औज़ारों का उपयोग आरंभ हुआ, तो परायी ज़मीन पर क़ब्ज़ा करना बहुत लाभकर हो गया। मालिक उनपर कामगारों से काम करवाकर उससे कहीं ज़्यादा अनाज पा सकता था, जितना कि उसे कामगारों को देना पड़ता था। यह बकाया अनाज वह ख़ुद हड़प लेता था। संभ्रांत लोगों के पास गोत्र के अन्य सदस्यों के मुक़ाबले मवेशी भी कहीं ज़्यादा थे। धीरे-धीरे गोत्र के चरागाह भी उनके अधिकार में आ गये।

संभ्रांत यूनानियों के संपन्न बनने का एक साधन युद्ध भी थे। युद्ध में लूट का माल और बंदी उनके हाथ लगते थे। ('इलियड' में इस बारे में क्या कहा गया है? संभ्रांत यूनानी और किन तरीक़ों से दास हासिल करते थे?) दास संभ्रांत लोगों के यहां तरह-तरह के काम करते थे, जैसे कपड़ा बुनना, खेत जोतना, फ़सल काटना, मवेशी चराना, खाना पकाना, आदि।

मज़दूरों और दासों के श्रम की बदौलत संभ्रांतों के पास अपने तथा अपने परिवार के लिए प्रचुर आहार, कपड़ा, जूते, आदि ही नहीं हो जाते थे, बल्कि वे अपने फ़ालतू मवेशियों का तांबा, कांसा, बढ़िया कपड़ों, सोने के आभूषणों के साथ विनिमय भी करते थे। ये वस्तुएं बड़ी महंगी थीं। मिसाल के लिए, खाना पकाने की तांबे की तिपाई पाने के लिए १२ बैल देने पड़ते थे।

५. संभ्रांत लोगों की सत्ता। सेनानायकों और मुखियाओं को अपनी संपत्ति और क़बीले पर प्रभुत्व की रक्षा के लिए प्रायः बल-प्रयोग का सहारा लेना पड़ता था। (याद करें कि ट्राय के युद्ध के समय सेनानायक ने एक योद्धा को कैसे चुप कराया था।) सभाएं अब कभी-कभार ही बुलायी जाने लगीं। मिसाल के लिए, इथाका में २० वर्ष में वह एक ही बार बुलायी गयी थी। क़बीले के सभी कामकाज अब मुखियाओं की परिषद ही निपटाने लगी। परिषद का अध्यक्ष क़बीले का सेनानायक होता था।

सेनानायक और मुखियाओं का पद और संपत्ति मौरूसी बन गये। गोत्र के आम सदस्यों से अपने को उत्कृष्ट जताने के लिए संभ्रांत लोग दावा करने लगे कि वे देवताओं की संतान हैं। ('इलियड' में किस नायक को देवी का पुत्र बताया गया है?)

होमर काल में दासप्रथात्मक व्यवस्था शनैः शनैः आदिम सामुदायिक व्यवस्था की जगह लेने लग गयी थी।

ग्यारहवीं-नौवीं शताब्दी ईसापूर्व में यूनान में वर्गों की उत्पत्ति

दासस्वामी संभ्रांत लोग

गोत्र के सामान्य सदस्य किसान

दास
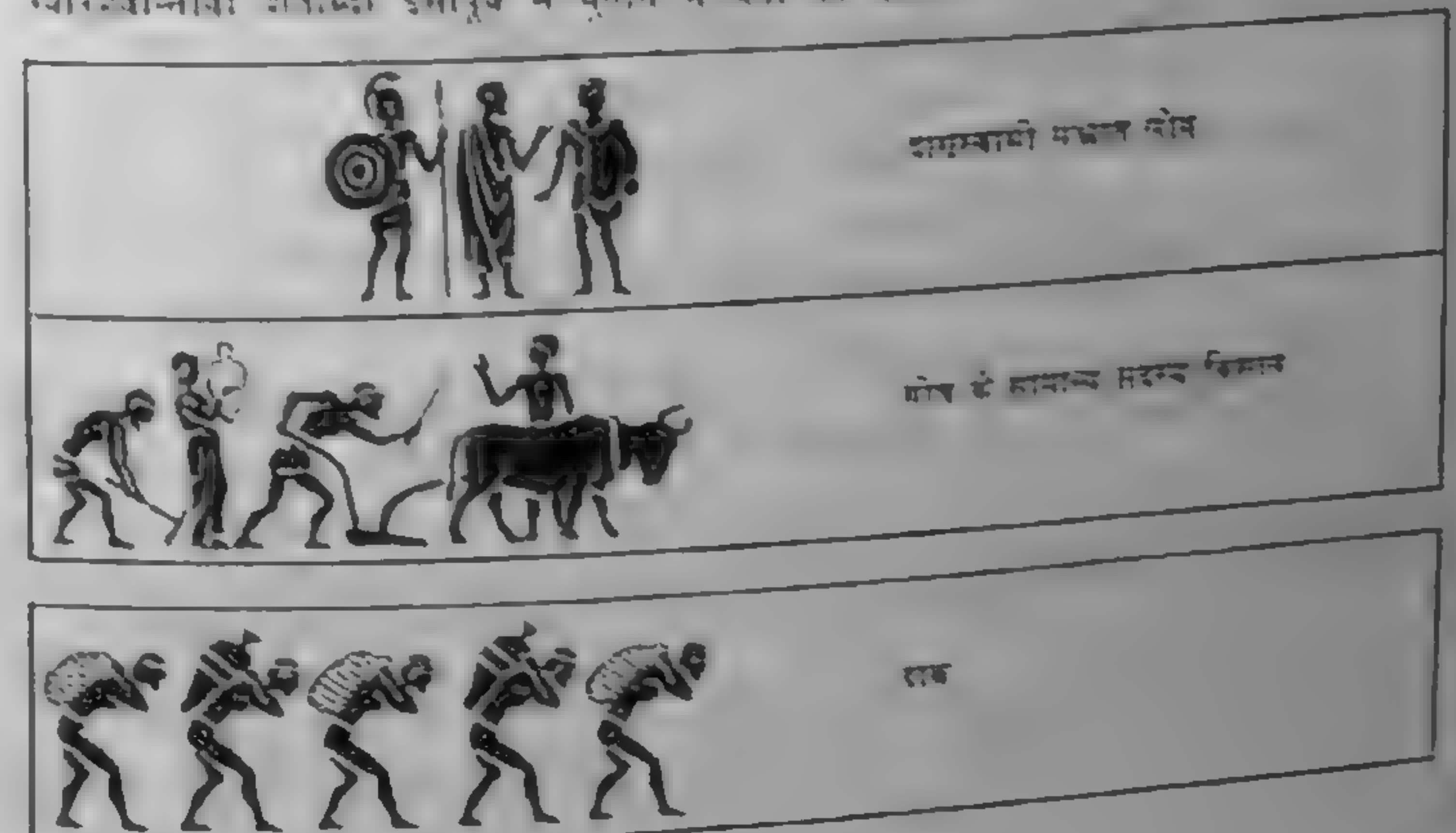
'इलियड' में एकीलीज की ढाल पर बने चित्रों का वर्णन

ढाल और प्रासाद का वर्णन मंतानायक की आर्थिक स्थिति पर क्या प्रकाश डालता है? संभ्रांत लोग अपनी संपत्ति का स्रोत किसे बताते थे?

कहीं कल्पना चित्रकार ने आगे राजा के खेतों की –
पकी हुई फ़सलों को काटें, हंसिये रोठनवार चलाये
निकट खड़े थे तीन व्यक्ति जो पूले उनके बांधे जायें,
उनके पीछे लड़के झटपट कटी-कटायी फ़सल उठायें
उनके बड़े-बड़े ढेरों को वे इन तीनों तक पहुंचायें,
इनके बीच जगह जो राजा, डंडा लेकर वहां खड़ा था
मुंह से कोई शब्द न कहता, किन्तु हृदय में हर्ष बड़ा था...
कुछ दूरी पर तरु-छाया में भोजन भृत्य पकाते थे
चरागाह में जाने को पशु बाहर आ रम्भाते थे।

'ओडिसी' में एक प्रासाद का वर्णन

बहुत बड़ा था महल, उसी में कर्मी दास पचास रहे,
तरह-तरह के काम करें...
कुछ हाथों से नाज सुनहरा पीसें, चक्की पाट चलायें,
उनमें से कुछ सूत कातते, कुछ बुन कपड़ा उसे बनायें,
बड़ा अहाता, उसके पीछे, चार हेक्टरों का उपवन,
चारों ओर बाड़ थी ऊंची, और फलों के पेड़ सघन...
उसी बाग़ में अंगूरों का एक बगीचा बना हुआ
जहां उगें सब्जी-तरकारी, खेत पास में सटा हुआ,
सारा साल वहां से हर दिन खूब सब्जियां आती थीं
उनकी कमी नहीं पड़ती थी, भोजन में रंग लाती थीं,
और निकट ही, बहुत पास में दो झरने भी बहते थे
टेढ़ी-मेढ़ी राह घूमकर, एक बाग में आता था,
उसकी प्यास बुझाता था,
ईश कृपा से बहुत मज़े में लोग यहां पर रहते थे।

? १. प्राचीन यूनानियों के धर्मों के बारे में आप क्या जानते हैं? २. पौराणिक कथाओं और महाकाव्यों का उपयोग करते हुए बतायें कि होमर काल में संभ्रांत लोग कैसे रहते थे। ३. होमर काल में यूनानी समाज किन वर्गों में बंट गया था? वर्गों की उत्पत्ति क्यों हुई? ४. निम्न तालिका को पूरा कीजिये।

होमर काल में आदिम सामुदायिक व्यवस्था की कौन सी बातें बची रहीं?	होमर काल में दासप्रथात्मक व्यवस्था के पैदा हो जाने का प्रमाण किन बातों से मिलता है?

§ २९. प्राचीन यूनानियों का धर्म

(मानचित्र ४)

याद करें कि प्रागैतिहासिक काल में धर्म का उदय कैसे हुआ था (§ ३, अनुच्छेद २ और ३), प्राचीन मिस्रवासी किन देवी-देवताओं की उपासना करते थे (§ ११)।

१. प्राकृतिक शक्तियों की उपासना। अन्य प्राचीन लोगों की भांति यूनानी भी प्राकृतिक परिघटनाओं को नहीं समझ पाते थे और उनसे डरते थे। उनका विश्वास था कि प्रकृति में देवी-देवताओं का वास है और वे ही उसका सञ्चालन-नियमन करते हैं। वे सोचते थे कि देवी-देवताओं की आकृति मनुष्यों जैसी है, किंतु वे अमर और सर्वशक्तिमान हैं।

यूनानियों की मान्यता थी कि "बादलों के जन्मदाता" **जीयस** की इच्छा से ही पृथ्वी पर वर्षा होती है या सूखा पड़ता है। जब वह लोगों और अन्य देवों से क्रुद्ध हो जाता है, तो अपने सुनहरे बाणों से प्रहार करता है, यानी बिजली गिराता है।

यूनानी "पृथ्वी को हिलानेवाले" समुद्र देव **पोसीडन** से भी जीयस जितना ही डरते थे। उनका कहना था कि पोसीडन अपने विशाल त्रिशूल से पृथ्वी को झकझोरता है, समुद्र में आंधी पैदा करता है और पोतों को डुबो देता है।

दिन इसलिए होता है कि सूर्यदेवता अपने हिमधवल अश्वों के स्वर्णरथ पर सवार होकर आकाश की यात्रा करता है।

वन देवों को यूनानी **सटीर** कहते थे और उनकी कल्पना लंबे बालों तथा बकरी जैसे पैरोंवाले आदमी के रूप में की जाती थी। जलस्रोतों की देवियां कुमारी-कन्याओं के रूप में चित्रित की जाती थीं और **निंफ़** – वधू – कहलाती थीं।

२. कृषि, शिल्पों और संस्कृति के संरक्षक देवता। यह माना जाता था कि कृषि तथा शिल्प की सभी शाखाओं – खेती, पशुपालन, शिकार, बुनाई, धातुकर्म, आदि – का अपना अपना संरक्षक देवता है।

शराब उत्पादन का देवता **डायोनिसस** था। उसने लोगों को अंगूर उगाना और शराब बनाना सिखाया था। वसंत में, यानी अंगूर के बागों में काम शुरू होने से पहले, और शिशिर में शराब तैयार होने पर उसके सम्मान में उत्सव आयोजित किये जाते थे।

जब यूनानियों ने धातु का इस्तेमाल सीख लिया, तो **हेफ़ेस्टोस** की कल्पना की गयी। वह धातुशिल्पियों का संरक्षक देवता था। वह भूमि के नीचे अपनी शिल्पशाला में काम करता था, जिसका धुआं और आग ऊपर ज्वालामुखियों के रूप में प्रकट होते थे। हेफ़ेस्टोस आम शिल्पियों जैसे कपड़े पहनता था और उसके हाथ व चेहरा कालिख से सने रहते थे।

व्यापार का विकास हुआ, तो उसका भी संरक्षक देवता प्रकट हो गया। उसका नाम **हर्मीज़** था। वह जीयस का दूत भी था और कभी इस नगर, तो कभी उस नगर

उड़ता रहता था। इसलिए हर्मीज़ को प्रायः सैंडलों पर पंखों से युक्त चित्रित किया जाता था।

कलाओं का अधिष्ठाता देवता युवा अपोलो था। उसकी संगिनियां **म्यूज़** नामक देवियां थीं, जो नृत्य, संगीत, काव्य और इतिहास की संरक्षिकाएं थीं।

३. धर्म पर सामाजिक असमानता की छाप। यूनानियों का विश्वास था कि ज़ीयस, अपोलो और अन्य प्रमुख देवता यूनान के सबसे ऊंचे पर्वत **ओलिंपस** पर रहते हैं। इसलिए उन्हें **ओलिंपी देवता** भी कहा जाता था।

यूनानी सोचते थे कि ओलिंपसवासी देवताओं का जीवन संभ्रांत लोगों जैसा है। वे महलों में रहते हैं, भव्य वस्त्र पहनते हैं और बढ़िया-बढ़िया व्यंजन खाते हैं। जैसे संभ्रांत लोग कबीलों पर शासन करते हैं, वैसे ही ज़ीयस के नेतृत्व में ओलिंपी देवता लोगों और प्रकृति का शासन व नियमन करते हैं। यूनानियों की दृष्टि में देवता वैसे ही निर्दय, सत्ता के भूखे और बदला लेनेवाले थे, जैसे कि बहुत से संभ्रांत लोग थे।

यूनानियों के अनुसार समाज व्यवस्था का निर्माण भी देवताओं ने ही किया था। उन्होंने ही कुछ लोगों को संपन्न और संभ्रांत बनाया है, कुछ को गरीब और कुछ को दास। जो देवताओं द्वारा निर्मित इस व्यवस्था का विरोध करता था, उसे उनके क्रोध और कठोर दंड का भागी बनना पड़ता था।

४. प्रोमेथियस की कथा। देवताओं ने लोगों से अग्नि छिपा दी थी। वे चाहते थे कि लोग

१. अपोलो की मूर्ति। (चौथी शताब्दी ईसापूर्व।) मूर्तिकार ने अपोलो के रूप में किस वर्ग के आदमी को चित्रित किया है?
२. एथीना की मूर्ति। (पांचवीं शताब्दी ईसापूर्व।) एथीना के दायें हाथ में विजय की देवी की लघु मूर्ति है और बायां हाथ एक बड़ी गोल ढाल पर टिका हुआ है।
३. यूनान के देवी-देवता। ज़ीयस, पोसीडन और हेडीज़ ने सारे विश्व को आपस में बांट लिया था: ज़ीयस आकाश का देवता था, पोसीडन सागर का और हेडीज़ पाताल का। हेडीज़ के पैरों के पास तिसिरवाला कुत्ता सेर्बेरस बैठा है। हेराक्लीज़ को विश्राम की मुद्रा में, सिंह-चर्म से ढकी गदा के सहारे खड़ा दिखाया गया है। § २८ के अंत में दिये गये दूसरे और तीसरे प्रश्नों के उत्तर में इन चित्रों से प्राप्त जानकारी भी इस्तेमाल करें।

प्रकृति के सामने असहाय बने रहें और मर जायें। किंतु दयालुहृदय और प्रोमेथियस ने ओलिंपस से अग्नि चुरा ली और लोगों को दे दी।

गुस्से में भयंकर ज़ीयस ने हेफ़ेस्टोस को आदेश दिया कि प्रोमेथियस को बेड़ियों से जकड़कर काकेशिया के एक पहाड़ से बांध दे। प्रतिदिन ज़ीयस एक चील भेजता था, जो प्रोमेथियस के जिगर को अपनी चोंच से क्षत-विक्षत कर देती थी। किंतु रात में जिगर फिर भला-चंगा हो जाता था। भयंकर यातनाओं के बावजूद स्वाभिमानी और साहसी प्रोमेथियस ने ज़ीयस के सामने घुटने न टेके। यूनानी दुष्ट देवताओं के अन्याय के विरुद्ध और लोगों के भले के लिए लड़नेवाले के रूप में प्रोमेथियस का बड़ा सम्मान करते थे।

अन्य देशों के लोगों की भांति यूनानियों का धर्म भी खौफनाक और समझ में न आनेवाली प्राकृतिक शक्तियों से डरने के परिणामस्वरूप पैदा हुआ था। ज्यों-ज्यों नये वर्गों और असमानता का आविर्भाव हुआ, धर्म पर उनकी छाप भी पड़ती गयी।

ओडिसियस की अपने अंतिम पोत के विनाश की कहानी

ओडिसियस अपने पोत के नष्ट होने का क्या कारण बताता है?

कर ऊंचा मस्तूल और फिर पाल श्वेत उसपर फैलाया
चढ़े पोत पर हम सब अपने, औ' सागर में उसे बढ़ाया,

ओलिंपिया में ज़ीयस के मंदिर का भीतरी दृश्य। (पुनर्कल्पित।) ज़ीयस सिंहासन पर बैठा है। उसके एक हाथ में सेनानायक का दंड है और दूसरे में विजय की देवी की लघु मूर्ति। मंदिर का निर्माण पांचवीं शताब्दी ईसापूर्व में हुआ था। मूर्ति का निर्माण सुप्रसिद्ध मूर्तिशिल्पी फ़ीडियस ने किया था। इस काष्ठनिर्मित मूर्ति पर हाथीदांत का आवरण था। प्राचीन काल में इस मूर्ति को सात चमत्कारों में गिना जाता था। ओलिंपिया के बारे में हम आगे बतायेंगे।

मेघ, तड़ित के स्वामी—ज़ीयस—ने तब भारी काला बादल
फैला दिया पोत के ऊपर, घिरा तमस में सब कुछ, जल, तल,
पवन-देव—ज़ेफ़ीर—इसी क्षण गुस्से में आ दौड़ा आया
वह पश्चिम से प्रबल बवंडर वह तूफ़ान ज़ोर का लाया,

पान पान, मस्तूल टूटकर गिरा पोत के पिछवाड़े में
और इसी क्षण वज्रघोष कर तड़ित-बाण फेंका ज़ीयस ने
बिंधा पोत वह डगमगा-डोला और ज़ोर से चक्कर खाये
उसके चारों ओर धुआंरे धूमिल बादल से लहराये,
एक साथ ही सारे साथी गिरे पोत से नीचे जल में
एक बार ही जल-विहगों सम, गये भंवर में, सागर-तल में।

इलियड' से। एकीलीज़ के मित्र पेट्रोक्लीज़ का दाहसंस्कार

सौ डग लम्बा, सौ डग चौड़ा, एक-चौखटा वे ले आये
और लिटाया मृत को उसपर बहुत दुखी मन में अकुलाये,
ढेरों भेड़ें चर्बीवाली, मुड़े-मुड़ाये सींगोंवाले
सांड बहुत-से ला अलाव के सम्मुख क़त्ल सभी कर डाले,
खाल उधेड़ी और बदन से चर्बी उनके गयी निकाली
एकीलीज़ ने चर्बी सारी, शव के सभी ओर मल डाली...
अश्व चार मोटी ग्रीवा के पकड़, आग में उन्हें धकेला
दो कुत्ते भी फेंके उसमें, गहरी आहें भर दुख झेला,
ट्रायवासियों के भी उसने बारह बेटे काट गिराये
वीरों को फेंका अलाव में, कौन इसे अच्छा बतलाये।

दिमीतर और पर्सीफ़ोनी की कथा

इस पौराणिक कथा में प्रकृति की किन परिघटनाओं की चर्चा की गयी है?

एक बार उर्वरता की देवी दिमीतर की पुत्री सुंदरी पर्सीफ़ोनी घास के मैदान में टहल रही थी कि सहसा पृथ्वी फट गयी और उसमें से पाताल लोक का देवता हेडीज़ प्रकट हुआ, जो काले घोड़ों के रथ पर सवार था। पर्सीफ़ोनी का अपहरण करके वह उसे अपने लोक में ले गया जहां मृतकों की आत्माएं वास करती थीं। दिमीतर अपनी बेटी की याद में उदास रहने लगी। फूल मुरझा गये, पेड़ों पर पत्ते सूख गये, जौ और अंगूर उगने बंद हो गये। लोग भूखों मरने लगे। तब ज़ीयस ने हेडीज़ से कहा कि हर साल पर्सीफ़ोनी को कुछ महीनों के लिए अपनी मां के पास जाने दे। वह धरा लोक पर आती, दिमीतर की ख़ुशी का ठिकाना न रहता और चारों ओर वसंत छा जाता। किंतु जब वह पाताल लोक वापस चली जाती, तो उसकी मां फिर दुखी रहने लगती और धरा पर पतझड़ का आगमन हो जाता।

? १. प्राकृतिक परिघटनाएं यूनानियों के काव्य में कैसे प्रतिबिंबित हुईं? तुलना करके बतायें कि प्राचीन यूनानियों, मिस्रियों, बेबीलोनियों और भारतीयों के धार्मिक विश्वासों में कौन-कौन सी प्राकृतिक परिघटनाएं प्रतिबिंबित हुई हैं। उनमें क्या समानताएं और क्या अंतर हैं? २. प्राचीन यूनानियों के धर्म [illegible] पर क्या प्रभाव पड़ा? [illegible] कैसे प्रतिबिंबित हुआ? ३. यूनानी समाज में असमानता की उत्पत्ति का धर्म पर क्या प्रभाव पड़ा? [illegible] अब तक पढ़ी हुई सामग्री के आधार पर बतायें कि प्राचीन काल में धार्मिक विश्वास किन बातों पर निर्भर [illegible]। ५. यूनान में धर्म संभ्रांत लोगों की सत्ता को मज़बूत कैसे बनाता था? प्राचीन विश्व में धर्म ने क्या भूमिका अदा की?

आठवीं-छठी शताब्दी ईसापूर्व में यूनान में दासप्रथात्मक व्यवस्था की स्थापना और नगर-राज्यों का निर्माण

§ ३०-३१. एथेंस के दासप्रथात्मक राज्य का उदय

(मानचित्र ४)

आठवीं-सातवीं शताब्दी ईसापूर्व का अभिजाततांत्रिक एथेंस

याद करें कि यूनान की प्राकृतिक परिस्थितियां किन धंधों के विकास में विशेष रूप से सहायक थीं (§ २५, अनुच्छेद १)।

१. होमर काल के अंत का एट्टिका। मध्य यूनान का वह दक्षिण-पूर्वी भाग, जो समुद्र में दूर तक चला गया है, **एट्टिका** कहलाता है। एट्टिका की अधिकांश आबादी मैदानी इलाकों में रहती थी, जहां खेती की जा सकती थी। पहाड़ी इलाक़ों में भेड़-बकरियां पाली जाती थीं।

एट्टिका का पश्चिमी भाग मैदानी है, जिसमें जगह-जगह पर खड़े, चट्टानी टीले भी पाये जाते हैं। दूसरी सहस्राब्दी ईसापूर्व में यहां **एथेंस** नगर का उदय हुआ। टीले पर सबसे ऊंची जगह पर **एक्रोपोलिस**, यानी पत्थर के मोटे प्राचीरवाला दुर्ग बना हुआ था। टीले के इर्दगिर्द एथेंसवासियों की बस्ती फैली हुई थी। शत्रुओं के हमले के समय सारी आबादी अभेद्य एक्रोपोलिस में छिप जाती थी।

एथेनी लोगों ने डोरियनों के हमलों को सफलतापूर्वक झेला था और अपनी स्वतंत्रता को बनाये रखा था। होमर काल में संभ्रांत एथेनियों ने सारे एट्टिका की आबादी पर अपना शासन क़ायम कर लिया। तब से एट्टिका के सभी निवासी उनके मुख्य नगर एथेंस के नाम से **एथेनी** कहलाये जाने लगे।

२. एट्टिका में कृषि और शिल्पों का विकास। एट्टिका के लोगों को अपना उगाया हुआ अनाज पूरा नहीं पड़ता था। उनके खेतों में जौ और गेहूं की पैदावार अच्छी नहीं होती थी। लेकिन घाटियों में जैतून और टीलों के ढलानों पर अंगूर खूब होता था। आठवीं-सातवीं शताब्दी ईसापूर्व में यहां **अंगूरी शराब** और **जैतून के तेल** के उत्पादन का तेजी से विकास हुआ।

शराब और तेल रखने व एक जगह से दूसरी जगह पहुंचाने के लिए यूनानी मिट्टी के बड़े-बड़े घड़े बनाते थे, जो **अंफ़ोरा** कहलाते थे। मिट्टी से ही घरों की छतों के लिए खपरैलें, पानी की नालियां, अनाज रखने के घड़े और दूसरे बरतन भी बनाये जाते थे। चित्रकार बरतनों को तरह-तरह के चित्रों से सजाते थे। एट्टिका में मृण्भांड शिल्प (कुम्हारी) का तेजी से

विकास होने लगा। दूसरे शिल्पी ऊन से वस्त्र बुनते थे, धातु से विभिन्न औज़ार व हथियार गढ़ते थे, सोने-चांदी के आभूषण बनाते थे। शिल्पियों के पास कभी-कभी दो-तीन दास भी होते थे।

दक्षिणी एट्टिका में चांदी की खानें थीं। सातवीं शताब्दी ईसापूर्व में एथेंस में चांदी के सिक्के ढाले जाने लगे, जिनका आगे चलकर सारे यूनान में प्रचलन हो गया।

३. व्यापार और सागरगमन का विकास। एथेंस नगर तेज़ी से बढ़ता गया। एक्रोपोलिस के उत्तर-पश्चिम में ऐसे पूरे के पूरे महल्ले पैदा हो गये थे, जिनमें तरह-तरह की शिल्पशालाएं थीं। नगर के मध्य में बाज़ार था, जिसे **एगोरा** कहते थे। मैदानों के निवासी शराब और जैतून का तेल, पहाड़ी लोग जानवर-मवेशी और कारीगर लोग अपनी बनायी हुई वस्तुएं यहां बेचने के लिए लाते थे।

एथेंस के समीप पोतों के खड़े होने लायक़ अनेक अच्छी खाड़ियां थीं। यहां पोतों पर कारीगरी की वस्तुएं, शराब और जैतून से भरे अंफ़ोरा, आदि लादे जाते थे, जिन्हें फिर यूनान के दूसरे भागों और विदेशों में ले जाकर बेच दिया जाता था। लौटते वक्त पोत अनाज, नमक, नमकीन मछली और एथेंस में बेचने के लिए लाये गये दासों से लदे होते थे।

४. किसानों की तबाही। एट्टिका में प्रायः सूखा पड़ता था और ऐसे वक्तों पर किसानों के पास बुवाई के लिए भी अनाज बाक़ी नहीं रह जाता था। जैतून और अंगूर की खेती शुरू करने के लिए बड़े साधनों की ज़रूरत थी, जबकि प्रतिलाभ पाने के लिए कई वर्ष — पौधों के फल देने लायक़ होने तक — ठहरना पड़ता था। फलस्वरूप किसानों को मजबूर होकर संभ्रांत लोगों से बहुत अधिक ब्याज पर क़र्ज लेना पड़ता था।

कोई संभ्रांत जब किसी किसान को क़र्ज देता था, तो उसके खेत में एक पत्थर रख देता था, जिसे **बंधक पत्थर** कहते थे और जिसपर क़र्ज देनेवाले का नाम और क़र्ज लौटाने की अवधि खुदे होते थे। यदि किसान नियत अवधि के भीतर क़र्ज नहीं चुकाता था, तो न केवल खेत से हाथ धो बैठता था, बल्कि प्रायः अपनी और अपने परिवार की स्वतंत्रता भी खो बैठता था। दूसरे शब्दों में, उसे दास बन जाना पड़ता था। मां-बाप को प्रायः अपने बच्चे बेचने पड़ते थे।

सातवीं शताब्दी ईसापूर्व के अंत तक एट्टिका में अधिकांश कृषियोग्य भूमि पर संभ्रांत लोगों का कब्ज़ा हो गया। बहुत से किसान तबाह होकर दास बन गये। ऐसा खतरा दूसरों के सिर पर भी मंडरा रहा था, क्योंकि दास के शरीर पर लगे दाग की तरह उनके खेतों में बंधक पत्थर खड़े थे।

५. एथेंस में अभिजातों का शासन। संभ्रांत लोगों की मनमानी और अत्याचारों से किसानों और दूसरे ग़ैर-संभ्रांत लोगों की रक्षा करनेवाला कोई नहीं था। एथेंस का शासन संभ्रांत मुखियाओं की परिषद और उसके द्वारा चुने हुए नौ प्रशासकों के हाथों में था। ये प्रशासक **आर्कोन** कहलाते थे। परिषद के सदस्य, प्रशासक और न्यायाधीश, सब संभ्रांत एथेनी ही होते थे।
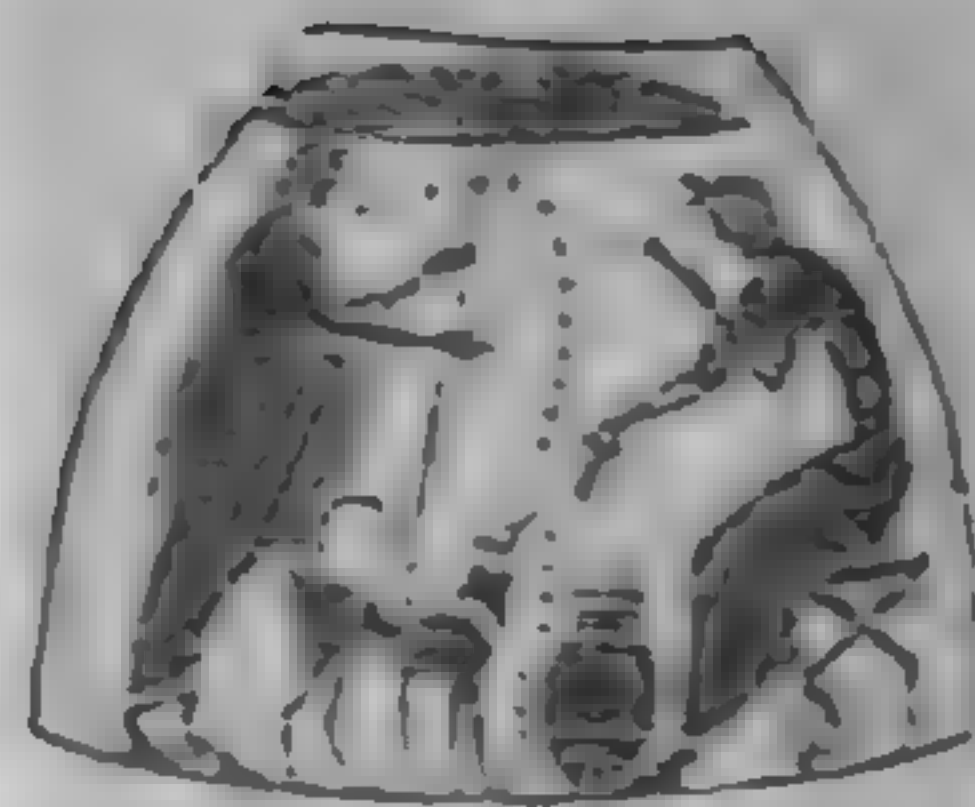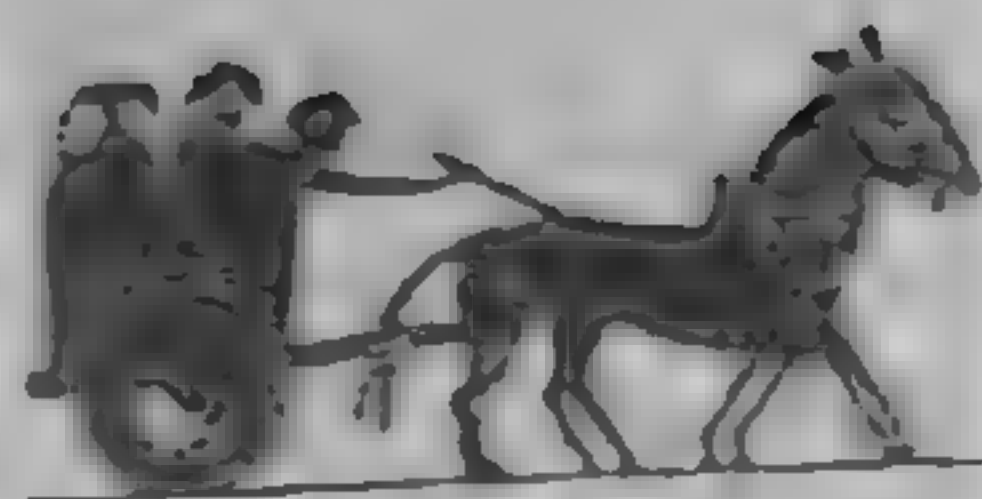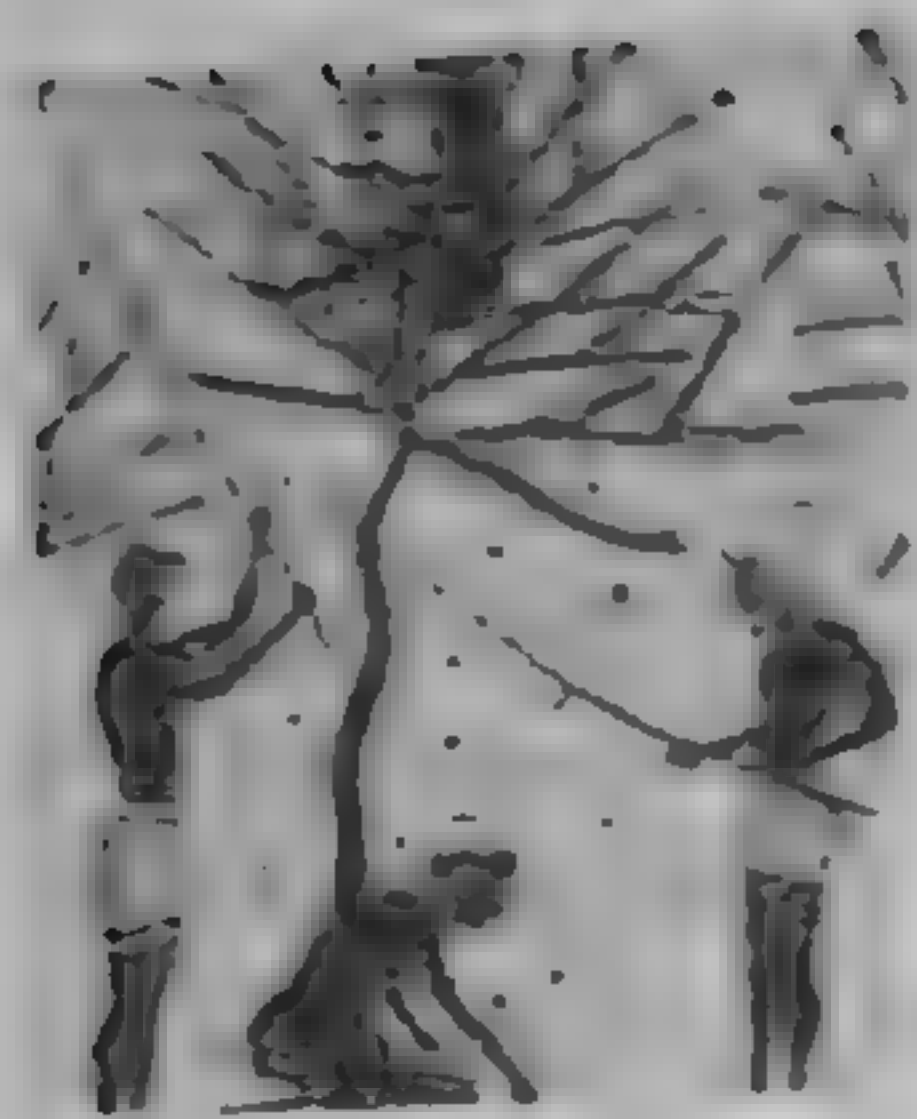
[illegible] ... हुए है। दाएँ—मालिक दासों को निर्देश दे रहा है। ७. एक लोहारखाना ([illegible] यूनानी कलश पर बना चित्र।) लोहार सड़सी से गर्म धातु का टुकड़ा पकड़े है। दास हथौड़े से चोट कर रहा है। दाएँ—ग्राहक। दीवार पर—लोहारों के औजार और तैयार वस्तुएं।

उस काल के एक संभ्रांतवर्गीय यूनानी कवि ने कहा था कि "जनता की छाती पर दृढ़ता से पैर जमाये रखना और उसे कांटे के डंडे से कूटते रहना" जरूरी है, क्योंकि वह "मालिकों के दृढ़ अंकुश" को स्वेच्छा से कभी स्वीकार नहीं करेगी।

न्यायाधीश सभी मुकदमों में संभ्रांत लोगों के पक्ष में ही फैसला देते थे। संभ्रांतों के पास उनकी इच्छा की अवहेलना करनेवालों के दमन के लिए विशेष सैनिक थे। सातवीं शताब्दी ईसापूर्व में ऐसे कानून बनाये गये, जिनके अनुसार मामूली से अपराध के लिए भी कठोर दंड दिये जाते थे। उदाहरण के लिए, दूसरे के बाग से अंगूर का गुच्छा तोड़ने के अपराध में मृत्युदंड दिया जाता था। इन कानूनों के बारे में कहा जाता था कि वे "स्याही से नहीं, रक्त से लिखे गये हैं"। उनका निर्माता द्रेको नामक आर्कोन था। यूरोपीय भाषाओं में प्रयुक्त "द्रेकोनी (अर्थात अति कठोर) कानून या कार्रवाई" मुहावरा इसी से निकला है।

संभ्रांत लोग अपने शासन को "**अभिजाततंत्र**" (**एरिस्टोक्रेसी**) कहते थे, जिसका मतलब था "सर्वोत्तमों की सत्ता"। इसीलिए संभ्रांत लोगों को "**अभिजात**" (**एरिस्टोक्रेट**) कहा जाता है।

आठवीं-सातवीं शताब्दी ईसापूर्व में एथेंस में जो राज्य कायम था, वह एटिका के दासों, किसानों और अन्य वर्गों पर अभिजातों के प्रभुत्व को बनाये रखता था।

? १. होमरकालीन यूनान की अर्थव्यवस्था की तुलना में आठवीं-सातवीं शताब्दी ईसापूर्व के एटिका की अर्थव्यवस्था में क्या परिवर्तन आये? [illegible] ३. आठवीं-सातवीं शताब्दी ईसापूर्व में एथेंस में लोगों को दास कैसे बनाया जाता था? [illegible] किसे कहते हैं? यह नाम कैसे पैदा हुआ? [illegible] का पता किन बातों से लगता है?

सामान्य जन की विजय और एथेंस राज्य का सुदृढ़ीकरण

६. **सामान्य जन।** अभिजातों (एरिस्टोक्रेटों) के अलावा शेष सभी स्वतंत्र एथेंसी नागरिक "**सामान्य जन**" ("**डेमोस**") कहलाते थे।
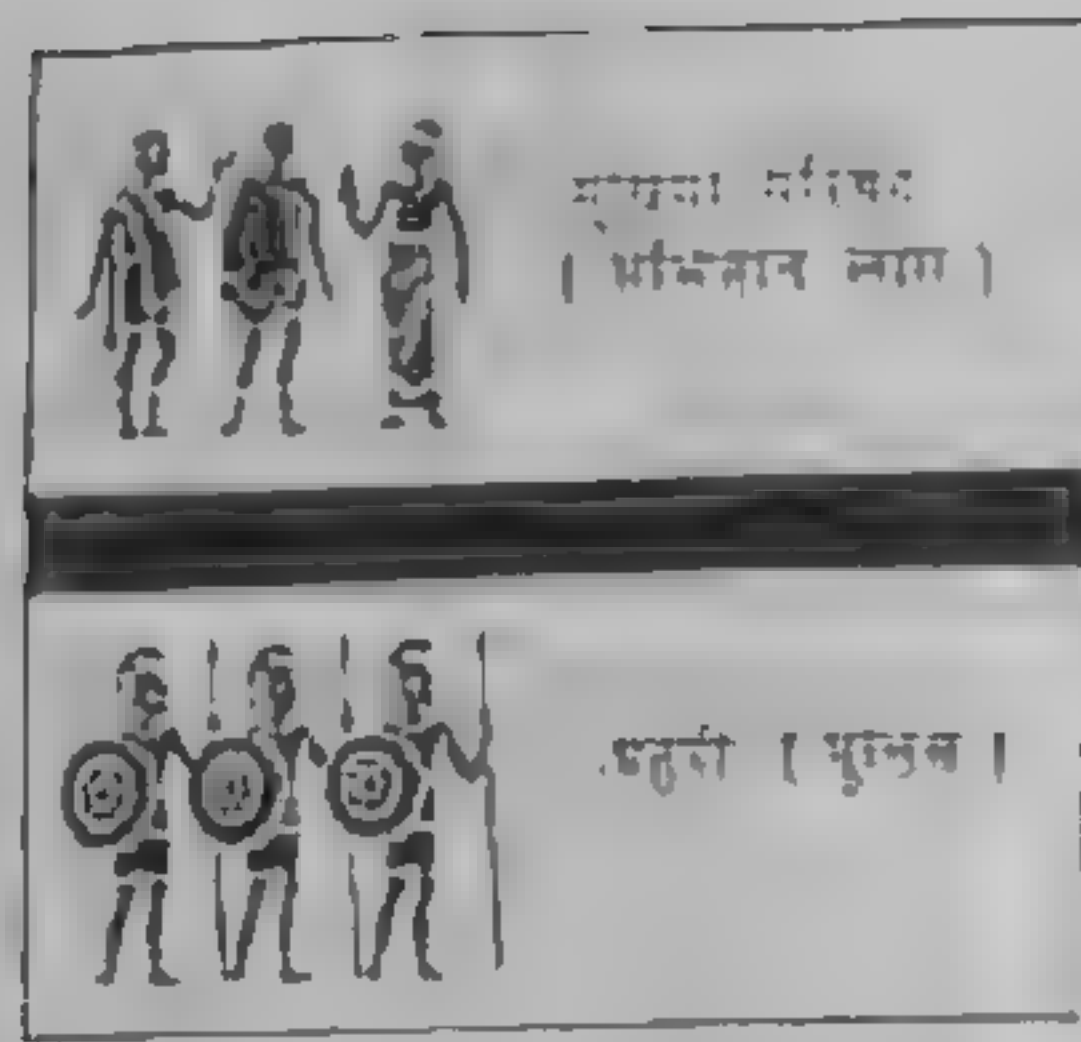
अधिकांश सामान्य जन किसान, शिल्पी, नाविक और उजरती कामगार थे। आठवीं-

आठवीं-सातवीं शताब्दी ईसापूर्व में एथेंस में राज्य की उत्पत्ति।
इन शताब्दियों में राज्य किनके हितों की रक्षा करता था?

सातवीं शताब्दी ईसापूर्व में सामान्य जन का एक भाग संपन्न बन बैठा था। उनमें व्यापारी और पोतों तथा शिल्पशालाओं के मालिक पैदा हो गये थे। उनके पास अपने दास थे। वे उजरत पर कामगर भी रखते थे। किंतु सारा शासन अभिजातों के हाथ में होने के कारण गरीब और अमीर, सभी सामान्य जन अधिकारवंचित और अभिजातों के मातहत थे।

७. सामान्य जन की विजय। अभिजातों के निरंकुश प्रभुत्व ने सामान्य जन में व्यापक असंतोष को जन्म दे दिया था। सामान्य जन शासन में भाग लेने का अधिकार पाना चाहते थे। इसके अलावा गरीब लोग क़र्ज़ों को रद्द करने, अभिजातों से ज़मीन छीन लेने और उसे सभी संपत्तिहीनों के बीच बांट देने की मांग भी कर रहे थे।

छठी शताब्दी ईसापूर्व के आरंभ में सामान्य जन के बीच विद्रोह की तैयारियां शुरू हो गयीं। वे सभाएं बुलाते और तय करते कि अभिजातों के विरुद्ध मिल-जुलकर कैसे लड़ा जाये। प्राचीन यूनानी विद्वान अरस्तू (एरिस्टोटल) लिखता है: "सामान्य जन अभिजातों के विरुद्ध उठ खड़े हुए थे"। सामान्य जन और अभिजातों के बीच भयंकर टक्करें शुरू हो गयीं।

जन विद्रोह से भयभीत होकर अभिजातों को कुछ रिआयतें देनी पड़ीं। ५९४ ईसापूर्व में एथेंस में **सोलन** नामक व्यक्ति को शासक (आर्कोन) चुना गया, जिसे अभिजातों और सामान्य जन के बीच सुलह करानी थी। सोलन एक अभिजात, मगर गरीब परिवार में पैदा हुआ था। साहसी योद्धा, कवि और वक्ता के रूप में वह काफ़ी ख्याति अर्जित कर चुका था।

एथेनियों की जन सभा के समर्थन से उसने एथेंस की शासन प्रणाली और सामान्य जन की अवस्था में सुधार किये।

८. क़र्ज़ों की समाप्ति। सोलन के प्रस्ताव पर किसानों के सभी क़र्ज़ माफ़ कर दिये गये। क़र्ज़ न चुका पाने के कारण जो एथेनी नागरिक दास बन गये थे, उन्हें स्वतंत्रता मिल गयी। भविष्य में स्वतंत्र एथेनियों को दास बनाये जाने पर रोक लगा दी गयी। सोलन अपनी एक कविता में लिखता है कि मैंने अपनी दुखसंतप्त मां धरती को उसकी दयनीय हालत से मुक्ति दिलायी है, दासता से छुटकारा दिलाया है, पराये मुल्कों में दासों की तरह बेचे गये बहुत से एथेनियों को मातृभूमि, सुंदर नगरी एथेंस लौटाया है और खुद एथेंस में भी मालिकों के सामने थरथर कांपते दासों को स्वतंत्र कराया है।

क़र्ज़ों और बंधक दासता की समाप्ति से एट्टिका में किसानों की हालत काफ़ी सुधर गयी और उनकी संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।

किंतु सोलन के सुधारों ने अन्य देशों से लाये गये दासों की हालत में कोई परिवर्तन नहीं किया। वह पहले जैसी ही असह्य बनी रही। दासों की तादाद बढ़ती गयी।

९. एथेनी नागरिक। सोलन ने संपत्ति को ध्यान में रखते हुए एट्टिका के मूल निवासी पुरुषों को चार श्रेणियों में बांटा। वे सभी एथेंस राज्य के नागरिक थे।

सेना या नौसेना में काम करना सभी एथेनी नागरिकों के लिए अनिवार्य था। युवकों को दो वर्ष सैनिक प्रशिक्षण दिया जाता था। युद्धकाल में नागरिकों को सैन्य सेवा के लिए बुलाया जाता था। हथियारों का प्रबंध उन्हें स्वयं करना पड़ता था। **थेटीज़**, यानी चतुर्थ श्रेणी में आनेवाले गरीब किसान साधारण पैदल सिपाहियों या मल्लाहों का काम करते थे। जो किसान हथियार और बख़्तर ख़रीद सकते थे, उन्हें भारी हथियारों से लैस पैदल सेना में भर्ती किया

१. सोलन (प्राचीन यूनानी मूर्ति।) मूर्तिकार ने सोलन के चरित्र की किन विशेषताओं पर ज़ोर दिया है?
२. योद्धा को लड़ाई में जाने के लिए तैयार किया जा रहा है। (एक यूनानी कलश पर बना चित्र।)
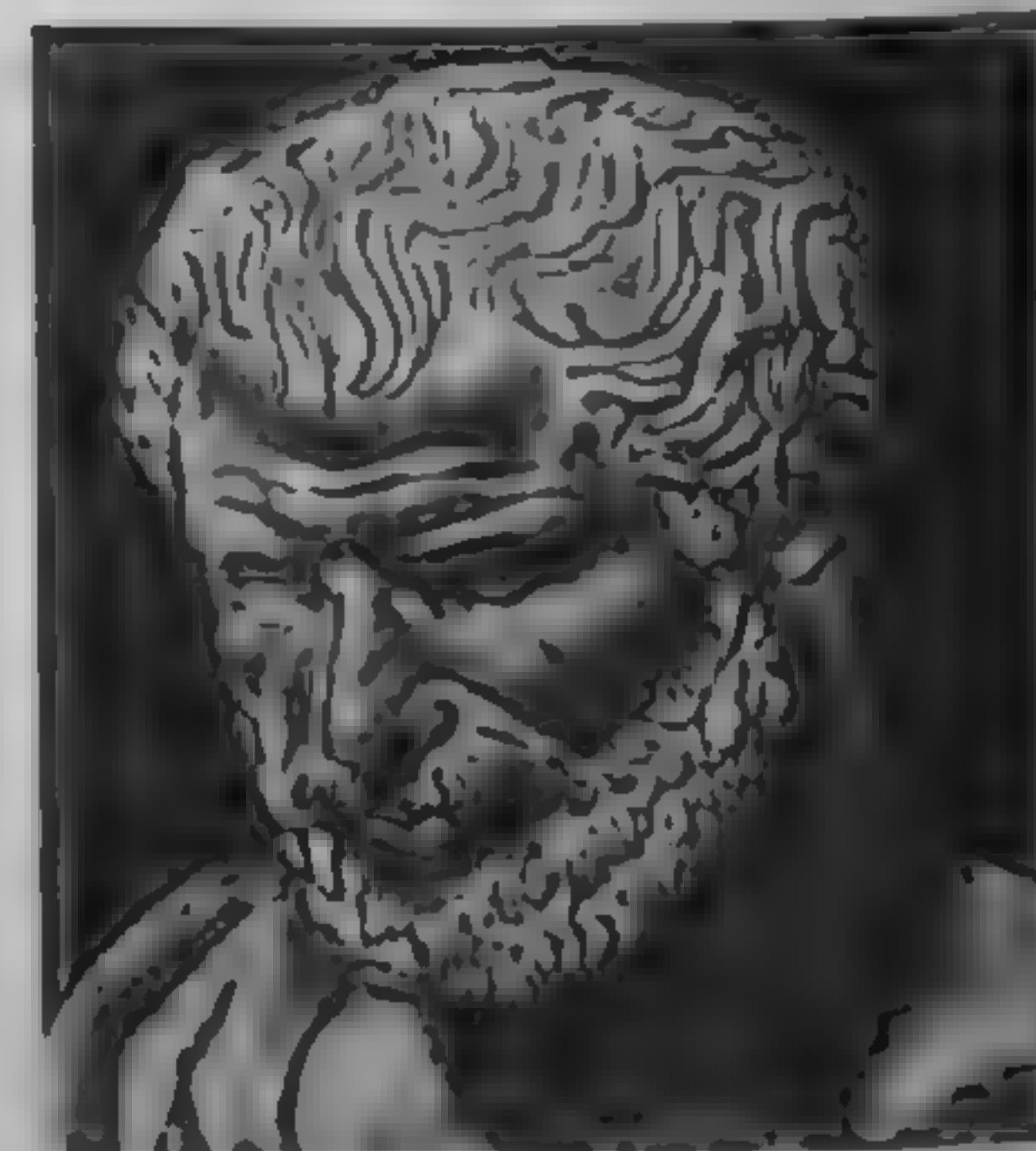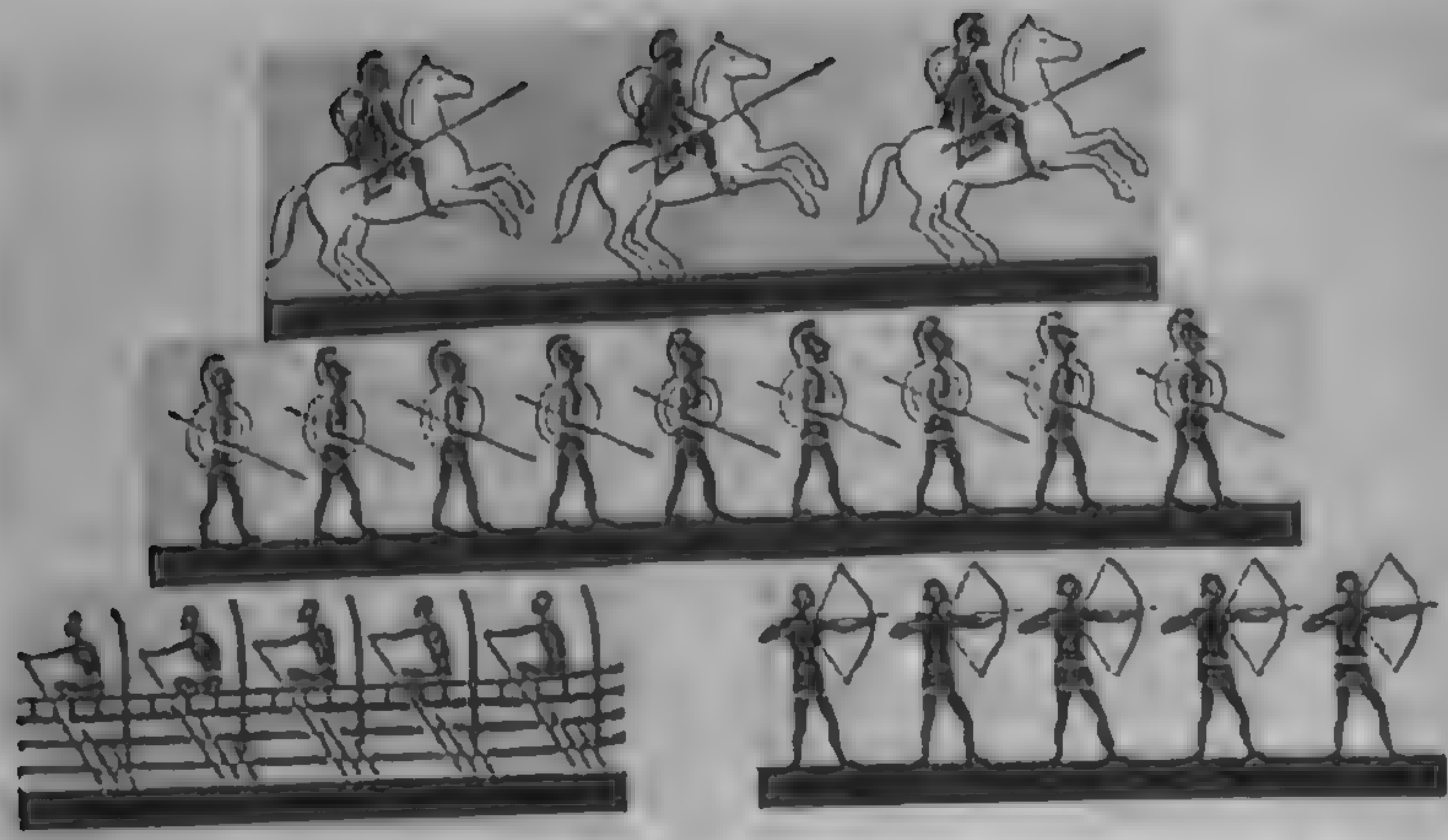
सोलन के सुधारों के बाद एथेनी सेना और नौसेना का गठन। **एथेंस में किस-किस को सैन्य-सेवा में लिया जाता था?**

जाता था। एथेनी सेना की मुख्य प्रहारक शक्ति वे ही थे। जो लोग घोड़ा खरीद सकते थे उन्हें अश्व सेना में लिया जाता था और जो संपन्न वर्ग में गिने जाते थे, उन्हें अपने खर्च से युद्धपोतों के लिए आवश्यक सैन्य-सामग्री, रसद, आदि जुटानी पड़ती थी।

सभी एथेनी नागरिक जन सभा में भाग ले सकते थे।

१०. **एथेंस की शासन व्यवस्था।** सोलन के सुधारों के बाद जन सभा एथेंस राज्य के शासन में काफी बड़ी भूमिका अदा करने लगी। वह सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण प्रश्नों को निपटाती थी, आर्कोनों, न्यायाधीशों और दूसरे पदाधिकारियों का चुनाव करती थी। एट्टिका का कोई भी नागरिक न्यायाधीश बन सकता था। शेष पदाधिकारी केवल संपन्न और खाते-पीते एथेनियों में से चुने जाते थे, चाहे वे अभिजात वर्ग के हों या न हों। थेटीज श्रेणी के लोगों को इन पदों पर नियुक्त नहीं किया जा सकता था।

सोलन के सुधारों ने अभिजातों की शक्ति को क्षीण करके सामान्य जन को एथेंस के शासन में भाग लेने का अवसर प्रदान किया।

अभिजातों और सामान्य जन के बीच वैमनस्य सोलन के सुधारों के बाद भी समाप्त नहीं हुआ। अभिजात अपनी खोयी सत्ता वापस प्राप्त करना चाहते थे और सामान्य जन अपने नव-प्राप्त अधिकारों को बनाये रखने और बढ़ाने के लिए प्रयत्नशील थे। किंतु दासों को छोड़ना संभ्रांत और गैर-संभ्रांत, दोनों ही वर्गों के दासस्वामियों में से कोई भी नहीं चाहता था। उन्हें उनकी लगातार कोशिश रहती थी कि अपने दासों की संख्या बढ़ायी जाये। इसलिए दोनों वर्ग एथेनी राज्य को, जो दासों पर उनकी सत्ता का समर्थन करता था, निरंतर सुदृढ़ बनता देखना चाहते थे।

आठवीं-छठी शताब्दी ईसापूर्व में एथेंस में दासप्रथात्मक व्यवस्था क़ायम हुई और दास-प्रथात्मक राज्य बना।

सेना में भरती के समय एथेनी युवकों की शपथ

मैं देवताओं, अपनी मातृभूमि की सीमाओं, गेहूं और जौ के खेतों, अंगूर और जैतून के बागों को साक्षी मानकर शपथ लेता हूं कि सदा और सर्वत्र अपने पुनीत अस्त्र की लाज रखूंगा और युद्ध में अपने साथी को कभी नहीं छोड़ूंगा। मैं अपनी मातृभूमि के लिए अंतिम दम तक लड़ूंगा और अपने पीछे उसे निर्बल नहीं, वरन पहले से अधिक प्रबल और शक्तिशाली छोड़ जाऊंगा। मैं स्वयं और दूसरों सहित वर्तमान और भावी कानूनों का इच्छापूर्वक पालन करूंगा। जो मातृभूमि के लिए पुनीत है, मैं उसका सदा सम्मान करूंगा।

? १. आठवीं-सातवीं शताब्दी ईसापूर्व में सामान्य जन (डेमोस) में किनकी गणना की जाती थी? क्या वे सब एक ही वर्ग के थे? २. सोलन के सुधारों की आवश्यकता क्यों पैदा हुई? उनसे किसे लाभ हुआ था? ३. सोलन के सुधारों के अनुसार एथेंस के नागरिकों के अधिकार और कर्तव्य क्या थे? ४. सोलन के सुधारों से पहले और बाद में एथेनी राज्य किसके हितों की रक्षा करता था? ये सुधार एथेनी राज्य के सुदृढ़ीकरण में क्यों सहायक हुए? ५. सोलन के सुधार किस शताब्दी में और उस शताब्दी के भी किस भाग में लागू हुए थे? क्या उस काल में मिस्र में स्वतंत्र राज्य था? सोलन के सुधार लागू हुए २५०० वर्ष कब पूरे हुए हैं?

§ ३२. आठवीं-छठी शताब्दी ईसापूर्व में स्पार्टा का दासप्रथात्मक राज्य

याद करें कि दूसरी सहस्राब्दी ईसापूर्व के अंत में यूनान में बाहर से किन कबीलों का आगमन हुआ था (§२५, अनुच्छेद ४)।

१. पेलोपोनेसस के दक्षिण-पूर्व में **लकोनिया** प्रदेश स्थित था। उसके मध्य में एक नदी घाटी थी, जो तीन ओर से ऊंचे दुर्गम पहाड़ों से घिरी हुई थी। पहाड़ों से लोहा पाया जाता था। लकोनिया का समुद्रतट या तो खड़ा चट्टानी था या फिर दलदली। वह सागर यात्रा के लिए सुविधाजनक न था। घाटी में बहुत ही उपजाऊ भूमि और अच्छे चरागाह भी थे। किंतु उससे भी अधिक उपजाऊ भूमि **मेसेनिया** प्रदेश की थी जो दक्षिण-पश्चिमी पेलोपोनेसस में स्थित था।

२. लकोनिया को जीतकर डोरियनों ने वहां एक नगर बसाया, जिसका नाम **स्पार्टा** था। विजेता अब **स्पार्टन** या **स्पार्टावासी** कहलाये जाने लगे। दीर्घ काल तक लड़ने के बाद उन्होंने मेसेनिया पर भी कब्जा कर लिया।

स्पार्टनों ने विजित इलाकों की अधिकांश आबादी को दास बना लिया। अपने दासों को वे **हेलट** या **हीलोटीज** कहते थे, जिसका मतलब था 'बंदी बनाये हुए'।

विजेता लोग ही दासों के स्वामी थे। हर स्पार्टावासी के पास अपनी भूमि होती थी, जिसपर कई दास (हेलट) परिवारों से खेती करवायी जाती थी। एक समकालीन के शब्दों में, हेलट अपनी मेहनत से जो कुछ भी पैदा करते थे उसका आधा भाग उन्हें मालिक को दे देना पड़ता था।

हेलट अपने शोषकों – स्पार्टनों – से घोर नफ़रत करते थे और अनेक बार उन्होंने विद्रोह भी किया। हेलटों को डराये-धमकाये रखने और विद्रोह न होने देने के लिए स्पार्टन उनमें से सबसे ताकतवर और साहसी लोगों को जान से मार डालते थे।

हेलटों और स्पार्टनों का संघर्ष दो सर्वथा विरोधी, एक दूसरे के शत्रु वर्गों – दासों और दासस्वामियों – का संघर्ष था। यह वर्ग संघर्ष था।

३. हेलटों का एक सबसे बड़ा विद्रोह सातवीं शताब्दी ईसापूर्व में मेसेनिया में हुआ था। अनेक वर्ष तक चले युद्ध में अनंत विद्रोही हार गये। उनमें से कुछ एक दुर्गम पहाड़ की चोटी पर जा छिपे।

किंतु स्पार्टनों ने वहां भी उन्हें घेर लिया। रात में जब मूसलाधार वर्षा हो रही थी और बिजली कड़क रही थी, उन्होंने चुपके से पहुंचकर बिजली के उजाले में हेलटों पर हमला कर दिया। हेलटों के साथ उनकी स्त्रियों ने भी स्पार्टनों का मुक़ाबला किया। एक प्राचीन लेखक लिखता है: "स्त्रियां भी पत्थर हाथ में लेकर शत्रु पर टूट पड़ीं। यह देखकर कि स्त्रियां भी लड़ाई के मैदान में उतर आयी हैं और दासी बने रहने के बजाय मौत को बेहतर समझती हैं, पुरुषों का हौसला और बढ़ गया।"

तीन दिन, तीन रात तक घमासान लड़ाई चलती रही। विद्रोही हेलट घिरे हुए थे। उनकी हालत नाज़ुक थी। किंतु स्पार्टनों ने देखा कि लड़ाई में खुद उनके भी बहुत लोग मारे जा रहे हैं। अतः वे विद्रोहियों को इस शर्त पर छोड़ने को राजी हो गये कि वे हमेशा के लिए मेसेनिया से चले जायेंगे। **शौर्यपूर्ण संघर्ष के बाद हेलटों का एक भाग दासता से मुक्त तो हो गया,** मगर उसे अपनी मातृभूमि त्याग देनी पड़ी।

४. हेलटों पर अपना प्रभुत्व बनाये रखने के लिए स्पार्टनों को राज्य – सेना, क़ानून, अदालत, आदि – की ज़रूरत पड़ी।

इस राज्य में सारी सत्ता स्पार्टनों के हाथ में थी। अपनी सभा में वे संभ्रांतों में से एक वृद्ध-परिषद चुनते थे, जो **गेरूसिया** या **गेरोंटिया** कहलाती थी। सेनाओं का नेतृत्व करनेवाले दो शासक भी इसके सदस्य होते थे। परिषद सभी महत्त्वपूर्ण मामले निपटाती थी और अपराधियों को दंड देती थी।

लड़ाई में भाग लेने में समर्थ हर स्पार्टन को योद्धा बनना पड़ता था। क़ानून उन्हें सैन्य कार्य के अलावा और कोई काम करने की अनुमति नहीं देता था। शांति काल में भी उनका सारा समय सैन्य-शिविर में बीतता था और क़वायद, मल्लयुद्ध, दौड़, भाला फेंकने का अभ्यास और अन्य सैनिक अभ्यास करते रहने होते थे। सोते हुए भी स्पार्टन का हथियार उसकी बग़ल में रहता था।

स्पार्टन योद्धा भली भांति शस्त्र-सज्जित होते थे। वे पैदल ही लड़ते थे। युद्ध के वक़्त वे कई-कई पांतों के दस्ते – **फ़ैलेंक्स** या **फ्लैंगोस** – बना लेते थे और इसे **फ़ैलेंक्सी** व्यूहरचना कहा जाता था। बांसुरी की धुन और सामूहिक प्रयाण गीतों की गूंज के साथ जब ये दस्ते शत्रु की ओर बढ़ते थे, तो लगता था कि जैसे भाले ताने और ढालें सटाये स्पार्टनों की एक दुर्भेद्य, भयावह दीवार ही बढ़ी आ रही है।

स्पार्टन योद्धा। (एक प्राचीन मूर्ति।)

मेसेनिया में विद्रोही दासों और स्पार्टनों की लड़ाई। (आधुनिक कलाकार का बनाया चित्र।)

५. स्पार्टन बालकों को बचपन से ही भावी योद्धाओं और दासस्वामी वर्ग के निष्ठावान रक्षकों के रूप में पाला-पोसा जाता था। उन्हें कठोर से कठोर परिस्थितियों में रखा जाता था, ताकि तन से भी और मन से भी उनमें किसी प्रकार की दुर्बलता न रह जाये। उनका लगभग सारा समय शारीरिक व्यायामों में व्यतीत होता था। "**स्पार्टन जीवन**" मुहावरा, जिसका मतलब शीत-गर्मी, अभावों, आदि की परवाह न कर शरीर को सुदृढ़ बनाना होता है, इसी से बना है।

पीड़ा सहने की आदत डालने के लिए स्पार्टन बालकों को निर्ममतापूर्वक बेंतों से पीटा जाता था, जिससे बहुत बार शरीर लहू-लुहान हो जाता था। कठोरता की शिक्षा देने के लिए उन्हें हेलटों को मारना सिखाया जाता था।

स्पार्टन बच्चों और किशोरों के लिए अपने से बड़ों की आज्ञा का आंख मींचकर पालन करना अनिवार्य था। बड़ों की अनुमति के बिना वे मुंह नहीं खोल सकते थे। यूनानी मज़ाक में कहते थे कि पत्थर की मूर्ति बोल पड़ेगी, पर स्पार्टन बालक नहीं।

स्पार्टन लोग मितभाषी बनना सीखते थे। मिसाल के लिए, अपने पुत्र को युद्ध के लिए विदा करते और ढाल थमाते हुए माता केवल इतना कहती थी: "इसके साथ या इसपर"। स्पार्टन योद्धा के लिए युद्ध में अपनी ढाल खो बैठना शर्म की बात थी और यदि वह वीरगति को प्राप्त होता था, तो उसका शरीर उसकी ढाल पर लिटाकर लाया जाता था। इस तरह "ढाल के साथ या ढाल पर" का मतलब था कायरता दिखाने के बजाय लड़ते हुए प्राण गंवा बैठना बेहतर है। संक्षिप्त और सारगर्भित शैली को यूरोपीय भाषाओं में **लेकोनिक** कहा जाता है, यानी वैसी शैली, जैसी लकोनिया (स्पार्टा) में प्रचलित थी।

इन सबका यह परिणाम होता था कि स्पार्टन किशोर शक्तिशाली, साहसी और सहिष्णु बन जाते थे। किंतु साथ ही उनके स्वभाव में कठोरता और उजड्डपन भी आ जाता था। उन्हें लिखना-पढ़ना बहुत कम सिखाया जाता था।

स्पार्टन बालकों का जीवन

(प्राचीन यूनानी इतिहासकार प्लूटार्क की रचनाओं से)

पिता अपने शिशु को बूढ़ों के पास ले आता था। यदि शिशु स्वस्थ और बलिष्ठ होता था, तो वृद्ध लोग पिता को ही उसका लालन-पोषण करने देते थे और अगर दुर्बल और अपंग होता था, तो उसे पहाड़ से फेंक दिया जाता था।

सात वर्ष की आयु का होने पर सभी बालकों को इकट्ठा करके टोलियों में बांट दिया जाता था। सब साथ-साथ रहते और खाते थे। सबको समान माना जाता था। टोली का मुखिया उसे बनाया जाता था, जो दूसरों से अधिक समझदार, चतुर और साहसी होता था और प्रतियोगिताओं में पहला आता था। शेष को उसका अनुसरण करना होता था, उसकी आज्ञा माननी पड़ती थी और सज़ा मिलने पर चुपचाप सहना होता था। इस तरह यह कठोर अनुशासन का विद्यालय था।

लिखना और पढ़ना वे उतना ही सीखते थे, जितना कि बहुत ज़रूरी था। बाक़ी शिक्षा का यही मतलब था कि चुपचाप आज्ञापालन करें, अभावों और कष्टों को सहें और प्रतियोगिताओं में विजयी हों। समय के साथ शिक्षा और कठिन बनती जाती थी – सिर पूरा मूंड़ दिया जाता था, पैदल चलने और नंगे खेलने की आदत डाली
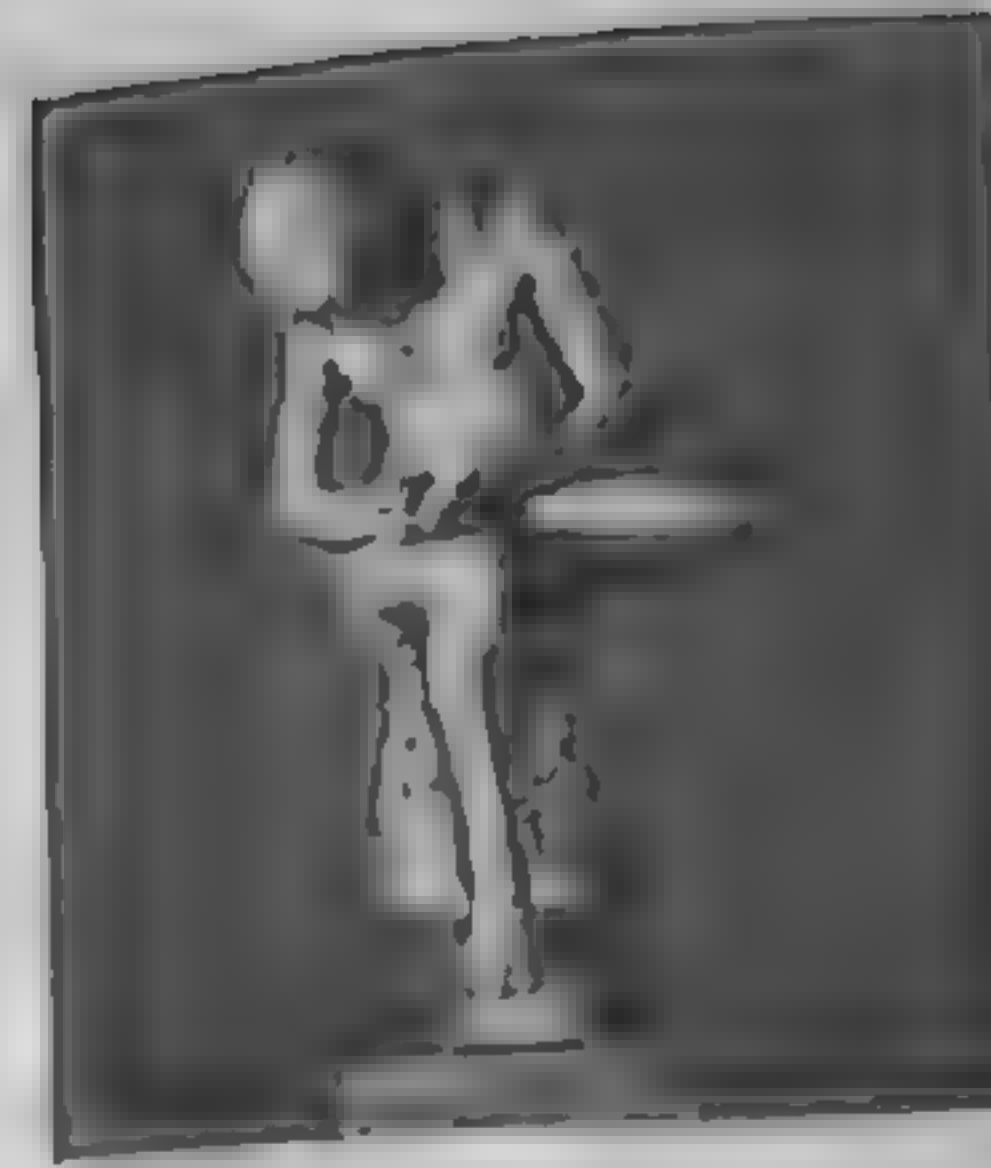
१. पैर से कांटा निकालता लड़का। (प्राचीन यूनानी मूर्ति।) दौड़-प्रतियोगिता में उसके पैर में कांटा चुभ गया था, फिर भी वह दौड़ता रहा और प्रथम आया। इसके बाद ही उसने कांटा निकाला। २. मल्ल-युद्ध। (प्राचीन यूनानी मूर्ति।)

जाती थी। जब स्पार्टन युवा बीस वर्ष की आयु के हो जाते थे, उन्हें पहनने को वर्ष में केवल एक चोगा दिया जाता था। उनकी त्वचा खुरदरी होती थी। वे गरम पानी से नहीं नहाते थे और खुद अपने नंगे हाथों से तोड़े हुए सरकंडे के बिछौने पर सोते थे।

स्पार्टन कवि टिर्टीयस की एक कविता से

बच्चों की रक्षा करते हम मातृभूमि के लिए लड़ेंगे
रण-आंगन में खूब डटेंगे, लड़ते-लड़ते गिरें, मरेंगे।
जूझो तरुणो, पांव न उखड़ें, मत तुम अपनी पीठ दिखाना
कायरता का बुरा नमूना मत औरों के हित बन जाना,
कभी न तुम डरना, घबराना, और सदा हिम्मत रखना
अपना कस-बल ज़ोर लगाकर, दुश्मन से अपने लड़ना...
लम्बा डग भर, बढ़ो, पांव को, तुम धरती पर खूब जमाओ
होंठ भींच लो कसकर अपने, डटे रहो, मत क़दम हटाओ।

? १. स्पार्टन समाज किन वर्गों में बंटा हुआ था? स्पार्टा की आबादी और पड़ोस की आबादी में क्या भेद था? २. वर्ग संघर्ष किसे कहते हैं? स्पार्टा में वर्ग संघर्ष ने क्या रूप लिया? प्राचीन पूर्व देशों के वर्ग संघर्ष की मिसालें दें। ३. स्पार्टा में राज्य किसके हितों की रक्षा करता था? ४. स्पार्टा में बालकों के लालन-पोषण तथा शिक्षा-दीक्षा का मुख्य लक्ष्य क्या था और यह लक्ष्य कैसे प्राप्त किया जाता था? स्पार्टनों की शिक्षा-दीक्षा में आपको क्या पसंद है और क्या नहीं? ५. [illegible] के लिए उपशीर्षक सुझाएं।
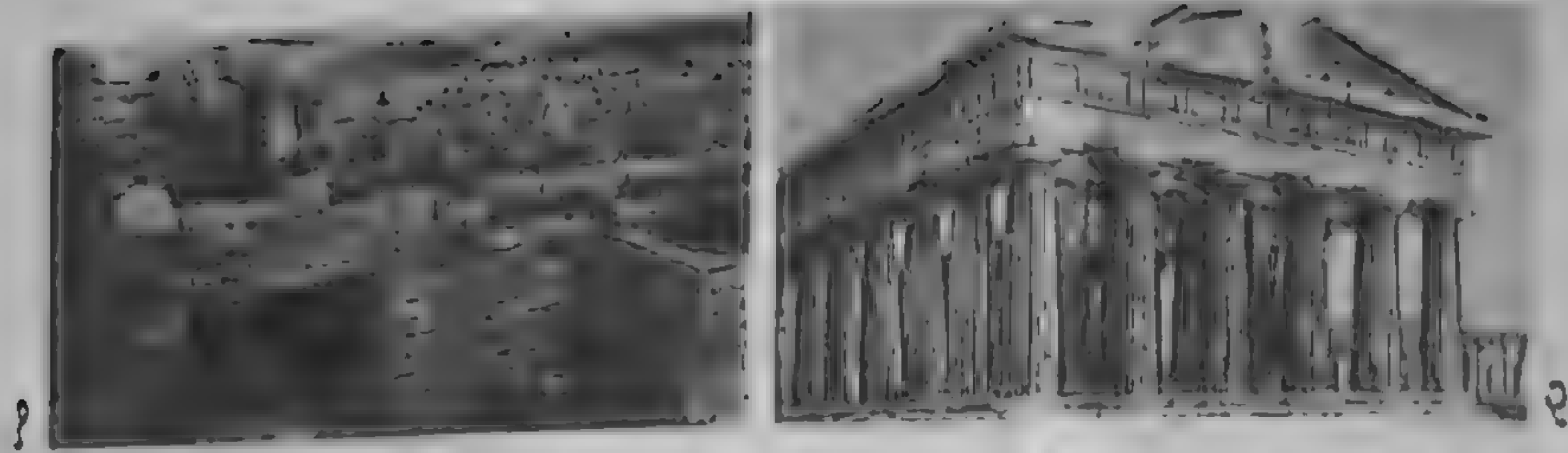
१. क्रीमिया में यूनानी नगर खेरसोनेसस के नगर प्राचीर के अवशेष। (छायाचित्र।) पत्थरों की गढ़ाई पर गौर करें। २. सिसिली में सातवीं शताब्दी ईसापूर्व का एक यूनानी मंदिर। (छायाचित्र।) ३. सिसिली के सिराक्यूज़ नगर का सिक्का। उसपर अपने स्वर्ण-रथ पर नभ की परिक्रमा करते हुए सूर्य देवता का चित्र बना है। ४. प्राचीन यूनानी व्यापारिक पोत। (कलश पर निर्मित चित्र।) ५. प्राचीन यूनानी नौसैनिक पोत। (कलश पर निर्मित चित्र।) शत्रु के पोत पर टक्कर मारने के लिए ऐसे पोतों के नुकीले अग्रभाग पर मोंढा मढ़ा होता था। **सैनिक और व्यापारिक पोतों की तुलना करके बतायें कि उनके निर्माता उन्हें कैसा बनाना चाहते थे।**

§ ३३. यूनान में और भूमध्य तथा काला सागरों के तट पर नगर-राज्यों का निर्माण

(मानचित्र ४ और ५)

याद करें कि पहली सहस्राब्दी ईसापूर्व के आरंभ तक यूनानी कहां-कहां जाकर बस गये थे (पृष्ठ १२३ पर दिया हुआ मानचित्र देखें)।

१. यूनान के नगर-राज्य। आठवीं-छठी शताब्दी ईसापूर्व में लगभग सभी यूनानी नगरों में स्वतंत्र राज्यों की स्थापना हो चुकी थी। उनका अधिकार क्षेत्र नगर और आसपास के गावों तक ही सीमित होता था। हर नगर-राज्य की अपनी सेना, खज़ाना और अपनी मुद्रा थी।

अनेक यूनानी नगरों में सामान्य जन और अभिजातों के बीच घमासान संघर्ष चल रहा था। कुछ नगरों में सामान्य जन ने बंधक दासता की प्रणाली का उन्मूलन करवाने में सफलता पाकर शासन में भाग लेने का अधिकार हासिल कर लिया और कुछ नगरों में सत्ता पर अभिजातों का ही नियंत्रण बना रहा। ईसापूर्व आठवीं शताब्दी के अंत और सातवीं शताब्दी के आरंभ के एक यूनानी कवि **हेसिअड** ने अभिजातों के नियंत्रणाधीन नगरों के सामान्य जन के जीवन का अपनी एक नीतिकथा में बड़ा सुंदर चित्रण किया है (देखें § ३३ का परिशिष्ट)।

वर्गीय लड़ाइयां बहुत से यूनानियों को अपनी मातृभूमि छोड़कर अन्य देशों में जाकर बसने को मजबूर कर देती थीं। हेसिअड लिखता है कि ग़रीब लोग "क़र्ज़ों से छुटकारा पाने और भुखमरी से बचने" के लिए स्वदेश छोड़ते थे। अभिजातों की विजय होने पर उनके
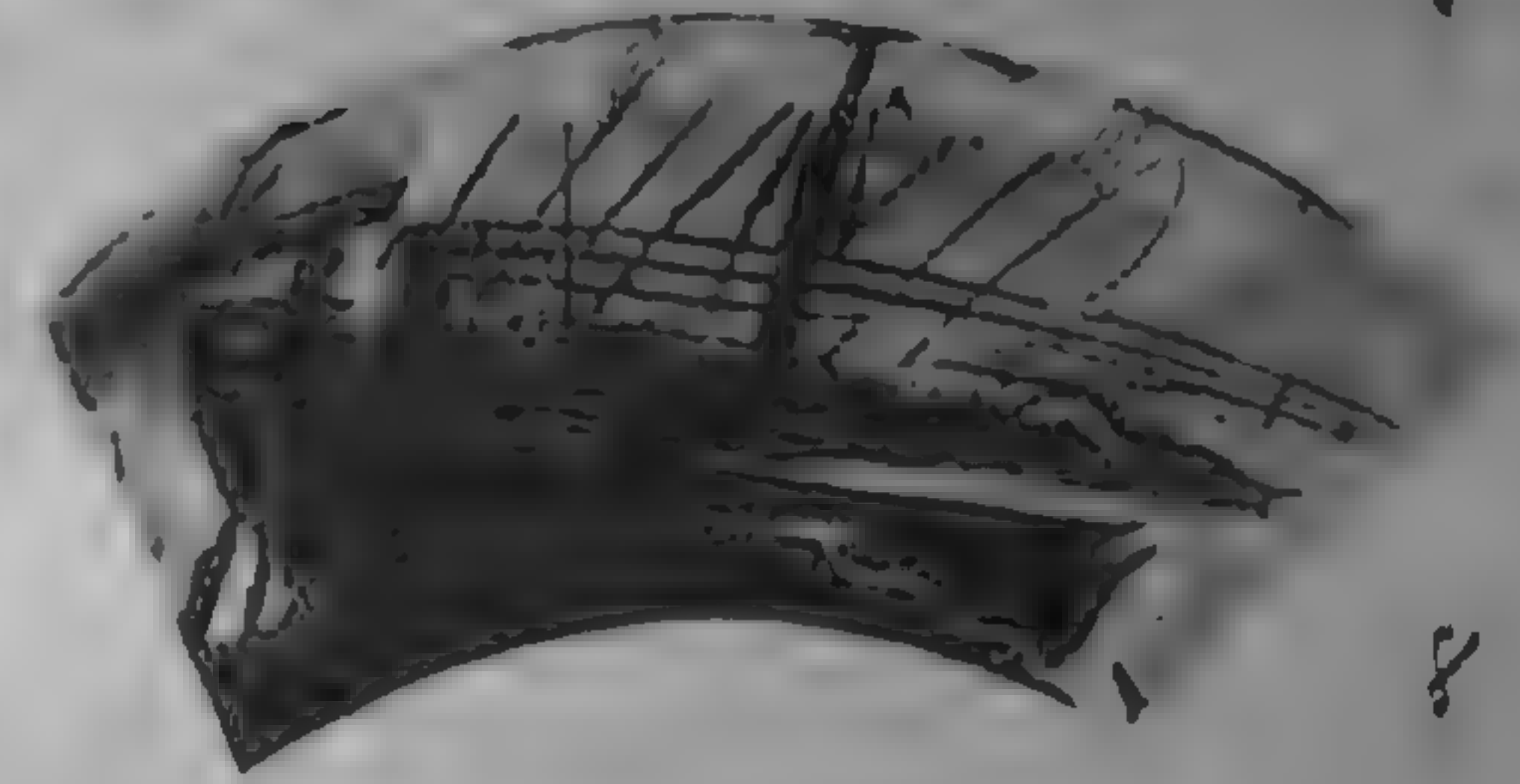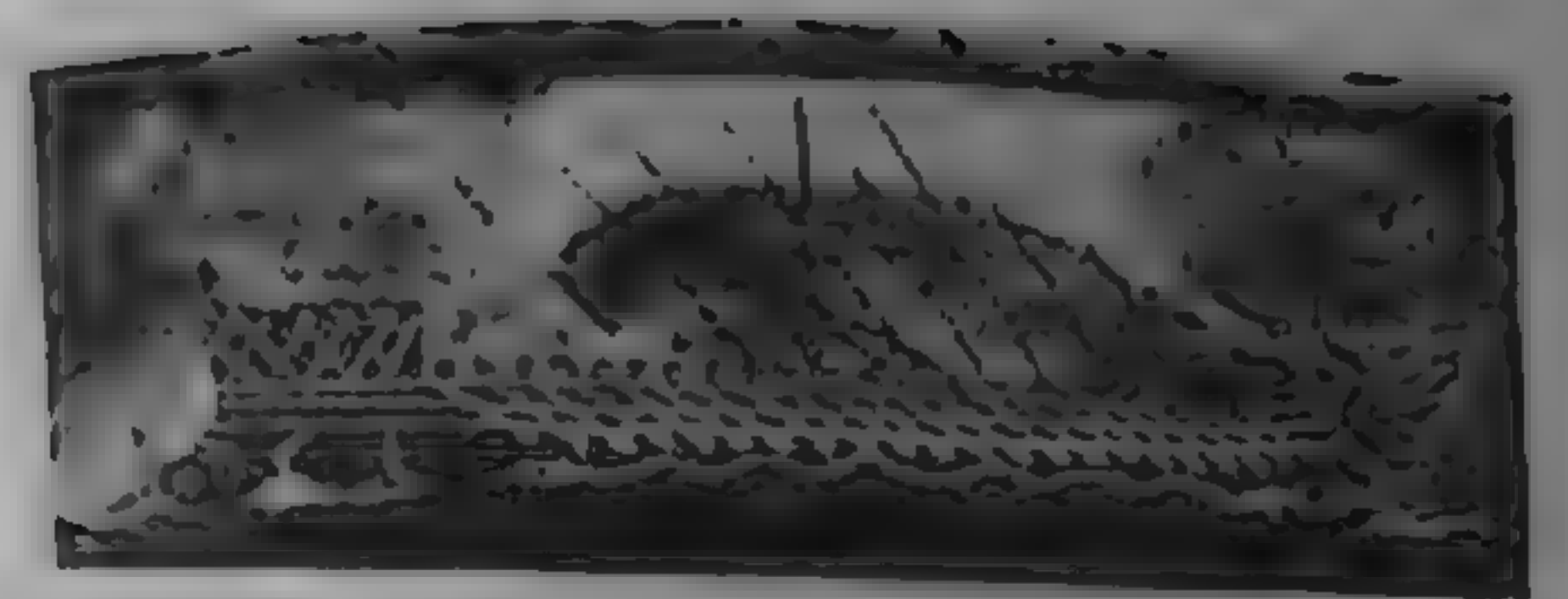
शत्रु मारकाट से बचने के लिए भागने को मजबूर हो जाते थे। दूसरी ओर जब सामान्य जन सत्ता पर क़ब्ज़ा कर लेते थे, तो उनके शत्रु अभिजातों को दूसरे देशों में शरण लेनी पड़ती थी। ऐसे एक निर्वासित अभिजात ने लिखा था, "मुझे अपना आलीशान घर छोड़कर जहाज़ पर भगोड़ा बनना पड़ा है"।

२. उपनिवेशों की स्थापना। यूनानियों ने लकड़ी के बड़े-बड़े और मज़बूत पोत बनाना सीख लिया था। व्यापारी उनपर शिल्पियों की बनायी वस्तुएं और अन्य यूनानी माल लादकर सागर पार के देशों में बेचने के लिए ले जाते थे। एशिया कोचक का यूनानी नगर **मिलेटस** अपने ऊनी वस्त्रों के लिए प्रसिद्ध था। **कोरिंथ** में उत्कृष्ट हथियार और एथेंस में सर्वोत्तम मिट्टी के बरतन बनाये जाते थे।

आरंभ में व्यापारी लोग अपने मालों की अदला-बदली के लिए दूसरे देशों के बंदरगाहों में अल्पकाल के लिए ही लंगर डाला करते थे। बाद में यूनानी व्यापारिक नगरों ने भूमध्यसागर और काला सागर के तट पर अपने स्थायी **उपनिवेश** क़ायम करने शुरू कर दिये।

यूनान में ऐसे लोगों की कमी नहीं थी, जो इन उपनिवेशों में जाकर बस जाना चाहते थे, जैसे कारीगर लोग, जो सोचते थे कि वहां उनके माल खूब बिकेंगे, किसान, जो अपने खेतों से हाथ धो बैठे थे और ऐसे लोग, जो अपनी मातृभूमि छोड़ने को मजबूर हो गये थे। नये उपनिवेश की स्थापना करनेवाला नगर वहां अपने सैनिक और व्यापारिक पोतों का बेड़ा भेजता था।

३. उपनिवेशों में यूनानियों का जीवन। पराये देश में पहुंचकर यूनानी वहां खाड़ी या नदी के मुहाने के आसपास की भूमि पर क़ब्ज़ा कर लेते थे और नगर बनाकर उसके इर्दगिर्द किले
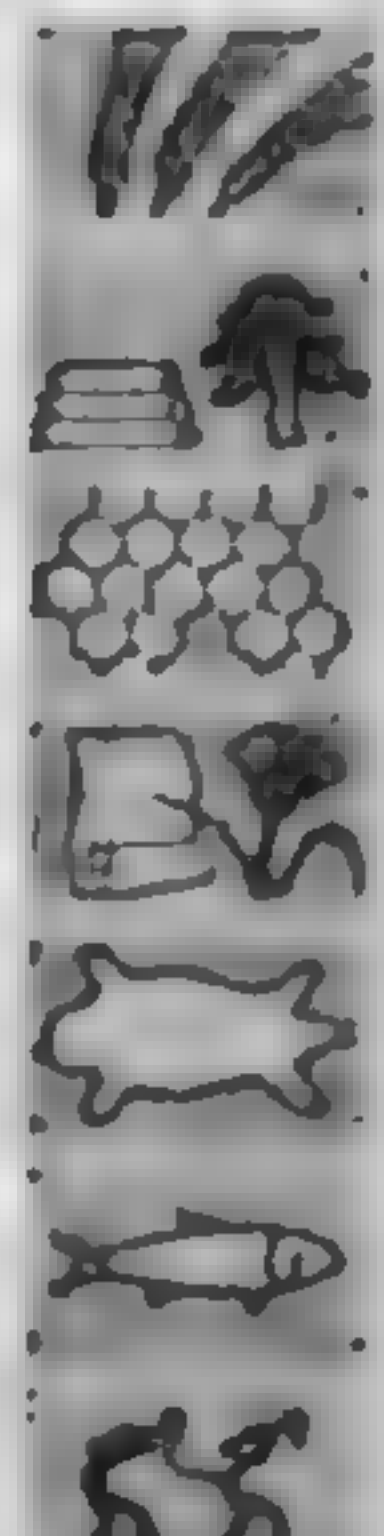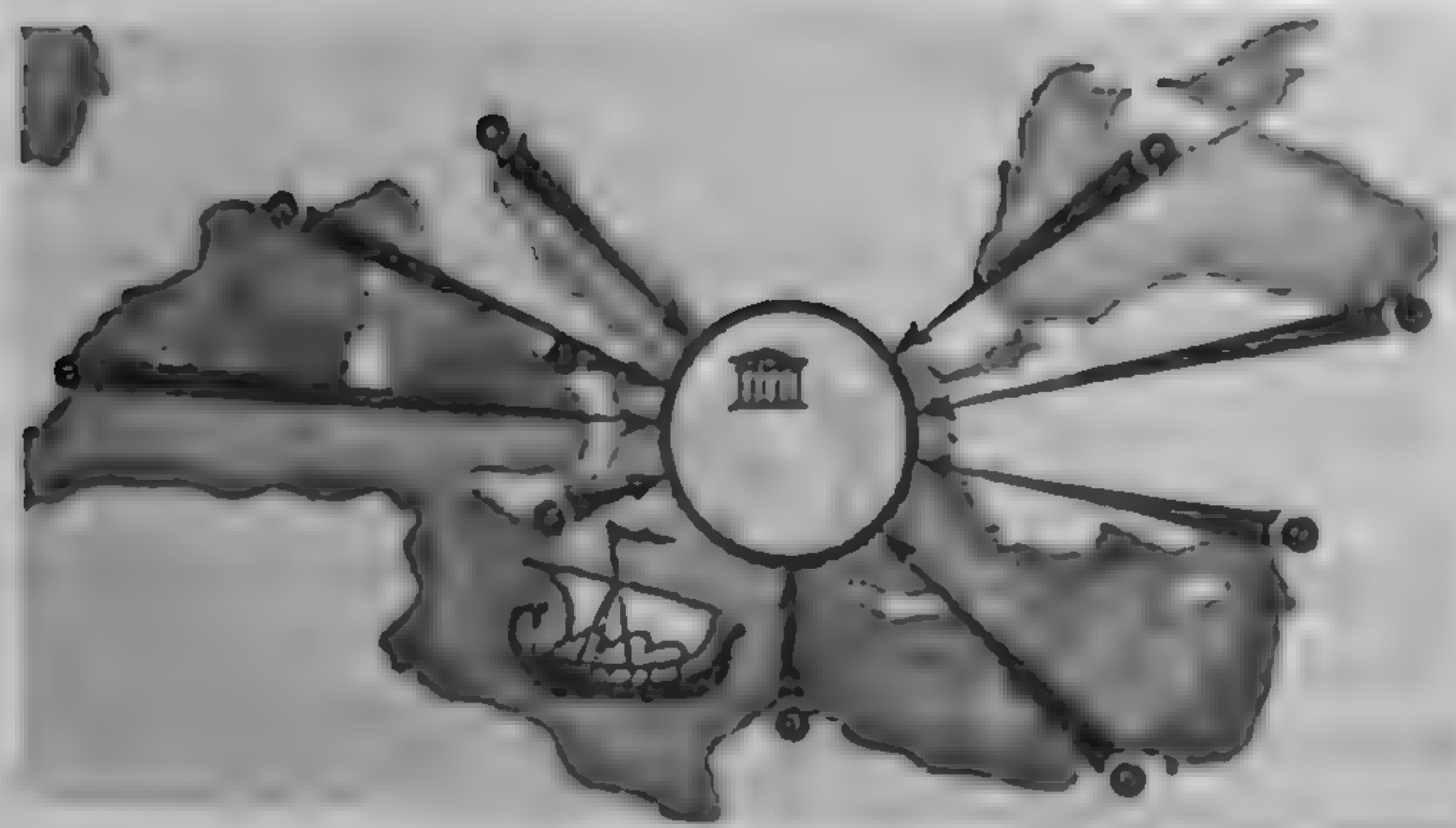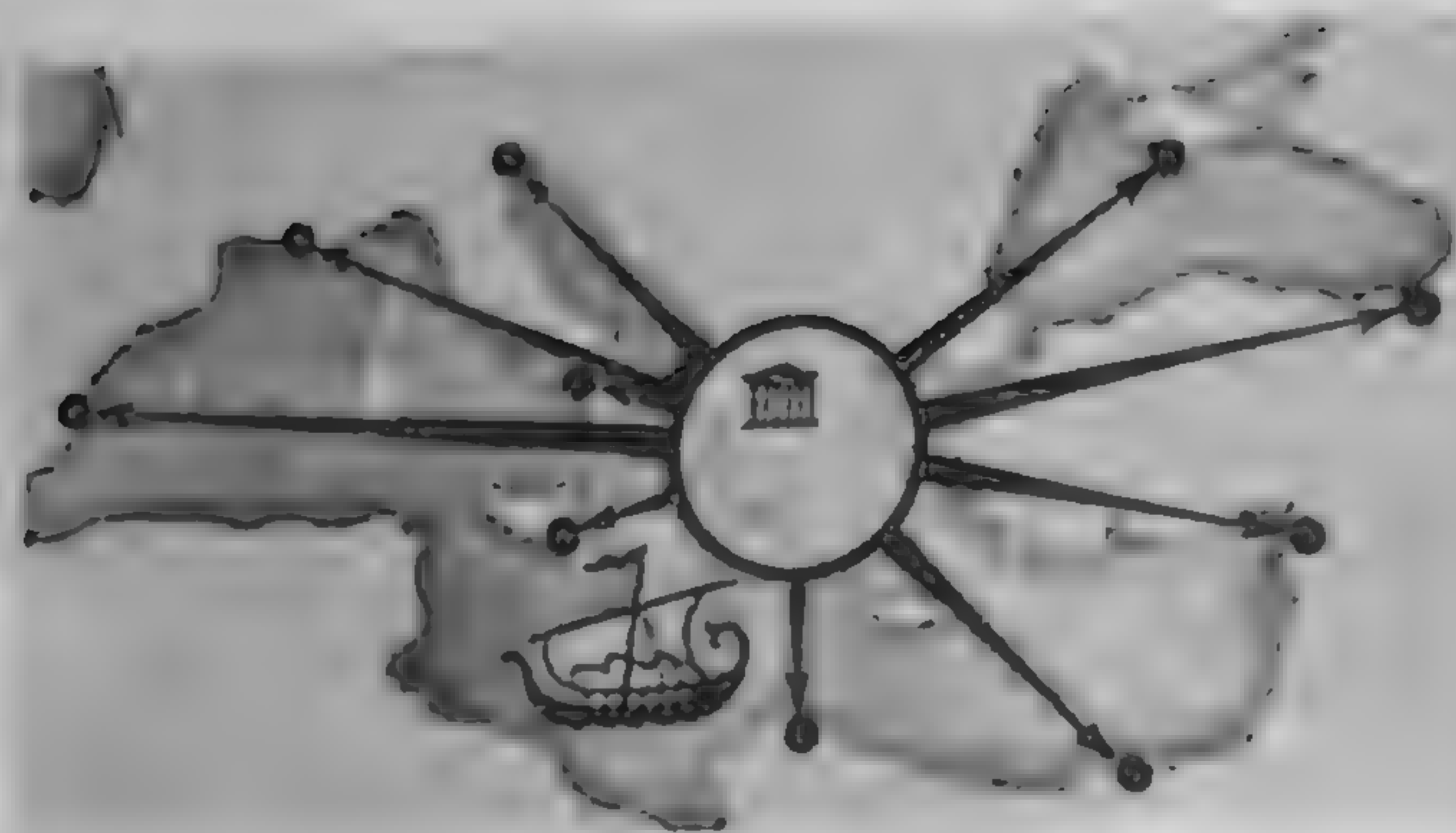
प्राचीन यूनान किन मालों का निर्यात और किन मालों का आयात करता था? चित्रों में कौन-कौनसे माल दिखाये गये हैं? शहद और पेपाइरस के लिए क्या चित्र बनाये गये हैं?

वैसी दीवार खड़ी कर देते थे। उपनिवेशक, यानी यूनान से आकर बसनेवाले लोग, इन नगरों में अपनी शिल्पशालाएं खोलते थे, आसपास की ज़मीन पर खेती करते थे, मवेशी पालते थे और देश के अंदरूनी इलाकों में रहनेवाले कबीलों के साथ व्यापार करने लगते थे। स्थानीय कबीलों के लोगों को वे दास भी बना लेते थे, जिनमें से कुछ को उपनिवेशों में ही रहने दिया जाता था और कुछ को यूनान ले जाकर बेच दिया जाता था।

शीघ्र ही उपनिवेश स्वतंत्र दासप्रथात्मक नगर-राज्य बन बैठे। बहुत से उपनिवेश यूनानी नगर-राज्यों जितने ही बड़े थे। यूनानी समुद्र में अधिक दूर नहीं जाते थे। एक प्राचीन यूनानी लेखक लिखता है कि वे झील के किनारे बैठे मेंढकों की भांति सागर तट पर बैठे रहते थे।

४. उपनिवेशों की स्थापना का महत्त्व। उपनिवेशों के साथ व्यापार की बदौलत यूनान में दस्तशिल्प की वस्तुओं की मांग बढ़ गयी। इससे यूनान में शिल्पों और व्यापार का और विकास हुआ। जो यूनानी नगर अच्छे जहाजघाटों के पास स्थित थे, वे तेज़ी से फैलने और बढ़ने लगे। उपनिवेशों से बड़ी संख्या में दासों के आयात के कारण यूनान में दासप्रथा और मजबूत बनी। जिन देशों में यूनानियों ने अपने उपनिवेश क़ायम किये, उनमें भी व्यापार का विकास हुआ, यूनानी संस्कृति फैली और स्थानीय कबीले अपनी आदिम सामुदायिक व्यवस्था छोड़कर तेज़ी से दासप्रथात्मक व्यवस्था अपनाने लगे।

हालांकि यूनानी बहुत बड़े इलाक़े में फैल गये थे, वे फिर भी अपनी मातृभाषा में ही लिखते-बोलते रहे। वे अपने को **हेलेनी** और अपनी मातृभूमि को **हेलास** कहते थे।

पांचवीं शताब्दी ईसापूर्व तक काकेशिया से लेकर स्पेन तक सारे सागर तट पर सैकड़ों यूनानी नगर-राज्य क़ायम हो चुके थे।

हेसिअड की एक नीतिकथा: बुलबुल और बाज़

कवि ने बुलबुल और बाज के रूप में किसे चित्रित किया है?

चमकीली आंखों की बुलबुल था पंजों में बाज दबाये
लिये जा रहा था अम्बर में, वह मेघों में उसे उड़ाये,
बिंधी हुई टेढ़े पंजों से, बुलबुल करती करुण-रुदन
बड़े रोब से तभी बाज ने कहा, बात तू मेरी सुन—
"अरी अभागिन ज़रा बता तो क्यों तू चीं-चीं करती है?
तुझसे कहीं शक्तिशाली मैं, तू तो व्यर्थ तड़पती है,
जैसे चाहे तू रो-गा ले, फिर भी मैं ले जाऊंगा
वहां, जिस जगह मन हो मेरा छोड़ूंगा या खाऊंगा।"

? १. एथेंस और स्पार्टा के इतिहास का हवाला देते हुए बतायें कि यूनान में राज्यों का आविर्भाव क्यों हुआ। २. यूनानी नगर-राज्यों की शासन-प्रणालियों में क्या अंतर थे? ये अंतर कैसे पैदा हुए? ३. यूनानियों ने उपनिवेश कैसे और क्यों क़ायम किये?

सातवें और आठवें अध्यायों में आपने यूनान का ग्यारहवीं से नौवीं शताब्दी ईसापूर्व तक और आठवीं से छठी शताब्दी ईसापूर्व तक का इतिहास पढ़ा। अब आप जानते हैं कि इन युगों में यूनानी कैसे रहते थे। इतिहास में युग एक दूसरे के बाद आनेवाले काल-खंडों को कहते हैं और हर युग में लोगों का जीवन उससे पहले या बाद के युगों से काफ़ी भिन्न होता है। इतिहास को युगों में बांटने से इतिहास के आम प्रवाह को अधिक अच्छी तरह से समझा जा सकता है। पृष्ठ २०८ पर दी हुई तालिका में बताया गया है कि प्राचीन यूनान का इतिहास भिन्न-भिन्न युगों में बांटा जाता है।

यूनानियों के आठवीं-छठी शताब्दी ईसापूर्व के जीवन की ग्यारहवीं-नौवीं शताब्दी ईसापूर्व के जीवन से तुलना करके बतायें कि पांचवीं शताब्दी ईसापूर्व तक:

क) यूनानियों के प्रसार में क्या परिवर्तन आये;
ख) यूनानियों की कृषि प्रणाली, शिल्पों तथा व्यापार में कौनसी नयी बातें प्रकट हुईं;
ग) यूनानियों की सामाजिक व्यवस्था में क्या परिवर्तन आये; और
घ) शासन व्यवस्था में क्या परिवर्तन हुए।

*अपनी कॉपी में "ग्यारहवीं से तीसरी शताब्दी ईसापूर्व तक यूनान के इतिहास के मुख्य युग" शीर्षक एक तालिका बनाना शुरू करें। उसका नमूना पृष्ठ २०७ पर दिया हुआ है। तालिका में यूनानियों के आठवीं-छठी शताब्दी ईसापूर्व के जीवन की मुख्य विशेषताएं लिखें।

नौवां अध्याय

पांचवीं शताब्दी ईसापूर्व में यूनान में दासप्रथा का विकास और एथेंस का उत्कर्ष

§ ३४. यूनानी-पारसीक युद्ध

(मानचित्र ४ और पृष्ठ १६२ पर दिया मानचित्र)

याद करें कि पांचवीं शताब्दी ईसापूर्व के आरंभ में पारसीक साम्राज्य कहां तक फैला हुआ था, उसमें किन-किन जातियों के लोग रहते थे (§१६, अनुच्छेद ५, पृष्ठ ८८ पर दिया मानचित्र) और एथेंस की सेना का संगठन कैसा था व उसमें किन्हें भरती किया जाता था (§ ३०-३१, अनुच्छेद ६)।

१. मैराथन की लड़ाई। पांचवीं शताब्दी ईसापूर्व में यूनान पर बाहर से आक्रमण का खतरा पैदा हो गया। शक्तिशाली पारसीक सम्राट **दारयवउश (दारा** अथवा **डेरियस)** प्रथम ने ईजियन सागर के द्वीपों के बहुत बड़े भाग और उत्तरी तट को जीत लिया था और अब सारे यूनान पर अपना प्रभुत्व क़ायम करने का स्वप्न देख रहा था।

४९० ईसापूर्व में पारसीक सेना ने ईजियन सागर पार किया और एटिका में **मैराथन के मैदान** में उतर आयी, जहां से एथेंस केवल ४२ किलोमीटर दूर था।

यद्यपि एथेंसी सेना पारसीक सेना से कहीं छोटी थी, पर उसने अपनी मातृभूमि की जी तोड़कर रक्षा की। मैराथन के मैदान में हुई घमासान लड़ाई में पारसीकों की पराजय हुई और उन्हें ताबड़तोड़ जहाजों पर सवार होकर यूनान की भूमि से भागना पड़ा। (इस लड़ाई के बारे में विस्तार से पृष्ठ १६३ पर और रंगीन चित्र ११ में बताया गया है।)

२. यूनान पर क्षयार्श का आक्रमण। ४८० ईसापूर्व में एक विशाल सेना और बेड़ा जमा करके फ़ारस पुनः यूनान पर चढ़ आया। इस बार पारसीक सेना का नेतृत्व **क्षयार्श (जेरक्सीज)** कर रहा था, जो दारयवउश प्रथम की मृत्यु के बाद सम्राट बन बैठा था। वह कहा करता था: "जो हमारे सामने अपराधी हैं (अर्थात जो पारसीकों के विरुद्ध लड़े थे), उनपर भी और जो निरपराध हैं, उनपर भी दासता का जूआ लादेंगे।"

क्षयार्श की सेना में पारसीकों के अलावा फ़ारस के अधीनस्थ देशों के सैनिक भी थे, जैसे असीरियाई, मिस्री, बेबीलोनी, एशिया कोचक के यूनानी, आदि। पारसीक सम्राट ने फ़िनीशियनों को अपनी सेना के लिए युद्धपोत बनाने पर बाध्य किया। गैर-पारसीक जातियों के सैनिक बड़ी अनिच्छा से उसके यूनान अभियान में भाग ले रहे थे।

उत्तरी यूनान पर बिना किसी लड़ाई के ही क्षयार्श की सेना का क़ब्ज़ा हो गया। किंतु मध्य और दक्षिणी यूनान के कुछ नगर-राज्य शत्रु आक्रमण का मुक़ाबला करने के लिए एकजुट हो गये थे। स्पार्टा के शासक **लियोनिडास** के नेतृत्व में यूनानियों के एक दस्ते ने **थर्मापिली** के संकीर्ण दर्रे पर मोर्चाबंदी कर ली, ताकि पारसीकों को मध्य यूनान में घुसने से रोका जा सके।

१. मैराथन की लड़ाई। २. थर्मापिली के दर्रे की लड़ाई।

३. थर्मापिली की लड़ाई। थर्मापिली के समीप पहुंचकर क्षयार्श ने लियोनिडास को संदेश भेजा कि आत्मसमर्पण करके अपने हथियार पारसीकों को सौंप दें। लियोनिडास ने उत्तर दिया, "आओ और ले लो"। इसपर क्षयार्श के एक दूत ने यूनानियों को पारसीकों की विराट सेना का हौवा दिखाते हुए कहा: "हमारे तीर और बल्लम सूर्य को भी ढक देंगे"। यूनानी सेनानायक ने उत्तर दिया, "कोई बात नहीं, हम अंधेरे में लड़ने को तैयार हैं।"

दो दिन तक पारसीक यूनानियों पर हमले करते रहे। पारसीक सेनानायकों ने कोड़े मार-मारकर अपने सैनिकों को लड़ाई में झोंका। यूनानियों ने उनके सभी हमले विफल कर दिये। किंतु रात में एक देशद्रोही ने पारसीकों को पगडंडियों से पहाड़ों के पार पहुंचा दिया। लियोनिडास ने यह देखकर कि यूनानी घिरनेवाले हैं, स्पार्टनों के अलावा शेष सभी योद्धाओं से पीछे हट जाने को कहा। उसके साथ तीन सौ स्पार्टन योद्धा संख्या में अपने से कहीं बड़ी पारसीक सेना को तब तक रोके रहे, जब तक कि दूसरे यूनानी सकुशल पीछे न हट गये। इस असमान लड़ाई में लियोनिडास समेत सभी स्पार्टन खेत रहे।*

* जहां यह लड़ाई हुई थी, वहां बाद में लियोनिडास और उसके योद्धाओं के सम्मान में एक स्मारक खड़ा किया गया, जिसपर लिखा हुआ था: "ऐ पथिक, स्पार्टनों को जाकर बताना कि अपने कर्तव्य का पालन करते हुए हमने यहां मृत्यु का वरण किया था।"
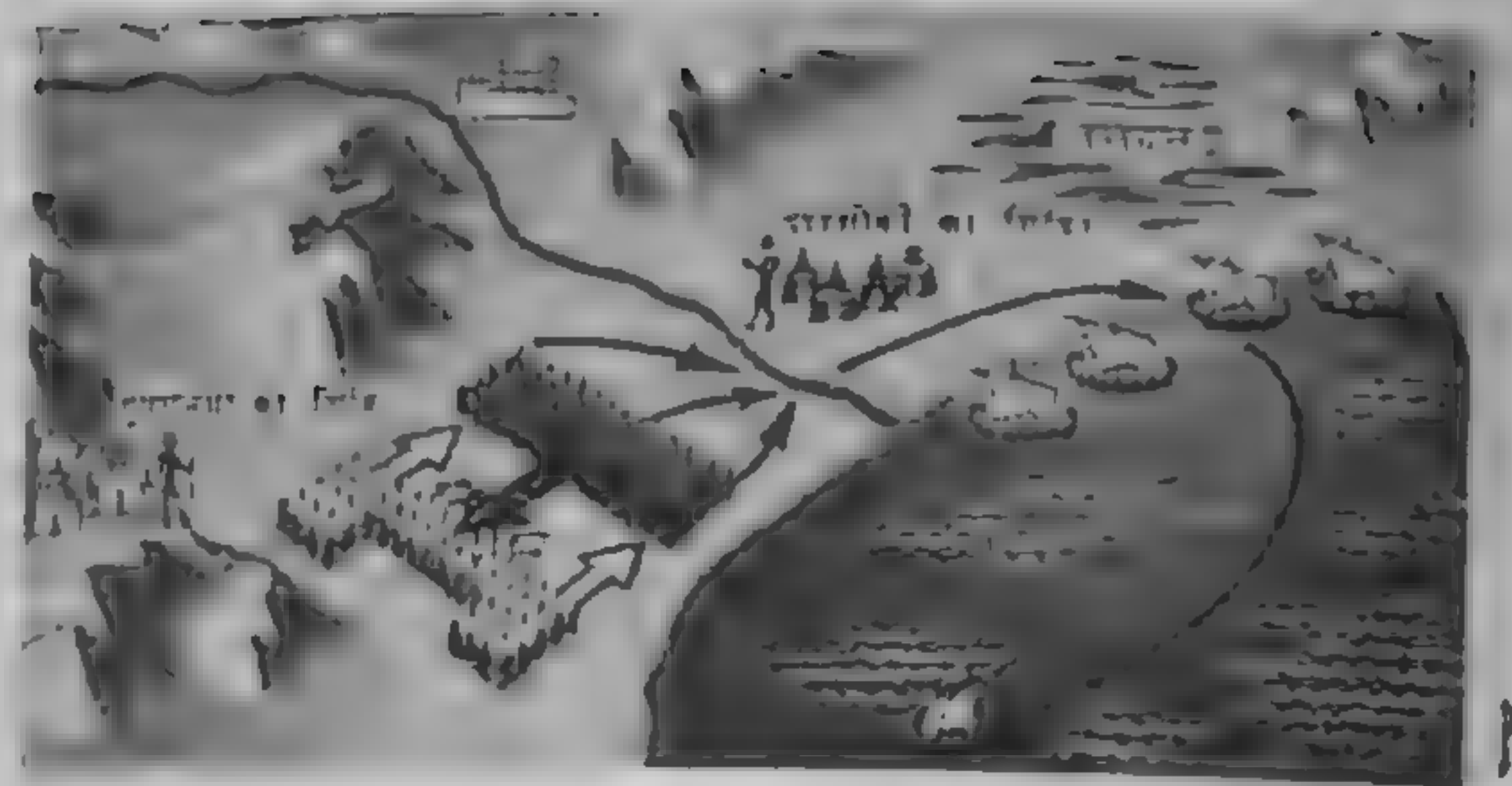
पारसीकों ने मध्य यूनान पर अधिकार कर लिया। एथेंसवासी अपना नगर छोड़कर भाग गये। लड़ने में समर्थ सभी पुरुष स्थलसेना या नौसेना में भर्ती हो गये। स्त्रियों, बच्चों, बूढ़ों और दासों को बेड़े की देखरेख में पेलोपोनेसस और **सालमिस** द्वीप पर भेज दिया गया। पोतों और द्वीप से एथेंसवासियों ने देखा कि क्षयार्श के आदेश पर उनके नगर को आग लगा दी गयी है और वह धू-धू जल रहा है।

४. सालमिस की लड़ाई। यूनानियों का संयुक्त बेड़ा एट्टिका और सालमिस के बीच की खाड़ी में खड़ा था। एथेनियों के पास २००, यानी और सभी यूनानी नगरों से भी ज़्यादा युद्धपोत थे। इन पोतों पर दोनों ओर डांड़ों की तीन-तीन कतारें थीं। इसलिए उन्हें **ट्रिएरीस** कहा जाता था। हर पोत पर १८० मल्लाह और २०-३० सैनिक होते थे। पोत पारसीकों के बड़े और भारी पोतों के मुक़ाबले कहीं अधिक तेज चलते थे, आसानी से अपनी स्थिति बदल सकते थे और खुले सागर में भी निकल सकते थे। यूनानी नाविक सालमिस की खाड़ी की उथली और चट्टानी जगहों से भली भांति परिचित थे।

क्षयार्श को अपने विशाल बेड़े की विजय में विश्वास था, इसलिए उसने खाड़ी में जाकर यूनानियों से टक्कर लेने का आदेश दिया। एट्टिका के ऊंचे तट पर अपने सामंतों के साथ खड़ा वह अपने पोतों को यूनानी पोतों के निकट पहुंचता देख रहा था। उधर सालमिस द्वीप से यूनानी स्त्रियां और बूढ़े भी दोनों बेड़ों को देख रहे थे। एथेंनी योद्धाओं के सामने दो ही विकल्प थे: विजय या मृत्यु। यदि वे पीछे हटते, तो उनके परिवारों को दास बना लिया जाता।

जब पारसीक बेड़ा खाड़ी में घुसा, तो सभी यूनानी मल्लाहों ने एक साथ डांड़ें चलाना शुरू कर दिया और उनके पोत शत्रु पर टूट पड़े। तेज यूनानी ट्रिएरीसों ने पारसीक पोतों की डांड़ें तोड़ डालीं और अपने अग्रभागों से उनमें छेद कर दिये। पारसीक बेड़े में खलबली मच गयी। बहुत से पारसीक पोत आपस में या जलगत चट्टानों से टकराकर चकनाचूर हो गये और बहुत से रेती में जा फंसे। पारसीकों के कुल मिलाकर कोई २०० पोत डूब गये। शेष को युद्ध स्थल से भाग जाना पड़ा।

५. यूनानियों की पूर्ण विजय। पारसीक बेड़े की पराजय ने क्षयार्श को बेहद हड़बड़ाहट में अपनी सेना का एक भाग साथ में लेकर यूनान छोड़ने को मजबूर कर दिया। उसे डर था कि यूनानी पोत उसका वापस फ़ारस लौटने का मार्ग अवरुद्ध कर देंगे।

यूनानियों की सेना क्षयार्श की पीछे बची हुई सेना पर प्रहार करती रही। ४७९ ईसापूर्व में **प्लाटेई नगर** के निकट दोनों सेनाओं के बीच लंबी और घमासान लड़ाई हुई, जिसमें पारसीक परास्त हुए। उन्हें यूनान से खदेड़ दिया गया।

पारसीकों की अधीनता में स्थित यूनानियों की मुक्ति के लिए लगातार संघर्ष और ३० वर्ष तक चलता रहा।

अनेक सागर तटवर्ती यूनानी नगर-राज्यों ने आपस में समझौता करके एक संघ बना लिया। उसके सभी सदस्यों में सबसे शक्तिशाली एथेंस था। एथेनियों के नेतृत्व में यूनानियों की संयुक्त

11-177
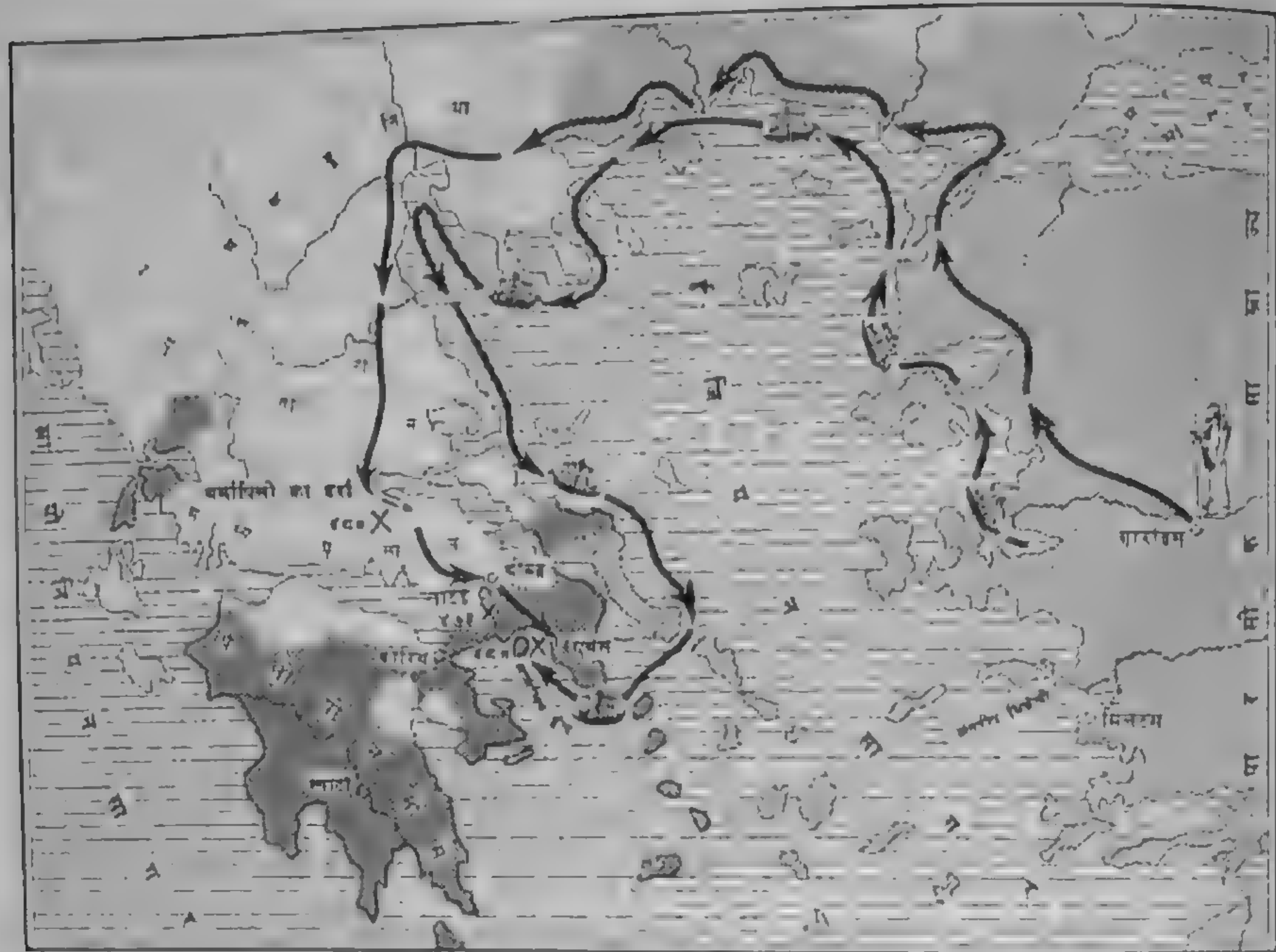
४८० ईसापूर्व तक पारसीकों के अधिकार और आश्रय में स्थित प्रदेश

पारसीकों से लड़ाई में भाग लेनेवाले यूनानी राज्य

४८० ईसापूर्व में क्षयार्श की सेना और नौसैनिक बेड़े का अभियान

× ४८० महत्त्वपूर्ण लड़ाइयों के स्थान व तिथियां

६५ ० ६५ १३० कि० मी०

१. क्षयार्श की सेना का यूनान पर आक्रमण।
२. सालमिस की लड़ाई।

सेना ने पारसीकों के बेड़े पर भारी प्रहार किये और एशिया कोचक के तट पर भी कई साहसिक धावे बोले। पारसीक सम्राट को शांति संधि करने और विभिन्न द्वीपों तथा एशिया कोचक में स्थित यूनानी नगरों की स्वतंत्रता को मान्यता देने को मजबूर होना पड़ा।

मैराथन की लड़ाई का हेरोडोटस और दूसरे प्राचीन यूनानी लेखकों की रचनाओं से प्राप्त वृत्तांत

मैराथन की लड़ाई में यूनानी स्त्राटेगोसों (सेनानायकों) का युद्धकौशल और यूनानी योद्धाओं के शौर्य-पराक्रम कैसे प्रकट हुए?

एथेंस में जब यह समाचार पहुंचा कि पारसीकों ने मैराथन के मैदान में उतरना शुरू कर दिया है, तो सभी बेहद चिंतित हो उठे। कुछ एथेनी अभिजात पारसीकों से जा मिलने को तैयार थे, क्योंकि वे सोचते थे कि पारसीक सम्राट की मदद से वे सामान्य जन पर अपनी सत्ता पुनः स्थापित कर लेंगे।

एथेनियों के पास बहुत कम समय था। जल्दी-जल्दी एथेनी सेना जुटायी गयी। उसमें भारी हथियारों से लैस १० हजार से अधिक योद्धा थे। एक हजार योद्धा प्लाटेई नामक छोटे से नगर ने भेजे। स्त्राटेगोसों* के नेतृत्व में सेना शत्रु का मुक़ाबला करने निकल पड़ी। मैराथन के मैदान के इर्दगिर्द की पहाड़ियों से एथेनी पारसीकों का सैन्य शिविर और तट पर खड़े पोत साफ़-साफ़ देख सकते थे। पारसीक सेना एथेनी सेना की तुलना में कहीं अधिक विशाल थी।

शत्रु को एथेंस की ओर न बढ़ने देने के लिए यूनानियों ने पहाड़ियों पर मोर्चाबंदी कर ली। पारसीक अश्वसेना वहां उनपर हमला नहीं कर सकती थी। यूनानी सेना का संचालन अनुभवी स्त्राटेगोस मिल्टिआडस को सौंपा गया।

कोई दो सप्ताह तक दोनों सेनाएं आमने-सामने खड़ी रहीं। अंततः यूनानी सेना ने फ़ैलेंक्स बनाकर मैदान की ओर कूच कर दिया। मिल्टिआडस जानता था कि पारसीकों के सर्वोत्कृष्ट दस्ते उनकी सेना के मध्य में स्थित हैं। अतः उसने अपनी मुख्य शक्ति फ़ैलेंक्स की बाज़ुओं में संकेंद्रित की।

शत्रु द्वारा घनघोर बाण-वर्षा के बावजूद यूनानी लगातार पारसीकों पर हमला करते रहे। उनका उत्साह और बल इस कारण और भी बढ़ गया था कि वे अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए, अपनी माताओं, पत्नियों और बच्चों के जीवन व स्वतंत्रता के लिए लड़ रहे थे।

दोनों सेनाएं आपस में गुंथ गयीं। सर्वोत्कृष्ट पारसीक दस्तों ने एथेनी फ़ैलेंक्स के कमज़ोर मध्य भाग को भेद डाला और विजय की खुशियां मनाने लगे। किंतु इस बीच फ़ैलेंक्स की बाज़ुओं में स्थित योद्धाओं ने शत्रु दल पर प्रबल प्रहार करके उसे भागने पर मजबूर कर दिया। इसके बाद सर्वोत्कृष्ट पारसीक दस्तों को भी दोनों ओर से घेर लिया गया। पारसीक सैनिक यूनानियों के इस ज़बर्दस्त हमले के सामने न टिक पाये और अपने पोतों की ओर भागे। यूनानियों ने सात पोतों पर क़ब्ज़ा कर लिया। दूसरे पोत बचकर भाग निकले।

एक एथेनी योद्धा अपने सह-नागरिकों को विजय का हर्षदायी समाचार यथाशीघ्र देने के लिए मैराथन से दौड़ता-दौड़ता एथेंस पहुंचा। मैराथन से एथेंस ४२ किलोमीटर दूर था। एथेंस में प्रवेश करते ही वह चिल्लाया, "खुशियां मनाओ, एथेंसवासियो! हम जीत गये हैं!" और फिर गिरकर वह वहीं ढेर हो गया। इस अपूर्व कारनामे की याद में ४२ किलोमीटर की मैराथन दौड़ प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं।

---

* स्त्राटेगोस एथेनी सेना और बेड़े के रणनीति में कुशल, निर्वाचित सेनानायकों को कहते थे।

१,२,३. यूनानी योद्धा। (प्राचीन यूनानी चित्र।)
४,५. पारसीक योद्धा। (प्राचीन चित्र।)

इस्किलस के नाटक 'पारसीक' से

महान यूनानी कवि और नाटककार इस्किलस ने, जिसने सालामिस की लड़ाई में भाग लिया था, अपने नाटक 'पारसीक' में इस लड़ाई का वर्णन किया है।

डटे रहेंगे रण-आंगन में
तैयारी यूनानी करते, राष्ट्रगीत निज पावन गायें,
लोहा लेंगे क्रूर शत्रु से, वे तो केवल इतना चाहें...
एकसाथ मिल सहसा सबने अपने चप्पू सभी चलाये,
लहरें फेनिल हुईं, झाग ही झाग उभरकर ऊपर आये...
दायें बाजूवाले उनके पोत बढ़े आगे जाते थे
उनके पीछे पूरा बेड़ा, सब अनुशासन दिखलाते थे,
इसी समय यह नारा गूंजा—"ओ यूनानी बढ़ो, बढ़ो!
अपनी मातृभूमि, बीवी-बच्चों की रक्षा करो, करो,
दादों-परदादों के मन्दिर और देवता जो उनमें
हों, कब्रिस्तान बचाओ, जो सोते उन कब्रों में,
सब कुछ तुम्हें बचाना है आगे बढ़ते जाना है!"

उधर पारसीक भी ललकारें, बढ़ते आयें, पोत बढ़ाये
तांबा-जड़े सिरोंवाले दो पोत सामने टकराये
सभी ओर बस, जोर-शोर से घमासान छिड़ गयी लड़ाई
शुरू शुरू में पारसीकों ने बड़ी वीरता दिखलाई,
किन्तु गड्ड-मड्ड हुआ सभी जब समझ न जब कुछ भी आये
तब जहाज पारसीकों के आपस में ही टकराये,
अपनों को ही मार मारकर अजी, पारसीक मरते थे
जो बचते थे शेष, सफ़ाया यूनानी भी करते थे...
डूबे उनके पोत बचे कुछ टुकड़े, ऐसा हाल हुआ
रक्त सैनिकों का बहता था, सागर का जल लाल हुआ,
सागर की चट्टानों पर भी छिछे पारसीक मरे हुए
सागर-तट पर भी थे उनके ढेरों मुर्दे पड़े हुए,
अफ़रा-तफ़री मची, भाग लीं अब फ़ारस की सेनायें,
हिम्मत हारे सैनिक ताब न दुश्मन की थे ला पाये।

? १. पारसीकों के साथ यूनानियों की लड़ाइयों की एक तालिका बनायें

लड़ाई कहां हुई थी	कब हुई थी	कौन जीता था	यूनानी-पारसीक संघर्ष में क्या महत्त्व था
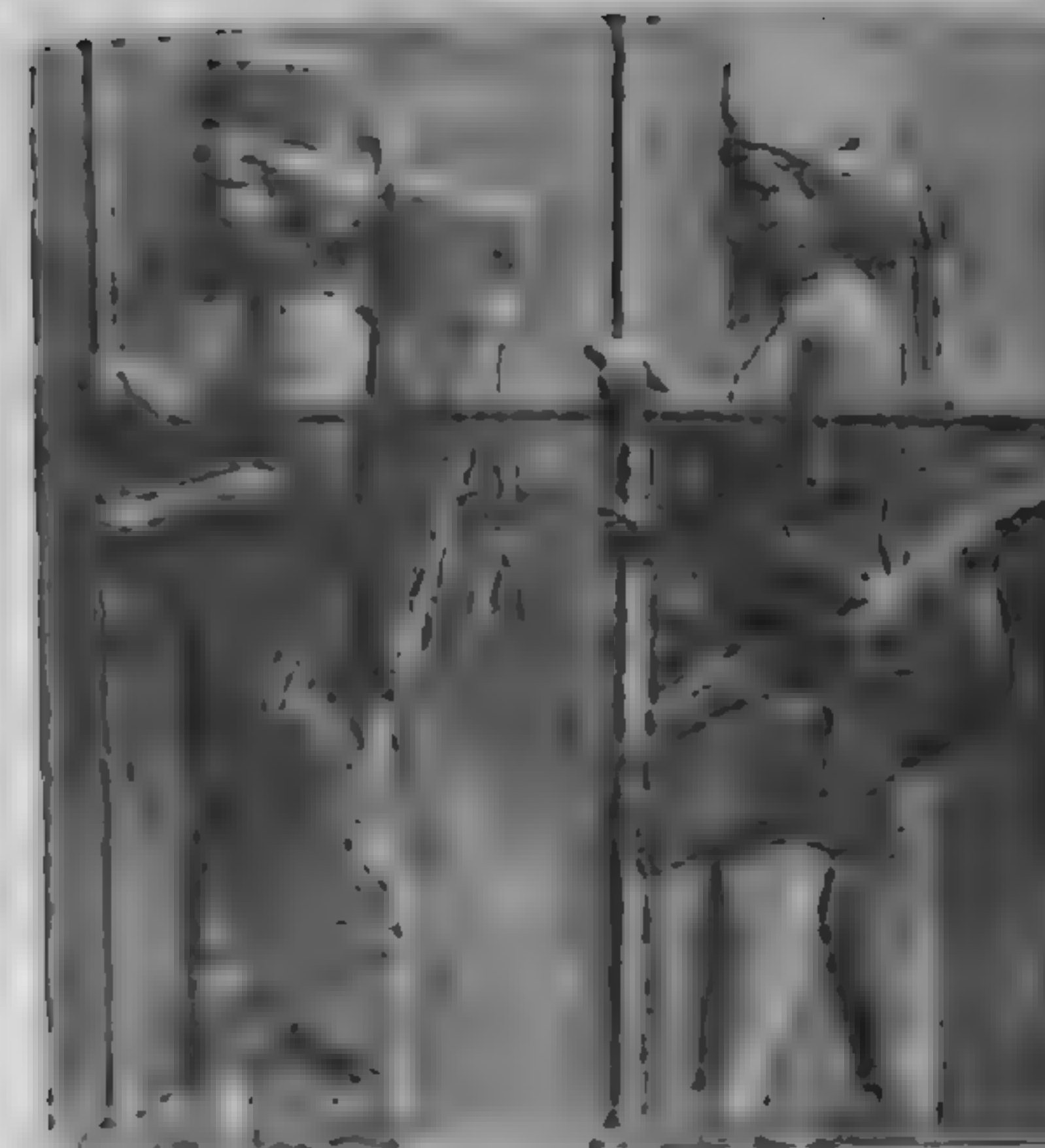
? २. पारसीकों के साथ संघर्ष में यूनानियों की विजय क्यों हुई? कम से कम तीन मुख्य कारण बतायें। यदि इस प्रश्न का उत्तर देने में कठिनाई हो, तो पहले इन प्रश्नों के उत्तर तैयार करें: क) यूनानी योद्धा पारसीकों से बेहतर क्यों लड़ते थे? ख) यूनानी सेना और बेड़े की [illegible] से भली भांति [illegible] कैसे किया जा सका? ग) क्या कोई यूनानी नगर अकेले ही क्षयार्श की सेना व बेड़े का मुकाबला कर सकता था? ३. मैराथन की लड़ाई और सोलन के सुधारों के बीच कितने वर्ष गुज़रे थे? यह लड़ाई कितने वर्ष पहले हुई थी? ४८० ईसापूर्व के पहले और बाद कौनसे वर्ष थे? *४. छठी शताब्दी ईसापूर्व में [illegible] ने [illegible] *५. [illegible] जल की विजय से मैराथन और सालमिस की लड़ाइयों में यूनानियों की विजय में क्या योग मिला? *६. एक यूनानी योद्धा के शब्दों में थर्मापिली या सालमिस की लड़ाई का विवरण लिखिये।

§ ३५. पांचवीं शताब्दी ईसापूर्व के यूनान में दासप्रथा

(मानचित्र ४)

याद करें कि एथेंस में लोगों को दास बनाने के किस तरीक़े पर, क्यों और कब प्रतिबंध लगाया गया था (§३०-३१, अनुच्छेद ८)।

१. यूनान में दासों की बाढ़। पांचवीं शताब्दी ईसापूर्व में यूनान में दासों की मानो बाढ़ ही आ गयी। उनकी संख्या पहले के मुकाबले कहीं ज्यादा हो गयी थी।

अधिकांश दास लड़ाइयों से मिलते थे। युद्धबंदियों को ही नहीं, शत्रु देश में पकड़ी हुई स्त्रियों और बच्चों को भी दास बना लिया जाता था। एशिया [illegible] पर एथेंस के एक आक्रमण के दौरान ही २० हजार से ज्यादा लोगों को पकड़कर बेच डाला गया था।

जलदस्यु या समुद्री डाकू भी, जिन्हें **पीरेटीस** कहते थे, खुले सागर में व्यापारिक पोतों पर या फिर तटवर्ती बस्तियों पर हमले करके लोगों को पकड़ लेते थे और दासों की तरह बेच डालते थे।

पांचवीं शताब्दी ईसापूर्व में दासता के स्रोत :

युद्धबंदी, जलदस्युता, कर्जदारी, दासियों की संतान।

दास श्रम इस्तेमाल किये जाने के मुख्य क्षेत्र :

खानें, शिल्प, कृषि, घरेलू कामकाज।

भूमध्यसागर और काला सागर के तटों पर स्थित देशों से यूनानी मालों के एवज में दासों का आयात किया जाता था।

दासी का बच्चा दास होता था और अपनी मां के स्वामी की संपत्ति माना जाता था। किंतु यूनान में दासियों का जीवन अत्यंत कठिन होने से उनके बच्चे विरले ही जिंदा रह पाते थे।

यूनान में अधिकांश दास विदेशी थे। मगर कुछ दास यूनानी भी थे। कतिपय यूनानी नगर-राज्यों में कर्ज अदा न कर पाने पर दास बना लेने का रिवाज पहले की तरह ही जारी था।

२. दासों की मंडियां। लगभग सभी यूनानी नगरों में दासों की मंडियां थीं। उनमें "माल" की कमी कभी नहीं रहती थी। वहां मर्दों, औरतों और यहां तक कि नन्हे-नन्हे बच्चों को भी खरीदा-बेचा जाता था। दास के सीने पर एक तख्ती लटकी होती थी, जिसपर लिखा रहता था कि वह किस देश या जाति का है, आयु कितनी है और क्या-क्या काम कर सकता है। ग्राहक इस "जिंदा माल" को खूब देखभालकर, उसकी मांसपेशियां भली भांति टटोलकर, उसकी भार उठाने, दौड़ने, कूदने जैसी परीक्षाएं लेकर ही खरीदते थे।

३. दासों के काम। यूनान में सबसे अधिक दास उन प्रदेशों में थे, जहां पत्थर और धातुओं की खानें थीं या शिल्प काफी विकसित थे। **यूनानी सबसे भारी काम दासों से करवाते थे।** खनिज धातु और संगमरमर दास ही निकालते थे। कोई स्वतंत्र यूनानी, यहां तक कि गरीब भी खानों में काम नहीं करता था। व्यापारिक पोतों पर भारी-भारी डांड चलाने का काम भी दास-मल्लाहों से ही करवाया जाता था।

पांचवीं शताब्दी ईसापूर्व में संपन्न यूनानियों ने बड़ी-बड़ी शिल्पशालाएं खोल रखी थीं जिनमें से कुछ में आठ-आठ, नौ-नौ दर्जन दास काम करते थे। उन्हें सामूली, मगर सबसे भारी काम सौंपे जाते थे। मिसाल के लिए, मिट्टी के बरतन बनानेवाली शिल्पशालाओं में वे पानी और ईंधन ढोते थे, मिट्टी गूंधते थे, चाक चलाते थे। बरतन गढ़ने और उसपर चित्र बनाने का काम आम तौर पर स्वतंत्र लोग करते थे। (देखें रंगीन चित्र १३।)

कृषि के क्षेत्र में दासों की संख्या शिल्प-उद्योगों के मुकाबले कम थी। किसान जुताई, बुवाई, कटाई, आदि के काम खुद ही करते थे। किंतु दास बड़ी भूसंपत्तियों के स्वामियों ही नहीं, संपन्न किसानों के पास भी होते थे। वे आटा-चक्कियां चलाते थे, शराब बनाने के लिए पैरों से अंगूर कुचलकर रस निकालते थे, जैतून का तेल निकालने के लिए चक्कियां चलाते थे, भारी-भारी टोकरियां उठाकर मंडियों में पहुंचाते थे। जमीन की जुताई का काम आम तौर पर दासों को नहीं सौंपा जाता था।

घरेलू नौकर सामान्यतः दास ही होते थे। खाते-पीते घर में ३-४ और अमीर घर में ४०-५० दास-दासियों का होना आम बात थी।

४. दासों को सजा। दास से काम डरा-धमकाकर या सजा देकर ही करवाया जा सकता था। दास अपनी मेहनत से जो कुछ भी पैदा करता था, उसपर चूंकि उसके स्वामी का हक होता था, इसलिए वह स्वेच्छा से काम नहीं करता था। 'ओडिसी' में एक स्थल पर कहा गया है "दास लापरवाह होता है; स्वामी यदि कठोरतापूर्वक उससे काम न करवाये, तो वह खुद टस से मस न होगा।"

दासों से निरीक्षकों की निगरानी में काम करवाया जाता था। ज्यों ही कोई सुस्ताने के लिए काम में ढिलाई दिखाता, निरीक्षक उसपर कोड़ों की वर्षा कर देता। कोड़े की नोक पर प्रायः तौर पर सीसे का डला बंधा होता था। शायद ही कोई दास ऐसा होता था कि जिसकी पीठ कोड़े की मार के निशानों से ढकी न हो।

एक तत्कालीन लेखक ने मालिक द्वारा दासों को दी जानेवाली यंत्रणाओं का जो वर्णन किया है, उसे पढ़कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं "कोड़े से पीटो, गला घोंटो, कुचलो, झुलसाओ, पेट पर ईंटों का बोझ रखो, लतियाओ, हाथ-पैर मरोड़ो, चाहो तो नाक में सिरका डालो, जो चाहो, करो।"

५. दासों का अपने मालिकों से संघर्ष। दास अपने स्वामियों को नुकसान पहुंचाने का कोई मौका नहीं चूकते थे। वे काम के औजार **तोड़ डालते थे**, जानवरों को **अपंग बना देते थे**, काम में हर तरह से **कोताही करते थे**। प्रायः वे **भागने** की कोशिश करते थे, हालांकि भली भांति जानते थे कि पकड़े जाने पर उन्हें असह्य यंत्रणाएं दी जायेंगी। बहुत बार वे अपने निर्दयी स्वामियों को पकड़कर **मार डालते थे**। कभी-कभी वे **विद्रोह** भी कर बैठते थे। **यह वर्ग संघर्ष था, दासों का दासस्वामियों के विरुद्ध संघर्ष था।**

पांचवीं शताब्दी ईसापूर्व में जब स्पार्टा में भयंकर भूचाल आया और काफी विनाश हुआ, तो नगर और उसके आसपास के हेलटों ने स्वर्णिम अवसर देखकर दासस्वामियों से बदला लेने

१. खानों में काम करनेवाले दास। (प्राचीन यूनानी कलश पर बना चित्र।) २. एथेंस की एक कुम्हार-शिल्पशाला। (प्राचीन यूनानी कलश पर बने चित्र।) पुस्तक में वह स्थल ढूंढें, जहां इस चित्र की चर्चा हुई है। ३. एथेंस और पिरेयस का विहंगम दृश्य। (पुनर्कल्पित।)

के लिए सहसा उनपर धावा बोल दिया। स्पार्टावासियों ने हमला तो रोक दिया, पर विद्रोह को अकेले ही कुचलना उनके बस की बात न थी। उन्हें दूसरे नगर-राज्यों के दासस्वामियों से मदद मांगनी पड़ी। डर से सहमे और घबराये हुए स्पार्टन दूत हेलटों के विरुद्ध मदद के लिए रोये-गिड़गिड़ाये। कुछ नगर-राज्यों ने स्पार्टा की मदद की। हेलटों के एक भाग ने फिर भी आजादी पा ली और स्पार्टा छोड़ दिया।

? १. पांचवीं शताब्दी ईसापूर्व में यूनान में दास कैसे बनाये जाते थे? २. यूनान में दासों को क्या काम करने पड़ते थे? ३. वे कौनसी बातें हैं, जो दिखाती हैं कि प्राचीन पूर्वी देशों के मुकाबले यूनान में दासप्रथात्मक व्यवस्था का अधिक विकास हुआ था? ४. दास अपने स्वामियों के विरुद्ध किन तरीकों से लड़ते थे? कम से कम छः तरीके बतायें। दासों का संघर्ष वर्ग संघर्ष क्यों था?

§३६. पांचवीं शताब्दी ईसापूर्व के मध्य में एथेंस का शक्ति-प्रसार और समृद्धि

(मानचित्र ४ और ५)

१. एथेनी नौसैनिक संघ। एथेंस के नेतृत्व में यूनानी नगर-राज्यों का संघ फ़ारस के साथ संधि हो जाने के बाद भी बना रहा। इस संघ में २०० से अधिक नगर-राज्य शामिल थे। संघ की संयुक्त नौसेना और स्थलसेना थी। प्रत्येक सदस्य को संघ की नौसेना के लिए एक निश्चित संख्या में पोत देने पड़ते थे या फिर संघ के सामूहिक कोष में एक नियत धनराशि अदा करनी पड़ती थी।

संघ का सैन्य-संचालन एथेनी सेनानियों के हाथों में था। संघ का सामूहिक कोष भी एथेंस ले आया गया और एथेंसवासी ही उसका प्रबंध करने लगे। वे तय करते थे कि कौन सदस्य कितना धन या कितने पोत देगा। फलस्वरूप संघ **एथेनी नौसैनिक संघ** कहलाया जाने लगा और एथेंसवासियों का नाम ही "सागरस्वामी" पड़ गया।
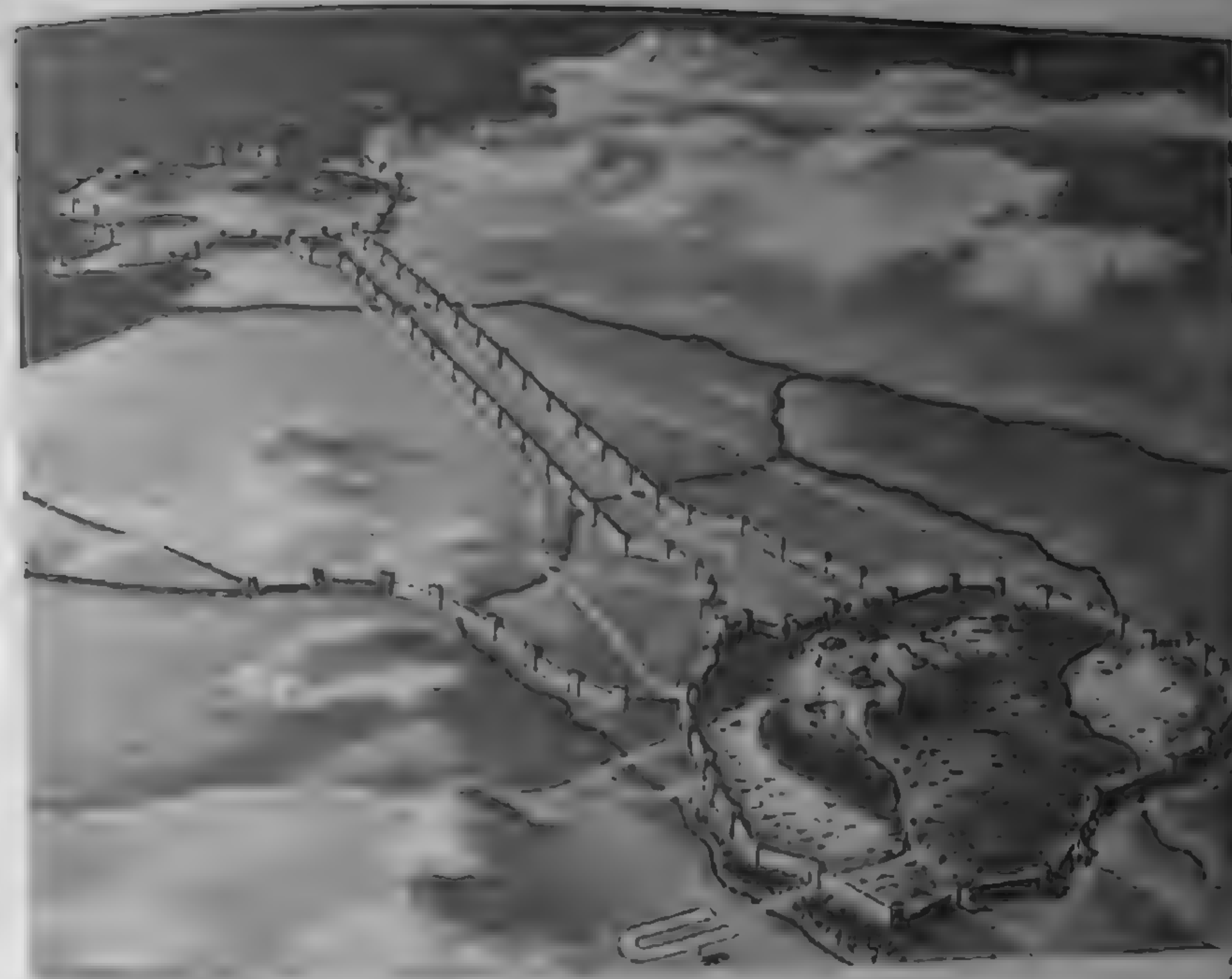
२. एथेनी सागर-व्यापार का विकास। एथेंस की सागर-शक्ति में वृद्धि के कारण उसके व्यापार का और भी विकास हुआ। एथेनी व्यापारिक पोत अपने नौबेड़े की रक्षा में भूमध्यसागर और काला सागर में दूर-दूर तक की यात्राएं करते थे। एथेंस से छः किलोमीटर दूर तक शांत और गहरी खाड़ी के तट पर एथेनियों ने **पिरेयस** नामक एक बंदरगाह बनाया, जिसमें अनेक गोदाम और पोत-निर्माण गोदियां भी थीं। पिरेयस में पंटिकापेयस (काला सागर तट पर स्थित यूनानी उपनिवेश), सीरिया, मिस्र, सिसिली और दूसरी जगहों से आये पोतों से माल उतारे जाते थे और एट्टिका तथा दूसरे यूनानी प्रदेशों से उत्पादित माल लादकर ये पोत पुनः सुदूर देशों के लिए रवाना हो पड़ते थे। (देखें रंगीन चित्र १२।) पुरातत्त्ववेत्ताओं को यूनान से दूर स्थित देशों में आज भी जब तब खुदाइयों में ऐसे पूरे के पूरे या टूटे हुए अम्फोरा (कलश) मिल जाते हैं, जिन्हें पांचवीं शताब्दी ईसापूर्व में एथेंस में तैयार किया गया था। बंदरगाह में पहुंचनेवाले सभी मालों पर सौदागरों को व्यापार-शुल्क, यानी चुंगी देनी पड़ती थी।

व्यापार के विकास से शांतिकाल में भी एथेंस में "जिंदा माल", अर्थात दासों का आयात पूर्ववत जारी रहा। एथेंस में यूनान की एक सबसे बड़ी दास मंडी थी।

३. एथेंस की चांदी की खानों में। एथेनी राज्य की चांदी की खानों में हजारों दास काम करते थे। भूमि के नीचे गहराई पर उन्हें धुआं उगलती मशालों के मंद उजाले में

इन्हीं नाम काम करते थे। वह प्रतिभाशाली और सुशिक्षित आदमी था। एथेंस में भी वहां अच्छे वक्ताओं की कमी न थी, पेरिक्लीज अपनी उत्कृष्ट वक्तृत्व शक्ति के लिए प्रसिद्ध था। वह सदा शांत और संयत रहता था, किंतु जब क्रोध में आकर बोलता था, तो यूनानियों का कहना है कि अपने गर्जन और तड़ित प्रहार से शत्रुओं को भूमिसात कर देनेवाले देव ज़ीयस जैसा बन जाता था।

४४३ ईसापूर्व में जन सभा ने पेरिक्लीज को राज्य के सर्वोच्च पद – **प्रथम सेनानायक** के पद – के लिए निर्वाचित किया। उसके बाद से एथेंस के शासन और एथेनी नौसैनिक संघ के संचालन में उसकी भूमिका और भी बढ़ गयी।

पेरिक्लीज समस्त यूनान को एकजुट करके उसपर एथेंस का प्रभुत्व कायम करना चाहता था। उसने हर संभव तरीके से नौसैनिक संघ को सुदृढ़ बनाया और जो राज्य उसके सदस्य न थे, उन्हें उसकी सदस्यता स्वीकार करने के लिए प्रेरित किया। संघ में एथेंस के प्रभुत्व से नाराज कुछ नगर-राज्यों ने उससे निकलने की कोशिश की, मगर पेरिक्लीज ने बल-प्रयोग करके उन्हें दबा दिया। मित्र-राज्यों के प्रदेशों में उसने भूमिहीन एथेनियों के उपनिवेश स्थापित किये।

एथेंस की जन सभा में पेरिक्लीज ने कई सार्वजनिक भवनों और दुर्ग-प्राचीर बनाने का प्रस्ताव रखा।

सामान्य जन पेरिक्लीज का समर्थन करते थे। १५ वर्ष तक, यानी मृत्युपर्यंत पेरिक्लीज हर वर्ष प्रथम सेनानायक निर्वाचित होता रहा।

३. एथेनी जनतंत्र और उसका दासप्रथात्मक स्वरूप। यूनानी एथेंस की शासन-प्रणाली को जनतंत्र कहते थे, जिसका मतलब था सामान्य जन का शासन। सामान्य जन राज्य पर अपनी सत्ता को दासप्रथात्मक व्यवस्था और मित्र-देशों पर एथेंस के प्रभुत्व को सुदृढ़ बनाने के लिए इस्तेमाल करते थे। इसमें दासस्वामियों की ही नहीं, स्वतंत्र श्रमिकों की भी रुचि थी, क्योंकि दासों के श्रम और संघ के सदस्य राज्यों द्वारा दिये जानेवाले धन से उन्हें भी लाभ होता था।

एथेनी जनतंत्र दासों पर दासस्वामियों का अंकुश बनाये रखता था। वह दासप्रथात्मक जनतंत्र था।

एथेंस की देखा-देखी कई अन्य यूनानी नगर-राज्यों में भी जनतंत्रात्मक शासन-प्रणाली अपनायी गयी। वह सर्वत्र दासों पर स्वतंत्र लोगों के शासन का प्रतीक थी।

किंतु पांचवीं शताब्दी ईसापूर्व में जब जनतंत्रात्मक शासन-प्रणाली अपने चरमोत्कर्ष पर थी, तब भी एट्टिका में वास्तविक सत्ता अल्पसंख्य आबादी के ही हाथों में थी। एथेंस का पूर्णाधिकार प्राप्त नागरिक केवल ऐसे पुरुषों को माना जाता था, जिनके माता और पिता, दोनों ही एथेनी मूलवासी होते थे।

जो लोग बाहर से आकर एट्टिका में बस गये थे, उन्हें व उनकी संतान को एथेनी नागरिक के अधिकारों से वंचित रखा गया था। एट्टिका में निवास के लिए उन्हें विशेष कर देना पड़ता था। जो छल-कपट द्वारा अपने को एथेनी नागरिक बनाता था, उसे दास बना लिया जाता था।

१. पांचवीं शताब्दी ईसापूर्व के एथेंस का दासप्रथात्मक जनतंत्र। २. पेरिक्लीज की प्राचीन आवक्ष प्रतिमा। शिरस्त्राण पीछे खिसका हुआ है। लड़ाई के समय यूनानी उससे चेहरा भी ढक लेते थे।
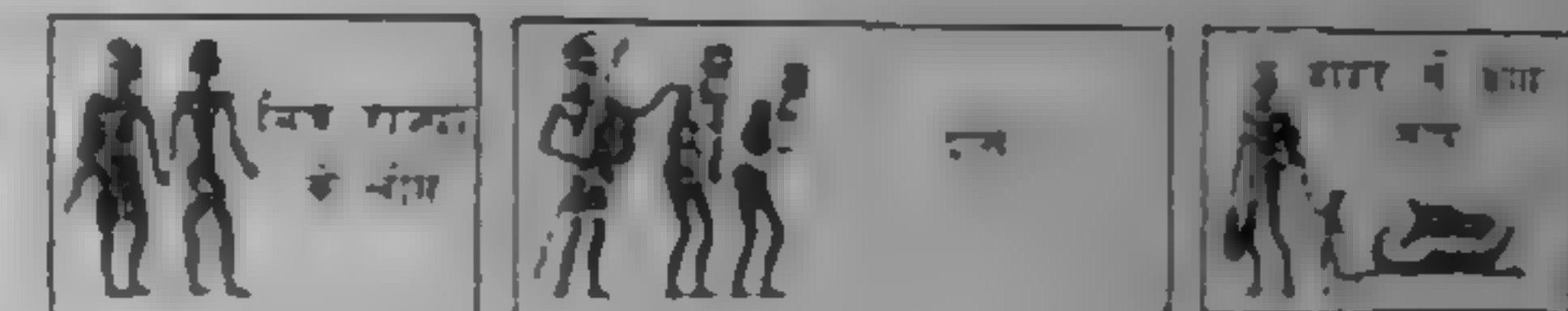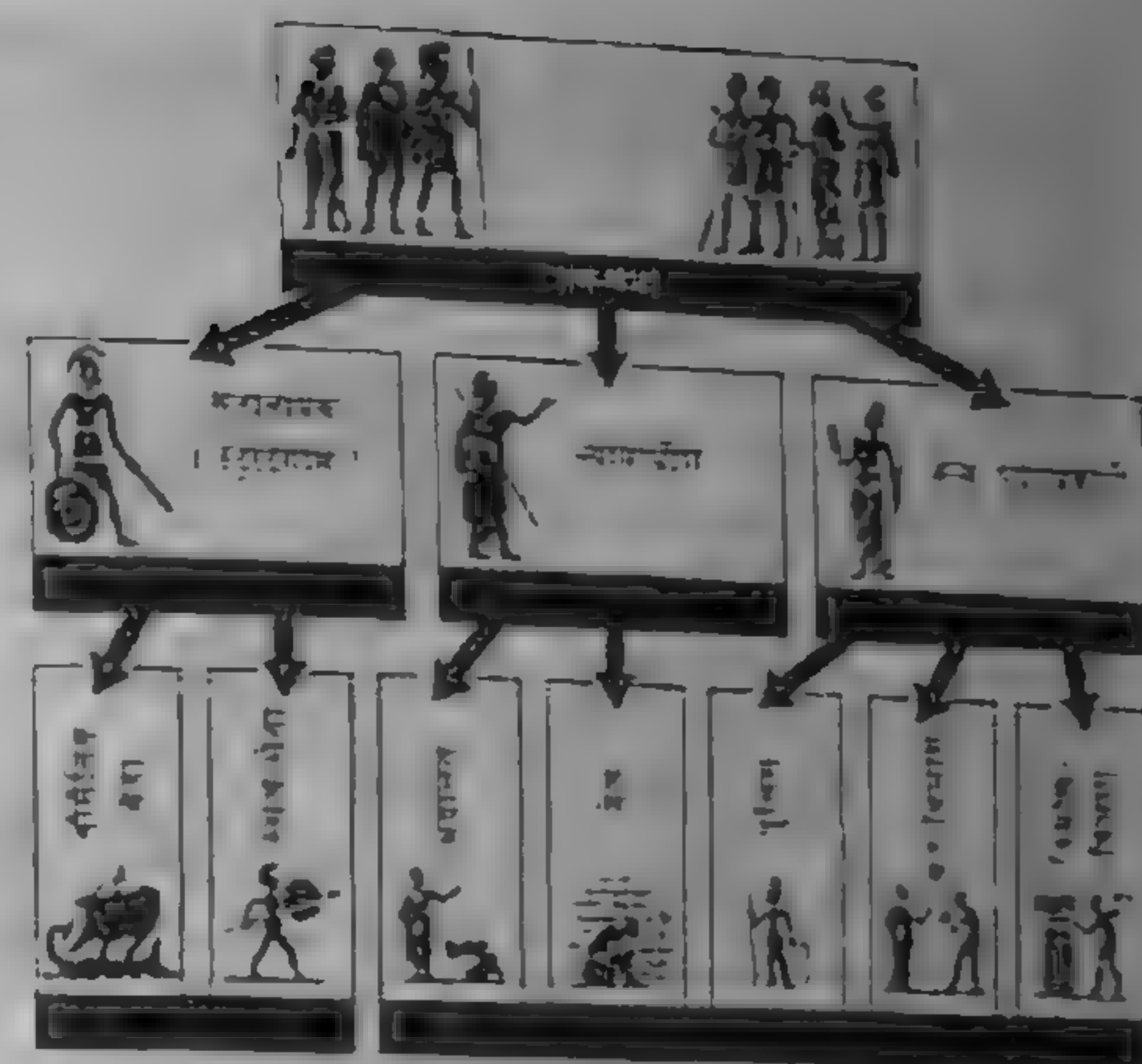
एथेनी स्त्रियों को न केवल जन सभा में भाग लेने का अधिकार न था, वे घर से बाहर भी बहुत कम निकलती थीं। "आदर्श गृहिणी और आज्ञाकारी पत्नी" बनना ही उनका कर्तव्य माना जाता था।

दासों की स्थिति जानवरों से भी गयी-गुज़री थी।

४. एथेंस का सामाजिक जीवन। यद्यपि एथेंस की नागरिकता हर किसी को नहीं मिल सकती थी, फिर भी **प्राचीन विश्व में और कहीं इतने अधिक लोग राज्य के संचालन और सामाजिक जीवन में भाग नहीं लेते थे, जितने कि एथेंस में।** सबसे कठिन व भारी कामों का बोझ दासों के जिम्मे छोड़कर स्वतंत्र एथेनी पुरुष अपना काफ़ी समय नगर के सार्वजनिक स्थलों पर बिताते थे।

एथेंस में सबसे जनसंकुल और कोलाहलपूर्ण स्थल एगोरा, यानी मुख्य चौक अथवा बाजार चौक था। सुबह होते ही वहां तरह-तरह की दुकानें खुल जाती, जो सूरज ढलने पर ही बंद होती थीं। चौक के एक छोर पर बड़े-बड़े प्रस्तर फलक थे, जिनपर एथेनी राज्य के कानून खुदे होते थे और जन सभा के आयोजन तथा अदालत में सुने जानेवाले मुकदमों की सूचनाएं टांगी जाती थीं। ग़रीब और अमीर, किसान और कारीगर, सभी अपने कामों से फ़ुरसत पाकर एगोरा में एकत्र होते थे। यहां वे नवीनतम समाचार जान सकते थे। प्राचीन यूनानियों के लिए एगोरा का वही महत्त्व था, जो कि हमारे ज़माने में समाचारपत्रों, रेडियो और टेलीविज़न का है।

एथेंस का मुख्य चौक – "एगोरा"। (आधुनिक चित्र।) **मध्य में** – कुछ एथेंसी नागरिक बाहर से आये आदमी से बातें कर रहे हैं। **बायें** – मिट्टी के बरतनों के व्यापारी ने ज़मीन पर ही दुकान लगा ली है। **दायें** – दासों के साथ एक संपन्न एथेंसी। किसान गधे पर लादकर माल बेचने के लिए लाया है। **पृष्ठभूमि में** – एथेंस का एक्रोपोलिस।

किशोर और वयस्क **जिम्नाजियमों** में एकत्र होते थे, जहां वे विद्वानों के भाषण सुन सकते थे और वाद-विवाद कर सकते थे। वहां अनुभवी शिक्षकों की देखरेख में वे व्यायाम भी करते थे।

संगीत भवन की विशाल इमारत में यूनान के सर्वोत्तम गायकों और वादकों की प्रतियोगिताएं होती थीं। उनमें बड़ी संख्या में श्रोता उपस्थित होते थे। विजेताओं का निर्णय स्वयं श्रोताओं द्वारा किया जाता था।

एथेंस में वर्ष में कई बार नाट्य समारोह आयोजित किये जाते थे, जिन्हें देखने हजारों लोग आते थे।

एथेंस का सामाजिक जीवन स्वतंत्र लोगों को अपना बौद्धिक और आत्मिक विकास करने के व्यापक अवसर प्रदान करता था।

? १. बड़े भूस्वामी, शिल्पी, व्यापारी, किसान और स्वतंत्र श्रमिक एथेंसी दासप्रथात्मक राज्य की सुदृढ़ता क्यों चाहते थे? २. सोलन के सुधारों के समय से पेरिक्लीज के शासन के आरंभ तक कितने वर्ष बीते? इन दो घटनाओं के बीच क्या संबंध है? ३. एथेंसी राज्य और प्राचीन मिस्री राज्य की तुलना करके बतायें कि इनके बीच क्या अंतर और क्या समानताएं हैं। सहायता के लिए पृष्ठ ५२ और पृष्ठ १७३ पर दिये हुए आरेख-चित्र देखें। ४. संस्कृति के विकास में अधिक सहायक क्या था और क्यों था: राजतंत्र, अभिजाततंत्र अथवा जनतंत्र? ५. 'यूनान के इतिहास के मुख्य युग' शीर्षक तालिका (देखें पृष्ठ २०६) की आगे पूर्ति करें।

दसवां अध्याय

पांचवीं-चौथी शताब्दी ईसापूर्व में यूनानी संस्कृति का उत्कर्ष

§ ३८. लेखन-कला, शिक्षा और ओलिंपिक खेल

(मानचित्र ४)

१. लेखन-कला। दूसरी सहस्राब्दी ईसापूर्व के अंत में यूनानियों ने अपनी जिस प्राचीन लिपि को भुला दिया था, उसे वे फिर कभी पुनर्जीवित नहीं कर पाये। होमर युग के अंत में उनका फ़िनीशियाई लिपि से परिचय हुआ और उसके व्यंजनों में स्वर जोड़कर उन्होंने २४ अक्षरों की अपनी अलग वर्णमाला तैयार कर ली। **इस प्रकार लेखन-कला के विकास में एक नया, महत्त्वपूर्ण क़दम उठाया गया।**

यूनानी लोग पेपाइरस, मिट्टी के ठीकरों और मोम पुती लकड़ी की पाटियों पर लिखते थे। मोम पर वे तेज नोकवाली धातु की डंडी से कुरेदकर लिखते थे। डंडी की दूसरी नोक चपटी होती थी, जिससे लिखे हुए को मिटाया जा सकता था। इस डंडी को **स्टाइलस** कहते थे। यूनानी साफ़ और सुघड़ लिखने के बड़े क़ायल थे। वे कहते थे, "अपनी स्टाइलस प्रायः उलटी करो", यानी ग़लतियों को सुधारना न भूलो।

पेपाइरस की बनी यूनानी पोथियां कुंडली की तरह होती थीं। प्राचीन यूनानियों को पुस्तकों से प्रेम था। वे उनकी कई-कई प्रतियां तैयार करते थे और बड़ा सम्हालकर रखते थे।

२. शिक्षा। स्वतंत्र यूनानियों के लड़के सात वर्ष की आयु से विद्यारंभ कर देते थे। शिल्पियों और किसानों के बच्चे केवल प्रारंभिक विद्यालय की शिक्षा ही पूरी कर पाते थे, क्योंकि उन्हें किशोरावस्था से ही मां-बाप की मदद में जुट जाना होता था। संपन्न लोगों के बच्चे १८ वर्ष की आयु तक जिम्नाजियमों में शिक्षा जारी रखते थे।

यूनानी विद्यालयों में स्पष्ट और सुंदर ढंग से बोलना सिखाया जाता था। विद्यार्थी होमर, हेसिअड और दूसरे कवियों की कविताएं कंठाग्र करते थे। होमर के काव्यों से यूनानियों को विशेष प्यार था। बहुत से लोगों को 'इलियड' और 'ओडिसी' पूरे के पूरे कंठस्थ थे, हालांकि इन महाकाव्यों में दसियों हजार पंक्तियां हैं। यूनानी किशोर चित्रकारी, गायन, नृत्य और **लीरा वादन** भी सीखते थे। जो नाचना और गाना नहीं जानता था, उसे यूनानी शिक्षित नहीं मानते थे। सर्वोत्तम विद्यालय एथेंस में थे।

१. प्राचीन यूनानी चित्र का नमूना। २. मोम चढ़ी हुई तख्तियां और लिखने की कलम। ३. यूनानी विद्यालय। (यूनानी पात्र पर निर्मित चित्र।) संगीत-वादन और पठन की कक्षा चल रही है। सबसे दायें दास बैठा है, जो विद्यार्थी को पहुंचाने आया है। ४. ओलिंपिया। (पुनर्कल्पित।) मध्य में—ज़ीयस का मुख्य मंदिर। उसके निकट—अन्य मंदिर और विजेताओं की प्रतिमाएं। एक कतार में खड़ी छोटी इमारतें ओलिंपिया को भेंटें पहुंचानेवाले नगरों के कोषागार हैं। केंद्रीय प्रकोष्ठ के चारों ओर व्यायामशालाएं, दूसरी इमारतें और प्रतियोगिता-स्थलियां हैं।

यूनानी अपने बालकों को बलवान, फुर्तीला और साहसी बनाने पर बड़ा ध्यान देते थे। शिक्षा का एक उद्देश्य योद्धा – मातृभूमि के रक्षक – तैयार करना भी था। विद्यार्थी ज्यों-ज्यों बड़े होते जाते थे, उनकी शिक्षा में व्यायाम और खेलकूद—दौड़ना, कूदना, कुश्ती, भाला व चक्र फेंकना, आदि—पर अधिकाधिक बल दिया जाने लगता था।

अविनय दिखाने और आज्ञा न मानने पर विद्यार्थियों को चमड़े की पेटी, छड़ी या डंडों से पीटा जाता था। संपन्न परिवार का लड़का जब कहीं जाता था, तो उसके साथ सदा एक बूढ़ा दास रहता था, जो ध्यान रखता था कि लड़का कोई अनुचित हरकत न करे और बड़ों के लिए रास्ता छोड़े।

दासों के बच्चों के लिए शिक्षा के द्वार बंद थे। प्राचीन यूनान में लड़कियों के विद्यालय भी नहीं थे। माताएं स्वयं ही अपनी कन्याओं को गृहस्थी के कार्य और हस्तकलाएं सिखाती थीं।

ओलिंपिया। उत्सव-त्योहारों के अवसर पर यूनान में खेलकूद प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती थीं। सबसे प्रसिद्ध प्रतियोगिताएं वे थीं, जो ज़ीयस के सम्मान में हर चौथे वर्ष **ओलिंपिया** में होती थीं। ओलिंपिया पेलोपोनेसस में स्थित था। (ओलिंपिया का उत्तरी यूनान में स्थित ओलिंपस पर्वत से कोई संबंध नहीं है।)

यूनानियों के लिए ओलिंपिया एक पवित्र स्थली थी। उसके मध्य में **ओलिंपी ज़ीयस** का भव्य मंदिर बना हुआ था और इसी से इस जगह का नाम ओलिंपिया पड़ा। मंदिर में महान यूनानी मूर्तिकार **फ़ीडियस** द्वारा निर्मित ज़ीयस की एक विशाल मूर्ति थी। (मंदिर का पुनर्कल्पित चित्र पृष्ठ [illegible] पर देखें।) ज़ीयस के मंदिर के इर्दगिर्द कई दूसरे मंदिर और देवी-देवताओं, वीरपुरुषों और ओलिंपिक-विजेताओं की हज़ारों मूर्तियां खड़ी थीं। पृष्ठभाग में व्यायामशालाएं थीं।

ओलिंपिक प्रतियोगिताएं देखने के लिए सारे यूनान से हज़ारों लोग एकत्र होते थे। यहां तक कि सुदूर यूनानी उपनिवेशों से भी दर्शक यहां पहुंचते थे। ओलिंपिया के इर्दगिर्द तंबुओं

का एक विशाल नगर सा बस जाता था। स्त्रियों के लिए ओलिंपिया में प्रवेश वर्जित था और जो स्त्री इस नियम का उल्लंघन करती थी, उसे मृत्युदंड मिल सकता था।

ओलिंपिक खेल। ओलिंपिक खेलों में यूनान के सर्वोत्तम खिलाड़ी तरह-तरह की दौड़-कूद, कुश्ती, चक्र तथा भाला फेंकने और मुक्केबाजी में एक दूसरे से बाज़ी लेते थे। एक दिन केवल किशोरों की प्रतियोगिताएं होती थीं।

सबसे खतरनाक प्रतियोगिताएं रथ-दौड़ की होती थीं। हर रथ में चार अश्व जुते होते थे। प्रत्येक प्रतियोगी को रथ पर खड़े होकर अश्वों का संचालन करते हुए **हिप्पोड्रोम** (घुड़दौड़ का मैदान) के १२ चक्कर लगाने होते थे। उससे बड़े साहस और अद्भुत कौशल की अपेक्षा की जाती थी। हवा सी तेज़ी से दौड़ते रथ बहुत बार मोड़ के खंभे या दूसरे रथ के पहिये से टकराकर उलट जाते थे और पीछे से आते रथों द्वारा कुचल दिये जाते थे। एक दौड़ में १० रथों में से कोई ८ रथों की ऐसी दुर्गति हुई थी। (देखें पृष्ठ १०८ पर चित्र २ और रंगीन चित्र १६।)

यह माना जाता था कि प्रतियोगिताओं में सभी स्वतंत्र यूनानी भाग ले सकते हैं। किंतु उनके लिए दीर्घकाल तक तैयारी करनी पड़ती थी और किसान तथा शिल्पी खेलकूद में इतना समय व्यतीत नहीं कर सकते थे। इसलिए ओलिंपिक खेलों में केवल संपन्न लोग ही भाग लेते थे। इनके अलावा दौड़ के लिए रथ और चार घोड़ों को खरीद पाना भी संपन्न दासस्वामियों के ही बस की बात थी। एक बार एक अति संपन्न एथेंसवासी ने प्रतियोगिताओं में अपने सात

१. 'चक्र-क्षेपक'। (मूर्तिकार माइरन द्वारा निर्मित।) इसे देखकर आप क्या कह सकते हैं? २. रथ-दौड़। (कलश पर निर्मित चित्र।) ३. ओलिंपिक प्रतियोगिताओं के दर्शक। (कलश पर निर्मित चित्र।)

आदमी भेजे और पहला, दूसरा और चौथा स्थान उन्हें ही मिले। अश्व प्रतियोगिताओं में विजेता घोड़ों के मालिक को माना जाता था, न कि उनके सारथी को, जो अपनी जान दांव पर लगाता था।

निर्णायक बड़े धूमधाम से विजेताओं को पुरस्कारस्वरूप जैतून की पत्तियों की मालाएं पहनाते थे। जब विजेता अपने नगर लौटता था, तो सभी नगरवासी उसके स्वागत के लिए सड़कों पर उमड़ पड़ते थे, क्योंकि यह माना जाता था कि उसने अपनी विजय से नगर की प्रतिष्ठा की है। विजेता के सम्मान में उसकी मूर्ति भी स्थापित की जाती थी।

जिस महीने में ओलिंपिक खेल होते थे, उस महीने को पवित्र माना जाता था। उसके दौरान सारे यूनान में युद्ध रोक दिये जाते थे। यूनानियों की कालगणना (पंचांग) पहले ओलिंपिक खेलों से शुरू होती है, जो किंवदंतियों के अनुसार ७७६ ईसापूर्व में हुए थे।

? १ [illegible] के आविर्भाव के बाद से यूनानी लिपि के जन्म तक लेखन-कला का विकास कैसे हुआ? यूनानी [illegible] २. एथेंस और स्पार्टा की शिक्षा-पद्धतियों में से आपको कौन सी शिक्षा-[illegible] ३ प्राचीन यूनान के ओलिंपिक खेलों में आपको कौन सी बातें पसंद हैं और कौन सी नहीं? ४ ओलिंपिक खेलों का एक भागीदार या दर्शक के शब्दों में वर्णन करें।

§३९. प्राचीन यूनानी रंगमंच

याद करें कि यूनानी लोग डायोनिसस के सम्मान में उत्सव क्यों मनाया करते थे (§२९, अनुच्छेद ३)।

१. रंगमंच का जन्म। डायोनिसस उत्सव के दिनों में यूनानी किसान गांवों और नगरों की सड़कों पर जलूस निकालते थे, सामूहिक रूप से गाते हुए डायोनिसस की कथाएं सुनाते थे और यों स्वांग रचते थे कि जैसे वे स्वयं ही उन कथाओं के पात्र हों। बकरी की खाल ओढ़कर वे डायोनिसस के गण वनदेवता सटीरों की नकल करते थे। प्रायः हास्य-स्वांग में वे अपने नगर या गांव के माने-जाने लोगों का चित्रण करते हुए उन पर फब्तियां भी कसते थे। इस प्रकार का अभिनय करनेवालों के इर्दगिर्द दर्शकों की भीड़ जमा हो जाती थी। आगे चलकर ये तमाशे या प्रदर्शन किसी टीले की जड़ में पेश किये जाने लगे, ताकि ज्यादा से ज्यादा लोग उन्हें देख सकें।

एथेंस में उन्हें एक्रोपोलिस के नीचे किया जाता था। दर्शक एक्रोपोलिस के ढलवां टीले पर बैठ जाते थे, नीचे मैदान में एक तंबू खड़ा किया जाता था, जिसे **स्कीन** कहते थे और जो नेपथ्यशाला यानी अभिनेताओं के सजने-धजने के कक्ष – परिधान कक्ष – का काम करता था। अभिनय, गायन और नृत्य उसके आगे होते थे। बाद में तंबू के स्थान पर एक छोटा सा भवन बना दिया गया, जिसपर प्रदर्शनों के समय दृश्यावलियां या मंचसज्जा टांग दी जाती थीं। उसका नाम "स्कीन" ही बना रहा। उसके आगे एक चबूतरा होता था, जिसे **ऑर्केस्ट्रा** कहते थे और उसपर समूहगान मंडली गाती थी। टीले के ढलान पर दर्शकों के बैठने के लिए पहले लकड़ी की और फिर पत्थर की बेंचें बना दी गयीं।

इस प्रकार छठी शताब्दी ईसापूर्व के अंत और पांचवीं शताब्दी ईसापूर्व में एथेंस में यूनान की पहली रंगशाला या प्रेक्षागार का निर्माण हुआ। यूनानी उसे **थियाट्रोन** कहते थे ("थियेटर" शब्द इसी से निकला है), जिसका मतलब था तमाशे देखने की जगह। आगे चलकर रंगशालाएं अन्य यूनानी नगरों और उपनिवेशों में भी बनायी गयीं। यूनानी रंगशालाएं खुली और बिना छत की होती थीं।

२. यूनानी रंगमंच में अभिनेता और समूहगान। त्योहारों और उत्सवों के अवसर पर रंगमंचीय प्रदर्शन कई-कई दिन और सुबह से शाम तक चलते रहते थे। हर रोज कई नाटक दिखाये जाते थे।

अभिनय केवल पुरुष करते थे। नारियों की भूमिकाएं भी वे ही अदा करते थे। अभिनेता भूमिकाओं के अनुसार अपने चेहरों पर मुखौटे लगा लेते थे और इससे ही पता लगता था कि वे पुरुष अथवा नारी, क्रोध अथवा यातना, आह्लाद अथवा निराशा [illegible] अभिनय कर रहे हैं। नाटक के दौरान उन्हें अपने मुखौटे कई बार बदलने पड़ते थे। [illegible] भड़कीले मुखौटे विशाल रंगशाला की पिछली कतारों से भी भली भांति दिखायी दे जाते थे।

रंगमंचीय प्रदर्शनों में समूहगान की विशेष भूमिका थी। नाटक के कथानक के अनुसार

दिखाकर मुझे मृत्यु भय या छल-कपट से
कर न सकेगा बाध्य ज़ीयस बताने को,
दिखा दे कितना ही तड़ित तर्जन
और कर ले भूकंप सम गर्जन
अथवा उठा दे श्वेत आंधी नभ में
और कर दे सभी कुछ भूमिसात,
नहीं झुकूंगा, न बताऊंगा कदापि
किसके हाथों होना है ज़ीयस का सर्वनाश!

नाटक का अंत इस बात के साथ होता है कि घनघोर गर्जन सुनायी देती है, बिजलियां कौंधती हैं और बंधे हुए प्रोमेथियस के साथ चट्टान भूमि के गर्भ में समा जाती है।

प्राचीन यूनान का एक अन्य महान दुखांत नाटककार **सोफ़ोक्लीज** था। उसका '**एंटीगोने**' नामक नाटक बहुत ही प्रसिद्ध हुआ। इसे भी पहली बार एथेंस में ही दिखाया गया था।

४. सुखांत नाटक। उत्सवों के अवसर पर होनेवाले हंसी-मजाक़ और व्यंग्यात्मक स्वांगों से सुखांत नाटकों का जन्म हुआ। यूनानी में इन्हें **कोमोइडिया** (कामेडी) कहते थे, जिसका आरंभिक अर्थ था "ग्रामीणों के हास्यमूलक गीत"।

सुखांत नाटक दर्शकों का मनोविनोद ही नहीं करते थे। प्रायः उनमें लोगों को उद्वेलित करनेवाले सवाल भी उठाये जाते थे, जैसे युद्ध जारी रखने या शांति क़ायम करने का सवाल। जन सभा में शुरू हुआ संघर्ष रंगमंच पर जारी रहता था – सुखांत नाटकों के लेखक उनमें अपने विरोधियों की खिल्ली उड़ाते थे। दर्शक पात्रों में अपने समकालीनों को आसानी से पहचान जाते थे। प्राचीन यूनान का सबसे महान सुखांत नाटककार एथेंसवासी **एरिस्टोफ़ेनीज** था, जिसकी रचनाएं पैने संवादों और कटु व्यंग्य के लिए प्रसिद्ध थीं।

कभी-कभी देवी-देवताओं को भी सुखांत नाटकों का पात्र बनाया जाता था। उन्हें झूठ बोलनेवाला और लालची चित्रित करके लेखक लोगों के दुर्गुणों का ही मज़ाक़ उड़ाया करते थे।

५. यूनानी दर्शक। यूनान के लोग रंगमंच के बड़े प्रेमी थे। जब नाट्योत्सव होते थे, वे खाने-पीने की चीजें साथ लेकर सुबह-सवेरे ही रंगशाला में आ जमते थे। एथेंस में नाटक देखने के लिए वहां से दूसरे नगरों से भी दर्शक आते थे। एथेंस की रंगशाला में एक साथ १७ हजार लोग बैठ सकते थे। नाटकों के बाद दर्शकों द्वारा निर्वाचित एक निर्णायकमंडल सर्वोत्तम नाटकों के लेखकों और सर्वोत्कृष्ट कलाकारों को जैतून की पत्तियों की माला पहनाते थे और मूल्यवान उपहार देते थे। हज़ारों की संख्या में उपस्थित सभी कलापारखी दर्शकों को प्रसन्न कर पाना आसान न था। फिर भी यूनान में नाटककारों का विशेष सम्मान किया जाता था और रंगमंच को "वयस्कों का विद्यालय" कहा जाता था। एथेंस में शासन की ओर से ग़रीब नागरिकों को नाटक देखने के लिए धन दिया जाता था।

सोफ़ोक्लीज का दुखांत नाटक 'एंटीगोने'

यह नाटक दर्शकों के मन में कैसी भावनाएं पैदा करता था?

दो भाई आपस में लड़ते हुए मारे जाते हैं। उनमें से एक ने चूंकि देशद्रोह किया था, इसलिए राजा हुक्म देता है कि उसके शव को दफ़न न करके गिद्धों के आगे फेंक दिया जाये और जो इस हुक्म को न मानेगा, उसे मृत्युदंड मिलेगा। किंतु एंटीगोने राजा के हुक्म की परवाह न कर अपने भाई को यूनानी प्रथा के अनुसार दफ़नाने लगती है। चौकीदार उसे पकड़ लेता है और राजा के सामने पेश करता है। राजा क्रोधित होकर एंटीगोने को ज़िंदा ही क़ब्र में गाड़ने का आदेश देता है। राजा का लड़का, जो एंटीगोने का मंगेतर था, अपने पिता को समझाने की कोशिश करता है कि उसका निर्णय न्यायोचित नहीं है। किंतु राजा इस से टस से मस नहीं होता।

इस बीच एक अंधा भविष्यवाणी करता है कि राजा को यूनानियों की पवित्र प्रथाओं का उल्लंघन करने और निर्दयता दिखाने का बदला चुकाना पड़ेगा: "शीघ्र ही तुम्हारे घर में स्त्रियों और पुरुषों का हाहाकार मचेगा, नगर तुम्हारे विरुद्ध उठ खड़े होंगे।" राजा डरकर एंटीगोने को छोड़ने का हुक्म दे देता है। मगर दूत आकर बताता है कि एंटीगोने मर गयी है और उसके मंगेतर ने अपने सीने में छुरा घोंप लिया है। तभी दूसरा दूत समाचार लाता है कि पुत्र की मृत्यु की खबर सुनकर रानी ने भी आत्महत्या कर ली है।

समूहगान में से यह गीत एथेंसवासियों को बहुत प्रिय था:

शक्तियां महती बहुत हैं जग में, किंतु मनुष्य का न कोई उपमान।
वह अविजेय लांघता जाये विक्षिप्त जलधि, गरजते तूफ़ान,
वह स्रष्टा नाना-वाणी का, वायुसदृश निर्द्वंद्व करे चिंतन,
विधि-विधान उसकी रचना है... उसने सुझाये वासस्थान,
घोर शीत हो, प्रचंड झंझा, झड़ी लगे – सब पाये त्राण,
रोग व्याधि से उसे नहीं भय, भविष्य में झांके वह प्रज्ञावान।
राजा अविजेय – यह भी सच है, न्याय-सत्य का यदि रखे ध्यान।

एरिस्टोफ़ेनीज का सुखांत नाटक 'पक्षी'

एक चालाक एथेंसवासी के कहने पर पक्षी पृथ्वी और आकाश के बीच एक नगर बना लेते हैं। पहले देवगण लोगों द्वारा किये जानेवाले बलि-यज्ञों का धुआं खाकर ही रहते थे। अब पक्षी उसे देवताओं तक पहुंचने से रोकने लगे। ज़ीयस से छिपकर प्रोमेथियस एक कन्या के भेस में पक्षियों के पास आता है और बताता है कि बलि-यज्ञों का धुआं न मिलने से देवता भूखों मर जायेंगे। इसके बाद ज़ीयस के दूत पोसीडन और हेराक्लीज़ भी पहुंचते हैं। एथेंसवासी शर्त रखता है कि ज़ीयस पहले अपनी कन्या का विवाह उससे कर दे और विश्व का नियंत्रण पक्षियों को सौंप दे। वह विवाह के अवसर पर शानदार दावत देने का वायदा भी करता है। हेराक्लीज़, जो बहुत पेटू है, दावत की बात सुनकर राज़ी हो जाता है। पोसीडन को नाटक में चूंकि मोटू-बेवकूफ़ दिखाया गया है, इसलिए वह भी शर्त मान लेता है। दोनों वायदा करते हैं कि ज़ीयस अपनी कन्या का विवाह चालाक एथेंसवासी से कर देगा।

जाते थे कि मानो पत्थर में फर्श से खुद ही उग आये हों। ऐसे स्तंभ **डोरिक स्तंभ** कहलाते थे। यदि मंदिर की आकृति को लालित्यपूर्ण बनाना होता था, तो अधिक छरहरे, हलके व आकर्षक स्तंभों का निर्माण किया जाता था। इन्हें **आयोनिक स्तंभ** कहते थे। आयोनिक स्तंभों के शीर्ष गुड़दार व घुमावदार होते थे और मेंढे के मुड़े हुए सींगों की याद दिलाते थे। (देखें पृष्ठ १८८ और रंगीन छायाचित्र १०।)

२. मूर्तिकला। मंदिरों को भीतर और बाहर से तरह-तरह की मूर्तियों और उत्कीर्ण भित्ति-चित्रों द्वारा अलंकृत किया जाता था। नगरों के चौराहों, मैदानों व अन्य सार्वजनिक स्थलों पर भी मूर्तियां स्थापित की जाती थीं। प्लूटार्क ने विनोद में कहा था कि एथेंस में जितनी मूर्तियां हैं, उतने लोग नहीं।

मूर्तिकार संगमरमर, कांसे और काष्ठ से मूर्तियां गढ़ते थे। संगमरमर की मूर्तियों को रंगकर मनुष्य के शरीर जैसा बनाया जाता था और कांस्य-मूर्तियों में रंगीन पत्थरों की आंखें लगायी जाती थीं। काष्ठ-मूर्तियों पर हाथीदांत का आवरण चढ़ाया जाता था, जिससे उनका रंग भी मानव शरीर जैसा दिखने लगता था।

यूनानी अपने देवी-देवताओं, वीर-पुरुषों और समकालीनों को सुंदर, सुघड और सुडौल चित्रित करना पसंद करते थे। उनके जरिये वे किसी खास व्यक्ति का चेहरा व शरीराकृति नहीं बल्कि यह दिखाना चाहते थे कि शारीरिक सौंदर्य का आदर्श प्रतिमान क्या है। यूनानी मानव शरीर के सौंदर्य के उपासक थे और इसलिए वे उसे नग्न अथवा अर्ध-नग्न ही चित्रित करते थे।

पांचवीं शताब्दी ईसापूर्व में यूनानी मूर्तिकारों ने मानव शरीर की गतिशीलता का चित्रण करना सीख लिया था। वे दौड़ते हुए, लड़ते हुए, चक्र या भाला फेंकते हुए लोगों की मूर्तियां बनाने लगे थे। माइरन नामक मूर्तिकार द्वारा निर्मित **'चक्र-क्षेपक'** को देखकर लगता है कि जैसे खिलाड़ी का तना हुआ शरीर अभी सीधा होगा और पुष्ट हाथ चक्र को दूर, बहुत दूर फेंक देगा। (देखें पृष्ठ १७८ पर चित्र १।)

मूर्तिकार मानव के शरीर-सौष्ठव को ही नहीं, उसके पौरुष, एकाग्रता और पराक्रम-कुशलता को भी अपनी रचनाओं में स्थापित करने का प्रयत्न करते थे। होमर के महाकाव्यों के शूरवीर नायकों के रूप में उन्होंने अपने उन समकालीन वीरों को ही मूर्तिबद्ध किया है जिन्होंने अपनी मातृभूमि की रक्षा की थी। ज़ीयस और पोसीडन की भव्य प्रतिमाओं में वास्तव में यूनानी नगर-राज्यों के नागरिकों और आर्कोनों को ही चित्रित किया गया था। (देखें पृष्ठ १८६ पर चित्र १ में दिखाये हुए मंदिर की त्रिकोणिका पर बनी मूर्तियां।)

संगमरमर और कांसे की मूर्तियां महंगी होती थीं। अतः घरों की साज-सज्जा के लिए मिट्टी की छोटी-छोटी, सस्ती मूर्तियां और कलश बनाये जाते थे। (देखें रंगीन छायाचित्र ११।)

३. कलशों पर चित्रकारी। यूनान में भांति-भांति के और सुंदर-सुंदर कलश बनाये जाते थे। अनेक कलश वास्तव में कला की उत्कृष्ट कृतियां थे। चित्रकार उनपर अपने समकालीन जीवन,

पौराणिक गाथाओं और होमर के काव्यों के दृश्य अंकित करते थे। छठी शताब्दी ईसापूर्व में मिट्टी की गेरुआ पृष्ठभूमि पर काली लाख से आकृतियां बनायी जाती थीं। इन कलशों को **कृष्णचित्रित** कहा जाता है। पांचवीं शताब्दी ईसापूर्व में पृष्ठभूमि काली रंगी जाने लगी और आकृतियां मिट्टी के सहज रंग की। ऐसे कलशों का **रक्तचित्रित** नाम पड़ा। (देखें रंगीन छायाचित्र १३ और १४।)

पांचवीं शताब्दी ईसापूर्व में यूनानी कला अपनी पराकाष्ठा पर थी। इस काल में यूनान और यूनानी उपनिवेशों में वास्तुकला, मूर्तिकला और चित्रकला की बहुमूल्य उत्कृष्ट कृतियों की रचना हुई।

यूनानी कला का सर्वाधिक विकास एथेंस में हुआ। एट्टिका में निर्मित कलश सारे यूनान में सर्वोत्तम माने जाते थे। पांचवीं शताब्दी ईसापूर्व में एथेंस में अनेक महान वास्तुशिल्पी और मूर्तिकार थे। इसी काल में यहां फीडियस के निर्देशन में एक्रोपोलिस का भी निर्माण किया गया। एथेंस के एक्रोपोलिस को यूनानी कला के चरमोत्कर्ष का द्योतक माना जाता है।

पांचवीं शताब्दी ईसापूर्व का एथेनी एक्रोपोलिस

एक्रोपोलिस नगर में सबसे ऊंचे स्थल पर स्थित था। उसके चारों ओर पत्थर का परकोटा था, जिसका निर्माण तब हुआ था, जब एक्रोपोलिस दुर्ग का काम करता था। एक्रोपोलिस में प्रवेश से पहले सीढ़ियों के दायीं ओर विजय की देवी नीके का मंदिर था और बायीं ओर चित्रशाला की इमारत। एक्रोपोलिस का प्रवेशद्वार एक भव्य मंडप जैसा था, जिसमें स्तंभों की कई कतारें थीं। प्रवेशद्वार से गुजरने के बाद सामने एथेंस की अधिष्ठात्री देवी एथीना की विशाल कांस्य प्रतिमा दिखायी देती थी। इसका निर्माता फीडियस था। एथीना का स्वर्णिम शिरस्त्राण और भाला दूर पिरेयस से भी दिख जाते थे। यह प्रतिमा मैराथन की लड़ाई में प्राप्त लूट के माल से बनायी गयी थी। एथीना की प्रतिमा के दायीं ओर पार्थेनन – एथीना के सम्मान में निर्मित भव्य मंदिर – खड़ा था।

पार्थेनन श्वेत संगमरमर का बना हुआ था। संगमरमर पर सुनहरा लेप था। मंदिर चारों ओर से स्तंभों से घिरा हुआ था। दीवार पर बाहर उद्भृत भित्ति-चित्र बने हुए थे, जिनमें एथेंसवासियों को उत्सवों के अवसर पर नगर-मार्गों पर खुशियां मनाते हुए दिखाया गया था। पश्चिमी त्रिकोणिका पर निर्मित मूर्तिसमूह में एथीना और पोसीडन के विवाद की कथा चित्रित की हुई थी। पौराणिक कथाओं के अनुसार एथेंस का अधिष्ठाता वही देवता बन सकता था, जो नगर को अधिक मूल्यवान भेंट देता। पोसीडन ने अपने त्रिशूल से चट्टान पर प्रहार किया और उसमें से पानी का सोता फूट पड़ा। एथीना ने भूमि में अपना भाला फेंका और वहां एक जैतून का वृक्ष उग आया। इस तरह एथीना नगर की अधिष्ठात्री बनी। यह गाथा बताती है कि एथेंसी लोग जैतून को कितना महत्त्व देते थे।

पार्थेनन के भीतर दो कक्ष थे। एक में फीडियस की ही बनायी हुई एथीना की ग्यारह मीटर ऊंची और हाथीदांत मढ़ी प्रतिमा प्रतिष्ठित थी। देवी के वस्त्र सोने के बने हुए थे। (इसका पता इस प्रतिमा की आज उपलब्ध प्राचीन यूनानी संगमरमरी अनुकृतियों से चलता है। देखें पृष्ठ १३८ पर चित्र २।) दूसरे

१. एथेंस के एक्रोपोलिस के अवशेष। (आधुनिक छायाचित्र।) २. पांचवीं शताब्दी ईसापूर्व में एथेंस का एक्रोपोलिस। (पुनर्कल्पित।) पाठ में एक्रोपोलिस के जिन भवनों की चर्चा हुई है, उन्हें इन चित्रों में ढूंढ़ें।

एथेंस के एक्रोपोलिस के एक मंदिर का मंडप।

रूप में एथेंस नगर और एथेनी नौसैनिक संघ का कोषागार था। उत्सवों के दिनों में पार्थेनन के बाहर पशु-बलियां दी जाती थीं।

पार्थेनन के दायीं ओर एक और छोटा सा सुंदर मंदिर था, जिसे एथीना और पोसीडन के सम्मान में बनाया गया था। उसके एक मंडप में छत को स्तंभों के बजाय कन्या-मूर्तियां संभाले हुई हैं। (देखें पृष्ठ १८८ पर दिया हुआ चित्र।) मंदिर के समीप एक जैतून का वृक्ष था, जिसे मानो स्वयं एथीना ने लगाया था।

यूनानी एथेंस को अपने देश का सुंदरतम नगर मानते थे। एक प्राचीन लेखक ने कहा था, "यदि तुमने एथेंस नहीं देखा, तो तुम मूर्ख हो! यदि देखकर उसपर मोहित नहीं हुए, तो गधे हो और यदि संतोष से वहां से चले आये, तो निरे ऊंट हो।"

एथेंस का एक्रोपोलिस आज पहले जैसा नहीं रह गया है। उसकी चित्रशाला, फीडियस की मूर्तियां और बहुत सी दूसरी मूर्तियां भी नष्ट हो चुकी हैं। पार्थेनन और दूसरे भवन खंडहर बने पड़े हैं। जो मूर्तियां काल के विनाश-लीला से बच पायीं, उन्हें अब संग्रहालयों में रख दिया गया है।

किंतु आज भी एक्रोपोलिस अपने दर्शकों पर अमिट छाप डालता है।

[illegible]

[illegible] ४. कलशों पर बने चित्रों से हम क्या जान सकते हैं? इस पुस्तक में दिखाये गये कलशों पर बने कौन से [illegible] ईसापूर्व के हैं? [illegible] ... कोई यात्री उसका कैसे वर्णन करता? ६. मिस्र और यूनान के मूर्तिकार अपनी रचनाओं के माध्यम से किसकी महिमा गाते थे? यदि कोई अंतर है, तो इसका क्या कारण है?

§ ४१. प्राचीन यूनान में ज्ञान-विज्ञान

याद करें कि प्राचीन पूर्वी देश ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में कितनी प्रगति कर चुके थे।

१. **"इतिहास-पिता"**। शक्तिशाली फारसियों पर पायी गयी गौरवशाली विजयों को यूनान के लोग कभी नहीं भूल सकते थे। एथेंसी लोग अपने सह-नागरिकों के शौर्य तथा पराक्रम को सदा बड़े गर्व तथा अभिमान के साथ याद करते थे।

पांचवीं शताब्दी ईसापूर्व के मध्य में यूनानी इतिहासकार **हेरोडोटस** ने "यूनानी-फारसी युद्धों का इतिहास" लिखा, जिसमें उसने प्लाटेई की लड़ाई तक की सभी घटनाओं का विवरण दिया था। इस ग्रंथ के लिए सामग्री एकत्र करने के वास्ते उसने मिस्र, बेबीलोन, फ़िनीशिया, काला सागर के तटवर्ती प्रदेशों और बाल्कन प्रायद्वीप की यात्राएं कीं और जो कुछ देखा तथा स्थानीय लोगों से जो कुछ सुना सब कुछ दर्ज कर लिया। उसने इन जातियों के वर्तमान तथा अतीत के बारे में भी बहुत से तथ्य इकट्ठे किये और अपने ग्रंथ में उन्हें शामिल किया, जिन्होंने लड़ाइयों में भाग लिया था। हेरोडोटस का "इतिहास" यूनान, पूर्वी देशों और उस काल के लोगों के इतिहास के बारे में जानने का एक मुख्य स्रोत है।

हेरोडोटस की ऐतिहासिक कृतियों को प्राचीन काल में भी इतना अधिक सराहा गया था कि उसे "इतिहास-पिता" भी कहा जाने लगा। (मिस्र के इतिहास से संबंधित हेरोडोटस की कौन सी कहानी आप पढ़ चुके हैं?)

२. **यूनान में ज्ञान-विज्ञान का विकास**। यूनानी सौदागरों और विद्वानों की दूर-दूर के देशों की यात्राओं ने प्रकृति और लोगों के जीवन के बारे में यूनान के लोगों के ज्ञान में वृद्धि की। उनसे विभिन्न देशों तथा जातियों के लोगों के बीच जानकारियों के विनिमय और विज्ञान के विकास में बड़ा योग मिला था।

छठी शताब्दी ईसापूर्व में एशिया कोचक के पश्चिमी तट पर स्थित **आयोनिया के मिलेटस** और दूसरे नगर ज्ञान-विज्ञान के विकास के मुख्य केंद्र थे। आयोनी विद्वान मिस्रियों और बेबीलोनियों की वैज्ञानिक उपलब्धियों से भली भांति परिचित थे, इसलिए उन्हें ज्ञान-विज्ञान के विविध क्षेत्रों में प्रगति करने में विशेष कठिनाई न हुई। यूनानी विद्वान प्रकृति की प्राकृतिक परिघटनाओं का अन्वीक्षण व वर्णन करने तक ही सीमित नहीं
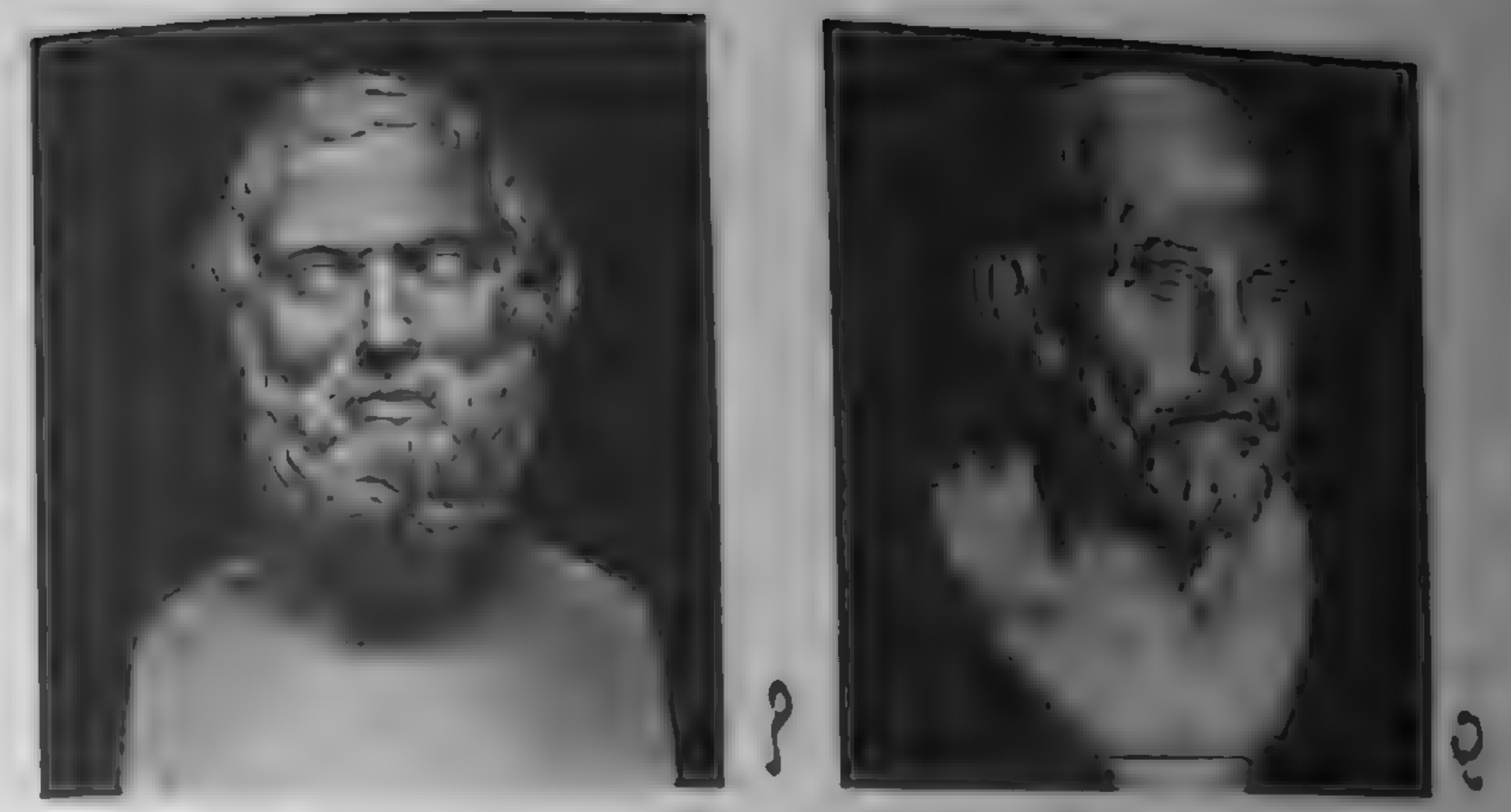
१. हेरोडोटस। २. डेमोक्रिटस। (प्राचीन यूनानी आवक्ष प्रतिमाएं।)

रखते थे, बल्कि इन परिघटनाओं की जड़ में जाने और विश्व की उत्पत्ति के कारणों का पता लगाने की कोशिश भी करते थे। कुछ विद्वान कहते थे कि प्रकृति (विश्व) की उत्पत्ति जल से हुई है, यानी मूलतत्व जल है, जबकि दूसरे भूमि अथवा वायु अथवा अग्नि को मूलतत्व मानते थे। (विश्व की उत्पत्ति के बारे में यूनानी विद्वानों के मत और [illegible] मत के बीच आप क्या अंतर पाते हैं?)

पांचवीं शताब्दी ईसापूर्व में एथेंस यूनानी ज्ञान-विज्ञान का केंद्र बन गया। उस काल के सबसे बड़े यूनानी विद्वानों में एक **डेमोक्रिटस** था, जिसने प्रकृति से संबंधित ज्ञान के विकास में बड़ा योग दिया। उसने यह विचार सामने रखा कि सारा विश्व अणुओं, यानी अतिसूक्ष्म कणों से बना हुआ है।

ज्ञान-विज्ञान के विकास के परिणामस्वरूप देवी-देवताओं के अस्तित्व से इनकार किया जाने लगा। डेमोक्रिटस ने सिद्ध किया कि आत्मा नाम की कोई चीज नहीं है और देवी-देवताओं में विश्वास प्राकृतिक परिघटनाओं को न समझ पाने और उनसे, यानी प्राकृतिक परिघटनाओं से डरने के कारण पैदा हुआ है।

चौथी शताब्दी ईसापूर्व में यूनान ने **अरस्तू (एरिस्टोटल)** जैसा महान विद्वान पैदा किया। वह असाधारण रूप से प्रतिभाशाली और अनेक विषयों का ज्ञाता था। उसने न केवल अपने से पहले के सभी विद्वानों की रचनाओं का अध्ययन किया, बल्कि बिखरी हुई जानकारियों को व्यवस्थित या प्रणालीबद्ध करके कई स्वतंत्र विज्ञान-शाखाओं का सूत्रपात भी किया, जैसे भौतिकी, वनस्पतिविज्ञान और राजनीतिविज्ञान। अपने काल के अन्य अग्रगामी विद्वानों की भांति अरस्तू भी यह मानता था कि पृथ्वी गोल है, सारे ब्रह्मांड का केंद्र है और सूर्य व ग्रह-नक्षत्र उसके गिर्द घूमते हैं।

३. **अग्रगामी विद्वानों का दमन।** बहुत से यूनानी लोग विद्वानों द्वारा देवी-देवताओं के अस्तित्व का खंडन किये जाने से प्रसन्न न थे और इसलिए उनके प्रति वैरभाव रखते थे। एथेंस में एक विद्वान पर नास्तिक होने का अभियोग लगाया गया, क्योंकि वह कहता था कि सूर्य पत्थर का एक दहकता हुआ गोला है। उसकी रचनाओं की होली जलायी गयी और स्वयं उसे पेरीक्लीज की मदद से एटिका से भागकर अपनी प्राणरक्षा करनी पड़ी।

डेमोक्रिटस की देवी-देवताओं के अस्तित्व और मानव आत्मा की अनश्वरता में विश्वास पर चोट करनेवाली शिक्षाओं ने बहुत से यूनानी दासस्वामियों को क्रुद्ध कर दिया था। उनमें से एक ने डेमोक्रिटस की रचनाएं नष्ट कर देने और उसके अनुयायियों को प्राणदंड देने, कोड़े लगाने, जेल में बंद करने या नागरिक अधिकारों से वंचित करने की मांग की। **सुकरात (सोक्रेटीज)** नाम के एक अन्य महान यूनानी विद्वान को तो दंडस्वरूप विषपान करके प्राण त्यागने पड़े थे।

४. **यूनानी संस्कृति के उत्कर्ष के मुख्य कारण। पांचवीं-चौथी शताब्दी ईसापूर्व का काल यूनानी संस्कृति के इतिहास का स्वर्ण युग था। इस संस्कृति की निर्माता यूनानी जनता थी।** यूनान में दासप्रथात्मक जनतंत्र की स्थापना की बदौलत स्वतंत्र आबादी का काफी बड़ा भाग संस्कृति के निर्माण व विकास में भाग लेने लगा था। यह संयोग की बात नहीं कि पांचवीं शताब्दी ईसापूर्व में एथेंस सारे यूनान का सांस्कृतिक केंद्र बन गया था। वहां दासप्रथात्मक जनतंत्र अन्य यूनानी नगर-राज्यों से पहले कायम हुआ था और अपनी पराकाष्ठा पर पहुंचा था। **किंतु साथ ही यूनानी संस्कृति का निर्माण दासों का घोरतम शोषण** करके ही हुआ था, जिन्हें सबसे भारी और कठिन काम करने पड़ते थे। दासों के लिए यूनान कारावास जैसा था। यहां उनके भाग्य में कड़ी मेहनत, अपमान और सज़ाएं ही बदी थीं।

५. **प्राचीन यूनानी संस्कृति का महत्त्व।** प्राचीन यूनानी वर्णमाला के आधार पर आगे चलकर अनेक अन्य वर्णमालाओं का जन्म हुआ। (देखें मानचित्र १२।)

प्राचीन यूनान ने ज्ञान-विज्ञान की प्रगति और विकास में बहुत बड़ा योग दिया था।

प्राचीन यूनानी भाषा ने आधुनिक भाषाओं को अनगिनत वैज्ञानिक और पारिभाषिक शब्द दिये हैं।

यूनान रंगमंच की जन्मस्थली था। होमर और दूसरे प्राचीन यूनानी लेखकों की रचनाओं का आज विश्व की लगभग सभी भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। प्राचीन यूनानी वास्तु और मूर्तिशिल्प ने आनेवाले कालों के अनेकानेक वास्तुकारों और मूर्तिशिल्पियों के लिए आदर्श मानदंड का काम किया है।

आज विश्व में हर चौथे वर्ष ओलिंपिक खेल होते हैं। वे भी प्राचीन यूनान की ही देन हैं। ओलिंपिक खेलों के दौरान एक विशाल मशाल जलती रहती है। इसके लिए ओलिंपिया में सूर्य की किरणों से अग्नि जलायी जाती है और फिर महासागरों तथा महाद्वीपों को पार करके उसे ओलिंपिक खेलों की स्थली पर पहुंचाया जाता है।

हेलास (यूनान) की संस्कृति ने सारे विश्व की सभ्यता और संस्कृति के विकास पर अपार प्रभाव डाला है।

? १. प्राचीन यूनानी संस्कृति के विकास में कौनसी बातें सहायक थीं? २. ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में यूनानियों की उपलब्धियां क्या थीं? ज्ञान-विज्ञान के विकास के फलस्वरूप देवी-देवताओं के अस्तित्व से इनकार क्यों किया जाने लगा? ३. सिद्ध करें कि पांचवीं शताब्दी ईसापूर्व में एथेंस यूनानी संस्कृति का मुख्य केंद्र था। ४. वर्तमान काल के लिए प्राचीन यूनानी संस्कृति के महत्त्व का पता किन बातों से चलता है? ५. उदाहरण देकर बतायें कि प्राचीन यूनानी संस्कृति के निर्माण व विकास में जनता ने क्या योग दिया था

पूर्वी भूमध्यसागर से लगे प्रदेशों में यूनानी-मक़दूनी राज्यों की स्थापना

§ ४२. चौथी शताब्दी ईसापूर्व में यूनान का पतन और उसपर मक़दूनिया का आधिपत्य

(मानचित्र ४)

याद करें कि स्पार्टा के राज्य की स्थापना कैसे हुई थी व वह कहां स्थित था (§ ३२, अनुच्छेद २); एथेनी नौसैनिक संघ कैसे बना था (§ ३४, अनुच्छेद ४ और § ३६, अनुच्छेद १)।

१. यूनानी नगर-राज्यों के बीच युद्ध। यूनान पर अपना प्रभुत्व जमाने के लिए एथेंनी ही नहीं स्पार्टन भी कोशिश कर रहे थे। एथेंस और स्पार्टा की इस प्रतिद्वंद्विता के कारण पेरिक्लीज के काल में ही उनके बीच युद्ध छिड़ गया था। ४३१ से ४०४ ईसापूर्व तक चले उस युद्ध में, जो पेलोपोनेसियन युद्ध कहलाता है, लगभग सभी यूनानी नगर-राज्यों ने भाग लिया – कुछ ने एथेंस की ओर से और कुछ ने स्पार्टा की ओर से। अंतत एथेंस की पराजय हुई। एथेंनी नौसैनिक संघ छिन्न-भिन्न हो गया। एथेंस के दीर्घ प्राचीर खंडहर बन गये।

चौथी शताब्दी ईसापूर्व में भी यूनानी नगर-राज्यों के बीच युद्ध चलते रहे। आक्रमणकारी राज्य पराये प्रदेश में घुसकर फलों तथा अंगूर के बागों और खेतों में खड़ी फ़सलों को रौंद डालता था, गांवों और नगरों को आग लगा देता था और युद्धबंदियों को दास बना लेता था।

युद्धों ने यूनान को उजाड़ बना दिया। बस्तियां खंडहर बन गयीं, जैतून के बागों की जगह पर जले हुए ठूंठ नज़र आने लगे, खेतों में घास उग आयी।

२. किसानों और शिल्पियों की तबाही। आये दिन होनेवाली लड़ाइयों ने ही नहीं, दासों की संख्या में अभूतपूर्व वृद्धि ने भी किसानों और शिल्पियों को तबाही के कगार पर ला खड़ा किया। दासों को खरीदना अब चूंकि काफ़ी सस्ता पड़ने लगा था, इसलिए बड़ी-बड़ी शिल्पशालाओं और खेतों के मालिक, जो सभी काम दासों से ही करवाते थे, अपने माल किसानों और शिल्पियों की अपेक्षा सस्ता बेच सकते थे। फलस्वरूप किसानों और शिल्पियों के मालों का बिकना मुश्किल हो गया। छोटी शिल्पशालाओं की संख्या घट गयी और बड़ी शिल्पशालाओं की बढ़ गयी। किसान तबाह हुए, तो अमीर लोग उनकी जमीनें खरीदने लग गये।

अनेक गरीब लोग भाड़े के सैनिक बनने को मजबूर हो गये। ऐसी मंडियां पैदा हो गयीं जिनमें इक्के-दुक्के सैनिक क्या, नायक समेत पूरी की पूरी सैनिक टुकड़ी को भाड़े पर लिया जा सकता था। यहां तक कि पारसीक सम्राट की सेना में भी अब बहुत से भाड़े के यूनानी सैनिक थे।

मक़दूनी फ़ैलैंक्स। (आधुनिक कलाकार का बनाया चित्र।) योद्धा १६ पंक्तियों में खड़े हैं। पहली पंक्ति के लोगों के हाथों में दो-दो मीटर और छठी पंक्ति के हाथों में लगभग छः-छः मीटर लंबे भाले हैं। लड़ाई में छः पंक्तियां भालों से एकसाथ प्रहार कर सकती थीं। फ़ैलैंक्स के आगे मामूली हथियारों से लैस योद्धा और बगलों में घुड़सवार सैनिक हैं। मक़दूनी फ़ैलैंक्स का आक्रामक प्रहार तो बहुत ज़बर्दस्त होता था, मगर वह केवल समतल भूमि पर ही लड़ सकता था।

३. वर्ग संघर्ष का बढ़ना। नंगे-भूखे गरीब वर्ग में अमीरों के प्रति घृणा की भावना बलवती होती गयी। कोरिंथ में ग़रीबों ने विद्रोह का झंडा बुलंद कर दिया। अनेक संपन्न लोग मारे गये और उनकी हवेलियां लूट ली गयीं। जान बचाने के लिए जब कुछ ने मंदिरों में शरण ली, तो ग़रीबों ने वहां भी उनका पीछा किया और कई सौ को जान से मार डाला।

दूसरी ओर संपन्न लोग भी ग़रीबों से कम घृणा न करते थे। अरस्तू लिखता है कि वे शपथ लिया करते थे: "आजीवन साधारण जन का शत्रु रहूंगा और जितना व जैसे भी हो, उनका अहित करूंगा।"

अनेक दासस्वामी ऐसे किसी भी राज्य की सत्ता को मानने को तैयार थे, जो उनकी संपत्ति की रक्षा करता और दासों तथा ग़रीबों पर उनके प्रभुत्व व दबदबे को बनाये रखता। इस संबंध में वे उदीयमान मक़दूनी राज्य से बड़ी आशाएं लगाये बैठे थे।

४. मक़दूनिया का उत्थान। मक़दूनिया (मैसीडोनिया) बाल्कन प्रायद्वीप पर यूनान के उत्तर-पूर्व में स्थित था। उसकी अधिकांश आबादी किसान थी, हालांकि समाज और अर्थव्यवस्था में बोलबाला अभिजातों का था। अभिजात लोग मक़दूनी राजाओं की सत्ता को लगभग नहीं मानते थे।

चौथी शताब्दी ईसापूर्व के मध्य में राजा फ़िलिप द्वितीय मक़दूनिया में अपनी सत्ता को मज़बूत बनाने में काफ़ी सफल रहा। उसने **मक़दूनी राजतंत्र*** की स्थापना की।

फ़िलिप द्वितीय ने एक शक्तिशाली सेना बनायी। पैदल सैनिक किसानों में से भर्ती किये जाते थे। युद्ध में पैदल सैनिक फ़ैलेंक्स बनाकर लड़ते थे। अभिजात मक़दूनी अश्वसेना में सेवा करते थे।

मक़दूनी राजा ने एक के बाद दूसरे कमज़ोर यूनानी नगरों पर क़ब्ज़ा करना शुरू कर दिया। कई सारे यूनानी दासस्वामियों ने उसका स्वागत किया। उन्हें मातृभूमि की स्वतंत्रता के मुक़ाबले अपनी संपत्ति कहीं अधिक प्यारी थी। बहुत बार फ़िलिप द्वितीय कुछ नागरिकों को घूस देकर ख़रीद भी लेता था और वे उसकी सेनाओं के प्रवेश के लिए नगर-दुर्ग के द्वार खोल देते थे। फ़िलिप द्वितीय उपहासपूर्वक कहा करता था कि सोने से लदा गदहा किसी भी नगर पर अधिकार कर सकता है।

४. यूनान पर मक़दूनिया के आधिपत्य की स्थापना। एथेंस के सामान्य जन ने मक़दूनी राजा का डटकर विरोध किया। एथेनियों के संघर्ष का नेतृत्व सुप्रसिद्ध वक्ता **डेमोस्थेनीज़** कर रहा था। अपने उत्तेजक और जोशीले भाषणों में वह फ़िलिप द्वितीय को [illegible] बताता था और यूनानियों को अपनी स्वतंत्रता की रक्षा के लिए ललकारता था। मध्य यूनान के कुछ नगर-राज्य मक़दूनिया का मुक़ाबला करने के लिए एकजुट हो गये।

३३८ **ईसापूर्व में खेरोनिया** नगर के निकट यूनानियों और मक़दूनियों के बीच घमासान लड़ाई हुई। इसमें डेमोस्थेनीज़ ने एथेनी सेना की ओर से एक सामान्य योद्धा की तरह भाग लिया था। लड़ाई काफ़ी समय तक चली। आरंभ में एथेंसवासी फ़िलिप द्वितीय की सेना को पीछे खदेड़ने में सफल रहे। किंतु अंततः विजय मक़दूनी सेना की ही हुई, क्योंकि वह अधिक अनुशासनबद्ध और बेहतर शस्त्रों से लैस थी।

खेरोनिया की लड़ाई के बाद लगभग सारे यूनान पर मक़दूनिया का अधिकार हो गया। एक तत्कालीन लेखक के अनुसार "खेरोनिया के निकट युद्ध में मारे गये लोगों के शवों के साथ यूनानियों की स्वतंत्रता भी दफ़ना दी गयी"।

यूनानी नगर-राज्यों की आपसी कलह व लड़ाइयों और दासस्वामियों की गद्दारी के कारण ही यूनान ने अपनी स्वतंत्रता गंवायी थी।

---

* **राजतंत्र** का अर्थ है एक ही व्यक्ति, यानी केवल राजा का शासन। यूनानी में इसे "मोनार्खिया" कहते हैं। अरस्तू ने यह नाम उस राज्य या शासन-पद्धति को दिया था, जिसमें एक व्यक्ति — राजा (**मोनार्खोस**) का शासन होता है। उसमें पिता की मृत्यु के बाद गद्दी बेटे को मिलती है।

१. फ़िलिप द्वितीय का सिक्का। २. **डेमोस्थेनीज़।** (तीसरी शताब्दी ईसापूर्व में निर्मित मूर्ति।) 'वस्त्रधारी' की मूर्ति और इस मूर्ति में विशेष अंतर क्या है? ३. खेरोनिया की लड़ाई के स्थल पर स्थापित सिंह-मूर्ति।

डेमोस्थेनीज़ के जीवनवृत्त से

(एक प्राचीन लेखक की कहानी के आधार पर)

डेमोस्थेनीज़ बचपन में बहुत कमज़ोर था और प्रायः बीमार रहता था। इस कारण वह विद्यालय में शिक्षा न पा सका। बड़ा हो जाने पर भी लोग प्रायः उसकी दुर्बलता पर हंसा करते थे।

उसे वक्तृत्व कला से गहरा लगाव था। वह तुतलाकर बोलता था और जल्दी ही हांफ जाता था। किंतु मेहनत और अभ्यास से उसने अपनी इन कमज़ोरियों को दूर कर लिया। आरंभ में [illegible] के कारण भीड़ का शोर सुनते ही वह घबड़ा जाता और भाषण तुरंत बंद कर देता। इस कठिनाई पर विजय पाने के लिए वह समुद्र तट पर जाने लगा, जहां तेज़ हवाओं और सागर के गर्जन के सामने बोलता था। समुद्र के शोर का आदी बनकर वह अपने को भीड़ के शोर-शराबे का आदी बनाना चाहता था।

डेमोस्थेनीज़ रात-रात भर जगकर अपना भाषण तैयार करता था। वह केवल पानी पीता था, ताकि बदन में अधिक स्फूर्ति बनी रहे। भाषण करते समय उसे कंधे उचकाने की आदत थी, इसलिए वह छत से तलवार लटका लेता और उसके ठीक नीचे खड़े होकर भाषण का अभ्यास करता। तलवार चुभने का डर उसे कंधे उचकाने से रोके रहता था।

? १. यूनान में किसान और शिल्पी क्यों उजड़े? २. चौथी शताब्दी ईसापूर्व में यूनानी नगर-राज्यों के कमज़ोर होने के क्या कारण थे? ३. यूनानी लोग राजतंत्र किसे कहते थे? प्राचीन विश्व के और किन राज्यों को हम राजतंत्र कह सकते हैं? ४. मक़दूनिया यूनान पर अपना आधिपत्य कैसे जमा सका? ५. खेरोनिया की लड़ाई आज से कितने वर्ष पहले और मारातन की लड़ाई के कितने वर्ष बाद हुई थी? ६. डेमोस्थेनीज़ के जीवन और चरित्र की कौन सी बातें आपको पसंद हैं?

§ ४३. सिकंदर के साम्राज्य का निर्माण और पतन

(मानचित्र ६ और ७)

याद करें कि यूनान के साथ युद्ध में पारसीक साम्राज्य की पराजय क्यों हुई थी (§ ३४)।

१. पूर्वी अभियानों की तैयारी। लगभग सारे यूनान पर अपना आधिपत्य क़ायम करने के बाद फ़िलिप द्वितीय फ़ारस पर आक्रमण की तैयारियां करने लगा। मकदूनी और यूनानी दास-स्वामियों को आशा थी कि वे वहां उर्वर ज़मीनों, अनगिनत दासों और पारसीक सम्राटों की अतुल संपदा पर क़ब्ज़ा कर लेंगे। ग़रीब यूनानी भी फ़िलिप द्वितीय की सेना में भर्ती हो गये, क्योंकि सैनिक नौकरी करके ही वे अपना और अपने परिवारों का पेट भर सकते थे।

किंतु अभियान की तैयारियों के दौरान षड्यंत्रकारियों ने फ़िलिप द्वितीय की हत्या कर दी। षड्यंत्र संभवतः पारसीकों ने किया था। अब गद्दी पर फ़िलिप द्वितीय का बीसवर्षीय पुत्र **सिकंदर (अलेक्जेंडर)** बैठा। वह जोशीला, साहसी, किंतु क्रूर था और जल्दी क्रोध में आ जाता था। वह बहुत प्रतिभावान था और अरस्तू के आश्रम में, जिसे **लाइसियम** कहा जाता था, शिक्षा पा चुका था।

२. पूर्वी भूमध्यसागर तट की विजय। ३३४ ईसापूर्व में सिकंदर के नेतृत्व में मकदूनी सेना ने एशिया कोचक पर आक्रमण कर दिया और दो लड़ाइयों में वहां तैनात पारसीक सेना को हराकर भूमध्यसागर तट के किनारे-किनारे दक्षिण की ओर बढ़ चली। (एशिया कोचक पर सिकंदर के आक्रमण का दृश्य रंगीन छायाचित्र १६ में देखें।)

रास्ते में जिन किसी देश या राज्य ने भी सिकंदर का विरोध किया, उसकी आबादी निर्ममतापूर्वक मौत के घाट उतार दी गयी या दास बना ली गयी। टायर नगर पर अधिकार करके सिकंदर ने उसके ८ हज़ार निवासियों को मार डालने और ३० हज़ार निवासियों को दासों की तरह बेचने का हुक्म दिया।

किंतु अधिकांश फ़िनीशियन नगर पारसीकों के जुए से मुक्त होना चाहते थे, इसलिए उन्होंने सिकंदर का स्वागत ही किया। इसके बाद सिकंदर ने बिना किसी लड़ाई के मिस्र को भी अपने क़ब्ज़े में ले लिया। मिस्री पुजारी-पुरोहितों ने उसे देवता घोषित कर दिया।

३. पारसीक साम्राज्य का पतन। मिस्र को जीतने के बाद सिकंदर मेसोपोटामिया की ओर बढ़ा। पारसीक सम्राट दारा **तृतीय** ने वहां एक विशाल सेना जुटा ली थी, जिसमें हाथी और रथ भी थे। रथों पर दोनों ओर लंबे-लंबे तेज़ हंसिये लगे हुए थे, ताकि उनसे शत्रु सैनिकों को गाजर-मूली की तरह काटा जा सके। किंतु दारा तृतीय की सेना में पारसीकों द्वारा जीते हुए देशों के जबरन भरती किये सैनिक भी थे, जो पारसीक सम्राट के लिए लड़ना नहीं चाहते थे।

दजला नदी के तट पर **गागमेला** के निकट एक मैदान में दोनों सेनाओं का आमना-सामना हुआ। (देखें पृष्ठ २०० पर चित्र २।) दारा तृतीय ने सबसे पहले अपने रथ मैदान में उतारे। मकदूनी सैनिक ने अपने बाणों से अधिकांश रथारोहियों को मार डाला और फिर

दो भागों में बंटकर पारसीक रथों के पागलों की तरह दौड़ते बेक़ाबू घोड़ों को अपनी क़तारों के बीच से गुज़र जाने दिया।

अब सिकंदर ने अपनी अश्वसेना के साथ पारसीक सेना के मध्य भाग पर हमला किया, जहां सम्राट दारा भी खड़ा था। इसके साथ ही मकदूनी फ़ैलेंक्स भी आगे बढ़े। पारसीक सेना के पैर उखड़ने लगे। भयभीत होकर दारा युद्ध के मैदान से भाग खड़ा हुआ, जिससे उसकी सेना में भी भगदड़ मच गयी। शीघ्र ही दारा अपने अनुचरों के हाथों मारा गया।

विराट पारसीक साम्राज्य बालू की नींव पर खड़ा किला सिद्ध हुआ। पहले ज़बर्दस्त प्रहार ने ही उसे भूमिसात कर दिया।

४. मध्य एशिया और भारत के युद्ध। पारसीक साम्राज्य में शामिल कुछ इलाके फिर भी मकदूनियों से लोहा लेते रहे। सिकंदर की सेना को सबसे घोर विरोध का मध्य एशिया में सामना करना पड़ा। तीन वर्ष तक लड़ने और हज़ारों लोगों को मौत के घाट उतारने के बाद ही सिकंदर मध्य एशिया के थोड़े से भाग को जीतने में सफल हो सका।

मध्य एशिया के बाद उसने भारत की ओर कूच किया। किंतु लंबे और कठिन अभियान ने उसके सैनिकों को निःशक्त बना दिया था, जबकि भारतीय बड़ी वीरता से उनका मुक़ाबला कर रहे थे। विश्व-विजय का स्वप्न देखनेवाले सिकंदर ने अपने सैनिकों का मनोबल ऊंचा उठाने का प्रयास किया, किंतु वह निरर्थक सिद्ध हुआ – सैनिक आगे लड़ना और उसका साथ देना नहीं चाहते थे। फलस्वरूप **३२५ ईसापूर्व** में सिकंदर को वापस लौट जाना पड़ा।

५. सिकंदर का साम्राज्य और उसका पतन। मकदूनी सेना की विजयों के परिणामस्वरूप एक विशाल साम्राज्य का निर्माण हो चुका था, जो पश्चिम में बाल्कन प्रायद्वीप से पूर्व में सिंधु नदी तक फैला हुआ था। भारत से लौटकर सिकंदर मकदूनिया जाने के बजाय बेबीलोन में ही ठहर गया, जिसे उसने अपनी राजधानी बनाया। पारसीक सम्राटों की नक़ल पर वह बेहद राजसी ठाठ-बाट से रहने लगा था और अपने सामंतों से भी उम्मीद करता था कि वे उसके सामने फ़र्शी सलाम बजायें।

३२३ ईसापूर्व में सन्निपात ज्वर से उसकी मृत्यु हो गयी। उसका शव अभी दफ़नाया भी न गया था कि उसके सेनानायक सत्ता के लिए आपस में लड़ने लगे। सिकंदर का साम्राज्य कई राज्यों में बंट गया, जिनमें से मुख्य तीन थे: **मकदूनिया, मिस्र और सीरिया।** इन तीनों राज्यों के शासक सिकंदर के सेनानायक रह चुके थे।

मिस्र और पश्चिमी एशिया के लोगों पर अब मकदूनी और यूनानी दासस्वामियों का जुआ लद गया।

सिकंदर के जीवनवृत्त से

सिकंदर के बारे में बहुत सी कहानियां प्रचलित हैं। उनमें से कई यूनानी इतिहासकार प्लूटार्क की लिखी हुई सिकंदर की जीवनी में भी मिलती हैं।

१. विजय की देवी नीके की तीसरी शताब्दी ईसापूर्व में निर्मित मूर्ति। पाठ में इस मूर्ति का वर्णन ढूंढें। २. पहली शताब्दी ईसापूर्व की एक वृद्ध-मूर्ति। ३. पेर्गामोस से प्राप्त एक उद्भति का अंश। इसमें ज़ीयस को दानवों से लड़ते और उन्हें पराजित करते दिखाया गया है।

ईसापूर्व में एक नये प्रकार के स्तंभ बनाये जाने लगे, जो **कोरिंथी स्तंभ** कहलाते हैं। (देखें पृष्ठ २०३, चित्र ४।)

तीसरी-दूसरी शताब्दी ईसापूर्व में यूनानी मूर्तिकारों ने अनेक उत्कृष्ट मूर्तिशिल्पों की रचना की। उनमें से एक पोत के अग्रभाग पर खड़ी विजय की देवी **नीके** की मूर्ति है। रचनाकार ने नीके के पंखों के फैलाव और सामने से आती हवा से वस्त्रों के फहराने में गति और निरन्तर आगे बढ़ते जाने के संकल्प को बड़े प्रभावशाली ढंग से साकार किया है।

इस काल की यूनानी मूर्तिकला की एक नयी विशेषता थी बाह्याकृति के हू-ब-हू चित्रण के साथ-साथ मनःस्थिति और मनोवेगों को भी अभिव्यक्त करने की कोशिश। तीसरी शताब्दी ईसापूर्व में निर्मित डेमोस्थेनीज की मूर्ति इस महान वक्ता का एक उत्कृष्ट चित्रण है। उसे वृद्ध और क्षीणकाय दिखाया गया है। उसके चेहरे की मुद्रा प्रकट करती है कि वह अपनी मातृभूमि के लिए कितना चिंतित है। (देखें पृष्ठ १६६, चित्र २।)

इस दौर में यूनानी कला के कई नये केंद्र पैदा हुए। उनमें से एक पेर्गामोस नगर था। गिगांतों (बृहदकाय पौराणिक दानवों) के साथ ओलिंपी देवताओं के संग्राम का सुप्रसिद्ध उत्कृष्ट मूर्तिचित्र पेर्गामोस के मूर्तिकारों की ही रचना है। यह उद्भृत मूर्तिचित्र १३० मीटर

लंबा है और उसपर बनी आकृतियां तीन-तीन मीटर ऊंची हैं। वह काफ़ी टूट-फूट चुका है। फिर भी उसमें हम देव-दानव संग्राम का जो भयानक और अत्यन्त अभिव्यंजनापूर्ण चित्रण पाते हैं, वह आज भी चकित कर देता है। प्रतिद्वंद्वियों के शरीर का अंग-अंग संघर्ष की उग्रता के कारण तना हुआ है, पराजितों के चेहरे पीड़ा व वेदना से विकृत हो गये हैं।

मक़दूनियों द्वारा पूर्वी देशों की विजय से भूमध्यसागर के पूर्वी तट के नये देशों में अर्थ-व्यवस्था और संस्कृति के विकास में बड़ा योग मिला। किंतु स्थानीय मेहनतकशों के लिए मक़दूनी और यूनानी विजेता पराये और घृणा के पात्र ही बने रहे। सिकंदर की विजयों के फलस्वरूप जो नये राज्य स्थापित हुए, वे अधिक न टिक पाये। उनके बीच आये दिन होनेवाली लड़ाइयों ने शीघ्र ही उन्हें दुर्बल बना दिया। इसीलिए जब पश्चिम से शक्तिशाली रोमनों के हमले हुए, तो उन्हें धराशायी होते देर न लगी।

? १. मक़दूनी विजयों के फलस्वरूप पूर्वी भूमध्यसागर के नये देशों की अर्थव्यवस्था में क्या परिवर्तन हुए? २. पाठ, नगर के नक्शे और चित्रों के आधार पर सिकंदरिया नगर का वर्णन करें। उसमें और प्राचीन यूनानी व पूर्वी नगरों में क्या समानताएं थीं? सिकंदरिया में क्या चीज़ें बनती थीं? ३. आप किन और किस प्रसिद्ध पुस्तकालय को जानते हैं? उसकी सिकंदरिया के पुस्तकालय से तुलना करें।

बारहवां अध्याय

रोमन गणतंत्र का निर्माण और उसकी इटली-विजय

§४५. रोम का आरंभिक इतिहास

(मानचित्र ८)

याद करें कि यूनानियों ने अपने देश से पश्चिम में कहां और कब उपनिवेश बसाये थे (§३३, मानचित्र ५)।

१. अपेनाइन प्रायद्वीप की प्राकृतिक विशेषताएं। बाल्कन प्रायद्वीप के पश्चिम में एक और प्रायद्वीप है, जिसका नाम **अपेनाइन** है।

अपेनाइन नाम की ही एक पर्वतमाला इस प्रायद्वीप के मध्य में दक्षिण से उत्तर तक चली गयी है। वह यूनान के चट्टानी पहाड़ों के मुक़ाबले कहीं ज्यादा ढलवां है। एक मैदानी तटरेखा उसे सागर से अलग करती है।

उत्तर में आल्प पर्वत प्रायद्वीप को ठंडी उत्तरी हवाओं से बचाते हैं। प्रायद्वीप की जलवायु समशीतोष्ण है। उसमें यूनान से अधिक वर्षा होती है। तटवर्ती क्षेत्रों और पहाड़ी घाटियों की मिट्टी बड़ी उपजाऊ है। पहाड़ी ढलानों पर ऊंची और घनी घास के चरागाह हैं। अपने देश के नंगे और घटिया चरागाहों के आदी प्राचीन यूनानी अपेनाइन प्रायद्वीप पर वनस्पतियों और पशु-पक्षियों के वैविध्य तथा बहुलता को देखकर चकित हो गये थे। उन्होंने प्रायद्वीप के दक्षिणी भाग को **इटालिया** (**इटली**) नाम दिया, जिसका मतलब था "बछड़ों का देश"। बाद में यह सारे ही प्रायद्वीप के लिए प्रचलित हो गया।

प्रायद्वीप के पश्चिमी और दक्षिणी तटों पर जहाजों के लंगर डालने के लिए अनेक अच्छी-अच्छी खाड़ियां हैं। आसपास के सागरों में द्वीप बहुत कम हैं।

प्रायद्वीप के दक्षिण में **सिसिली** नामक विशाल द्वीप है, जो उससे लगभग सटा हुआ है। सिसिली का जलवायु प्रायद्वीप से अधिक उष्ण है। वह प्रायद्वीप से अधिक हरा-भरा भी है।

२. रोम नगर का जन्म। पेट्रीशियन। अपेनाइन प्रायद्वीप के मध्य में **टाइबर** नदी है। वह पहाड़ों से निकलती है और मैदानी भाग को पार करते हुए सागर में जा मिलती है। मैदानों में जहां-तहां पहाड़ियां हैं। प्राचीन काल में मैदान दलदली थे और पहाड़ियां चौड़ी पत्तीवाले वृक्षों के वनों से ढकी हुई थीं।

प्राचीन रोम का विहंगम दृश्य। (पुनर्निर्मित।) चित्र की रंगीन मानचित्र ८ से तुलना करें और चित्र में वे स्थल ढूंढ़ें, जिन्हें मानचित्र ८ के ऊपरी दायें कोने पर बने नक्शे में दिखाया गया है और जिनकी पृष्ठ २१३-२१४ पर चर्चा हुई है।

मैदानों में **लैटिन** क़बीले रहते थे। टाइबर के मुहाने से २५ किलोमीटर ऊपर नदी के बायें तट पर **रोम** नाम का एक छोटा सा नगर था। किंवदंतियों के अनुसार उसकी स्थापना आठवीं शताब्दी ईसापूर्व के मध्य में हुई थी।

रोम के प्राचीनतम निवासियों के वंशज **पेट्रीशियन*** कहलाते थे। वे समुदाय बनाकर रहते थे और सारी कृषि भूमि और चरागाह समुदाय की संपत्ति होते थे। पेट्रीशियनों के हर कुटुंब (**फ़ैमीलिया**) को समुदाय के खेत में एक टुकड़ा मिला होता था। मवेशी समुदाय के साझे चरागाह में चराये जाते थे।

पेट्रीशियन खेत और घर में आम तौर पर खुद ही काम करते थे। किंतु उनके पास कुछ दास भी होते थे। दासों को कुटुंब का सदस्य माना जाता था और मालिकों के साथ बैठकर भोजन करने दिया जाता था।

पेट्रीशियनों के घर सादे और मामूली थे। उनमें एक ही कमरा होता था, जिसके बीचों-बीच पानी का कुंड बना होता था। छत पर एक चौकोर छेद होता था, जिससे वर्षा का पानी सीधे कुंड में टपकता था। यह छेद उजाले के लिए झरोखे का काम भी करता था।

*यह नाम लैटिन शब्द "पाटेर" (पिता) से निकला है। पेट्रीशियनों को अपने पूर्वजों के रोम का संस्थापक होने पर गर्व था।
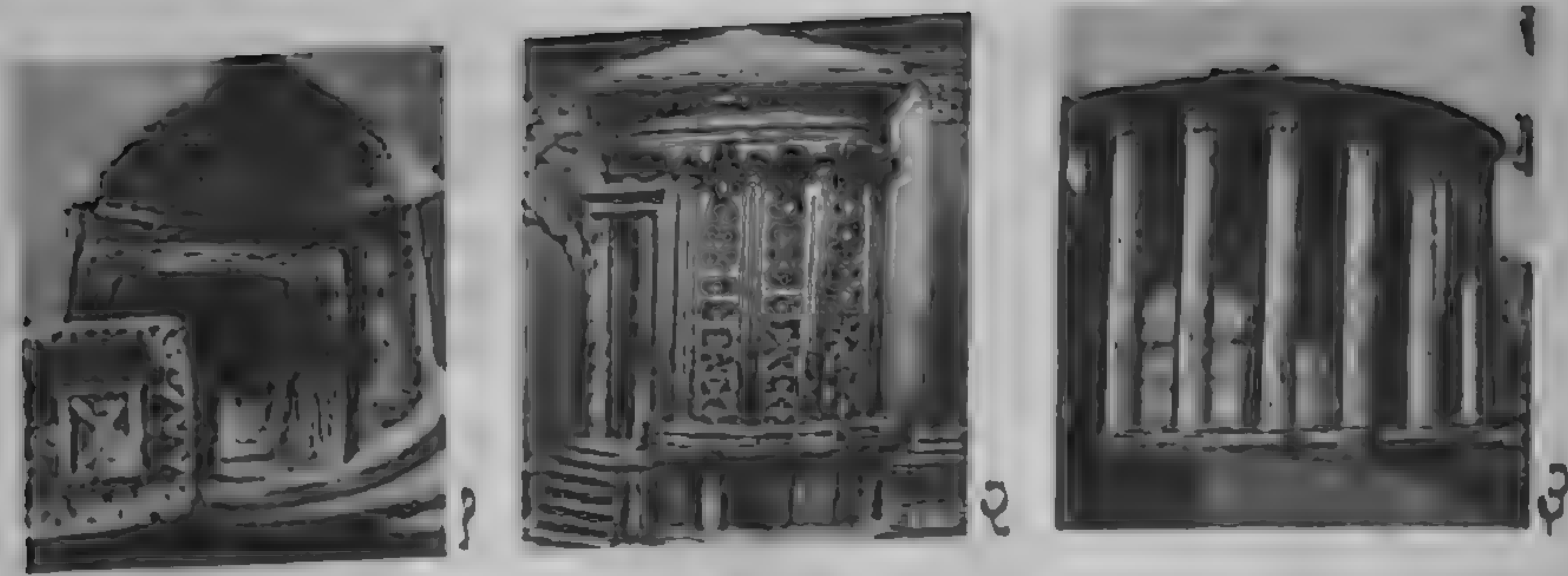
१. रोमन झोंपड़ी। (मृतक के अवशेष रखने के लिए निर्मित झोंपड़ी का एक प्राचीन मॉडल।) २. फ़ोरम में स्थित एक मंदिर। पृष्ठ २११ पर दिये हुए चित्र में यह मंदिर ढूंढें। ३. रोम का एक प्राचीन मंदिर। (छायाचित्र।) ४. कैपीटोलिया पर स्थापित माता-भेड़िया की मूर्ति। (छठी शताब्दी ईसापूर्व में निर्मित।)

पेट्रीशियनों के मुखियाओं की एक परिषद थी, जो **सेनेट** कहलाती थी। रोम का शासन राजा और सेनेट मिलकर करते थे।

३. अपनी स्थापना की प्रारंभिक शताब्दियों में रोम का विकास। प्लेबियन। रोम बहुत अच्छी जगह पर बसा हुआ था। उसके चारों ओर उपजाऊ भूमि थी। टाइबर के मुहाने में पोतों के लंगर डालने के लिए अच्छे घाट थे। वहां से रोम और आगे इटली के भीतरी भागों को मार्ग जाते थे। शनैः शनैः रोम में बाहर से आकर व्यापारी और शिल्पी भी बसने लगे। इसके अलावा रोमवासी भी आसपास के नगरों को जीतकर उनकी कुछ आबादी को रोम में लाकर बसा देते थे। इस तरह रोम की आबादी तेज़ी से बढ़ती गयी। रोम के लोग **लैटिन** भाषा बोलते थे।

रोम सात पहाड़ियों पर बसा हुआ था। उनमें सबसे ऊंची और खड़ी **कैपीटोलिया** पहाड़ी पर दुर्ग बनाया गया था। शत्रुओं के आक्रमण के समय आसपास के निवासी उसमें शरण ले लेते थे। रोमनों ने पहाड़ियों के बीच के दलदली मैदान को सुखा लिया और वहां चौक बनाया, जो **फ़ोरुम (फ़ोरम)** कहलाता था। उससे विभिन्न दिशाओं में संकरी और टेढ़ी-मेढ़ी गलियां जाती थीं, जिनके दोनों ओर घास-फूस या खपड़ैल की छतवाले मिट्टी के या लकड़ी के छोटे-छोटे मकान थे। फ़ोरम और इन गलियों में ठठेरों, मोचियों और दूसरे कारीगरों की दूकानें थीं।

दूसरी जगहों से रोम में आकर बसे लोग और उनके वंशज **प्लेबियन** (लैटिन शब्द "प्लेब" – सामान्य जन – से) कहलाये। वे अधिकांशतः गरीब थे, हालांकि उनमें कोई-कोई संपन्न आदमी भी मिल जाता था। प्लेबियन कर देते थे, सेना में सेवा करते थे, मगर समुदाय के खेतों से उन्हें कोई हिस्सा नहीं मिलता था। जो प्लेबियन समय पर क़र्ज़ न दे पाता था, उसे दास बना दिया जाता था।

४. गणतंत्र की स्थापना। किंवदंतियों के अनुसार छठी शताब्दी ईसापूर्व में रोम में एक बहुत ही क्रूर राजा था। **५०९ ईसापूर्व** में रोमवासियों ने उसे मार भगाया और राजा की सत्ता को ख़त्म कर दिया।

इसके बाद से जन सभा प्रतिवर्ष पेट्रीशियनों में से दो शासक चुनने लगी, जो कौंसुल कहलाते थे। एक वर्ष के अपने कार्यकाल में वे रोम के शासक भी होते थे, न्यायाधीश का काम भी करते थे और यदि युद्ध छिड़ जाये, तो उन्हें सेना का संचालन भी करना होता था। उनकी मदद के लिए जन सभा पेट्रीशियनों में से कुछ अन्य पदाधिकारियों का भी निर्वाचन करती थी। कौंसुलों की भांति उनका कार्यकाल भी एक वर्ष होता था। अपने कार्यकाल की समाप्ति पर उच्च पदाधिकारी **सेनेट** के सदस्य – सेनेटर – बन जाते थे।

सेनेट के हाथों में बहुत शक्ति थी। शांतिकाल में कौंसुलों के लिए हर सवाल पर उसका परामर्श लेना अनिवार्य था। वह ख़ज़ाने का प्रबंध करती थी, युद्ध और शांति के प्रश्नों पर फ़ैसला लेती थी। वह जन सभा के सामने तैयार निर्णय ही रखती थी और सभा लगभग हमेशा उन्हें मान लेती थी।

पेट्रीशियनों ने अपनी शासन-प्रणाली को गणतंत्र – **रिपब्लिक** – नाम दिया।* किंतु उसमें भी प्लेबियन अधिकारहीन ही बने रहे, हालांकि वे अपनी स्थिति बेहतर बनाने की मांग बार-बार उठाते रहे थे।

* गणतंत्र ऐसे राज्य को कहते हैं, जिसका संचालन एक निश्चित अवधि के लिए निर्वाचित लोग करते हैं।

रोम की स्थापना की किंवदंती

एक लैटिन नगर के राजा ने अपनी भतीजी के नवजात जुड़वां बच्चों – रोमुलस और रेमस – को नदी में फेंकवा दिया। उसे डर था कि ये बड़े होकर उसकी गद्दी छीन लेंगे। नदी में उस समय बाढ़ आयी हुई थी और जिस टोकरी में बच्चे रखे हुए थे, वह किसी पेड़ की टहनियों के बीच अटक गयी। एक मादा भेड़िया उन्हें अपना दूध पिलाने लगी। बाद में किसी गड़रिये की उनपर नजर पड़ी और वह उन्हें अपने घर ले आया और उनका पालन-पोषण करने लगा। दोनों भाई बड़े होकर बहुत शक्तिशाली और साहसी निकले। उन्होंने राजा के विरुद्ध विद्रोह भड़काकर उसे मार डाला। अब दोनों भाइयों ने एक नया नगर बसाने का निश्चय किया, किंतु उसे कहां बसाया जाये और कौन उसका शासक बने, इस बात को लेकर उनमें झगड़ा हो गया। रोमुलस ने रेमस को मार डाला। उस जगह पर जहां गड़रिये ने भाइयों को पाया था; रोमुलस ने नगर बसाया, जिसका नाम रोम पड़ा।

रोम के लोग अपना पंचांग अपने नगर की स्थापना के वर्ष, जो ७५३ ईसापूर्व बताया जाता है, से शुरू करते थे। उन्होंने रोम में कैपीटोलिया पहाड़ी पर एक मादा भेड़िया की मूर्ति स्थापित की थी। आजकल यह मूर्ति संग्रहालय में रखी हुई है।

रोम पर गालों का आक्रमण

(रोमन इतिहासकारों के वृत्तांतों से)

चौथी शताब्दी ईसापूर्व के आरंभ में उत्तरी इटली में रहनेवाले लड़ाकू गाल कबीलों ने रोम पर चढ़ाई कर दी। ऊंचे कद, भूरे बालों और लंबे बालों व बड़ी बड़ी ढालोंवाले गालों को देखकर सब भयभीत हो गये। अपने जोरदार धावे से उन्होंने रोमन सेना को तितर-बितर कर दिया और रोम पर कब्जा करके उसे लूट लिया और आग लगा दी।

कुछ रोमन कैपीटोलिया के अभेद्य दुर्ग में जा छिपे थे। वहां से वे गालों के हमलों को नाकाम करते रहे। आखिर एक रात गाल चुपके से कैपीटोलिया पहाड़ी पर चढ़ ही गये। उन्हें न प्रहरी देख पाया, न कुत्तों को ही उनका पता चल सका। केवल कैपीटोलिया पर रहनेवाले हंस ही उनके चढ़ने की आवाज सुन पाये। हंसों के शोर ने रोमन सैनिकों को जगा दिया। भागे-भागे आये रोमनों ने शत्रुओं को पहाड़ी से नीचे धकेल दिया। तभी से यह कहावत चल पड़ी है कि "रोम को हंसों ने बचाया था"।

गाल ३०० किलोग्राम सोना लेकर रोम छोड़ने को तैयार हो गये। लेकिन जब सोना तौला जा रहा था, उनके सरदार ने बाटोंवाले पलड़े में अपनी भारी तलवार भी रख दी। रोमन विरोध करने लगे, तो उसने कहा, "हारे हुए मुंह नहीं खोलते"।

रोमनों ने जल्दी ही अपने नगर को बहाल कर लिया और उसके चारों ओर दीवार भी खड़ी कर दी। इस दीवार के अवशेष आज भी देखे जा सकते हैं।

? १. इटली की प्रकृति और यूनान की प्रकृति में क्या अंतर है? प्राचीन काल में इटली की प्रकृति किन धंधों के विकास में सहायक थी? २. रोमनों का पेट्रीशियनों और प्लेबियनों में बंटवारा कैसे हुआ? प्लेबियनों और पेट्रीशियनों की स्थिति में क्या भेद था? ३. गणतंत्र किस प्रकार के राज्य को कहते हैं? इसमें और राजतंत्र में क्या भेद है? प्राचीन काल के और किस राज्य को गणतंत्र कहा जा सकता है और क्यों? ४. रोम में गणतंत्र की स्थापना किस शताब्दी में और उसके किस अर्धभाग में हुई थी? पहले क्या हुआ – रोम में गणतंत्र की स्थापना या यूनान में सोलन के सुधार? दोनों घटनाओं के बीच कितने वर्षों का अंतराल है? ५. पाठ और चित्रों से प्राप्त सामग्री के आधार पर बतायें कि रोम नगर अपने अस्तित्व की पहली शताब्दियों में कैसा था।

§४६. तीसरी शताब्दी ईसापूर्व के मध्य का रोमन अभिजातीय गणतंत्र

(मानचित्र ८)

याद करें कि यूनान में अभिजात किन्हें कहा जाता था (§२० और २१, अनुच्छेद १)।

१. पेट्रीशियनों से प्लेबियनों का संघर्ष। पांचवीं शताब्दी ईसापूर्व में प्लेबियनों ने प्रतिवर्ष अपने दो प्रतिनिधि, जिन्हें **ट्रिब्यून** कहा जाता था, चुनने का अधिकार प्राप्त कर लिया। वे प्लेबियनों के हितों की रक्षा करते थे। वे सेनेट और कौंसुलों के प्लेबियनों से संबंधित किसी भी निर्णय को रोक सकते थे। उनका यह अधिकार **वीटो** कहलाता था। लैटिन में "वीटो" का मतलब था "मना करता हूं"। ट्रिब्यूनों के घर के दरवाजे प्लेबियनों के लिए दिन-रात खुले रहते थे, ताकि वे किसी भी समय ट्रिब्यूनों से सहायता मांग सकें। ट्रिब्यून की हत्या को घोर अपराध माना जाता था।

प्लेबियन अपनी हालत में सुधार के लिए जो संघर्ष कर रहे थे, ट्रिब्यून उनके नेता बन गये। वे प्लेबियनों के हितों की रक्षा करनेवाले कानून मंजूर करवाते। यदि पेट्रीशियन इन कानूनों को पास करने से इंकार करते, तो प्लेबियन सैन्य सेवा का बहिष्कार करने लगते, कर न देते और रोम छोड़ चले जाने की धमकी देते। कभी-कभी सशस्त्र लड़ाई की नौबत भी आ जाती थी। सेना के निर्बल होने, रोम का खजाना खाली होने और विद्रोह छिड़ जाने के डर से पेट्रीशियनों को प्लेबियनों को एक के बाद दूसरी रियायत देने को मजबूर होना पड़ा। पेट्रीशियनों की भांति प्लेबियनों को भी रोम का नागरिक कहलाने का सम्मानित अधिकार मिल गया। रोम के नागरिकों को कर्ज न अदा कर पाने पर दास बना लेने की प्रथा पर पाबंदी लगा दी गयी। शीघ्र ही प्लेबियनों ने कौंसुल और दूसरे उच्च पदों पर नियुक्त होने और समुदाय के खेतों में हिस्सा पाने का अधिकार भी प्राप्त कर लिया।

२०० वर्ष से भी अधिक चले संघर्ष में विजय प्लेबियनों की हुई। तीसरी शताब्दी ईसापूर्व के आरंभ तक वे रोम के **पूर्णाधिकारप्राप्त नागरिक** बन चुके थे।

२. रोम में अभिजातों का प्रभुत्व। प्लेबियनों की विजय के बाद माना जाने लगा था कि रोम का कोई भी नागरिक किसी भी सरकारी पद अथवा सेनेटर के पद के लिए निर्वाचित हो सकता है। किंतु इन पदों पर काम करने के लिए कोई वेतन नहीं मिलता था। इसलिए वे गरीबों की पहुंच के बाहर ही रहते थे, क्योंकि उन्हें आजीविका के लिए दिनभर कमरतोड़ मेहनत करनी पड़ती थी।

कौंसुल और दूसरे पदों पर भूमि और दासों के मालिक सम्पन्न पेट्रीशियन और प्लेबियन ही आसीन हो पाते थे। तीसरी शताब्दी ईसापूर्व में ऐसा शायद ही कोई सम्पन्न रोमन था, जो खुद अपनी जागीर में काम करता हो। सम्पन्न रोमनों की जमीन पर कम्मी-मजदूर या दूसरे देशों से लाये गये दास काम किया करते थे।

रोम की आबादी में शनैः शनैः कुछ दर्जन सर्वाधिक सम्पन्न पेट्रीशियन और प्लेबियन कुटुंब प्रकट हो गये। हर पद के लिए हर बार इन कुटुंबों के सदस्य ही निर्वाचित होते थे।

सेनेट भी उन्हीं से बनी होती थी। इस तरह रोम में एक संभ्रान्त वर्ग पैदा हो गया, जो भूस्वामी और दासों का स्वामी भी था और नगर पर शासन भी करता था। रोम के अन्य नागरिकों के लिए कौंसुल या सेनेटर बन पाना असंभव सा हो गया था।

रोमन गणतंत्र में इस तरह वास्तविक सत्ता संभ्रांत दासस्वामियों के कुछ दर्जन परिवारों के हाथों में ही संकेंद्रित हो गयी। रोमन गणतंत्र दासप्रथात्मक और अभिजातीय गणतंत्र था।

तीसरी शताब्दी ईसापूर्व में रोमन गणतंत्र का शासन

जन सभा	कौंसुल	सेनेट
रोम के नागरिकों की सभा एक वर्ष की अवधि के लिए कौंसुलों का निर्वाचन करती थी; सेनेट के प्रस्तावों को स्वीकार या अस्वीकार करती थी।	अभिजातों में से निर्वाचित; सेना का संचालन करते थे; न्यायाधीश थे।	इसमें भूतपूर्व कौंसुल होते थे; राज्य के कामकाज का निर्देशन करती थी।

३. तीसरी शताब्दी ईसापूर्व में रोमन सेना। रोमन गणतंत्र के पास शक्तिशाली, सुसंगठित और सुप्रशिक्षित सेना थी। वह मुख्यतया किसानों से बनी थी, क्योंकि सैन्य सेवा में केवल उन लोगों को लिया जाता था, जिनके पास कृषि भूमि होती थी।

सेना **लीजनों** में बंटी हुई थी, जिनमें से हर एक में ४५०० सैनिक होते थे। लीजन छोटे-छोटे दस्तों में विभाजित होती थी, जो मैदानों में ही नहीं, वरन तथा पर्वतों में और नगर की सड़कों पर भी लड़ सकते थे।

लड़ाई मामूली हथियारों से लैस सैनिक शुरू करते थे। शत्रु की पांतों में गड़बड़ी पैदा करने के लिए वे उनपर बाण बरसाते थे, पत्थर और बल्लम फेंकते थे। इसके बाद वे पीछे हटकर भारी हथियारों से लैस पैदल सैनिकों के लिए, जो लीजन की मुख्य शक्ति थे, जगह खाली कर देते थे। शत्रु पर भाले बरसाकर वे तलवारें भांजते हुए उनपर टूट पड़ते थे। हाथापायी की इस लड़ाई में उनकी छोटी-छोटी तलवारें बड़ी घातक सिद्ध होती थीं। इस बीच अश्वारोही सैनिक बाजुओं में पैदल दस्तों की रक्षा करते रहते थे और जीत जाने पर भागते हुए शत्रु सैनिकों का पीछा कर उनका सफ़ाया कर डालते थे।

रोमन सेना में कठोर अनुशासन था। हथियार खोने या ड्यूटी पर सोने के लिए सीधे-सीधे प्राणदंड दिया जाता था। सेनाध्यक्ष की आज्ञा का कठोरतापूर्वक पालन करना पड़ता था।

४. इटली पर रोम का अधिकार। रोमन अपने पड़ोसियों के इलाक़ों पर क़ब्ज़ा करने के लिए प्रायः उनसे लड़ते रहते थे। अपेनाइन प्रायद्वीप पर कम से कम १२ जातियां रहती थीं और

१. हाथों में अपने पूर्वजों की आवक्ष प्रतिमाएं लिये रोमवासी की मूर्ति। रोमवासी टोगा – चादरनुमा लबादा – ओढ़े हुए है। टोगा रोमनों का विशेष वस्त्र था। इस रोमवासी ने अपने को पूर्वजों की प्रतिमाओं के साथ चित्रित क्यों कराना चाहा? २. युद्ध में लीजनों (रोमन सेना) की व्यूह-रचना। (आधुनिक चित्र।) रोमन सैनिक कैसे अस्त्रों से लैस होते थे? (देखें पृष्ठ २१६।)

उनके बीच लड़ाई चलती रहती थी। उनसे रोम की लड़ाई २०० वर्ष से भी अधिक तक जारी रही। रोमन सैनिक उनसे बेहतर हथियारों से लैस, बेहतर प्रशिक्षित और अनुशासनबद्ध थे। पड़ोसी क़बीलों की सेनाएं रोमनों के सामने टिक न पायीं। रोम इटली को एक के बाद दूसरी जाति को अपने अधीन बनाता गया। पराजितों से रोमन उनकी एक तिहाई कृषि भूमि और चरागाह छीन लेते थे। उनमें से अधिकांश पर अभिजातों का कब्ज़ा हो जाता था। इन ज़मीनों पर सेनेट कम ज़मीनवाले रोमन किसानों के उपनिवेश बना देती थी। ये उपनिवेश विजित प्रदेशों पर रोम के आधिपत्य के आधार-स्तम्भ बन जाते थे। सेनेट विजित जातियों को एक दूसरे के विरुद्ध भड़काने की कोशिशें भी करती रहती थी, ताकि वे रोम के विरुद्ध एकजुट न होने पायें। सेनेट का सिद्धान्त था: "बांटो और राज करो!"

तीसरी शताब्दी ईसापूर्व के मध्य में रोम ने दक्षिणी इटली के यूनानी नगरों को भी जीत लिया और इस तरह सारे अपेनाइन प्रायद्वीप पर उसका आधिपत्य कायम हो गया।

१. लड़ाई में प्रयुक्त हाथी। (एक प्राचीन उद्भृत चित्र।) हाथी की पीठ पर योद्धाओं के बैठने के लिए हौदा है। आगे महावत बैठा है। २. राजा पाइरस (प्राचीन मूर्ति।)

रोम-शासित प्रदेश की सीमाएं अब सिसिली को छू रही थीं, जहां रोमनों की एक अन्य शक्तिशाली प्रतिद्वंद्वी – कार्थेज – की सेना से टक्कर हुई।

'पाइरसी विजय'

(प्लूटार्क लिखित वृत्तांत से)

पाइरस के साथ युद्ध में रोम की विजय का मुख्य कारण क्या था?

रोम के साथ युद्ध के दौरान दक्षिणी इटली के यूनानी उपनिवेशों ने बाल्कन प्रायद्वीप के एपिरस नामक एक छोटे से राज्य के राजा पाइरस से मदद मांगी। पाइरस अपने साथ २२ हजार पैदल सैनिक, ३००० अश्वारोही और २० हाथी लेकर उनकी मदद के लिए पहुंचा।

लड़ाई में पाइरस के हाथी रोमनों की पांतों में घुसकर उन्हें रौंद डालते थे और हाथियों पर बैठे सैनिक शत्रु पर बाणों और बल्लमों की वर्षा करते थे। इस तरह पाइरस की सेना कई लड़ाइयों में विजयी रही। लेकिन इनमें उसे भी इतना नुकसान पहुंचा कि पाइरस को आखिर कहना पड़ा, "अगर ऐसी एक विजय और हुई, तो मैं अपनी सेना से ही हाथ धो बैठूंगा!" तब से लोग जब "पाइरसी विजय" का मुहावरा इस्तेमाल करते हैं, तो उनका मतलब ऐसी विजय से होता है, जो हार के बराबर हो।

रोमनों ने नये सैनिक भरती करके अपनी सेना को न केवल बहाल कर लिया, बल्कि उसकी तादाद और भी बढ़ा दी। रोम की तुलना ऐसे अजदहे से की जाती थी, जिसका एक सिर काट दो, तो उसके स्थान पर दो नये सिर उग आते हैं।

निर्णायक लड़ाई में रोमनों ने शत्रु के हाथियों के आगे कीलोंवाले तख्ते बिछा दिये और जलते हुए लट्ठों और बाणों से उन्हें इतना डराया कि वे भाग खड़े हुए और अपने ही सैनिकों को रौंदने लगे। पाइरस की सेना हार गयी। कुछ यूनानी नगरों ने बिना लड़े ही रोमनों के सामने आत्मसमर्पण कर दिया और दूसरों पर धावा बोलकर कब्जा कर लिया गया।

?

१ छठी-तीसरी शताब्दी ईसापूर्व में रोमन गणतंत्र की शासन-प्रणाली में क्या परिवर्तन आये? २ तीसरी शताब्दी ईसापूर्व की रोमन शासन-प्रणाली और पांचवीं शताब्दी ईसापूर्व की एथेंस शासन-प्रणाली में क्या समानता और क्या अंतर था? अभिजाततंत्रीय गणतंत्र किसे कहते हैं? ३ मानचित्र पर छठी शताब्दी ईसापूर्व और तीसरी शताब्दी ईसापूर्व के मध्य में रोमन राज्य की सीमाएं दर्शाइये। रोमनों की सफलता का क्या कारण था? ४ रोमनों ने इटली की विजित जातियों पर अपना आधिपत्य बनाये रखने के लिए क्या किया?

तेरहवां अध्याय

रोमन गणतंत्र का भूमध्यसागर क्षेत्र का सबसे शक्तिशाली राज्य बन जाना

§ ४७. पश्चिमी भूमध्यसागर क्षेत्र में प्रभुत्व के लिए रोम और कार्थेज का संघर्ष

(मानचित्र ६ और पृष्ठ २२३ पर दिया मानचित्र)

याद करें कि भूमध्यसागर क्षेत्र में यूनानी नगरों के अलावा और कौन सबसे बड़े व्यापारी नगर थे (§ १६, अनुच्छेद ३)।

१. कार्थेज नगर और उसके अधिकार में स्थित प्रदेश। अफ़्रीका के उत्तरी तट पर स्थित कार्थेज नगर की स्थापना फिनीशियनों ने की थी। यह नगर एक ऐसे अंतरीप पर बना हुआ था, जो समुद्र में दूर तक चला गया था।

कार्थेज सागर मार्गों से होनेवाले व्यापार का एक बहुत बड़ा केंद्र था। उसके गहरे और सुविधाजनक जहाजघाटों में हमेशा बड़ी संख्या में पोत माल लादते या उतारते देखे जा सकते थे। वहां तट पर बड़े-बड़े गोदाम बने हुए थे। पोतों के मल्लाह और बंदरगाह के खलासी दास होते थे।

कार्थेज के आसपास की सारी उपजाऊ भूमि दासस्वामियों की संपत्ति थी। उनके खेतों और बाग़-बागान में दास काम करते थे। दास भाग न जायें, इसलिए कई-कई दासों को एक ही जंजीर से बांध दिया जाता था।

कार्थेज के पास शक्तिशाली नौसैनिक बेड़ा और विशाल सेना थी। सेना में अधिकांशतः भाड़े के सैनिक ही थे। नगर की रक्षा के लिए उसके गिर्द पत्थरों की एक जबर्दस्त दीवार थी, जिसमें जगह-जगह प्रहरी बुर्ज बने हुए थे। कार्थेजवासी विशाल तटवर्ती क्षेत्रों और द्वीपों के स्वामी थे। वे सारे ही पश्चिमी भूमध्यसागर क्षेत्र पर अपना आधिपत्य क़ायम कर लेना चाहते थे।

२. संघर्ष का आरंभ। सिसिली पर क़ब्ज़ा करने की रोम और कार्थेज की कोशिशों का नतीजा यह निकला कि २६४ ईसापूर्व में उनके बीच युद्ध छिड़ गया। यह युद्ध **प्यूनिक** युद्ध के नाम से विख्यात है, क्योंकि कार्थेजियों को रोमन लोग **प्यून** कहा करते थे। युद्ध २० वर्ष से भी अधिक चला और अंततः विजय रोमनों की हुई। उन्होंने सिसिली के अलावा **सार्डीनिया** और **कोर्सिका** द्वीपों पर भी अधिकार कर लिया।

किंतु कार्थेज की रीढ़ न टूटी थी। दोनों ही पक्ष पश्चिमी भूमध्यसागर क्षेत्र पर अपना प्रभुत्व जमाने के लिए नये युद्ध की तैयारियां करते रहे।

इस अंतरीप पर प्राचीन काल में कार्थेज नगर बसा हुआ था। स्थलभाग में अंदर तक चली गयी खाड़ी पर ग़ौर करें।

कार्थेजियों ने स्पेन में विशाल इलाक़ों पर क़ब्ज़ा कर लिया। उनकी सेना का संचालन हैनीबाल नाम का एक युवा सेनानी कर रहा था। उसकी सैन्य-संचालन प्रतिभा और अनुपम वीरता का लोहा शत्रु भी मानते थे।

३. हैनीबाल का इटली पर आक्रमण। २१८ **ईसापूर्व** में रोमनों ने कार्थेज से युद्ध की घोषणा कर दी। इसके लिए उन्होंने स्पेन पर कार्थेज के क़ब्ज़े को बहाना बनाया। दूसरा प्यूनिक युद्ध शुरू हो गया। रोमनों के लिए सर्वथा अप्रत्याशित चाल चलते हुए हैनीबाल ने अपनी सेना समेत बर्फ़ीली पहाड़ी पगडंडियों से आल्प पर्वत पार करके इटली में घुसने की ठानी। आल्प को लांघते हुए उसके आधे सैनिक जान से हाथ धो बैठे। बची-खुची सेना के साथ हैनी-बाल उत्तरी इटली की पो नदी की घाटी में आ पहुंचा। यहां गाल भी, जो उत्तरी इटली के निवासी थे, उसके साथ आ मिले। आल्प पार करते हुए उसकी सेना को जो क्षति हुई थी, इससे उसकी काफ़ी हद तक भरपाई हो गयी।

अब जो घमासान लड़ाइयां शुरू हुईं, उनमें कार्थेजियों ने रोम की सेनाओं के छक्के छुड़ा दिये। रोम द्वारा विजित अन्य जातियों को भी अपनी ओर मिलाने के उद्देश्य से हैनीबाल ने अपनी सेना के साथ उत्तर से लेकर दक्षिण तक सारे इटली को पार किया।

दूसरे प्यूनिक युद्ध से पहले रोम के अधिकार में स्थित क्षेत्र
दूसरे प्यूनिक युद्ध से पहले कार्थेज के अधिकार में स्थित क्षेत्र
हैनीबाल के सैनिक अभियान
रोमनों का अफ्रीका अभियान
२०२ X दूसरे प्यूनिक युद्ध की प्रमुख लड़ाइयां और तिथियां
दूसरे प्यूनिक युद्ध के फलस्वरूप रोम के जीते प्रदेश

दूसरा प्यूनिक युद्ध

४. कानी की लड़ाई। २१६ ईसापूर्व में **कानी** नामक एक बस्ती के पास रोमन और कार्थेजी सेनाओं की फिर टक्कर हुई। रोमन सेना के पास ८० हजार पैदल और ६ हजार अश्वारोही थे, जबकि कार्थेजियों के पास ४० हजार पैदल और कोई १० हजार अश्वारोही।

रोमन कौंसुल चाहते थे कि अपनी बहुसंख्य पैदल सेना को एक साथ झोंककर शत्रु को छिन्नभिन्न कर दें। उन्होंने उसे एक विशाल आयताकार व्यूह का रूप दिया। अश्वारोही सैनिक दोनों बाजुओं में उसकी रक्षा कर रहे थे। (देखें मानचित्र ८।)

हैनीबाल जानता था कि उसकी सेना शत्रु के दबाव को देर तक न झेल पायेगी। किंतु उसे यह भी मालूम था कि अपने बाजुओं और पिछवाड़े को बचाने की जरूरत पड़ने पर रोमनों को हमला रोक देना पड़ेगा। इसलिए उसने एक साहसिक योजना बनायी : रोमन सेना को घेर लिया जाये। उसने अपनी पैदल सेना को अर्धचंद्र के रूप में खड़ा किया और बाजुओं में सर्वश्रेष्ठ पैदल और अश्वारोही दस्ते तैनात किये।

रोमन पैदल सेना आगे बढ़ी और कार्थेजियों के केंद्रीय भाग पर दबाव डालते हुए उसमें दूर अंदर तक घुस गयी। लेकिन इसमें उसने अपने बाजुओं को अरक्षित छोड़ दिया। मौका देखकर हैनीबाल के चुने हुए दस्ते तुरन्त उनपर टूट पड़े। कार्थेजी अश्वारोहियों ने रोमन अश्वा-

रोहियों को तितर-बितर कर दिया और फिर पिछवाड़े से पैदल रोमनों पर धावा बोला। चारों ओर से अपने को शत्रु से घिरा पाकर रोमन पांतों में खलबली और भगदड़ मच गयी। कार्थेजी उनपर निर्मम वार करने लगे। कुल मिलाकर कोई ७० हजार रोमन सैनिक मारे गये अथवा बंदी बना लिये गये।

५. थकानेवाला युद्ध। कानी की लड़ाई में कार्थेजियों की विजय के बाद रोम के अधीनस्थ कई इतालवी नगर उनकी तरफ हो गये। रोमनों की स्थिति और भी संगीन बन गयी। फिर भी जब कार्थेजियों का दूत शांति-वार्ता का प्रस्ताव लेकर रोम आया, तो सेनेट ने उसे सुनने से भी इंकार कर दिया।

कार्थेजी सेना रोम तक बढ़ आयी थी। किंतु हैनीबाल के पास इतनी शक्ति और सेना न बची थी कि नगर की नाकाबंदी कर सके या उसपर धावा बोले। फलस्वरूप उसे फिर दक्षिणी इटली लौट जाना पड़ा।

रोमनों ने लड़ने में समर्थ सभी पुरुषों को सेना में भर्ती करके कोई दो लाख सैनिक जुटा लिये। उनके सेनानायकों ने बड़ी लड़ाइयों से कतराने और छोटे-छोटे दस्तों पर हमला करने व कार्थेजियों से जा मिले नगरों की घेराबंदी करने की नीति अपनायी। इस प्रकार का युद्ध हैनीबाल के लिए घातक था। उसे कार्थेज से सैनिकों और रसद के रूप में कोई सहायता नहीं मिल रही थी। इधर रोम की ताकत बढ़ती जा रही थी, उधर उसकी सेना दिनोंदिन क्षीण होती जा रही थी।

६. युद्ध का अंत। कानी की लड़ाई के १२ वर्ष बाद रोमनों ने अपनी सेना अफ्रीका भेजी। उसका संचालन अनुभवी और दृढ़निश्चयी सेनानायक **सीपियो** कर रहा था। कार्थेज को बचाने के लिए हैनीबाल को इटली छोड़ देना पड़ा।

२०२ ईसापूर्व में **जामा** नगर के निकट रोम और कार्थेज की सेनाएं आपस में फिर टकरायीं। इस बार अश्वारोही सेना की दृष्टि से रोमनों का पलड़ा भारी था। रोमन और

१. हैनीबाल। २. सीपियो। (प्राचीन प्रतिमाएं।) ३. रोमन युद्धपोत। (उद्भृत।) पोत के अग्रभाग पर एक मुड़वां पुलिया बनी होती थी, जिसकी नोक पर भारी और तेज कांटा लगा होता था। शत्रुपोत के निकट आते ही रोमन पुलिया खोल देते थे और कांटा पोत पर धंस जाता था। तस्वीर में रोमन सैनिकों को शत्रु-पोत पर चढ़ने और लड़ाई शुरू करने को तैयार दिखाया गया है।

जैसे दास। दास बनकर आदमी अपना नाम खो बैठता था — उसे बस किसी चालू संबोधन से ही पुकारा जाता था, जो प्रायः अपमान या घृणा का सूचक होता था, अथवा बस मिस्री, पारसीक, आदि कहकर ही पुकार लिया जाता था।

दास चूंकि बहुत सस्ते थे, इसलिए उनके मालिक उनपर कोई दया नहीं दिखाते थे और मरते दम तक काम करवाते थे। फ़सल कटाई या बुवाई के वक्त पर दासों को दिन में १८-१८ घंटे काम करना पड़ता था। आटा पीसनेवाले दास के गले में लकड़ी का बड़ा सा चक्का डाल दिया जाता था, ताकि हाथ मुंह तक न पहुंच सके और इस तरह वह आटा न फांक सके। मालिक दास को साल में केवल एक चोला पहनने को देता था, जो साल ख़त्म होते-होते चीथड़े बन जाता था। फिर चीथड़ों पर भी दास का कोई हक़ न होता था — मालिक उनसे अपने लिए दरी या और कुछ बनवा लेता था।

कुछ साल की कमरतोड़ मेहनत के बाद ही युवा और हृष्ट-पुष्ट आदमी बूढ़ा और जर्जर बन जाता था। काम करने में असमर्थ, कमज़ोर दासों को ले जाकर किसी उजाड़ टापू पर छोड़ दिया जाता था, जहां वे भूख से मर जाते थे। दासस्वामी उनकी जगह नये दास ख़रीद लेता था, जिनकी मंडी में कमी कभी नहीं रहती थी।

४. ग्लेडियेटरों के दंगल। सबसे ताकतवर और फुर्तीले दासों को रोमवासी हथियार चलाना सिखाते थे और आपस में लड़ने को बाध्य करते थे। ऐसे दासों को **ग्लेडियेटर** कहा जाता था।

ग्लेडियेटरों के दंगलों के लिए विशेष अखाड़े बनाये जाते थे, जिन्हें **एंफ़ीथियेटर** कहा जाता था और जो आधुनिक सरकस जैसे होते थे। मध्य में रेतीला प्रांगण — अरेना — होता था, जिसके गिर्द दर्शकों के बैठने के लिए गोल सीढ़ियां बनी होती थीं। ऐसे अखाड़े इटली और प्रांतों के लगभग सभी बड़े नगरों में थे। उत्सवों के अवसर पर दर्शकों को दिखाने के लिए उनके सामने अखाड़े में इक्के-दुक्के ग्लेडियेटरों को या उनके पूरे दस्तों को लड़वाया जाता था। (नीचे चित्र २ को देखकर बतायें कि ग्लेडियेटर कैसे हथियारों से लैस होते थे।)

जो ग्लेडियेटर कम उत्साह से लड़ते थे, उन्हें कोड़े मारकर या भालों की नोकों से धकेलकर उकसाया जाता था।

हारे हुए, मगर अभी जीवित ग्लेडियेटर का भाग्य दर्शक तय करते थे। यदि वे हाथ उठाते थे, तो उसकी जान बख्श दी जाती थी और यदि अंगूठा नीचे करते थे, तो विजेता वहीं उसे छुरा भोंककर मार डालता था। (देखें रंगीन चित्र १६।) ग्लेडियेटरों को शेरों, बाघों और दूसरे हिंस्र जानवरों से भी लड़वाया जाता था।

५. दासस्वामी दासों से आज्ञापालन कैसे करवाते थे। दास भाग न जायें, इसके लिए उन्हें रात में कोठरियों में बंद कर दिया जाता था, जिनमें हवा और उजाले के लिए बहुत छोटे झरोखे बने होते थे। बहुत से दासों के सोते और काम करते समय भी बेड़ियां पड़ी रहती थीं, जिनकी रगड़ से शरीर में घाव हो जाते थे। दासों के गले में धातु की पट्टी पड़ी रहती थी, जिसपर लिखा होता था, "मुझे पकड़ रखो, नहीं तो मैं भाग जाऊंगा"। उनके चेहरे पर प्रायः मालिक का ठप्पा दाग दिया जाता था।

१, २, ३, ४. हथचक्की चलाते, निर्माण-सामग्री उठाने के लिए बड़े-बड़े चक्के घुमाते, कुदाल से ज़मीन खोदते और वस्त्र उत्पादनशाला में काम करते रोमन दास। (प्राचीन उद्भृतियां।) इन चित्रों के आधार पर दासों के काम के बारे में क्या कहा जा सकता है? ५. यंत्रणा भोगता हुआ दास। (प्राचीन रोमन लघु-मूर्ति।)

१. आधुनिक दक्षिणी फ़्रांस में एक प्राचीन रोमन एंफ़ीथियेटर। (छाया-चित्र।) २. ग्लेडियेटरों का दंगल। पीछे खड़ा आदमी उन्हें उकसा रहा है। ३. दास की गलपट्टी। वह धातु की बनी होती थी।

निरीक्षक दासों पर हमेशा नजर रखते थे। दास कोई साजिश न कर बैठें, इस डर से उन्हें आपस में बातें नहीं करने दिया जाता था। दास के लिए दो ही काम थे – मालिक का बताया काम करना या सोना। मालिक अलग-अलग देशों से लाये हुए और एक दूसरे की भाषा न समझनेवाले दास खरीदने की कोशिश करता था। रोमन दासस्वामियों का कहना था कि "दहशत पैदा किये बिना इस भीड़ (अर्थात दासों) को काबू में नहीं रखा जा सकता"। दासों में दहशत पैदा करने के लिए उन्हें तरह-तरह की यंत्रणाएं दी जाती थीं, जैसे कोड़ों से पीटना, आग में झुलसाना, अंग-भंग करना, आदि। मौत की सजा पाये हुए दास को सलीब पर लटकाकर हाथों और पैरों में कीलें ठोक दी जाती थीं और चिलचिलाती धूप में छोड़ दिया जाता था, ताकि असह्य कष्ट भोगता हुआ वह शनैः शनैः मर जाये।

दासों को अपने मालिकों से घोर नफ़रत थी। उनके और मालिकों के बीच घोर संघर्ष चलता रहता था।

प्राचीन विश्व के और किसी देश में इतने अधिक दास न थे, जितने कि रोम में। इसी तरह और कहीं दासों का इतना निर्मम शोषण नहीं किया जाता था, जितना कि रोम में। दासप्रथात्मक व्यवस्था का सर्वाधिक विकास रोम में ही हुआ था।

? १. प्राचीन काल में अर्थव्यवस्था की विभिन्न शाखाओं में दास श्रम के व्यापक उपयोग का क्या कारण था? उत्तर देने में आसानी के लिए याद करें कि दासों से आम तौर पर क्या काम करवाये जाते थे। २. सिद्ध करें कि दासप्रथात्मक व्यवस्था का प्राचीन पूर्वी देशों और यूनान की अपेक्षा रोम में अधिक विकास हुआ था। इसके क्या कारण थे? ३. प्राचीन काल में लोगों को किन-किन तरीक़ों से दास बनाया जाता था? *४. एक रोमन दास के शब्दों में उसकी जीवन-कथा लिखें।

§५०. इटली के किसानों की दुर्दशा और उनका भूमि के लिए संघर्ष

(मानचित्र ८)

याद करें कि ट्रिब्यूनों की क्या भूमिका थी (§४६, अनुच्छेद २) और चौथी शताब्दी ईसापूर्व में यूनान के किसान और शिल्पी क्यों तबाह हुए थे (§४२, अनुच्छेद २)।

१. दासों से खेती करवाना सस्ता पड़ता था। इसके अलावा रोम में प्रांतों से बड़ी मात्रा में सस्ता अनाज आयात किया जाने लगा था। फलस्वरूप अनाज के दाम गिरते गये। अनाज उगानेवाले किसान तबाह होने लगे और अपनी ज़मीनें मिट्टी के भाव दासस्वामियों को बेचने लगे। उस काल के लेखक बताते हैं कि पूरे के पूरे इलाक़े उजाड़ बन गये थे। जहां कभी गांव और किसानों के खेत थे, वहां अब दासों को ज़मीन जोतता और मवेशी चराता देखा जा सकता था।

बहुत बड़े पैमाने पर दासों के आयात और रोम द्वारा प्रांतों की लूट ने दासस्वामियों को और भी अधिक धनी बना दिया था, जबकि किसानों की हालत लगातार शोचनीय होती जा रही थी।

उजड़े हुए किसान रोजी-रोटी की खोज में रोम और दूसरे नगरों का रास्ता पकड़ने लगे। **नगरों में हज़ारों बेघर लोग इकट्ठे हो गये। लेकिन यहां भी रोज़गार मिलना कठिन था, क्योंकि लगभग सभी काम दासों से ही करवाये जाते थे।**

किसानों के हाथ से ज़मीन निकल जाने का एक नतीजा यह भी हुआ कि सैन्य-सेवा के लिए बुलाये जानेवाले लोगों की संख्या घट गयी। रोमन सेना पहले जैसी शक्तिशाली नहीं रह गयी। वह दासों के उस विद्रोह को बड़ी मुश्किल से दबा पायी, जो १३८ ईसापूर्व में सिसिली में फूट पड़ा था। इस विद्रोह ने सारे इटली के दासस्वामियों में दहशत पैदा कर दी।

दूसरी शताब्दी–पहली शताब्दी ईसापूर्व के एक रोमन दासस्वामी की जागीर। दूर पृष्ठभूमि में दासस्वामी की कोठी है। [illegible] [illegible] अंगूर और जैतून के बाग हैं।

२. कुछ दासस्वामी समझ गये कि अपने मालिकों से नफ़रत करनेवाले दासों की संख्या का हद से बढ़ जाना और किसानों का तबाह होते जाना उनके (दासस्वामियों के) लिए कितना ख़तरनाक है। इस बात को **ग्रेकस भाइयों – टाइबेरियस और गेयस** – ने भी समझा। उनका जन्म एक संभ्रांत प्लेबियन परिवार में हुआ था।

बड़ा भाई टाइबेरियस अपनी बुद्धिमत्ता, ईमानदारी और वीरता जैसे गुणों के कारण रोम में बड़ा लोकप्रिय था। १३३ **ईसापूर्व** में उसे ट्रिब्यून चुना गया।

टाइबेरियस ने एक क़ानून पेश किया, जिसके अनुसार कोई भी परिवार २५० हेक्टर से अधिक भूमि नहीं रख सकता था और जितनी ज़मीन इससे अधिक होगी, उसे उस परिवार से लेकर ग़रीब किसानों में बांट दिया जाना था। किसान उस भूमि को बेच नहीं सकते थे। टाइबेरियस ने अपना प्रस्ताव जनता के सामने रखा। फ़ोरम में आम बहुत लोग जमा थे। उसने अपने जोशीले भाषणों में प्रस्तावित क़ानून की ज़बर्दस्त पैरवी की। जनता ने अपने ट्रिब्यून का समर्थन किया। नगर की दीवारें, खंभे और यहां तक कि कब्रों के पत्थर भी नारों से रंग गये, जिनमें ग़रीबों ने उसका बदला दिखाने के लिए आह्वान

§ ५१. स्पार्टकस के नेतृत्व में दासों का विद्रोह

(मानचित्र १७)

याद करें कि प्राचीन विश्व में शोषितों के विद्रोह कहां-कहां और कब हुए थे।

१. विद्रोह का आरंभ। दासों की तादाद में वृद्धि पहली शताब्दी ईसापूर्व में भी जारी रही; उनकी हालत में भी कोई परिवर्तन नहीं हुआ। फलस्वरूप दासस्वामियों के विरुद्ध दासों का संघर्ष और उग्र बन गया।

कापुआ नगर में एक बहुत बड़ा ग्लेडियेटर जेल-प्रशिक्षणालय था। ७४ **ईसापूर्व** में वहां के ग्लेडियेटरों ने विद्रोह का षड्यंत्र रचा। प्रशिक्षणालय के प्रहरियों को उसका पता चल गया। फिर भी कुछ दर्जन षड्यंत्रकारी वहां से भाग निकले और **विसूवियस** पहाड़ पर जा छिपे।

भगोड़ों ने **स्पार्टकस** को अपना नेता बनाया। वह बहुत समझदार, ताक़तवर और बहादुर था। उसका जन्म उत्तरी बाल्कन में हुआ था, जहां रोमनों ने उसे पकड़कर बंदी बना लिया था। भागने की कोशिश करने की वजह से उसे ग्लेडियेटर बना दिया गया था।

विद्रोहियों के पास आरंभ में हथियारों के नाम पर घिसकर तेज की हुई धातु की गलपट्टियां और कुछ रसोई के चाकू ही थे। अंगूर की बेलों से उन्होंने ढालें बना लीं। इन हथियारों के साथ वे दासस्वामियों की जागीरों और रास्ते से गुज़रनेवाली गाड़ियों पर हमला करने लगे। शीघ्र ही उनके पास शत्रु से छीने हुए हथियार भी हो गये। अब आसपास की जागीरों के दास भी स्पार्टकस से आ मिले।

तीन हजार रोमन सैनिकों ने स्पार्टकस के छिपने की जगह को घेर लिया और पहाड़ से नीचे जानेवाली एकमात्र पगडंडी पर घात लगाकर बैठ गये। उन्हें आशा थी कि भूख के मारे विद्रोही आत्मसमर्पण करने को मजबूर हो जायेंगे। किंतु दासों ने बेलों से लंबी सीढ़ियां बना लीं और रात में चुपके से पहाड़ से नीचे उतर आये। रोमन सोचते थे कि और कोई रास्ता न होने के कारण कोई पहाड़ से नीचे नहीं उतर सकेगा और इसलिए उन्होंने पहरा नहीं बिठाया था। विद्रोहियों ने अप्रत्याशित रूप से हमला करके सारे रोमन दस्ते को नष्ट कर दिया। (देखें रंगीन चित्र २०।)

२. आजादी की राह पर। विद्रोहियों की सफलताओं का समाचार सारे देश में फैल गया। सारे इटली से दास भागकर स्पार्टकस के दस्तों में शामिल होने लगे।

स्पार्टकस के नेतृत्व में अब दसियों हजार दास एकजुट हो गये थे। वे अलग-अलग भाषाएं बोलते थे और इसलिए प्रायः एक दूसरे की बात को नहीं समझ पाते थे। स्पार्टकस ने उनके बीच दृढ़ अनुशासन क़ायम किया। रोमन सेना के नमूने पर उसने पैदल, अश्वारोही और [illegible] दस्तों का गठन किया। विद्रोहियों के शिविर में लुहार दिन-रात हथियार तैयार करते रहे।

स्पार्टकस ने अपनी फ़ौज को लेकर उत्तर की ओर कूच कर दिया। शायद वह दासों को इटली से बाहर ले जाना चाहता था, ताकि वे अपने-अपने देश लौट सकें।

सेनेट जानती थी कि विद्रोहियों की फ़ौज कितनी विकराल है। उसने दोनों कोंसुलों को उसका दमन करने के लिए भेजा। स्पार्टकस से अलग हुए दासों के दस्तों को कुचलने में कामयाबी पाने के बाद कोंसुल विद्रोहियों की मुख्य फ़ौज को भी घेरकर नेस्तनाबूद कर देना चाहते थे। किंतु स्पार्टकस उनकी योजना को भांप गया और उसने उन दोनों को मिलने का अवसर दिये बिना एक-एक करके पछाड़ दिया।

लुहार दास बना रहे हैं। (प्राचीन नमूना।)

रास्ते में मिलनेवाले रोमन दस्तों का सफ़ाया करते हुए विद्रोही आख़िरकार सारा इटली पार कर पो नदी की घाटी में पहुंच गये। किंतु अचानक ही स्पार्टकस को वापस लौट पड़ा। संभवतः बहुत से दास इटली छोड़कर नहीं जाना चाहते थे।

३. विद्रोही घेरे में। विद्रोहियों के लौटने की ख़बर सुनकर रोमन दासस्वामियों में भय छा गया। उन्होंने जल्दी-जल्दी एक विशाल सेना एकत्र की। बहुत से दासस्वामी खुद भी दासों से लड़ने को तैयार हो गये। **क्रेसस** नामक एक अमीर रोमन को सेना का नायक नियुक्त किया गया। इसके अलावा, सेनेट ने स्पेन और बाल्कन प्रायद्वीप से भी सेनाएं वापस बुला लीं।

स्पार्टकस ने देखा कि उसके पास इतने आदमी और इतनी शक्ति नहीं कि रोम की नाकेबंदी कर सके, इसलिए वह अपनी सेना के साथ दक्षिणी इटली की ओर बढ़ा। क्रेसस की रोमन सेना ने उसका रास्ता रोका, मगर विद्रोही दासों के सामने रोमन टोलियां टिक न पायीं। रोमन सैनिक विद्रोहियों से इतना भय खाते थे कि उनके निकट आते ही उनमें भगदड़ मच जाती थी। अपनी सेना में अनुशासन पुनर्स्थापित करने के लिए क्रेसस ने [illegible] उन सभी दस्तों के हर दसवें सैनिक को मृत्युदंड दिया, जो विद्रोहियों के सामने भाग खड़े हुए थे।

इटली के दक्षिण-पश्चिमी अंतरीप पर पहुंचकर स्पार्टकस सागर पार करके सिसिली जाना चाहता था, ताकि वहां के दासों को भी विद्रोह के लिए उकसाये। [illegible] ने पैसा लेकर विद्रोहियों को वहां पहुंचाने का वायदा किया, मगर बाद में दग़ा दे गये। दासों ने खुद ही बेड़े बनाये, मगर सागर में एकाएक उठे तूफ़ानों ने उनकी आशाओं पर पानी फेर दिया। बहुत निकट होने के बावजूद वे सिसिली न पहुंच सके।

क्रेसस स्पार्टकस की सेना पर सीधे हमला करने की हिम्मत न कर पाया। उसने उस संकरे स्थलसंयोजी पर क़ब्ज़ा कर लिया, जो अंतरीप से बाहर निकलने का एकमात्र रास्ता था, और उसके एक तट से दूसरे तट तक गहरी खाई और मिट्टी की ऊंची दीवार बना दी। विद्रोही अब चारों ओर से कट गये। उनके बीच भुखमरी फैलने लगी।

४. "भूखों मरने से तो लड़ते हुए मरना बेहतर है।" ऐसी विकट स्थिति में स्पार्टकस ने

रोमन छावनी। मध्य में बड़े तंबू में सेनानायक रहता था, उसके सामने दूसरे सेनानियों के तंबू और बलि-वेदी होती थी। छावनी खाई और मिट्टी की दीवार से घिरी होती थी।

४. सीज़र का रोम का महाधिपति बनना। गृहयुद्ध में विजय पाने के बाद सीज़र रोम लौट आया। उसे अब असीमित सत्ता प्राप्त हो गयी। सेनेट और कोंसुल चुपचाप उसका आदेशपालन करने लगे। उसने अपने को **इंपेरेटर**, यानी आदेशदाता घोषित किया। रोम में इस नाम से युद्धकाल में सेनानायकों को संबोधित किया जाता था। सीज़र ने उसे अस्थायी तौर पर नहीं, स्थायी तौर पर धारण कर लिया।

सर्वशक्तिमान अधिनायक को सम्राटों जैसा सम्मान दिया गया। सिक्कों पर उसका चित्र बनाया जाने लगा, उसकी मूर्ति देवी-देवताओं की मूर्तियों के साथ रखी जाने लगी। वह सेनेट में हाथीदांत और सोने की कुर्सी पर बैठता था। सीज़र ने अपने सैनिकों को तो मुक्तहस्त से पुरस्कृत किया, मगर गरीबों की आशाओं पर पानी फेर डाला। उन्हें पहले जितना अनाज मिलता था, उसकी मात्रा भी घटाकर आधी कर दी गयी।

५. सीज़र की मृत्यु। सेनेटरों में से कई सीज़र के एकतंत्रीय शासन, यानी एक व्यक्ति के शासन से असंतुष्ट थे। वे रोम में अभिजाततंत्रीय गणतंत्र सुरक्षित रखना और सत्ता अपने हाथों में बनाये रखना चाहते थे। इन सेनेटरों ने एक षड्यंत्र रचा। उसका नेता **ब्रूटस** नाम का एक धनी और संभ्रांत दासस्वामी था, जो सीज़र का मित्र माना जाता था।

४४ ईसापूर्व में सेनेट के अधिवेशन के दौरान षड्यंत्रकारियों ने सीज़र को घेर लिया और अपने वस्त्रों के नीचे छिपाये हुए छुरे निकालकर सीज़र पर २३ वार किये, जिनके घावों से उसकी वहीं मृत्यु हो गयी।

रोम में एकतंत्रीय शासन क़ायम करने का सीज़र का प्रयास असफल रहा, किंतु उसने यह दिखा दिया कि रोम की गणतंत्रीय व्यवस्था कितनी कमज़ोर थी।

प्लूटार्क-लिखित सीज़र के जीवन-वृत्तांत से

४९ ईसापूर्व में सीज़र अपनी सेना के साथ गाल प्रदेश की दक्षिणी सीमा पर स्थित रूबीकोन नामक छोटी नदी के पास पहुंचा। सेना के साथ सीमा पार करने का अर्थ गणतंत्र के विरुद्ध विद्रोह था और तब सीज़र के हाथ में या तो रोम की सत्ता आ जाती या फिर उसे शर्मनाक मृत्युदंड भुगतना पड़ता। रथ रोककर सीज़र देर तक अपनी योजना पर विचार करता रहा। कोई एक निर्णय ले पाना कठिन था। आख़िरकार सभी दुविधाएं छोड़ साहसपूर्वक भविष्य का सामना करने को तैयार होते हुए उसने कहा, "पांसा पड़ चुका है" – और नदी को पार करने लग गया।

सीज़र को एशिया कोचक में अपने एक प्रतिद्वंद्वी पर विजय पाने में न कोई समय लगा, न कोई कठिनाई ही हुई। इस विजय का समाचार उसने तीन शब्दों में भेजा, "वेनि, वीदि, वीचि!", यानी आया, देखा, जीत लिया।

? १. दूसरी शताब्दी ईसापूर्व के अंत और पहली शताब्दी ईसापूर्व के आरंभ में रोमन सेना में आये किन परिवर्तनों के कारण सीज़र रोम की सत्ता पर अधिकार कर सका था? २. सीज़र के रोम की सत्ता पर अधिकार करने के लिए उसके गाल-अभियान का क्या महत्त्व था? ३. गरीबों के प्रति सीज़र और ग्रेक्कस भाइयों के रवैये में क्या अंतर था? *४. प्रतिद्वंद्वियों पर विजय पाने के बाद सीज़र की सत्ता सुल्ला की सत्ता से किस लिहाज़ से भिन्न थी? कम से कम तीन अंतर बताये। ५. सीज़र ने रोम की सत्ता पर अधिकार स्पार्टकस के विद्रोह की समाप्ति के कितने वर्ष बाद किया था?

§५३. आक्टेवियन आगस्टस और उसके उत्तराधिकारियों के काल का रोमन साम्राज्य

(मानचित्र ९)

याद करें कि गणतंत्र किस प्रकार के राज्य को कहते हैं (§४५, अनुच्छेद ४) और राजतंत्र किस प्रकार के राज्य को (§४२, अनुच्छेद ४)।

१. गणतंत्रवादियों की पराजय। रोम की जनता ने सीज़र की हत्या करनेवाले षड्यंत्रकारियों का समर्थन नहीं किया। गणतंत्र की रक्षा शायद ही कोई करना चाहता था, क्योंकि उसमें सत्ता कुछ ही दर्जन अभिजात परिवारों के हाथों में केंद्रित थी। सीज़र के सैनिकों ने षड्यंत्रकारियों को सज़ा देनी चाही, किंतु वे पूर्व की ओर भाग गये। मक़दूनिया में गणतंत्रवादियों ने सेना जुटायी और इटली पर चढ़ाई की तैयारियां करने लग गये। रोम में पुनः गृहयुद्ध छिड़ गया।

सीज़र का भूतपूर्व सहायक **एंटोनी** (एंटोनियस) और युवा **आक्टेवियन**, जो उसका दत्तक पुत्र व भाई का पौत्र था, उसकी सीज़रपंथियों के नये सेनानायक बने। एंटोनी विलासप्रिय,

16*

१. आगस्टस की प्रशस्ति में निर्मित उद्भृति। ऊपर – देवी-देवताओं और गंधर्वियों से घिरा आगस्टस। एक देवी उसके सिर के ऊपर विजयमाला थामे हुई है। नीचे – युद्धबंदी पकड़ते हुए रोमन सैनिक। २. एक रोमन सम्राट के सम्मान में निर्मित विजय तोरण। (छायाचित्र।)

शक्तिवान और अनुभवी योद्धा था। इसके विपरीत आक्टेवियन न केवल क्षीणकाय व अनुभवहीन था, बल्कि उसमें सेनानायकत्व की प्रतिभा भी नहीं थी। किंतु वह चालाक और सतर्क आदमी था और प्रतिभाशाली सहायकों को चुनना जानता था।

एंटोनी और आक्टेवियन में कोई स्नेह नहीं था, किंतु गणतंत्रवादियों से लड़ने के लिए दोनों एकजुट हो गये। उन्होंने सेना सहित रोम में प्रवेश करके अपने कई हज़ार विरोधियों को मौत के घाट उतार डाला और उनकी संपत्ति पर क़ब्ज़ा कर लिया। इसके बाद दोनों ने मकदूनिया की ओर कूच किया। फ़िलिप्पी नगर के निकट हुई लड़ाई में उन्होंने गणतंत्रवादियों को हरा दिया। ब्रूटस ने तलवार घोंपकर आत्महत्या कर ली।

२. सत्ता के लिए एंटोनी और आक्टेवियन में संघर्ष। एंटोनी और आक्टेवियन ने रोमन साम्राज्य के शासन को आपस में बांट लिया। एंटोनी पूर्वी प्रांतों का शासक बनकर वैभव-विलास के साथ मिस्र की राजधानी सिकंदरिया में रहने लगा। आक्टेवियन रोम में रहता था और साम्राज्य के पश्चिमी भाग का शासन चलाता था।

किंतु दोनों ही एक दूसरे के विरुद्ध युद्ध की तैयारियां कर रहे थे। ३१ ईसापूर्व में यूनान में **एक्टियम** अंतरीप के पास दोनों की टक्कर हुई। उनके नौसैनिक बेड़ों के इस युद्ध में आक्टेवियन का बेड़ा विजयी रहा। एंटोनी अपनी सेना को छोड़कर सिकंदरिया वापस चला गया। सेनानायक से रहित सेना ने आत्मसमर्पण कर दिया।

३० ईसापूर्व में आक्टेवियन सिकंदरिया पर चढ़ आया। एंटोनी ने आत्महत्या कर ली।

मिस्र को रोमन राज्य का प्रांत बना दिया गया। इस प्रकार अंतिम यूनानी-मकदूनी राज्य का पतन हो गया।

३. आक्टेवियन का शासन। एंटोनी पर विजय पाने के बाद आक्टेवियन समस्त रोमन सेना का सेनापति और इंपेरेटर बन गया। रोमन राज्य गणतंत्र कहलाया जाता रहा। सेनेट की नियमित बैठकें होती रहीं और हर वर्ष जन-सभा कौंसुलों और दूसरे पदाधिकारियों का निर्वाचन करती रही। किंतु अपनी सशस्त्र शक्ति के बूते पर आक्टेवियन ने उन सबको अपनी मुट्ठी में कर लिया था।

जन-सभा सर्वोच्च पदों के लिए स्वयं आक्टेवियन को या उसके आदमियों को ही चुनती थी। कौंसुल और ट्रिब्यून आक्टेवियन की हर आज्ञा का पालन करते थे। एक रोमवासी था, जो उसकी इच्छा के बिना कौंसुल पद का उम्मीदवार बन गया था, उसे जेल में डाल दिया गया और वहीं उसकी मौत हो गयी। आक्टेवियन ने सेनेट से अपने सभी विरोधियों को निकाल दिया और उनके स्थान पर अपने समर्थक नियुक्त करवाये। सेनेट में सबसे पहले वही अपनी राय जाहिर करता था और सेनेटर इशारा समझकर उसकी इच्छा के अनुकूल निर्णय लेते थे। उन्होंने उसे **आगस्टस** अर्थात महामहिम की सम्मानित उपाधि से विभूषित किया।

आक्टेवियन ने ३० ईसापूर्व से अपनी मृत्युपर्यंत, यानी १४ ईसवी तक राज किया।

आक्टेवियन को हमेशा षड्यंत्रों का भय लगा रहता था। इसलिए वह सेनेट में भी अपने इर्दगिर्द वफ़ादार लोगों को रखता था और वस्त्रों के नीचे कवच पहने रहता था।

४. रोमन साम्राज्य और उसका दासप्रथात्मक स्वरूप। आक्टेवियन आगस्टस द्वारा स्थापित शासन व्यवस्था उसकी मृत्यु के बाद भी बनी रही। रोम का शासन इंपेरेटर – सत्ता उत्तराधिकार में पानेवाले अथवा सेना की सहायता से उसपर क़ब्ज़ा करनेवाले – चलाते थे। 'इंपेरेटर' शब्द ने अब नया अर्थ ग्रहण कर लिया। वह सम्राट का बोधक बन गया और अब रोमन साम्राज्य के सर्वोच्च शासक के लिए इसी नाम का प्रयोग किया जाने लगा। यद्यपि रोम में गणतंत्रात्मक पद यथावत बने रहे, फिर भी वास्तव में **गणतंत्र का स्थान राजतंत्र** ने ले लिया था। रोमन

आक्टेवियन आगस्टस के काल में रोम का शासनतंत्र

सम्राट

सेना

जन सभा	कौंसुल	सेनेट
रोमन नागरिकों की जन सभा सम्राट द्वारा बताये हुए लोगों को कौंसुल निर्वाचित करती है	उम्मीदवारों में से निर्वाचित सम्राट का आज्ञापालन करते हैं	सम्राट द्वारा नियुक्त सदस्य – सेनेटर – सम्राट के मतानुसार निर्णय लेते हैं

१. सम्राट ट्रेजन द्वारा अपनी डेन्यूब विजयों के उपलक्ष्य में स्थापित विजय स्तंभ। (छायाचित्र।) २. स्तंभ पर निर्मित उद्भूतियां।

राजतंत्र को साम्राज्य कहते हैं, अर्थात ऐसा राज्य, जिसमें सर्वोच्च सत्ता सम्राट के हाथों में होती है।

साम्राज्य की स्थापना ने रोम में और प्रांतों में दासस्वामियों के प्रभुत्व को और सुदृढ़ बनाया। स्वयं आक्टेवियन ने अभिमानपूर्वक लिखा था कि उसने भागे हुए ३० हजार दासों को पकड़कर उनके भूतपूर्व स्वामियों को लौटाया है अथवा मौत के घाट उतारा है। यदि दास अपने स्वामी को मार डालता था, तो, कानून के अनुसार, मृत व्यक्ति के घर में रहनेवाले सभी दासों को मृत्युदंड दे दिया जाता था। एक बार तो एक साथ ४०० दासों का वध किया गया था। रोम के पास विशाल सेना थी, जिसकी मदद से सम्राट शोषितों और उत्पीड़ितों के विद्रोहों को कुचल डालते थे।

रोम के ही नहीं, प्रांतों के भी दासस्वामी सम्राट की सत्ता का समर्थन करते थे।

५. रोमन साम्राज्य की अंतिम विजयें। ११५-११६ ईसवी में अनुभवी और साहसी सेनानायक सम्राट **ट्रेजन** के नेतृत्व में रोमन सेना मेसोपोटामिया में घुस आयी। इससे पहले रोमन लीजनें पूर्व में कभी इतनी दूर तक नहीं पहुंची थीं। किंतु तभी प्रांतों में विजित जातियों के विद्रोह फूट पड़े, जिससे ट्रेजन को अपना अभियान रोक देना पड़ा और लीजनें विद्रोहियों को दबाने के लिए भेज दी गयीं।

ट्रेजन के विजय अभियान पराये प्रदेशों पर क़ब्ज़ा करने के लिए रोम द्वारा चलाये गये अंतिम युद्ध थे। साम्राज्य को विद्रोहों को कुचलने और सीमाओं की रक्षा करने के लिए विशाल

संख्या में सैनिकों की ज़रूरत थी। ट्रेजन द्वारा एशिया में जीते गए इलाकों पर क़ब्ज़ा बनाये रखने के लिए सैनिक चूंकि पूरे नहीं पड़ रहे थे, अतः इन इलाकों को छोड़ देना पड़ा। दूसरी शताब्दी के आरंभ में रोमन साम्राज्य को नयी विजयों की नीति छोड़कर अपने मौजूदा इलाक़ों के बचाव की नीति पर उतर आना पड़ा।

'दिव्य विभूति आगस्टस के कार्य' शिलालेख से

यह शिलालेख पहली शताब्दी ईसवी की रोम की आबादी की हालत पर, आगस्टस की सत्ता और रोमन राज्य में उसकी स्थिति पर क्या प्रकाश डालता है?

"...अपने दसवें कौंसुलत्व में एक बार फिर मैंने अपनी संपदा में से हर व्यक्ति को चार सौ सेस्टेर्स (रोमन चांदी के सिक्के) उपहार में दिये और ग्यारहवें कौंसुलत्व में बारह बार अनाज बांटा, जिसे मेरे धन से खरीदा गया था, और जब मैं बारहवीं बार कौंसुल चुना गया, तो तीसरी बार हर आदमी को चार सौ सेस्टेर्स दिये। मेरे इन दान कार्यों से हर बार कम से कम ढाई लाख लोग लाभान्वित हुए। जब मैं अठारहवीं बार ट्रिब्यून और बारहवीं बार कौंसुल बना, मैंने नगर के तीन लाख बीस हज़ार ग़रीबों में से हरेक को दो सौ चालीस सेस्टेर्स दिये। अपने सैनिकों को मैंने युद्ध में लूटी गयी संपत्ति में से एक-एक हज़ार सेस्टेर्स प्रदान किये। और यह उपहार कोई एक लाख बीस हज़ार लोगों को मिला था। अपने तेरहवें कौंसुलत्व में मैंने दो लाख लोगों को दो सौ चालीस सेस्टेर्स बांटे।

"अपने सैनिकों को मैंने जो भूमि दी, उसका मूल्य मैंने ही चुकाया था। इसपर मेरे साठ करोड़ सेस्टेर्स ख़र्च हुए थे।"

आगस्टस के समकालीन कवि वर्जिल के महाकाव्य 'ईनीड' से

वर्जिल के इस वर्णन की एस्किलस के सालामिस की लड़ाई के वर्णन (पृष्ठ १६४) से तुलना करें। यूनानी कवि ने किसकी और रोमन कवि ने किसकी प्रशस्ति गायी है?

ठीक मध्य में सागर के दो बेड़े बड़े नज़र आयें
मढ़े हुए तांबे से चमकें, पोत मध्यता दिखलायें,
आगस्टस ने इटली के वीरों से अब यह कहा – "बढ़ो!"
सैनिक, सेनेटर उनमें, सब से ही यह कहा – "लड़ो!"
लाल समन्दर से एंटोनी का बेड़ा बढ़ता आया।
वह पूरब का प्रबल विजेता, ध्वज औ' अगम लूट लाया,
चप्पू कई हज़ार एकसंग अब लहरों पर चोट करें
पैने यान पोत के लहरें चीरें, ढेरों झाग उड़ें।
भाले-बर्छी, तीर हवा में सरसर करते हुए गिरे
सन के जलते गोले भी तो सभी ओर उड़ रहे, गिरे...

लो, आगस्टस जीत चौथी, रोम शहर को आता है
इटली के देवी-देवों के सम्मुख भेंट चढ़ाता है,
बलि-वेदियां तीन सौ आगे, बड़ा शहर में जाता है
लोगों की तालियां और जय-ध्वनियां नगर गुंजाती हैं।

...और पराजित, बन्दी लोगों की भी बड़ी क़तार चले
जिनकी भिन्न बोलियां, कपड़े, जो सांचों में भिन्न ढले।

? १. इंपेरेटर शब्द का आरंभ में क्या अर्थ था और आगस्टस के काल में क्या अर्थ हो गया? २. सिद्ध करें कि आक्टेवियन के शासनकाल में रोम में राजतंत्र स्थापित हो गया था। रोमन राजतंत्र और पूर्वी राजतंत्रों में क्या अंतर था? ३. रोमन साम्राज्य किनके हितों की रक्षा करता था? ४. मानचित्र में साम्राज्यकालीन रोम द्वारा जीते हुए इलाके दिखायें। रोमन साम्राज्य का सर्वाधिक विस्तार कब हुआ था? रोमन सम्राटों को अपने मौजूदा इलाकों के बचाव की नीति पर क्यों उतर आना पड़ा? इटली के बाहर अन्य देशों पर अधिकार के लिए रोम द्वारा छेड़े गये युद्ध कितनी शताब्दियों तक जारी रहे थे? ५. आक्टेवियन ने कितने वर्षों रोम पर अकेले शासन किया? उसका शासनकाल आज से कितने वर्ष पहले आरम्भ और कितने वर्ष पहले समाप्त हुआ था?

रंगीन छायाचित्र १. लिपिक। (तीसरी सहस्राब्दी ईसापूर्व की एक मिस्री रंगी हुई मूर्ति।) लिपिक अपने अधिकारी का आदेश लिखने को तैयार बैठा है।

रंगीन छायाचित्र २. फिराऊन तूतानखामोन की सोने की शवपेटिका का ढक्कन, जिसकी आकृति मृत फिराऊन जैसी है। (दूसरी सहस्राब्दी ईसापूर्व।) फिराऊन हाथ में राजदंड और चाबुक पकड़े है। माथे पर नाग बना हुआ है। ये सब फिराऊन की सत्ता के प्रतीक थे।

रंगीन छायाचित्र ३. मिस्री महारानी नेफ़ेर्तीती। (दूसरी सहस्राब्दी ईसापूर्व की चूना पत्थर से निर्मित और रंगी हुई मूर्ति।)

रंगीन छायाचित्र १३. कृष्णचित्रित कलश। (छठी शताब्दी ईसापूर्व।) कलश पर तीन शरीर और तीन सिरवाले दानव से युद्धरत देवता हीराक्लीज चित्रित है। नीचे जमीन पर हीराक्लीज के बाण से घायल दानव का अनुचर पड़ा है।

रंगीन छायाचित्र १४. रक्तचित्रित कलश। (पांचवीं शताब्दी ईसापूर्व।) कलश पर लड़ाई के लिए प्रस्थान करते योद्धा को अपने परिवार से विदा लेते दिखाया गया है। **चित्रकार ने किन भावों का चित्रण किया है?**

रंगीन छायाचित्र १५. एक रोमन किशोरी का चित्र। (पांपे में प्राप्त एक भित्तिचित्र।) इसे 'कवयित्री' शीर्षक क्यों दिया गया है?

रंगीन छायाचित्र १६. ईसस नगर के निकट मकदूनी और पारसीक सेनाओं का युद्ध। (पांपे नगर में प्राप्त एक चित्र का अंश।) बायें सिकंदर खड़ा है और दायें रणक्षेत्र से भागने को तैयार दारा तृतीय।

रंगीन छायाचित्र १७. पांपे की खुदाई में प्राप्त एक घर का भीतरी दृश्य। घर में तालाब और छोटा सा उद्यान भी है। दीवारों पर भित्तिचित्र बने हैं। इन्हें गीले पलस्तर पर ही बना दिया जाता था। पांपे में घरों के अंदर बरतन, फर्नीचर, दीवारों पर बने चित्र, आदि सब कुछ सुरक्षित बचे रहे हैं। एक धनी महाजन के घर से प्राप्त संदूक में कर्जदारों के १०० से अधिक रुक्के रखे हुए थे। विसूवियस की जमी हुई राख के नीचे लोगों और जानवरों के शरीर सड़ गये थे और उनके बजाय खाली स्थान बाकी रह गये थे। पुरातत्त्ववेत्ता इन खाली स्थानों में प्लास्टर भरकर शरीरों और अन्य चीजों की हूबहू नकलें तैयार कर लेते हैं। पांपे की यात्रा करनेवाला अपने आपको पहली शताब्दी के ऐसे नगर में पाता है, जिसे उसके निवासियों ने मानो अभी-अभी ही छोड़ा है।
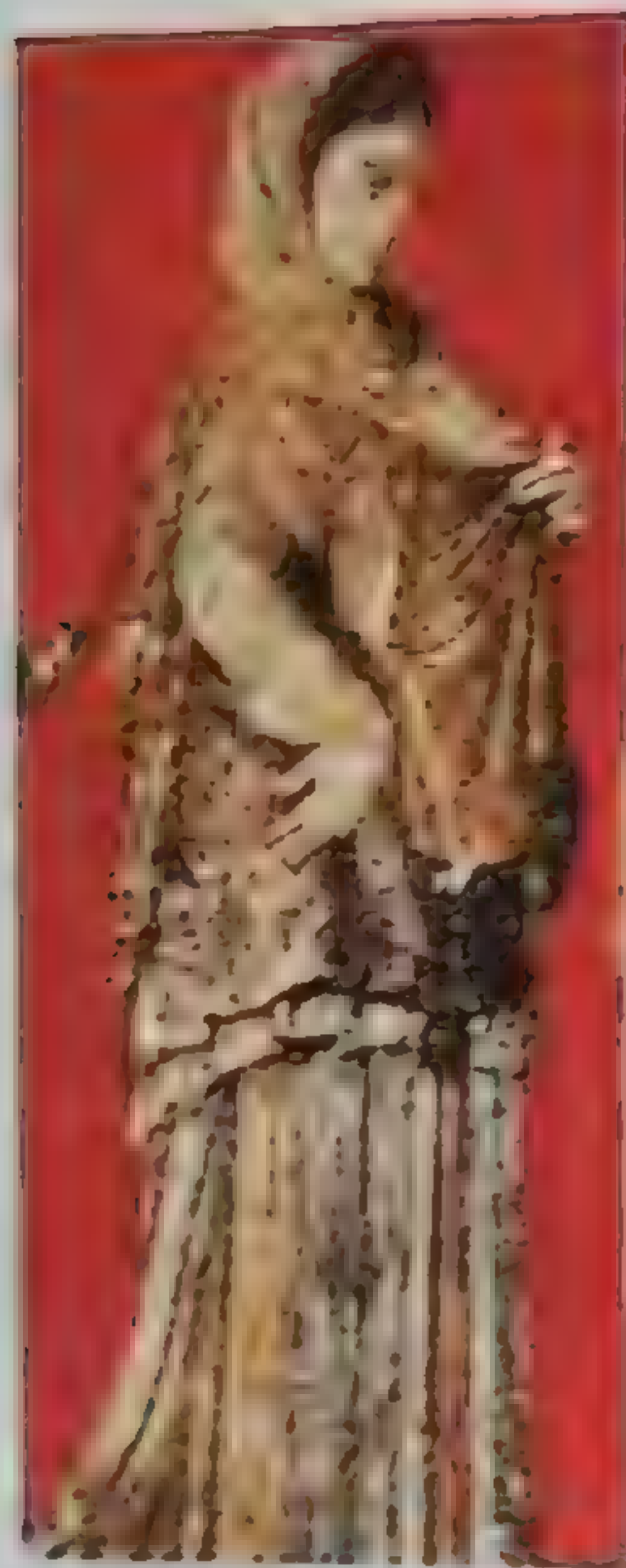
रंगीन चित्र १. सबसे प्राचीन मानवों का यूथ। इसका क्या प्रमाण है कि चित्र में आदमी ही दर्शाये गये हैं? इन लोगों और आधुनिक लोगों में क्या अंतर है? क्या ये लोग ऐसी जगहों में रह सकते थे, जहां कड़ाके की सरदी पड़ती है? पुस्तक में वे मौलिक स्रोत-सामग्रियां ढूंढें, जिनके आधार पर प्रागैतिहासिक लोगों की शक्ल की पुनर्कल्पना और उनके औज़ारों का चित्रण किया गया है।

रंगीन चित्र २. जंगली घोड़ों का शिकार। पुस्तक में वह स्थान ढूंढें, जहां इस प्रकार के शिकार का विस्तार से वर्णन किया गया है। अकेले रहकर शिकारी अपने लिए भोजन और वस्त्र का इंतज़ाम क्यों नहीं कर सकता था?

रंगीन चित्र ३. गोत्र समुदाय के गुफा-गृह में। गुफा के निवासी क्या काम-धंधे करते थे? पुरुषों और स्त्रियों के बीच काम कैसे बंटा हुआ था? कम से कम ऐसे दस शब्द बतायें, जिन्हें ये लोग इस्तेमाल करते।

रंगीन चित्र ४. आदिम चित्रकार। इस चित्र और रंगीन चित्र २ के बीच क्या संबंध है?

रंगीन चित्र ५. प्राचीन काल में नील की घाटी। दायें – किसान परिवार अपने खेतों में काम कर रहे हैं। कोई तैयार फ़सल काट रहे हैं, तो कोई उसी वर्ष दूसरी बार जुताई-बुवाई कर रहे हैं। ढेंकली (शदूफ़) से खेत सींचा जा रहा है। बायें – एक दासस्वामी का फ़ार्म। किसानों के खेतों और दासस्वामी के फ़ार्म में कैसे अंतर किया जा सकता है?

रंगीन चित्र ६. प्राचीन मिस्र में करों की उगाही। पुस्तक में दिये हुए प्राचीन मिस्री चित्रों और वर्णनों के आधार पर बतायें कि यहां किन-किन लोगों को चित्रित किया गया है।

रंगीन चित्र ७. प्राचीन मिस्री पत्थर की खान में। चट्टान में छोटे-छोटे छेद करके उनमें लकड़ी की फानें घुसा दी जाती थीं और फिर उनपर बार-बार पानी डाला जाता था। इससे लकड़ी फूल जाती थी और चट्टान से पूरे के पूरे खंड छिटक जाते थे। तांबे के औजारों से इन खंडों को भली भांति तराशा जाता था और फिर उन्हें रस्सों से बांधकर दसियों लोग खींचते हुए ले जाकर नील में बजरों पर लाद देते थे। पत्थर की खानों में सबसे कठिन और भारी काम दास और कैदी करते थे।

रंगीन चित्र ८. असीरियाई सेना की वापसी। पीछे – असीरियाई सम्राट के प्रासाद की दीवार और मंदिर का शिखर। आगे – रथ पर सवार असीरियाई सम्राट। प्रासाद के आगे युद्धबंदी और लूट के माल से लदे ऊंट तथा गधे जा रहे हैं।

रंगीन चित्र ९. किलीकियाई सैनिक पोत का एक व्यापारिक पोत पर हमला। पुस्तक में यह स्थल ढूंढें, जहां यह बतलाया गया है कि ऐसे हमले क्यों किये जाते थे।

रंगीन चित्र १०. चीन में "पीली पट्टीवालों" का विद्रोह। विद्रोही लोग अंगरक्षकों के साथ रथ पर जाते एक सामंत पर हमला कर रहे हैं। आगे बायीं ओर खड़ी गाड़ी पर "स्या-त्सी" लिखा है, जिसका अर्थ है "नया जमाना"। यह विद्रोह के लिए ललकारने-वाला संकेत शब्द था। पेड़ के पीछे विद्रोही घात लगाये बैठे हैं। दायें पृष्ठभूमि में गांव और जलती हुई ज़मींदार की हवेली है।

रंगीन चित्र १५. चौथी शताब्दी ईसापूर्व की यूनानी रंगशाला। ओर्केस्ट्रा स्थल पर समूहगान दल खड़ा है और वेदी के निकट बांसुरीवादक। स्कीन के आगे दो अभिनेता अभिनय कर रहे हैं। दर्शकों के बैठने का स्थान पहाड़ी की ढलान पर बना है। सबसे अगली पंक्तियों में उच्च पदाधिकारी और पुरोहित बैठते थे। बताये, रंगशाला में दुखांत नाटक दिखाया जा रहा है या सुखांत नाटक।

रंगीन चित्र १६. प्राचीन यूनान में रथ-दौड़। पुस्तक में वह वास्तविक प्राचीन यूनानी चित्र ढूंढें, जिसके आधार पर यह चित्र बनाया गया है।

रंगीन चित्र १७. रोम में विजयी सेनानायक की शोभा-यात्रा ("ट्रायम्फ")। आगे-आगे जंजीरों से जकड़े बंदी चल रहे हैं, जिनमें स्त्रियां और बच्चे भी हैं। सेनानायक चार घोड़ों के रथ पर सवार है। एक दास उसके सिर के ऊपर विजय-माला उठाये हुए है।

रंगीन चित्र १८. एक रोमन दासस्वामी की जागीर में। बायें – अंगूर का रस निकालने का यंत्र। दायें – आटा पीसने की चक्की। पीछे – दासों की कोठरी। उसके आगे – एक दास को सज़ा दी जा रही है। बीच में – जागीर का स्वामी।
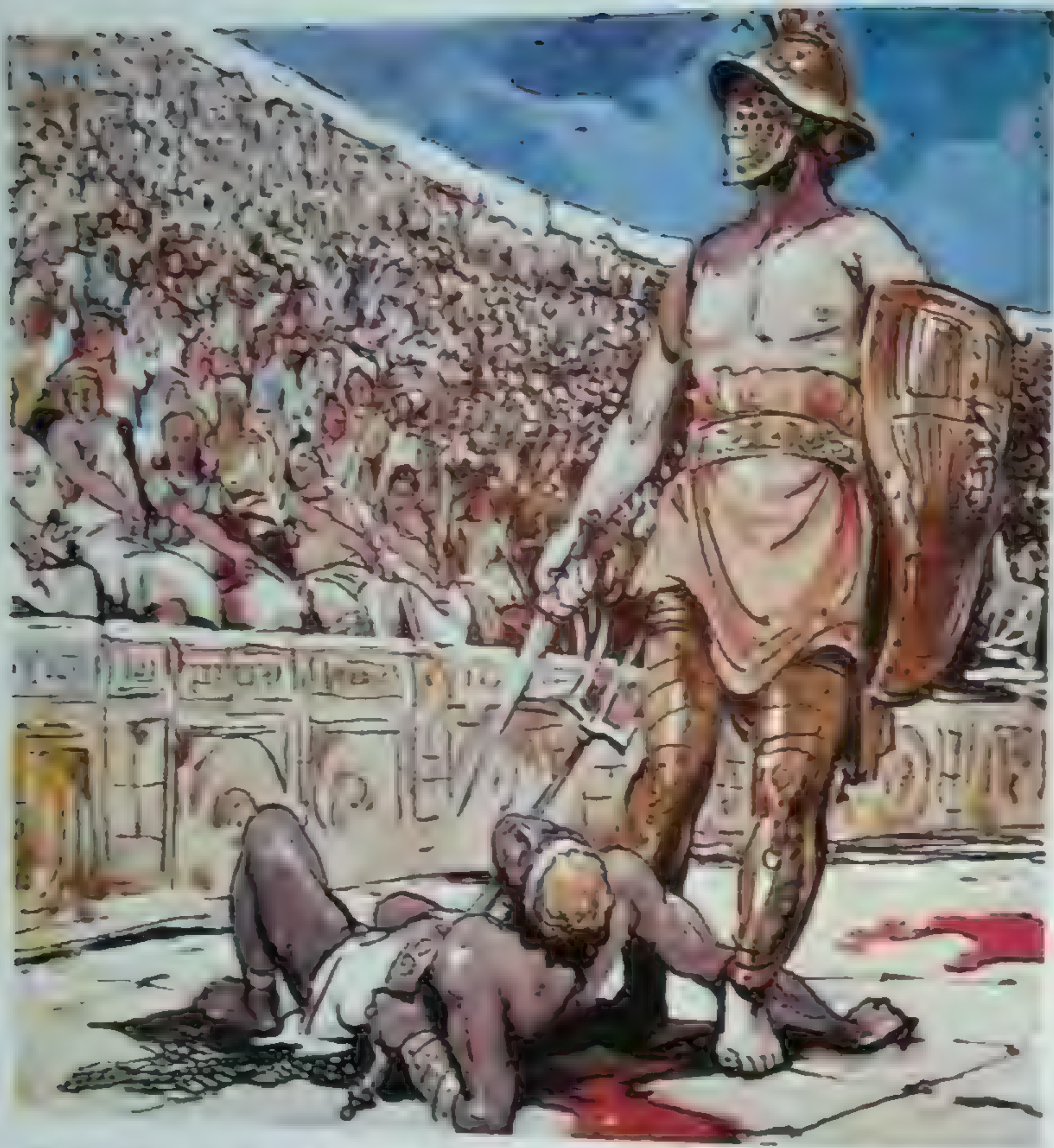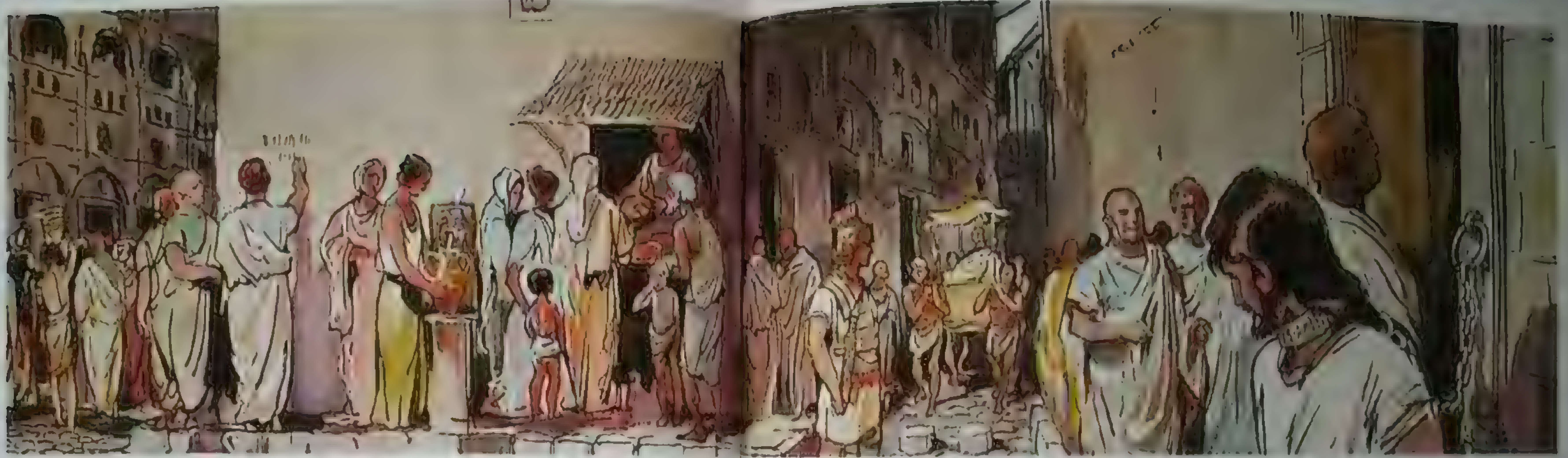
रंगीन चित्र २१. साम्राज्यकालीन रोम। चित्र में बहुमंजिला इमारतें दिखायी गयी हैं। उनके बीच तंग गलियां हैं। सड़कों पर खड़ंजे बिछे हैं। बारिश के समय सड़क पार करने के लिए उनपर चौकियां रख दी जाती थी। चार दास पालकी में अपने मालिक को ले जा रहे हैं। **मध्य में**—गरीबों को रोटी बांटने की दुकान। दीवार पर आदमी ग्लेडियेटरों के दंगल की सूचना लिख रहा है। **दायें**—एक संपन्न रोमवासी का घर। मालिक घर में प्रवेश कर रहा है। उसके पीछे भीख मांगनेवाले लोग खड़े हैं। जंजीर से बंधा दास द्वार पर पहरा दे रहा है।

रंगीन चित्र २२. बर्बरों द्वारा रोम की लूट। गौर करें कि बर्बर क्या रख लेते थे और क्या फेंक देते थे।

पंद्रहवां अध्याय

गणतंत्र-काल के अंत और साम्राज्य-काल के आरंभ में रोम की संस्कृति और जन-जीवन

§ ५४. प्राचीन रोम की कला

याद करें कि प्राचीन यूनान के दो सबसे प्रसिद्ध महाकाव्य कौन से थे (§ ३८, अनुच्छेद २) और पांचवीं शताब्दी ईसापूर्व के यूनानी मूर्तिकार किनकी मूर्तियां बनाते थे (§ ४०, अनुच्छेद २)।

१. रोम पर यूनानी संस्कृति का प्रभाव। रोमनों की संस्कृति पर यूनान की उन्नत संस्कृति का बहुत प्रभाव पड़ा था।

रोमनों का दक्षिणी इटली के यूनानी उपनिवेशों में यूनानियों की भाषा, ज्ञान-विज्ञान और कला से परिचय हुआ। यूनानी लिपि और वर्णमाला के आधार पर उन्होंने अपनी **लैटिन लिपि और वर्णमाला** का विकास किया।

रोम पर यूनानी संस्कृति का प्रभाव रोमनों द्वारा यूनान की विजय के बाद बहुत बढ़ गया। एक रोमन कवि ने लिखा था, "पराजित यूनान ने अपने बर्बर विजेताओं को आत्मबद्ध बनाया, असभ्य लैटियम (लैटिन जाति के देश, रोम) को कला सिखायी"। रोमन विजेता यूनान से गाड़ियां और जहाज भर-भरकर मूर्तियां और चित्र रोम ले जाते थे। संपन्न रोमन यूनानी वास्तुकारों, मूर्तिशिल्पियों और चित्रकारों से अपने लिए कलाकृतियां बनवाते थे। इटली के नगरों में यूनानी रंगशालाओं के नमूने पर रंगशालाएं बनायी गयी थीं। संभ्रांत रोमन परिवारों के बच्चे यूनान के विश्वप्रसिद्ध विद्यालयों में शिक्षा पाने जाते थे। रोमन लोग यूनानी ओलिंपी देवी-देवताओं की उपासना करते थे, हालांकि उन्हें दूसरे नाम दिये गये थे। उदाहरण के लिए, रोमन ज़ीयस को **जुपीटर** कहते थे। (सोचकर बतायें कि रोमन लोग वल्कन– वोल्कानस – नाम से किस देवता को पुकारते होंगे। देखें § २६, अनुच्छेद ८।)

किंतु **रोमन संस्कृति पूर्णतः यूनानी संस्कृति की नकल नहीं थी। यूनानियों से सीखते हुए रोमनों ने खुद भी संस्कृति के सृजन में विशिष्ट योग दिया।**

२. रोमन साहित्य: क) 'वस्तुओं की प्रकृति'। रोमन साहित्य की बहुमूल्य रचनाओं में **'वस्तुओं की प्रकृति'** नामक काव्य को महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। उसे पहली शताब्दी ईसापूर्व के एक महान दार्शनिक और कवि **ल्यूक्रेटियस** ने लिखा था। उसमें उसने प्रकृति और इतिहास के बारे में ऐसे वैज्ञानिक विचारों का प्रतिपादन किया, जो उस काल के लिए नवीन और अग्रगामी थे।

१. इतिहास और काव्य की अधिष्ठात्री देवियों से घिरा **वर्जिल**। (रोमन मोज़ाइक चित्र। मोज़ाइक चित्र रंग-बिरंगे पत्थर के टुकड़ों से बनाया जाता है।) २. दक्षिणी फ्रांस में रोमन काल का एक मेहराबदार पुल। (छायाचित्र।) ऊपर से पानी की नाली गुजरती थी। नदी के स्तर से पुल की ऊंचाई लगभग ५० मीटर है। ३. एक रोमन मंदिर। (छायाचित्र।) **यूनानी और रोमन निर्मितियों की तुलना करें। रोमनों ने यूनानी वास्तुकला से क्या सीखा?** ४. प्रसिद्ध रोमन वक्ता और लेखक **सिसेरो** की आवक्ष प्रतिमा। ५. पाप्रे से प्राप्त एक महाजन की आवक्ष प्रतिमा।
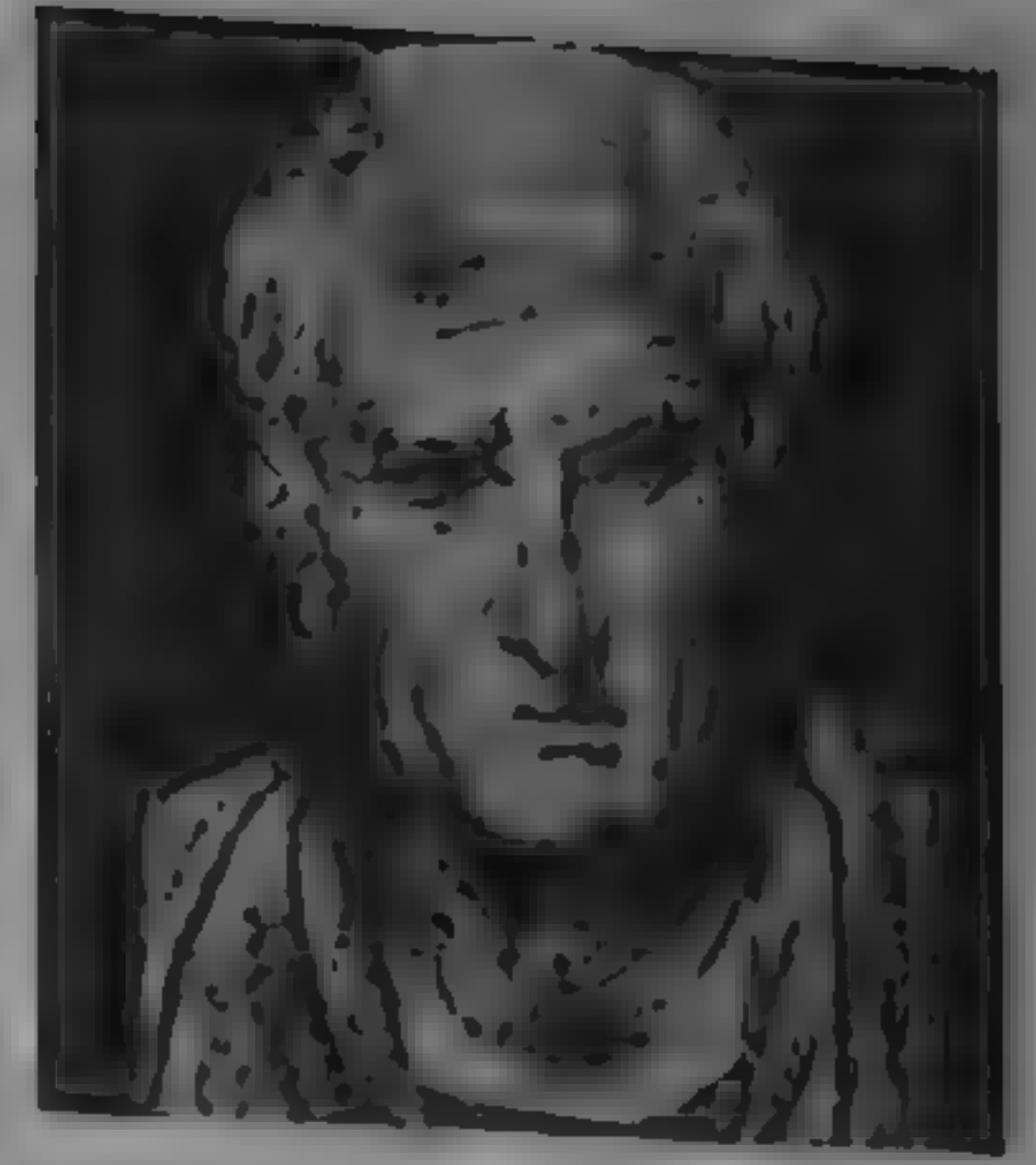
ल्यूक्रेटियस ने कहा कि प्रकृति परमाणुओं से बनी है और उन्हीं के संयोग से ग्रह-नक्षत्र, पृथ्वी, प्राणियों और यहां तक कि लोगों की आत्माओं का निर्माण हुआ है। वह आत्मा की अमरता और मरणोपरांत जीवन को नहीं मानता था। उसने बताया कि आग का उपयोग, खेती और लोहे का आविष्कार लोगों की मेहनत की उपज है, न कि देवताओं की कृपा के परिणाम।

ल्यूक्रेटियस धर्म की तुलना लगाम से करता था और कहता था कि वह आदमी की सोचने की शक्ति को रोकता है। उसके मत में धर्म प्राकृतिक शक्तियों को न समझ पाने और उनसे डरने के कारण पैदा हुआ था। उसने आंधी-पानी, भूकंप, निद्रा, आदि के कारण वैज्ञानिक ढंग से समझाने की कोशिश की।

ग) रोमन काव्य-साहित्य का स्वर्ण युग। 'ईनीड' महाकाव्य। पहली शताब्दी ईसापूर्व के अंत और पहली शताब्दी ईसवी के आरम्भ में रोम में अनेक प्रतिभाशाली कवि हुए। इस काल को रोमन काव्य-साहित्य का स्वर्ण युग कहा जाता है।

आगस्टस कवियों को अपने पक्ष में करना चाहता था। उसके धनी मित्र **मेसेनस** के घर के द्वार उनके लिए सदा खुले रहते थे और गृहपति उन्हें खूब उपहार दिया करता था। तब से यूरोपीय भाषाओं में **मेसेनस** शब्द साहित्य और कलाओं को संरक्षण देनेवाले धनी व्यक्ति का पर्याय बन गया है।

इस काल का सबसे महान रोमन कवि **वर्जिल** था। उसने **'ईनीड'** नामक महाकाव्य

की रचना की, जिसमें उसे कोई दस वर्ष लगे थे। 'ईनीड' में ट्राय के पौराणिक रक्षक **ईनीअस** की कथा वर्णित है। वह देवी अफ्रोडाइट का पुत्र था। देवताओं की मदद से वह जलते हुए ट्राय से अपने वृद्ध पिता को कंधों पर उठाये बच निकलता है। फिर अनेक असामान्य घटनाओं के बाद इटली में आकर बस जाता है। वह पाताल लोक में जाता है, जहां उसके मृत पिता की आत्मा रोम के भावी उत्कर्ष, सारे विश्व पर रोमनों के शासन और उनके द्वारा "विजितों को क्षमादान देने और अविजितों का गर्वभंग किये जाने" की भविष्यवाणी करती है। पिता की आत्मा ईनीअस को उसकी भावी संतान दिखाती है, जिनमें 'दिव्य विभूति आगस्टस' भी है, और कहती है कि वह, यानी आगस्टस लैटियम में शांति स्थापित करेगा तथा सुदूर देशों को भी रोम के सामने कांपने को बाध्य करेगा। ('ईनीड' के अंश पृष्ठ २४७-२४८ पर पढ़ें।)

'ईनीड' में मानो होमर के महाकाव्य 'इलियड' और 'ओडिसी' की कथा को आगे जारी रखा गया है। उसकी रचना भी वैसी ही उदात्त और आलंकारिक शैली में की गयी है। वर्जिल अपने महाकाव्य में शौर्य-पराक्रम, कर्तव्यनिष्ठा, बड़ों के समादर जैसे गुणों और आदर्शों पर जोर देता है। रोमन साम्राज्य और सम्राट आगस्टस की महिमा का बखान करने के लिए उसने धार्मिक विश्वासों और यूनानियों व रोमनों के प्राचीन आख्यानों का कुशलतापूर्वक उपयोग किया है।

३. रोमन वास्तुकला। रोमन भवनों की भव्यता और तड़क-भड़क का उद्देश्य विश्व के समक्ष रोमन साम्राज्य की शक्तिमत्ता और ऐश्वर्य का प्रदर्शन करना था। इसके लिए रोमनों ने

नानी वास्तुकारों की उपलब्धियों
भी लाभ उठाया और स्वयं
निर्माण कला में बहुत से नवीन
तत्वों का समावेश किया। रोम में
आविष्कृत कंक्रीट पत्थरों को आपस
बड़ी मजबूती से जोड़ता था।
फलस्वरूप मेहराबों और गुंबदों का
निर्माण संभव बना।

रोमन नगरों के मार्गों और
चौराहों पर सम्राटों के सम्मान में
मेहराबदार **विजय-तोरण** बनाये जाते
थे। मेहराब का पुलों, भवनों और
नालियों के निर्माण में भी व्यापक
प्रयोग किया गया। रोमन पहाड़ी
स्रोतों से नालियां निकालते थे,
जो कुछ-कुछ, मगर सब जगह
समान रूप से ढलवां होती थीं।
इस प्रकार का ढलान देने के लिए
निचली जगहों पर मेहराबदार पुल एक्वीडक्ट बनाये जाते थे, जिनपर होकर नालियां गुज़रती थीं। (देखें पृष्ठ २५१, चित्र २।) रोम को पानी पहुंचाने के लिए ऐसी दस से अधिक नालियों का निर्माण किया गया था।

रोमन गुंबद-निर्माण कला का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण रोम का **पैंथियन** है। यह सभी देवी-देवताओं का मंदिर था और आज भी खासी अच्छी हालत में है। ऊपर से देखने पर उसकी गुंबदनुमा छत एक विशाल उलटे कटोरे जैसी प्रतीत होती है।

४. रोमन मूर्तिकला। रोमन मूर्तिकला का चरमोत्कर्ष मूर्तियों और आवक्ष प्रतिमाओं में देखने को मिलता है। मूर्तिशिल्पी अपनी रचनाओं में मनुष्य की मुखाकृति की बिलकुल सही नकल उतारने की ही नहीं, बल्कि उसके माध्यम से उसके चरित्र और व्यक्तित्व को उजागर करने की भी चेष्टा करते थे। साहूकार की आवक्ष प्रतिमा मुनाफ़े को ही सर्वोपरि माननेवाले आदमी के लालच और निष्ठुरता का चित्र है। **पांपी** की मूर्ति में शिल्पी ने अल्पमति और अहंमन्य व्यक्ति का चित्रण किया है। प्रसिद्ध रोमन वक्ता और लेखक **सिसेरो** के नेत्रों से उसका बौद्धिक तेज झलकता है, और घृणा की मुद्रा में भिंचे होंठ लोगों के प्रति उसके तिरस्कार-भाव का प्रदर्शन करते हैं। (देखें पृष्ठ २४१ और २५१।)

साम्राज्य की स्थापना के बाद से मूर्तिकला सम्राटों की महत्ता और महिमा का चित्रण करने लगी। अतः मूर्तिकारों ने अपनी रचनाओं में उन्हें देवताओं और पौराणिक वीरों जैसा प्रदर्शित किया। दुर्बलकाय आगस्टस को सर्वशक्तिमान जुपीटर के रूप में दिखाया गया, जो

१

१. पैंथियन (मॉडल)। मॉडल की काट से पैंथियन के बाह्य और भीतरी रूप का अनुमान लगाया जा सकता है। फ़र्श पर बनी रेखाएं और वर्ग दीवारों और स्तंभों की जगहें दिखाते हैं। इमारत में प्रकाश आने के लिए गुंबद के बीचों-बीच छेद बना हुआ है।
२. दूसरी शताब्दी के एक सम्राट की मूर्ति। उसे किस यूनानी देवता जैसा दिखाया गया है?

२

विजय की देवी को हाथ में उठाये हुए था। तोरणों और भवनों को सजानेवाली संगमरमर की उद्भृतियों में सम्राटों की शोभायात्राओं और रोमन विजयों के दृश्य अंकित किये गये।

? १. ल्युक्रेटियस ने किस यूनानी विद्वान के विचारों को आगे बढ़ाया था? २. वर्जिल अपने पाठकों और श्रोताओं के मन में कैसी भावनाएं और विचार जगाना चाहता था? 'ईनीड' से इसके उदाहरण दें। ल्युक्रेटियस और वर्जिल के दृष्टिकोणों में बुनियादी अंतर क्या था? ३. रोम में सम्राट की सत्ता को सुदृढ़ बनाने के लिए धर्म और कला को कैसे इस्तेमाल किया गया? ४. वास्तुकला के विकास में रोमनों का क्या योगदान है? ५. पांचवीं शताब्दी ईसापूर्व की यूनानी मूर्तिकला और रोमन मूर्तिकला में क्या अंतर है और यह क्यों पैदा हुआ? आपको दोनों मूर्तिकलाओं में क्या बातें भाती हैं?

§५५. साम्राज्यकालीन रोम नगर

याद करें कि ग़रीब लोग क्यों रोम में आने लगे थे (§ ५०, अनुच्छेद १)।

१. फ़ोरम और पैलेटाइन। ईसवी संवत् के आरंभ तक रोम भूमध्यसागर क्षेत्र का सबसे बड़ा नगर बन गया था। उसमें कोई दस लाख लोग रहते थे। वह टाइबर नदी के दोनों ओर काफ़ी बड़े इलाक़े में फैला हुआ था। उसकी सभी सड़कें, जिनपर पत्थरों के खड़ंजे थे, फ़ोरम में आकर मिलती थीं। सभी रोमन सम्राट अपना नाम अमर करने के लिए इस मैदान में शानदार इमारतें बनवाते थे और अपनी मूर्तियां लगवाते थे। ट्रेजन ने अपनी विजयों के उपलक्ष्य में एक

का काम है। मेहनत करने को वे स्वतंत्र नागरिक की हेठी समझते थे। वे सम्राट से "रोटी और तमाशे" मांगते थे।

६. रोम में खेल-तमाशे। ग्लैडिएटरों के दंगल रोमन दासस्वामियों और गरीबों के मनोविनोद का मुख्य साधन थे। साम्राज्यकालीन रोम में ये तमाशे गणतंत्र काल की अपेक्षा कहीं बड़े पैमाने पर होने लगे थे।

आगस्टस के आदेश से रोम के बाहरी छोर पर एक झील खोदी गयी। उसमें एक जलयुद्ध का आयोजन किया गया, जिसमें ३० बड़े और बहुत से छोटे पोतों पर ३००० आदमियों ने भाग लिया।

पहली शताब्दी ईसवी के उत्तरार्ध में ग्लैडिएटर दंगलों के लिए एक विराट **एंफ़ीथियेटर – कोलोसियम** – का निर्माण किया गया। उसमें एक साथ कोई ५० हजार दर्शक बैठ सकते थे।

सम्राट ट्रेजन द्वारा आयोजित तमाशों में एंफ़ीथियेटरों के अखाड़े में ११ हजार हिंस्र जानवर और १० हजार ग्लैडिएटर छोड़े गये थे। ये तमाशे १२३ दिन तक चलते रहे थे।

रोमनों का दूसरा मनपसंद तमाशा रथ-दौड़ था।

५. रोमन सभ्यता का महत्त्व। रोमन संस्कृति का इटली ही नहीं, सारे रोमन साम्राज्य में व्यापक प्रसार हुआ। रोमन जहां भी गये, उन्होंने मेहराबदार तोरणों, पानी की नालियों, एंफ़ीथियेटरों और सड़कों का निर्माण किया। रोम से दूरवर्ती देशों में भी लैटिन भाषा बोली-

रोम के हमाम। (पुनर्कल्पित।) उनमें संगमरमर के बने गरम और ठंडे पानी के हौज, व्यायामशालाएं और यहां तक कि पुस्तकालय भी होते थे। दीवारें, स्तंभ और गुंबद संगमरमर के और फ़र्श मोज़ाइक के बने होते थे।
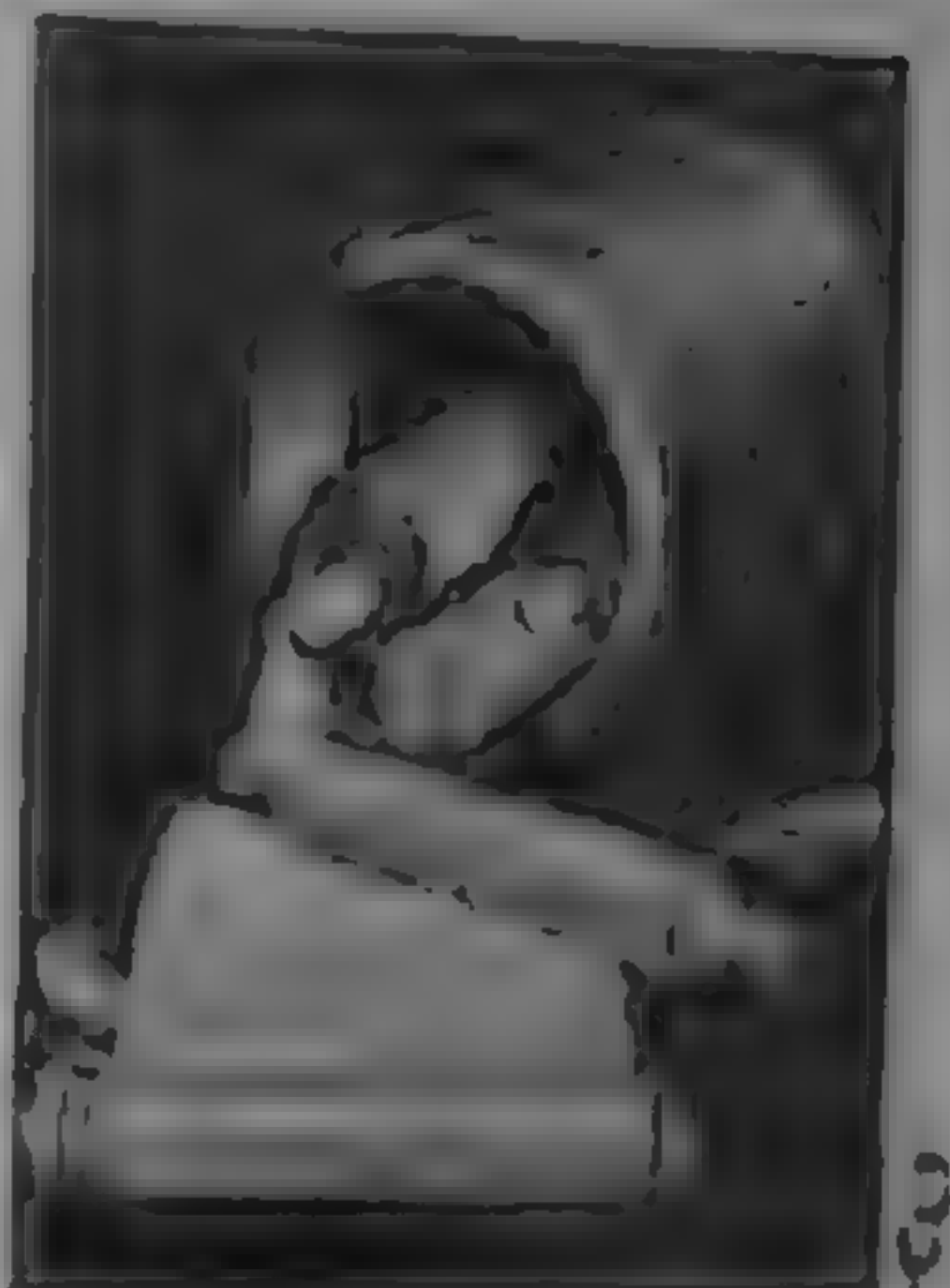
१. रोम की एक बहुमंजिली इमारत का प्राचीन टूटे हुए खंडहर। २. रोमन शल्यचिकित्सा उपकरण। इनकी मिस्री उपकरणों से तुलना करें। (देखें पृष्ठ ६४।) ३. यह चित्र आप पुस्तक में और कहां देख चुके हैं?

पढ़ी जाने लगी। बहुत से यूनानी और पूर्वी ग्रंथों का लैटिन में अनुवाद हुआ। सदियों तक पश्चिमी यूरोप के शिक्षित लोग लैटिन ही बोलते और लिखते रहे। आज भी वनस्पतियों और प्राणियों को लैटिन भाषा में ही नाम दिये जाते हैं, जिन्हें सभी देशों के विद्वान समझ सकते हैं। चिकित्सक नुसखे लैटिन में ही लिखते हैं। लैटिन लिपि विश्व के अनेक देशों में इस्तेमाल की जाती है। रोम में निर्मित पंचांग का सारे विश्व में प्रचलन है। इसके महीनों के लैटिन नाम आज भी सुरक्षित हैं। जुलाई मास को उसका नाम जूलियस सीज़र के सम्मान में दिया गया था और अगस्त को सम्राट आगस्टस के सम्मान में। सितंबर का अर्थ "सातवां" और अक्तूबर का "आठवां" है (रोम में वर्ष मार्च से आरंभ होता था)।

ल्यूक्रेटियस, वर्जिल और दूसरे रोमन साहित्यकारों की रचनाओं ने यूरोपीय साहित्य के विकास पर जबर्दस्त प्रभाव डाला है। ये रचनाएं आज भी प्रकाशित की जाती हैं।

रोमनों द्वारा आविष्कृत मेहराब और गुंबद विश्व वास्तुकला के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान थे।

सबसे अधिक दास इटली में थे। अर्थव्यवस्था की हालत सबसे अधिक शोचनीय यही थी।

दासों से काम करवाना दासस्वामियों के लिए अलाभकर बनता गया। इसके अलावा बहुत ज़्यादा दास रखना ख़तरनाक था। रोमन दासस्वामी कहते थे, "जितने दास, उतने दुश्मन"।

३. **कोलोनस।** दूसरी शताब्दी में बहुत से भूमिपतियों ने अपनी जागीरों को छोटे-छोटे भूखंडों में बांटकर उन्हें स्वतंत्र गरीबों को बटाई या लगान पर देना शुरू कर दिया। इस प्रकार के छोटे असामियों को रोम में **कोलोनस** कहते थे। वे अपनी फ़सल का एक हिस्सा भूमि के मालिक को देते थे और शेष अपने पास रखते थे। इसलिए उनकी दिलचस्पी ज़्यादा से ज़्यादा पैदावार पाने में होती थी। वे मवेशियों या औज़ारों को भी कोई नुक़सान नहीं पहुंचने देते थे।

गरीब कोलोनस भूमिपतियों से औज़ार, मवेशी और बीज उधार लेते थे। क़र्ज़दार कोलोनस जागीर छोड़कर अन्यत्र नहीं जा सकता था। इससे लाभ उठाकर भूमिपति जब-तब लगान बढ़ाते रहते थे।

१. रोमन फ़सल कटाई यंत्र। (प्राचीन चित्रों के आधार पर पुनर्निर्मित।) २. तीसरी शताब्दी में इटली की एक जागीर। इस चित्र की पृष्ठ २३९ पर दिये हुए चित्र से तुलना करें और अंतर ढूंढें।

४. **"झोंपड़ियोंवाले दास"।** कुछ दासस्वामी दासों को भी छोटे भूखंड और औज़ार देकर अपना अलग कारोबार चलाने, परिवार बसाने की इजाज़त दे देते थे। वे सोचते थे कि इस तरह दास बेहतर काम करेगा, मालिक को नुक़सान नहीं पहुंचायेगा और नहीं भागेगा। ऐसे दासों को "झोंपड़ियोंवाले दास" कहते थे। नगरों में दासस्वामी अपने दासों को छोटी-छोटी शिल्पशालाएं या दूकानें भी खोलने देते थे। किंतु अपनी कमाई का काफ़ी बड़ा हिस्सा दासों को अपने मालिकों को दे देना पड़ता था।

हालांकि इससे कुछ दासों की हालत थोड़ा बहुत सुधर गयी थी, पर इससे दासों की हालत पहले की तरह ही ख़राब बनी रही। पहले की तरह अब भी वे अपने मालिक के पूर्ण नियंत्रण में थे।

५. **साम्राज्य में विद्रोह।** दासस्वामियों के विरुद्ध दासों का संघर्ष जारी था। अब कोलोनस भी उसमें भाग लेने लगे थे। साम्राज्य के विभिन्न हिस्सों में विद्रोह होते रहते थे। सबसे बड़े और ज़बर्दस्त विद्रोह तीसरी शताब्दी के मध्य में हुए।

गाल प्रदेश में हुए विद्रोह ने सारे ही इलाक़े को अपनी चपेट में ले लिया था। विद्रोही अपने को **बगौद**, यानी योद्धा कहते थे। उनके रिसाले में ज़्यादातर चरवाहे और पैदल दस्तों में खेतिहर लोग थे। वे दासस्वामियों की हवेलियों को आग लगाकर लूटा हुआ मालमत्ता आपस में बांट लेते थे।

उत्तरी अफ़्रीका में एक बहुत बड़ा विद्रोह हुआ। यहां विद्रोहियों ने कई नगरों पर क़ब्ज़ा कर लिया।

स्वयं रोम में भी शिल्पियों और दासों ने विद्रोह का झंडा बुलंद कर लिया। उन्होंने रोम की एक पहाड़ी पर मोर्चाबंदी कर ली। नगर की सड़कों पर घमासान लड़ाइयां होने लगीं। हालांकि अंततः सेना ने धावा बोलकर पहाड़ी पर क़ब्ज़ा कर लिया, लेकिन उसे नुक़सान भी बहुत उठाना पड़ा।

दासों, किसानों और शिल्पियों के विद्रोहों के साथ-साथ साम्राज्य की सीमाओं पर भी घमासान लड़ाइयां चल रही थीं।

फिर भी दूसरी शताब्दी में रोमन साम्राज्य काफ़ी शक्तिशाली था। किंतु दासप्रथा के फैलाव के कारण उसकी अर्थव्यवस्था और शक्ति का ह्रास शुरू हो गया था।

? १. दूसरी-तीसरी शताब्दियों में दासप्रथा ने तकनीक के विकास को क्यों रोका और रोमन अर्थव्यवस्था को पतन की ओर क्यों ले गयी? २. जागीरों के मालिक गरीबों को भूमि लगान पर देने और दासों को अपना कारोबार चलाने की अनुमति देने पर बाध्य क्यों हुए? ३. कोलोनस और दास की स्थिति में क्या अंतर था? कोलोनस और किसान की स्थिति में क्या अंतर था? ४. तीसरी शताब्दी के विद्रोहों में किन्होंने भाग लिया था? ७४-७१ ईसापूर्व के विद्रोह और इन विद्रोहों में क्या अंतर है?

§ ५७. तीसरी शताब्दी में साम्राज्य का दुर्बल होना और सम्राट डायोक्लीशियन के शासन काल में उसका पुनः सुदृढ़ बनना

(मानचित्र १०)

१. **रोमन साम्राज्य की सीमाओं पर बर्बरों के हमले।** ईसवी संवत के आरंभ में एल्बा नदी के पूर्व में **स्लाव** क़बीले रहा करते थे और एल्बा तथा राइन नदियों के मध्यवर्ती भाग में **जर्मन** क़बीले।

जर्मन कबीलों की भूमि – **जर्मनी** – घने वनों से ढकी हुई और दलदली थी। ये कबीले अभी गोत्र समुदाय की अवस्था में ही थे। गोत्र के सदस्य वन काटकर भूमि साफ करते और फिर उसे उनके बीच बांट देते। वे जौ और गेहूं की खेती करते थे। २-३ वर्ष बाद जब भूमि अनुपजाऊ बन जाती, तो नयी जगह पर वन काटकर खेत बनाये जाते। वनों में जर्मन मवेशी चराते थे। अंगूर और फलों का उत्पादन करना उन्होंने अभी नहीं सीखा था।

रोमन साम्राज्य के उर्वर मैदान और संपत्ति अन्य **बर्बर*** जातियों की तरह जर्मनों को भी आकृष्ट कर रहे थे। उनके कबीले नये-नये रोमन साम्राज्य के इलाकों में घुसने लगे। आगे-आगे सशस्त्र पुरुष होते थे – आम सिपाही पैदल चलते थे और कबीले का सेनानी व सरदार घोड़ों पर सवार रहते थे। पुरुषों के पीछे भारी बैलगाड़ियां चलती थीं, जिनपर स्त्रियां और बच्चे बैठे होते थे। सबसे पीछे चरवाहा मवेशियों को हांककर ला रहा होता था।

जब तक साम्राज्य शक्तिशाली था, वह इन अतिक्रमणों को रोकता रहा। बहुत से बर्बर रोमनों द्वारा पकड़कर दास बना लिये गये।

२. साम्राज्य का दुर्बल बनना। तीसरी शताब्दी में सम्राटों की सत्ता बहुत कमजोर हो गयी। प्रभावशाली सैनिक अधिकारी जिसे चाहते, गद्दी पर बिठाते, उतारते या मार देते। जो उन्हें अधिक धन का लालच देता, उसे ही वे सम्राट बना देते। हर दूसरे-तीसरे वर्ष और कभी तो हर दूसरे महीने सम्राट बदले जाने लगे। उनमें से शायद ही कोई अपनी स्वाभाविक मौत मरता था। कभी-कभी साम्राज्य में एक साथ कई कई सम्राट होते थे, जो आपस में लड़ते रहते थे।

सैनिक बगावतों और सम्राटों के परस्पर युद्धों ने साम्राज्य को दुर्बल कर दिया। तीसरी शताब्दी के मध्य में गाल प्रदेश, स्पेन, इटली, लगभग सभी एशियाई प्रांत और डेन्यूब के निचले भागों से लगे प्रांत रोमन साम्राज्य से अलग हो गये।

दुर्बल साम्राज्य अपनी सीमाओं की रक्षा न कर सका। जर्मनों और दूसरे बर्बरों के गिरोह रोमन इलाके में घुस आये और अपने रास्ते में उन्हें जो कुछ मिला, उसे लूट लिया या नष्ट कर दिया।

३. डायोक्लीशियन का शासन। इटली और प्रांतों के दासस्वामियों की रुचि साम्राज्य के बने रहने में थी। इसलिए उन्होंने सम्राट **डायोक्लीशियन** का समर्थन किया, जिसने सम्राट की सत्ता को सुदृढ़ बनाने के लिए कोई कसर नहीं उठा रखी थी।

डायोक्लीशियन पहले एक मामूली सैनिक था। फिर बड़ी तेजी से तरक्की करते हुए वह सम्राट के अंगरक्षकों का प्रमुख बन गया। २८४ **ईसवी** में सेना ने उसे सम्राट घोषित कर दिया। २१ वर्ष तक रोमन साम्राज्य का शासन उसके हाथों में रहा।

उसने गणतंत्र काल से चले आ रहे पदों की समाप्ति कर दी और सभी अधिकारियों

*यूनानी और रोमन लोग "बर्बर" उन्हें कहते थे, जिनकी भाषा उनकी समझ में नहीं आती थी। उन्हें लगता था कि वे लोग "बर-बर-बर" बोल रहे हैं। अब इस शब्द का मतलब असभ्य, क्रूर हो गया है।

को स्वयं ही नियुक्त किया। उसका आदेश सबके लिए कानून था। असंतुष्ट लोगों पर नजर रखने के लिए उसने बहुत से जासूस नियुक्त किये।

डायोक्लीशियन अपने को जुपीटर का पुत्र कहता था। मंदिरों में उसकी मूर्तियां रखी गयीं। सामंतों को भी उसके सामने कोर्निश करनी पड़ती थी। अनुकंपा के तौर पर वह उन्हें अपना पैर या सोने के कामवाले वस्त्र का पल्लू चूमने देता था। सैनिकों की संख्या बढ़ाने और विद्रोहियों का सफलतापूर्वक दमन करने के लिए डायोक्लीशियन ने पूरे के पूरे बर्बर कबीलों को भाड़े पर रखा। सैनिक व्ययों की पूर्ति के लिए आबादी पर और कर लगाये गये। बागी सैनिकों को निर्ममतापूर्वक मृत्युदंड देकर सेना में अनुशासन बढ़ाया गया।

४. विद्रोहों का दमन। एक विशाल सेना लेकर डायोक्लीशियन ने गाल प्रदेश पर हमला किया, वहां की बस्तियों को भस्मीभूत कर दिया और निवासियों को मौत के घाट उतार डाला। युद्ध में बगौदों की पराजय हुई। उनमें से जो जीवित बच पाये, वे एक किले में जा छिपे। डायोक्लीशियन की सेना ने उसे घेर लिया। आखिर भुखमरी के कारण बगौदों ने आत्मसमर्पण कर दिया। कुछ बंदियों को वहीं मौत के घाट उतार दिया गया और कुछ को उनकी पत्नियों और बच्चों के साथ दास बना लिया गया। गाल प्रदेश के दासस्वामी सम्राट को देवतातुल्य बताकर उसकी प्रशस्ति गाते थे।

दासस्वामियों की सहायता से उत्तरी अफ्रीका में फूटे विद्रोह को भी कुचल दिया गया।

५. साम्राज्य की प्रतिरक्षा। बर्बरों के हमलों से साम्राज्य की सीमाओं की रक्षा के लिए सुदृढ़ दुर्ग बनाये गये। एक दुर्ग से दूसरे दुर्ग तक खाइयां खोदी गयीं, मिट्टी की फसीलें उठायी गयीं

१. एक रोमन [illegible] पर [illegible] का हमला। (रोमन उत्कीर्णन।) रोमनों और बर्बरों के [illegible] की तुलना करें। २. एक रोमन सीमांत [illegible] (प्राचीन रोमन [illegible] के आधार पर पुनर्कल्पित।)

और नुकीले शहतीर खड़े किये गये। फ़सीलों पर मीनारें खड़ी की गयीं, जिनसे संतरी आसपास के इलाक़े पर नज़र रख सकते थे। रोमन सेना और भाड़े पर रखे गये बर्बर दस्ते साम्राज्य की सीमा की अन्य बर्बरों से रक्षा करते थे।

रोमन साम्राज्य एक बार फिर अपनी उत्पीड़ित आबादी के विद्रोहों को कुचलने और बाहर से होनेवाले आक्रमणों को रोकने में सफल रहा।

? १. रोमन साम्राज्य की सीमा पर बर्बरों के हमले क्यों होते थे? २. तीसरी शताब्दी में रोमन साम्राज्य की दुर्बलता का पता किन बातों से चलता है? ३. डायोक्लीशियन साम्राज्य को पुनः सुदृढ़ कैसे कर सका? क्या यह सुदृढ़ता देर तक बनी रह सकती थी? ४. डायोक्लीशियन की शासन व्यवस्था और आगस्टस की शासन व्यवस्था में क्या अंतर है? डायोक्लीशियन शासन किन राजाओं के शासन की याद दिलाता है और क्यों? ५. आगस्टस के शासन के आरंभ और डायोक्लीशियन के शासन के आरंभ के बीच कितने वर्षों का अंतराल है?

§५८. ईसाई धर्म की उत्पत्ति

(मानचित्र १०)

याद करें कि मरणोपरांत जीवन किसे कहते हैं, मरकर पुनर्जीवित हुए किस मिस्री देवता की कथा से आप परिचित हैं और यह कथा कब रची गयी थी (§११, अनुच्छेद २-३)।

१. नये धर्म की उत्पत्ति के कारण। दासों, कोलोनसों और विजित जातियों के विद्रोहों को दबा दिया जा रहा था। रोमन साम्राज्य अटल प्रतीत हो रहा था। उत्पीड़ित आशा खोते जा रहे थे कि संघर्ष करके वे कभी मुक्ति पा सकेंगे। केवल मृत्यु ही दास और कोलोनस को कठिन मेहनत, तिरस्कार और मारपीट से छुटकारा दिलाती थी। वे अपने पुराने देवी-देवताओं में भी विश्वास खोते जा रहे थे, क्योंकि वे उनकी कोई मदद न करते थे।

ऐसी स्थिति में यह नया विश्वास फैलने लगा कि एक दयालु और सर्वशक्तिमान ईश्वर है, जो उन्हें उनके कष्टों व उत्पीड़न से छुटकारा दिलायेगा। बड़ी उत्कंठा से वे इस "दयालु ईश्वर" की प्रतीक्षा कर रहे थे।

२. ईसा मसीह की कथा। पहली शताब्दी में यह जनश्रुति पैदा हुई कि फ़िलिस्तीन में ईश्वर ने एक आदमी के रूप में वास किया था। इस आदमी का नाम **ईसा मसीह** था। लोग कहते थे कि रोमनों ने उसे सलीब पर चढ़ा दिया, किंतु उसने चुपचाप यंत्रणा को सहा। मृत्यु के बाद वह पुनरुज्जीवित हुआ और स्वर्गारोहण करते हुए वायदा कर गया कि शीघ्र ही फिर लौटेगा और लोगों को दंड अथवा पुरस्कार देगा। जिन्होंने पृथ्वी पर धैर्यपूर्वक कष्टों को सहा था और उसे ईश्वर माना था, उन्हें उसने मृत्यु के बाद स्वर्ग पहुंचने का वचन दिया। बाक़ी लोग हमेशा नरक में कष्ट भुगतते रहेंगे। ये जनश्रुतियां प्राचीन मिस्री ओसिरिस आख्यान, मरकर पुनरुज्जीवित हुए दूसरे देवताओं की कथाओं और मरने के बाद परलोक में होनेवाले फ़ैसले की पौराणिक कथाओं के आधार पर पैदा हुई थीं।

पहली शताब्दी के अंत और दूसरी शताब्दी में इन जनश्रुतियों को लिख लिया गया।

उन्हें "शुभ समाचार" या **इंजील** (बाइबिल) नाम दिया गया। विभिन्न इंजीलों में ईसा मसीह के जीवन की कथा अलग-अलग तरीक़े से कही हुई है। उनमें बहुत सी बेमेल और अविश्वसनीय बातें हैं। किंतु ये ही वे सुसमाचार थे, जिनकी उत्पीड़ित लोग इतनी आतुरता से प्रतीक्षा कर रहे थे।

३. ईसाई धर्म के प्रसार की शुरुआत। उत्पीड़ितों ने इन सांत्वना देनेवाली कहानियों पर आसानी से विश्वास कर लिया, क्योंकि उनमें उन्हें पुरस्कार और उनके शोषकों तथा उत्पीड़कों को सज़ा देने का आश्वासन था। ईसा मसीह की कथा में विश्वास करनेवाले अपने को **ईसाई** और अपने धर्म को **ईसाई धर्म** कहते थे। ईसाई उपदेशक देश-देश, नगर-नगर घूमकर अपने धर्म का प्रचार करते थे। वह सारे रोमन साम्राज्य में फैलने लग गया। आरंभ में ग़रीब और दास ही ईसाई बने। उनमें यहूदी, यूनानी, रोमन, मिस्री, गाल, आदि बहुत सी जातियों के लोग थे।

ईसाई केवल एक ईश्वर को मानते थे और सम्राटों को देवतुल्य समझने तथा उनके सामने झुकने से इंकार करते थे। इसलिए सम्राट उनपर अत्याचार करते थे। ईसाई लोगों ने अपने गुप्त समुदाय बनाये, जिनके सदस्य एक दूसरे को मदद देते थे, सामूहिक भोज आयोजित करते थे, मिल-जुलकर प्रार्थना और इंजील का श्रवण करते थे। आम तौर पर वे गुफाओं और परित्यक्त खानों में एकत्र होते थे। (पृ० २६७ देखें।)

४. संपन्न लोगों का ईसाई बनना। संपन्न लोगों ने देखा कि यदि वे ईसाई धर्म स्वीकार कर लें, तो उन्हें बड़ा लाभ होगा: **ईसाई धर्म कष्ट-सहिष्णुता और विनय की शिक्षा देता था और इस तरह दासों और ग़रीबों को दासस्वामियों से लड़ने से रोकता था।** "बुरे दास को ईसाई धर्म अच्छा दास बना देता है" – एक ईसाई उपदेशक ने लिखा था। फिर रोमन राज्य में अशांति व्याप्त थी और जीवन ख़तरे से ख़ाली न था। विद्रोहों, सैनिक बग़ावतों और बर्बरों के हमलों के समय लोग प्रायः न केवल धन-संपत्ति, बल्कि जीवन से भी हाथ धो बैठते थे। कल का दिन क्या लेकर आयेगा, कोई नहीं कह सकता था। सभी स्थायी भय और त्रास के वातावरण में रहते थे। ऐसे में ग़रीबों की भांति धनी लोगों को भी मृत्यु के बाद स्वर्ग जाने की आशा ही राहत देती थी।

प्रायः होनेवाले युद्धों और साम्राज्य की तबाही ने शिक्षा और विज्ञान का विकास अवरुद्ध हो गया था। शिक्षितों ही नहीं, साक्षरों की भी संख्या घट गयी थी। इससे धार्मिक अंधविश्वासों के प्रसार के लिए अच्छा अवसर पैदा हो गया था।

विभिन्न नगरों की यात्रा करनेवाले व्यापारियों के लिए भी ईसाई धर्म अपनाना लाभकर था। हर नगर के ईसाई सहर्ष ईसाई व्यापारियों का स्वागत-सत्कार करते थे और उनके व्यापार को बढ़ाने में मदद देते थे।

५. ईसाई चर्च। संपन्न ईसाई समुदाय के ख़र्च के लिए धन देते थे। उन्हें प्रायः **पादरी** – समुदाय के नेता – और **बिशप** चुना जाता था। "बिशप" शब्द का आरंभिक रूप "एपिस्कोपस" था, जिसका मतलब "निगरानी रखनेवाला" था। पूरे प्रदेश के ईसाई समुदायों को बिशप की आज्ञा का कठोरतापूर्वक पालन करना होता था।

दूसरी शताब्दी के अंत तक रोमन साम्राज्य में ईसाई धर्म का व्यापक प्रसार हो गया।

20-158

विभिन्न नगरों के ईसाई आपस में संबंध बनाये रखते थे। इस तरह ईसाइयों का एक गुप्त संगठन पैदा हो गया, जिसमें सैकड़ों समुदाय एक सूत्र में पिरे हुए थे। इसके संचालक-नियंत्रक बिशप थे। यह संगठन चर्च कहलाता था। रोमन साम्राज्य की जनता के बीच ईसाई चर्च शीघ्र ही बहुत प्रभावशाली बन गया।

? १. सर्वशक्तिमान ईश्वर के अवतार के बारे में विश्वास क्यों पैदा हुआ और फैलने लगा? २. ईसा मसीह की कथा और ओसिरिस की कथा में क्या समानताएं हैं? मिस्र के अलावा और किस देश में पारलौकिक जीवन संबंधी कथाएं प्रचलित थीं? ३. आरंभ में ईसाई कौन बने? बाद में और लोग भी ईसाई क्यों बनने लगे? ईसाई धर्म की कौन सी बातें गरीबों को और कौन सी बातें संपन्न लोगों को आकृष्ट करती थीं? ४. ईसाई चर्च किसे कहते थे?

§ ५६. चौथी शताब्दी में रोमन साम्राज्य की हालत का और बिगड़ना

(मानचित्र १०)

याद करें कि प्राचीन पूर्वी देशों और यूनान में धर्म किसके हितों की रक्षा करता था।

१. चौथी शताब्दी में आम जनता का उत्पीड़न। डायोक्लीशियन के बाद रोम में सम्राट की गद्दी के लिए संघर्ष फिर छिड़ गया। इसमें विजय सेनानायक **कोंस्टेंटाइन** की हुई। सत्ता पर कब्जा करने और अपने हाथों में बनाये रखने के लिए उसने क्या-क्या नहीं किया – अपने साढ़ू, अपने मित्र-सहयोगी की हत्या की, बेटे पर गद्दी हथियाने का इरादा रखने का शक करके उसे मरवाया, आदि।

मेहनतकशों के प्रति वह और भी निष्ठुर था। भूमिपतियों के लिए कामगरों की कमी न हो पाये, इसके लिए उसने कोलोनसों के जागीर छोड़कर कहीं और जाने पर पाबंदी लगा दी। भागे हुए कोलोनसों के हाथ-पैर में बेड़ी डालकर वापस भूमिपति को लौटा दिया जाता था। कोंस्टेंटाइन के शासनकाल में यह माना जाता था कि दास को मार-मारकर अधमरा करनेवाले दासस्वामी ने वैसा दास के भले के लिए, उसे सुधारने के लिए ही किया है। शाही शिल्पशालाओं में काम करनेवालों के शरीर को दासों जैसा दागा जाता था।

सम्राट और सामंतों के भोग-विलासपूर्ण जीवन, विशाल सेना और अनगिनत सरकारी कर्मचारियों व गुप्तचरों के रख-रखाव के लिए बेहद धन चाहिए था। अतः कर और बढ़ाये गये। कर न देनेवाले को कोड़ों से पीटा जाता था। नागरिक कर देने से न बच पायें, इसके लिए अन्य नगरों में जा बसना और धंधा बदलना वर्जित ठहरा दिया गया। बच्चों के लिए पैतृक धंधा करना अनिवार्य था।

२. ईसाई धर्म का राजकीय धर्म बनना। कोंस्टेंटाइन जानता था कि केवल कोड़ों की मार और दमन से ही लोगों को पूरी तरह वश में नहीं रखा जा सकता। उसने देखा कि शोषितों पर नियंत्रण बनाये रखने में ईसाई धर्म अन्य धर्मों से कहीं अधिक सहायक है। ईसाई चर्च का गरीबों और दासों पर बड़ा प्रभाव था और वह उन्हें सिखाता था: "ईसा ने सलीब पर कष्ट

सहे और तुम्हें भी सहन करने को कहा है। इसके पुरस्कारस्वरूप तुम्हें मरने के बाद स्वर्ग मिलेगा", "सम्राट की सत्ता स्वयं ईश्वर ने स्थापित की है", "दासो, हर बात में अपने स्वामियों की आज्ञा का पालन करो", आदि-आदि।

३१३ ईसवी में कोंस्टेंटाइन ने ईसाइयों को खुले आम मिलने और अपने प्रार्थनागृह – गिरजे – बनाने की अनुमति दे दी। स्वयं उसने और अन्य दासस्वामियों ने ईसाई चर्च को भूमि, धन और मूल्यवान वस्तुएं भेंट कीं। शीघ्र ही चर्च सबसे बड़ा भूमिपति और महाजन बन गया। किंतु इस अपार संपदा से लाभ ईसाई समुदायों के सभी सदस्य नहीं, बल्कि मुख्यतया बिशप और पादरी लोग ही उठाते थे।

कोंस्टेंटाइन की घोर क्रूरता और विश्वासघात के बावजूद ईसाई चर्च ने उसे संत घोषित किया।

१. ईसाई धर्म के आरंभिक दिनों में ईसाई लोग ऐसे तहखानों में छिपकर एकत्र हुआ करते थे।

२. रोम में पांचवीं शताब्दी का एक ईसाई गिरजा। तहखाने और गिरजे की तुलना करके आप अनुमान लगा सकते हैं कि पांचवीं शताब्दी तक ईसाई चर्च की स्थिति कितनी बदल गयी होगी।

३. राजधानी परिवर्तन। सम्राट कोंस्टेंटाइन ने **बास्फ़ोरस** जलसंयोजन के तट पर एक नगर का निर्माण किया। पहले इस स्थान पर **बाइज़ेंटियम (विज़ेंतिया)** नामक यूनानी उपनिवेश था।

नगर का नाम **कोंस्टेंटिनोपल (कुस्तुंतुनिया)** रखा गया, जिसका अर्थ "कोंस्टेंटाइन का नगर" था। उसे रोमन साम्राज्य के पूर्वी भाग के मध्य में और समुद्री तथा स्थल मार्गों के संधिस्थल पर बसाया गया था। अब तक रोम का कोष काफ़ी ख़ाली हो चुका था, किंतु इसके बावजूद कोंस्टेंटिनोपल में शानदार इमारतें खड़ी की गयीं, जिनमें कई ईसाई गिरजे भी थे।

३३० ईसवी में साम्राज्य की राजधानी रोम से हटाकर कोंस्टेंटिनोपल ले आयी गयी।

४. ईसाइयों द्वारा कला स्मारकों का विनाश और ज्ञान-विज्ञान का दमन। रोमन सम्राटों का समर्थन पाकर ईसाई अन्य धर्मों का दमन करने लगे। वे देवी-देवताओं की मूर्तियों को तोड़ डालते थे, प्राचीन मंदिरों को नष्ट कर देते थे या उन्हें ईसाई गिरजे बना देते थे। इस तरह अनगिनत मूल्यवान कलाकृतियों का ईसाइयों के हाथों नाश हुआ। चौथी शताब्दी के अंत में सम्राट ने ज़ीयस के सम्मान में आयोजित ओलिंपिक खेलों पर प्रतिबंध लगा दिया।

ईसाइयों ने विज्ञान के ख़िलाफ़ भी जेहाद छेड़ दिया, क्योंकि उसकी मान्यताएं इंजील की कहानियों से मेल नहीं खाती थीं। उन्होंने सिकंदरिया के विश्वप्रसिद्ध पुस्तकालय के असंख्य हस्तलिखित ग्रंथों की होली जलायी और दूसरे नगरों में भी वैज्ञानिक पुस्तकों को नष्ट किया। सिकंदरिया की सड़कों पर ईसाइयों की भीड़ ने **इपातिया** नामक एक महिला वैज्ञानिक के टुकड़े-टुकड़े कर दिये। इपातिया विज्ञान की वेदी पर अपने प्राणों की आहुति देनेवाले उन पहले शहीदों में से थी, जो ईसाइयों के हाथों मारे गये थे।

५. चौथी शताब्दी में वर्ग संघर्ष। हालांकि ईसाई धर्म दासों और ग़रीबों को अपने शोषकों के विरुद्ध लड़ने से रोकता था, फिर भी न तो धर्म और न क्रूरता ही पददलितों के संघर्ष को पूरी तरह दबा सके। अभावों और सज़ाओं से मुक्ति पाने का और कोई उपाय न देखकर दास और कोलोनस जंगलों में छिप जाते थे। उधर कर उगाहनेवालों और उनके कोड़ों के डर से नगरवासी भी अपने घर छोड़कर भाग रहे थे। भगोड़े दस्ते बनाकर सरकारी कारिंदों पर, दासस्वामियों की जागीरों पर और यहां तक कि नगरों पर भी हमले करते। एक बिशप ने क्रुद्ध होकर लिखा था, "...बांदे अपने मालिकों के ख़िलाफ़ सिर उठा रहे हैं और ईसाई धर्म की शिक्षा के बावजूद भगोड़े दास न केवल अपने मालिकों को छोड़ रहे हैं, बल्कि उनपर अत्यंत निर्मम हमले भी कर रहे हैं।"

सम्राटों की कठोर कार्रवाइयों से भी साम्राज्य की गंभीर हालत सुधर न सकी। साम्राज्य की अर्थव्यवस्था पूरी तरह ध्वस्त हो गयी। व्यापार लगभग ठप्प हो गया। अनेक नगर और पूरे के पूरे प्रांत, विशेषतः साम्राज्य के पश्चिमी भाग में, उजड़ गये थे।

रोमन साम्राज्य के क़ोलोनसों से संबंधित क़ानून

ये क़ानून किस वर्ग के हितों की रक्षा करते थे? अपने उत्तर की पुष्टि में प्रमाण दें।

यह असमानवीय है कि भूमि अपने कोलोनसों से वंचित हो जाये और वे दूसरे इलाक़ों में जाकर भूस्वामियों को गंभीर हानि पहुंचायें। अतः हम क़ानून बनाते हैं कि कोलोनस भूमि से बंधे रहें। कोलोनसों के बच्चे दूसरे गांव में जाकर नहीं बस सकते और हमेशा उस भूमि से बंधे रहें, जिसे कभी उनके बाप-दादों ने खेती करने के लिए लिया था।

यदि कोलोनस भागने की सोचते हैं, तो दासों की तरह उनके पैरों में भी बेड़ियां डाली जा सकती हैं।

? १. कोंस्टेंटाइन ने किन साधनों से साम्राज्य को मज़बूत बनाने की कोशिश की थी? २. चौथी शताब्दी में ईसाई धर्म की स्थिति कैसे बदली? इसके क्या कारण थे? ३. विज्ञान और प्राचीन कलाकृतियों के प्रति ईसाई धर्म का कैसा रवैया था? उसने ऐसा रवैया क्यों अपनाया? ४. प्राचीन विश्व में धर्म ने कुल मिलाकर कैसी भूमिका अदा की थी? ५. डायोक्लीशियन के शासनकाल के आरंभ और कोंस्टेंटिनोपल के राजधानी बनाये जाने के बीच कितने वर्ष का अंतराल है?

§६०. पश्चिमी रोमन साम्राज्य का पतन

(मानचित्र १०)

याद करें कि रोमन गणतंत्र और रोमन साम्राज्य की स्थापना कब हुई थी।

१. रोमन साम्राज्य पर बर्बरों के हमलों का बढ़ना। इधर रोमन साम्राज्य दुर्बल होता जा रहा था, उधर उसकी सीमाओं पर बर्बरों के हमले बढ़ते जा रहे थे। बर्बर क़बीलों ने मिलकर शक्तिशाली गठबंधन बना लिये थे। उन्होंने विशाल, हालांकि असंगठित सेनाएं जुटा ली थीं जो जब-तब रोम की सीमांत चौकियों पर हमले करती रहती थीं।

रोमन सम्राट कभी सोना देकर बर्बरों को शांत कर देते थे, तो कभी साम्राज्य की रक्षा के लिए दूसरे क़बीलों के सैनिकों को भाड़े पर रख लेते थे। किंतु इसके लिए धन जुटा पाना उत्तरोत्तर कठिन होता जा रहा था, क्योंकि साम्राज्य की प्रजा की आर्थिक हालत बहुत गिर गयी थी।

२. रोमन साम्राज्य में गोथों का आगमन। चौथी शताब्दी के उत्तरार्ध में कास्पियन सागर की तटवर्ती स्तेपियों से आये ख़ानाबदोश **हूणों** के विशाल गिरोह यूरोप पर टूट पड़े। वे [illegible] घुड़सवार थे और अपने रास्ते में सब कुछ विनष्ट कर जाते थे।

इससे कुछ ही पहले **गोथ** नामक जर्मन क़बीले काला सागर के उत्तरी तटवर्ती इलाक़ों में जाकर बस गये थे। हूणों के ज़बर्दस्त हमलों के सामने वे टिक न पाये और डेन्यूब की ओर भागने को मजबूर हो गये।

१ २

रोमन सम्राट ने उन्हें साम्राज्य की सीमाओं में बसने की अनुमति दे दी। डोंगियों और बजरों में दसियों हजार गोथों ने अपने बीवी-बच्चों समेत डेन्यूब पार कर उसके दायें तट पर शरण ली। सम्राट के अधिकारियों ने उन्हें रसद देने का वायदा किया था, मगर फिर धोखा दे दिया। [illegible] से बचने के लिए जब अपने को और अपने बच्चों को बेचने की नौबत आ गयी, [illegible] विद्रोह कर दिया और कोंस्टेंटिनोपल पर चढ़ आये।

सम्राट ने अपनी सेना के साथ स्वयं उनका मुकाबला किया। ३७८ ईसवी में **एड्रियानोपल** के पास हुई लड़ाई में रोमन सेना पराजित हुई और सम्राट मारा गया। नये सम्राट ने गोथ [illegible] किंतु साम्राज्य के [illegible] गोथों का दमन बहुत खतरनाक सिद्ध हुआ।

३. साम्राज्य का विभाजन। ३९५ ईसवी में रोमन सम्राट के दो बेटों ने साम्राज्य को आपस में विभाजित कर लिया। अब दो साम्राज्य बन गये—**पूर्वी** और **पश्चिमी**।

पूर्वी साम्राज्य में बाल्कन प्रायद्वीप, मिस्र और एशियाई इलाके शामिल थे। पश्चिमी साम्राज्य के अंतर्गत इटली और पश्चिमी यूरोप व अफ्रीकी प्रांत थे।

पश्चिमी साम्राज्य की हालत बहुत खराब थी। उसकी जनता घोर आर्थिक संकट से गुजर रही थी, नगर उजड़ गये थे और जगह-जगह विद्रोह हो रहे थे।

४. रोम पर गोथों का कब्जा। गोथों ने पश्चिमी साम्राज्य की [illegible] अलारिक के नेतृत्व में वे इटली में घुस आये। रोमन दूतों ने रोम के रक्षकों की बहुत [illegible] का हौवा दिखाकर अलारिक को डराना चाहा। किंतु उसने जवाब दिया, "[illegible] होगी, काटना उतना ही आसान होगा"।

साम्राज्य की रक्षा करनेवाला कोई न था। सम्राट दुर्ग में जाकर छिप [illegible] सेना में ज्यादातर चूंकि बर्बर जातियों के सैनिक थे, इसलिए उसपर भरोसा नहीं किया जा सकता था। उधर साम्राज्य से घृणा करनेवाले दास और कोलोनस भी [illegible] लूटने, नष्ट करने और अमीरों व सरकारी कर्मचारियों को मारने-पीटने लग गये थे।

गोथों ने रोम की नाकेबंदी कर दी। अलारिक उसकी दुर्भेद्य दीवारों को तोड़कर अंदर घुसने की हिम्मत न कर पाया। किंतु [illegible] नगर के फाटक खोल दिये और गोथ रोम में घुस आये। उस काल के सबसे महान नगर ने, जिसके सामने यूरोप, एशिया और अफ्रीका के लोग सदियों से सम्मान [illegible] थे, ४१० ईसवी में [illegible] के बर्बरों की भीड़ के सामने आत्मसमर्पण कर दिया। तीन दिन तक गोथ रोम को लूटते रहे। फिर जब लूटने को और कुछ न रहा, तो वे उसे छोड़कर चले गये। (देखें रंगीन चित्र [illegible])।

खुदाई से प्राप्त रोमन फोरम और पैलेटाइन [illegible] के खंडहर। (छायाचित्र।) उनकी पृष्ठ २२? पर दिये हुए पुनर्निर्मित चित्र से तुलना करें। रंगीन छायाचित्र १९-२० भी देखें।

५. पश्चिमी साम्राज्य में जर्मन क़बीलों का घुसना। गोथों के बाद दूसरे जर्मन क़बीलों के भी पश्चिमी रोमन साम्राज्य पर व्यापक हमले हुए। उनका गंभीर मुक़ाबला करनेवाला कोई न होने के कारण जर्मनों ने शीघ्र ही गाल प्रदेश, इटली और स्पेन पर कब्ज़ा कर लिया और फिर स्पेन से उत्तरी अफ़्रीका में भी घुस आये।

भयानक लावे की तरह जर्मन क़बीले सारे साम्राज्य पर छाने लगे। उपजाऊ इलाक़ों में घुसकर वे अंगूर और ज़ैतून के बाग़ों, रई और जौ के खेतों को नष्ट कर देते थे, क़िले बनाने के लिए महलों और मंदिरों को तोड़कर पत्थर निकाल लेते थे। अनेक नगर पूरी तरह ख़ाक में मिल गये और उनमें घास व झाड़ियां उग आयीं।

पांचवीं शताब्दी के मध्य में **वंडाल** नामक जर्मन क़बीलों ने अफ़्रीका से सागर पार करके इटली में घुसकर रोम पर क़ब्ज़ा कर लिया। पूरे दो हफ़्ते तक नगर में लूटमार और विनाश की लीला चलती रही। वंडालों ने मूर्तियां तोड़ डालीं, पुस्तकालयों को नष्ट कर दिया, इमारतों को आग लगा दी। उनके इस हमले के बाद रोम में केवल ७ हज़ार निवासी रह गये थे।

६. पश्चिमी रोमन साम्राज्य का अंत। ४७६ में एक जर्मन सरदार ने रोम के अंतिम सम्राट को गद्दी से हटा दिया। इसके साथ ही पश्चिमी रोमन साम्राज्य का अस्तित्व ख़त्म हो जाता है। उधर पूर्वी रोमन साम्राज्य भी बड़ी मुश्किल से बर्बरों के हमलों का मुक़ाबला कर पा रहा था।

पश्चिमी रोमन साम्राज्य का पतन उत्पीड़ितों के विद्रोहों और बर्बरों के हमलों के कारण हुआ था। उसके पतन के साथ पश्चिमी यूरोप में दासप्रथात्मक व्यवस्था भी पूरी तरह ढह गयी। इसीलिए पश्चिमी रोमन साम्राज्य के पतन को वह घटना माना जाता है, जिसके साथ प्राचीन विश्व का इतिहास समाप्त होता है।

? १ मानचित्र में दिखाये कि चौथी-पांचवीं शताब्दी में रोमन साम्राज्य के किन भागों में विद्रोह हुए थे। २ मानचित्र में वे दिशाएं ढूंढ़े, जहां से रोमन साम्राज्य पर बर्बरों के हमले हुए थे। चौथी और पांचवीं शताब्दियों में बर्बरों के हमले क्यों बढ़े? ३ क्यों हैनीबाल जैसा महान सेनानायक तो रोम की नाकेबंदी भी न कर सका, जबकि अलारिक उसपर क़ब्ज़ा करने में सफल हो गया? ४ पश्चिमी रोमन साम्राज्य के पतन के मुख्य कारण क्या थे? ५ आक्तेवियन के एकव्यक्ति-शासन के आरंभ से यदि गिनें, तो रोमन साम्राज्य का अस्तित्व कुल कितने वर्ष रहा? दूसरे प्यूनिक युद्ध के आरम्भ से रोम पर अलारिक के क़ब्ज़े तक कितने वर्ष गुज़रे थे?

अपने ज्ञान की जांच करें:

विषय-सूची और पृष्ठ २७४ पर दी हुई तालिका के आधार पर बतायें कि पुस्तक में प्राचीन रोम के इतिहास को कितने और किन युगों में बांटा गया है। निम्न प्रश्नों को ध्यान में रखते हुए हर युग की विशिष्टताएं बतायें।

क) युग के आरंभ और अंत में रोमन राज्य का क्षेत्र, उसे मानचित्र में दिखायें।

ख) रोमन अर्थव्यवस्था और विभिन्न वर्गों की हालत में क्या परिवर्तन आये?

ग) आबादी के किन वर्गों के बीच संघर्ष होता था, क्यों होता था और कैसे होता था?

घ) शासन-प्रणाली कैसी थी? शासन में क्या परिवर्तन आये? रोमन सेना किनसे बनी थी और युग के दौरान सेना में क्या परिवर्तन आये?

च) युग की मुख्य घटनाएं।

निम्न तालिका बनाकर आप प्राचीन रोम के इतिहास के सारे क्रम को आसानी से समझ सकते हैं।

प्राचीन रोम का इतिहास

प्राचीन रोम के इतिहास के मुख्य युग	रोमन राज्य का क्षेत्र	अर्थव्यवस्था और वर्गों की हालत में आये परिवर्तन	आबादी के विभिन्न वर्गों के बीच संघर्ष	शासन-प्रणाली	सबसे महत्वपूर्ण घटनाएं और तिथियां

से करवाया जाने लगा। दासों के श्रम ने स्वतंत्र लोगों के श्रम को अनावश्यक बना दिया। किंतु दासों का श्रम इतना घटिया था कि उसके चलते यंत्रों-औज़ारों और उत्पादन के तरीकों को और परिष्कृत करना लगभग असंभव था। दासप्रथात्मक व्यवस्था न केवल अर्थव्यवस्था और संस्कृति के आगे और विकास करने में रुकावटें डालने लगी, बल्कि उनकी अवनति का कारण भी बन गयी। दूसरी ओर, उत्पीड़ित और शोषित लोगों का वर्ग संघर्ष भी दासप्रथात्मक राज्यों की जड़ें काट रहा था।

दासप्रथात्मक व्यवस्था का विध्वंस करके आम जनता ने अर्थव्यवस्था और संस्कृति के निरंतर विकास का मार्ग प्रशस्त किया।

पाठकों से

प्रगति प्रकाशन को इस पुस्तक के अनुवाद और डिज़ाइन के संबंध में आपके राय जानकर और आपके अन्य सुझाव प्राप्त कर बड़ी प्रसन्नता होगी। अपने सुझाव हमें इस पते पर भेजें.

प्रगति प्रकाशन,
१७, जूबोव्स्की बुलवार,
मास्को, सोवियत संघ

१२ यूनानी वर्णमाला के आधार पर उत्पन्न वर्णमालाओं का वर्तमान प्रसार क्षेत्र

अटलांटिक महासागर

हिंद महासागर

प्रशांत महासागर

फोनिशियाई वर्णमाला का जन्म

यूनानी वर्णमाला

यूनानी वर्णमाला से उत्पन्न

लैटिन

अन्य वर्णमालाएं

मानचित्रों की सूची

१. ७०००-४००० वर्ष पहले पूर्वी गोलार्ध में लोगों का प्रसार
२. प्राचीन पूर्व : मिस्र और मेसोपोटामिया (छठी शताब्दी ईसापूर्व तक)
३. प्राचीन पूर्व : भारत और चीन
४. प्राचीन यूनान (चौथी शताब्दी ईसापूर्व के अंत तक)
५. यूनानी उपनिवेशों का प्रसार (८वीं-५वीं शताब्दी ईसापूर्व)
६. सिकंदर के पूर्वी अभियान (३३४-३२५ ईसापूर्व)
७. सिकंदर का साम्राज्य और उसका विघटन
८. प्राचीन इटली (तीसरी शताब्दी ईसापूर्व के मध्य तक)
९. तीसरी शताब्दी ईसापूर्व – दूसरी शताब्दी ईस्वी में रोमन राज्य का विस्तार
९ अ. स्पार्टकस के नेतृत्व में दासों का विद्रोह (७४-७१ ईसापूर्व)
१०. रोमन साम्राज्य का विघटन और पश्चिमी रोमन साम्राज्य का पतन
११. दासप्रथात्मक राज्यों के क्षेत्र का विस्तार (दूसरी शताब्दी तक)
१२. यूनानी वर्णमाला के आधार पर उत्पन्न वर्णमालाओं का वर्तमान प्रसार क्षेत्र

प्राचीन विश्व इतिहास का परिचय

मानचित्र

१ ८०००-४००० वर्ष पहले पूर्वी गोलार्ध में लोगों का प्रसार

भूमध्य रेखा

प्रशांत महासागर

हिंद महासागर